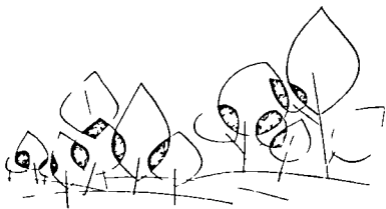
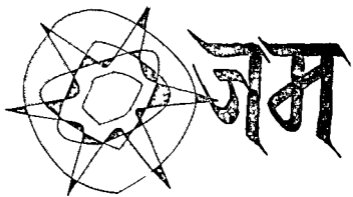


जम गया सूरज



माया सूरज

■ ओमिंमव्यु अनत



सूर्य प्रकाशन मन्डिर
द्विजनेर

© अभिमन्यु बनन

प्रथम शतक शून्य प्रकाशन मंदिर दिल्ली ०

संस्करण १९७३

मूल्य तेरह रुपये मात्र

मूल्य विनाश छोट्टि म शास्त्रात्तुं

JANIGAYA SURAJ a novel Abhi

चूँकि इस उप-यास मे
तुम्हारा नाम आ गया है
इमलिए यह समर्पित है
तुम्ही को
तुम अपने प्यार की गरमी से
पिघला देना
सूरज को
जब वह जम जायेगा

—अभिमन्यु अनंत

जम गयासूरज

उसे समुद्र से प्यार था। वेहद प्यार था उसे उन फनिल लहरा से। ज्वार भाटो से छुटी उन तरगा को कासी चट्टाना स टकरात तप उसे उतना ही आन द आता था जितना कि अपन लहलहात वेत की हरियाली से। चट्टाना की बठोरता को वह हमेशा सराहना रहता। वह उसके लिए सकल्प की बठोरता थी। कभी न खडित होने का सकल्प। वह चाहता कि उसके अपन भीतर भी इसी तरह की दत्ता आये। लहरा का भी वह उतना ही महत्व देता जितना कि अडिग चट्टानो को। लहरो के प्रण का सराह प्रिना वह रह कस सनता था। ये व लहरें थी जो चट्टान के सकल्प का पहचानती हुइ भी अपने प्रण से कभी बाज नहीं आती। लहरा न भी हमेशा यही चाहा कि वे चट्टान को चकनाचूर करे ही दम लें। उनका गजन लालमन के कानो म यह कहता सा प्रतीत होता कि हम हार नहा मानेंगी और जब तक ये चट्टानें चूर चूर नहीं हा जाती तब तक हम इनसे टकरात रहन स कोइ भी ताकत नहा राक सकती।

लालमन का समुद्र से बेहद प्यार था। उतना ही प्यार जितना उसे अपन परिवार से था। उसे लहरा और चट्टानो दोना पर उतना ही विश्वास था जितना उसे भामा पर था। जिम तरह समुद्र स दूर रहकर भी वह उसके नाद का सुना करता था ठीक उसी तरह भामा स दूर होकर भी वह उसके उन गीता को सुना करता जो वह उसकी कविताआ क थल म गाया करती थी। सागर का नीचा पन उसे जितना प्यारा था उतनी ही प्यारी उस अपन वेता की हरियाली भी थी। उसके लिए समुद्र की अथाह गहराइ और भामा की आँखा की स्निग्धता म एक समानता थी। समुद्र का सगीत भी उम उतना ही प्रिय था जितना कि अपन खेन के पशिया का कजरव। फिर भी अगर हर बार वह समुद्र तट नहीं पहुच पाता था ता केवल इसलिए कि वह अपने खेत स कुछ अधिक बंधा हाना। अपने खन

क कामास समय निवालना उसक लिए कठिन था। समुद्र उमक सत से बहुत दूर भी न था, फिर भी अगर रोज वह उसक तट पर नही पहुँचता तो उसका यह भी एक कारण था कि उससे बहुत अधिक घनिष्ठता बढ़ाकर वह उसक महत्व का घटाना नही चाहता था। यह उसकी मा की हर समय की कहावत थी कि बहुत भीठे म पिल्लू पडजाता है। लालमन चाहता था कि उसके भीतर समुद्र के लिए एक तडप रहे। हर वकन उसके निनारे पहुँचकर वह उस चाह को मिटाना नही चाहता था। उस दिन उमन मामा स भी कहा था कि चीजजितनी दूर और जितनी दुलम होती है आदमी की नजरा म उसका महत्व भी उतना ही अधिक होता है। यह कहत हुए उम क्या मालूम था कि वह बात उसक जीवन म उत्तर आयगी। वह हमेशा सोचता था कि तडपने म भी एक आनन्द निहित हागा पर जब अवसर आ ही गया तब कही जाकर उस मालम हुआ कि वह महंगा सौगा ठहरा।

रविवार को अपन सत का एक चक्कर काटकर वह घर लौटा जाता था पर आज उसन ऐसा नही किया। घर को लौटाने वाली उस सीधी पगडडी को न लेकर आज उसन चक्करदार पगडडी का लिया था और इस समय समुद्र के निनारे घा पहुचा था। उसी की तरह समुद्र भी आगत था। चाँगी की तरह चम चम चमकती बालू पर बठ जाने पर हेमात की वह धूप उसे घोर भी प्यारी लगी। प्रवाल रखा की वाली चट्टानो पर फनिल ज्वारभाट बिद्रोह कर रह थ। निनारे की सहरे भी उफनती हुई बालू पर काफी दूर तक बनी चनी आती। समुद्र के बीच पाल गिराय एक नाव झवेली थी। उसन सोचा गायन इस तरह का दिन बहुत कम हाता हागा। ठड के साथ चमकती धूप का उतास दिन। आकाश का वह नीलापन भी कुछ अधिक ही गहरा था जिसम समुद्र का रंग भी काफी चट्टीला था। दूध की तरह फनिल ज्वार भाटा का गजन काफी प्रलयकर था मानो वह अपनी ममी ताकत क साथ प्रकृति की उदासी को गलिन कर दन की बात सोच रहा था। कुछ ही दूरी पर पन्डिक-धीन था। बनी रमणीयता ता थी पर उतासी भी थी। तबिन वह यज्ञ भी मानन को तयार था कि वह उमरी अपनी उतासी थी जिस वह हर जगह भनक्त दग रहा था। बालू पर जनी तनी भाव क पना की परछाई थी जा कि धूप क चटकीलपन का भी घपना घोर उतान बना रही थी।

मचमुच कम तरह का दिन बहुत कम हाता हागा। पहनी बार क अपने को री म नही पा रहा था। उसन शरीर म एक अजीब सी गिपितता थी। उमन ममान भी अतमाय थ। अपन जीवन म पहनी बार कन उमन मनम का भी काम न। किया था। तबनी घोर जगती नहा हात ता एक भी चमन न टूटना और मनुका मगन की गना गाना सीट जानी। वन उम गया मगा या मागो घन

उस खेत में कोई आकषण नहीं था। वह लहलहाता खेत उसे निर्जीव-सा लगा था। वहाँ से भागना चाहकर भी वह बल के पेट के नाच बठा ही रह गया था। न जाने कब दबती और जगदीश को भी क्या हो गया था जिसके कारण दोनों में से किसी एक ने भी उससे बात नहीं की थी। यह अवश्य ही अविद्वसनीय था कि दोनों को उसकी उपासी का पता न चला हा फिर भी उस उपासी का कारण जानने की उद्धान कोशिश भी नहीं की। बाद में लालमन ने सोचा था ऐसा न करने दोना न भ्रष्टा ही किया था करना वह क्या उत्तर देता। उस तो भ्रष्टा की बात उस उपासी का कोई भी कारण मालूम नहीं था। यह सच था कि मामा की याद में उस भ्रष्टा की जाँच के साथ जकड़ लिया था पर यही उसकी उदासी का कारण रहा हो वह इस बात को बस मान सकता था। कभी-कभार रह रह कर मामा की याद उस अवश्य ही सता जाती थी पर वह याद उस निर्जीव सा बना दे यह मानन का वह तयार नहीं था।

वह चट्टानों और उसने टकराती लहरों को देखन लग जाता, अपने चट्टानों जस प्रण के कारण ही उसने खेत के उस चट्टानी भाग में भी सजिया की बलें लगा ली थी। उसका वाप में यह कहकर उस भाग को याही बरस सा छाड़ दिया था कि उस पयरीली जमीन में कुछ नहीं पैदा होगा। एक दिन समुद्र के इसी किनारे पर घनश्याम ने बालू से खेलने हुए बात ही बात में कह दिया था कि यहूदिया जसा मेहनतकश शायद ही बही हो। बालू में खेती करके व लोग दुनिया की हैरत में डाल चुके हैं। उसी क्षण लालमन ने सोचा था कि अगर वे लोग बालू में खेती कर सकते हैं तो मैं चट्टानों पर करूँगा। उसकी यह बात सुनकर उसका वाप को हसी आ गयी थी और उसने वह किया था— देख छोड़ी समधीन।' लेकिन जिस दिन उस मालूम हुआ था कि उमक खेत की उन चट्टानों पर कुम्हड़े तुरई कदरू और चिचडा पत्तन लायक थे उस दिन उसने ऊपर से तो कुछ न कहा था पर मन ही मन अवश्य ही कहा होगा कि तुम तो मुझमें भी अच्छे सतिहर निकल लल्लू!

पल्लव-बीच की भीड़ की आर न जाकर वह उस जगली बादाम के पेट की ओर चल पड़ा जहाँ की तनहाइ का कारण था वहाँ के बचण्डर में ली प्रमिया की मूरतु। लालमन उस समय बहुत ही छोटा रहा होगा जब यह दुघटना घटी थी, पर उस समय गाँवमें मे जो खलबली मच गयी थी वह उस आज भी याद है। गाँव के सभी लोग उस स्थान को मनहूस कहते। गंगा-स्नान के अवसर पर कोई भूला मत्वा अगर वहाँ चला भी जाता तो वहाँ की लहरों को दब के साथ कराहत सुन भाग घाना। लालमन अगर उस स्थान को पसन्द करता था तो उस दब मरी कराह के कारण ही। उम स्थान पर पहुँचने के लिए श्वन बाबू से होना हुए चट्टानों पर सभी होकर जाना पड़ता था। रत पर भ्रष्टा क्षणिक प

गिरा की छोड़कर वह चट्टान पर गावधानी से पर रगता हुआ उड़ा तथा । चट्टान पर अजीब विभव था । वही पर वह विभव जात पर उस आना हाथ को नीचे सफमाकर शरीर में मनुवन लाता पड जाता । हर काम का कार्य लग पत्थर। पर रगत हुए उसे पूरी गावधानी बागी ल रहा थी । वही विभवने विगतत समत जाता और वही गगना गमला विमल जात में उम मगा सा था जाता । बरफ़र वात स्थान व आम पाय का समुद्र गात था । वही उदारभाट नहा थ । छोटी मोटी तरंग था जा गिर त उपर पहुँची धूप व शरण शीत व टुट्टा की तरह चमकत गम गम रग थी । वही का स्थिरता का दगर लातमन मन ही मन गावना वि कम गम गागर की गम तरह वगने न होना पाणि था । अपन भीतर मारी बरफ़र छिपाय हुए भा लोका की धागा दन व निग ऊपर स यह गा त है । अधिन साचा पर म्प गत उमरा गुण गा उम प्रतीत होन लगती । धागिर चिल्ला चिन्तावर अपनी गमित का प्रगन क्या किया जाय ?

वदप्टर व टोप सामने बागाम की ऊपर धा गयी माटी जडा पर गडा एन छोटा सा लहना नीच व पानी में तरती हुई छोटी मछलिया का दग रहा था । चट्टाना से टकर फिर बालू पर चलत हुए वह उस सज का झार बढ़ने लगा । पधर की दान कुछ इतनी अधिन फुनकी थी वि वदम धमत चन जात और उद उठाने व कमी कमी बठिनाई पग धा जाती । परा का ह्णात ही उनस बने गप्ट तुरत ही लहरा के साथ धाय पानी से भर जात और ऊपर भाग से पग हा गत और फिर कुछ ही क्षण में बालू पानी का साथ जाती और भाग कुछ घी तफ छाय रह गात । इस स्थान से प्रवाल रवा के पास उठन प्रलयकर ज्वारभाट कुछ अधिव भयानक लगत । वह अरती नाव इस समय आवा से धाकन थी । बादलो से खाली आकाश में पक्षिया के कई भूट उड चल जा रह थे । कुछ ही क्षण पहल चट्टाना से टकराती लहरा व छोटा से लालमन व कपड कुछ मीग चल थ ।

लडन के पास पहुचकर लालमन भी उसी मोतपन के साथ मछलियो को देखता रहा । वही लडके की उम्र का वह था जज इही न ही मछलिया को फसान के लिए वह दिन भर घर से बाहर रहता था । वे दिन उसक लिए एक अजीब विश्वास के दिन थे । मछलिया कभी हाथ नही लगती थी फिर भी उसे हमेशा यही विश्वास रहता था कि आज न सही कल पर वह कल कभी नही आया था और उसकी प्रतीशा करते हर दूसरे दिन वह अपन मनया विश्वास पाता । उसके सभी दोस्त भी उस समय उसी की तरह थ । अब उसके व ही मित्र वात वात पर हताश और निराश दीपत है । उनम से कुछ की नारा में तातमन अब भी वच्चा था । लालमन को इस वात की खुशी थी । वह चाहता भी

यही था कि जीवनभर बच्चा ही बना रह। वह इस बात को मली नाति समझता था कि किन वाता के लिए उसके कुछ मित्र उसे ऐसा कहत थ। उस बसा रहना पसंद था।

जगती दादाभ की जडा पर कण्ड इधर से उधर दौड रह थ। समुद्र का गजन धीरे धीरे बढ़ता ही जा रहा था। लहरें प्रलयकारी हानी जा रही थी। लालमन व साथ साथ वह छोटा सा लडका भी इस बात को अच्छी तरह समझता था कि कुछ ही देर में लहरों की पुहार उन जडों तक पहुँचने लग जायेंगी जहा दोना खडे थे। लालमन एकदम उस लडके को देखने लगा था और वह लडका छोटी मछलिया के उस झुंड को देख रहा था जा पानी में खीलना सा प्रतीत हा रहा था। और जब लडके पर स आग्य हटाकर लालमन ने उन मछलिया की ओर देखा उस समय उसे एसा महसूस हुआ कि आदमी के मस्तिष्क में विचार भी ठीक इही मछलिया की तरह खीलते रहत हैं।

लडके को ध्यानमग्न छोड अपने ही खयालो में लाय हुए वह आग बढ़ गया—उस ओर जहा मनुष्या की अपनी अपनी नावें किनारा पर बँधी छोटी माटी तरगा के साथ टगमगा रही थी। इस ओर की बालू उतनी स्वतः हात हुए भी दर तक फनी हुई थी जिससे इधर या किनारा काफी विस्तृत दिखाइपता। जहा तहा मछलिया व जान बूझ म सूखने के लिए पडे हुए थ। कही पाल अत्र भी अंधभीगी हालत में थी तो कही मन्तूल को नारियल के पड के सहार खडा छाट दिया गया था। सामन की हरी बार्ड के डर स कतराकर वह उस स्थान से आग बढ़ा जहा उसने आगे आगे कोई अपने परो व चिह्न छोड गया था। वह आदमी भारी भरकम होया तभी तो पर के निशान उतने गहरे थ। पीछे मुट्कर अपने परा व निगाना को देखते हुए लालमन को के किसी बच्च व परा के निगान स लग रहे थे। उसका दाहिना पर एक अघटूटे घोरे पर पडने ही वाता था कि उनमें गन्नी से उसे सम्भाल लिया और उस लाघत हुए आगे बढ़ गया। मन ही मन सोचा न जान इमे बनाने वाले बच्च न कितनी महत्त की होगी और कितन अरमान के साथ इसे पूरा किया होगा। उससे पहन गुजरन वात भारी भरकम कर्म का इस बात की जरा भी परवाह नही थी तभी तो घोरे का एक भाग उसके भारी बोभ न डह गया था। वह उस स्थान पर चलन लगा था जहाँ रात की उफनती लहरें सबसे अधिक दूरी तक आ सकी थी। उस स्थान पर उन लहरों के निगान अत्र भी थे। बाईं ओर सूये हुए भाग अमी भी स्पष्ट थे। लहरों की वह अतिम भीमा थी जिममें उधर जाना उनके लिए कसल तूफाना में सम्भव हो सकता है। अपने कर्मा से उनमगी सीपिया और कौटिया को उचान हुए वह चन रहा था जिह् रात की लहरों न बरहमी के साथ किनार पर फट लिया था। उसने एक घर हुए बड-स के बडे को दया जिम पर मक्खियाँ

मिनमिना रही थी। आखें नीचे विये वह चलता रहा। उसकी नजर उस पीले रंग की कौड़ी पर पड़ी और वह ठिठक गया। इसी तरह की एक कौड़ी, पर इससे कम सुंदर उसके अपने घर पर थी। वह उसके घर की अलमारी की उस दरार में थी जिसमें उसकी माँ पैसे रखती थी। जब वह उस कौड़ी को वहाँ से लेने की कोशिश करता उस समय उसकी माँ उस लेने से रोकती हुई कहती—

—यह चित्त कौड़ी है।

—चित्त कौड़ी क्या होती है?—अपने पूरे भालेपन के साथ वह माँ से पूछता।

—पता कौड़ी रंगने से बरकत होती है।

अपनी माँ की वही बात लहरा की मिली जुली आवाज के साथ उस मुनाई पड़ गयी। वह घुटना के बल बठ गया। सामन की उस कौड़ी में एक अजीब चमक थी। उसका वह पीलापन अतीव सुंदर था। आसपास की सभी कौड़ियाँ सभिन थीं वह चित्तकौड़ी। अपनी तीन अंगुलियाँ सथामनर लालमन ने उसे अपने दूसरे हाथ की हथेली पर रखा और गौर से देखने लगा। बचपन की उसकी एक बहुत पुरानी तमना पूरी हुई थी। उसने हाथ में बरकत की कौड़ी थी। उसकी अपनी कौड़ी। अपना माम्य। उस पर लगे रेत के कणों को उसने कमीज से पाछा। और भी चमक आ गयी उसमें। खुनी खुनी उस अपनी जब के हवाले कर लालमन कुछ क्षण के लिए वही बठा रहा। यहाँ की बिसाद्ध गंध स आज उमकी सिर नहीं चकरा रहा था। आज मछलियों का गिबार बन होने के कारण वह रौनक नहीं थी। बगल के एक बेंगल से एक गौरी लडकी तरन के हल्के नीले कपड़े में उमर सामने से गुजरी। वह उस देखता रहा। उसके पारिरीक लावण्य पर उसकी आँखें टिकी रहीं। यही मौसल सुन्दरता मामा में थी और मामा की मूरत उसकी आँखा के सामने भिन्नमिना उठी।

मामा मौसल थी पर माँ नहीं थी। लम्बी थी पर लालमन से बोर्ड चार पाँच इंच छोटी ही थी। उसकी आँखा में समुद्र जसा नीलापन था। उसकी वे नजरें स्निग्ध थीं। वह जब लालमन की आँखें दगती उस समय लालमन विचित्र हो जाता। उसका बाल काली चट्टाना से भी अधिक काल और प्रवान रेखा से भी अधिक लम्बे थे। उफनते ज्वार भाँटा की हाँतरह व भी घुघराते थे और हवा के थोड़े से प्रागाहन पर उसी तरह बिद्राही भी थे।

लालमन ने दरार उगारी लडकी को समुद्र के ठंडे पानी में डुबकी मारने का कुछ हिचकिचाहट हृद पर फिर दगते हाँसते छपाक से बरपात्रा में बूँत पड़ी। उमर उस सुन्दर शरीर की गन्धियता को वह दगता रहा। मामा सभिन की उमरी दृष्टा भीतर-ही भीतर प्रवल हाँसती थी तबिन उमर माह्य की वर कमी अत्र भाँ थी। वह गौरी लडकी का मामा जमी न हाँसर भी लालमन को एतम मामा जसा सम रता थी, हाँसा का पानी का मन्त्र पर मारती हूँ सहारा की

विपरीत दिशा में तरती चली गयी। लालमन अपने स्थान से उठा और बालू पर छोड़े अपने ही परा के निशाना का गिनता हुआ घर की ओर चल पड़ा। कुछ दूर आन पर उमने दग्ना कि बादाम की जड़ वाला वह लडका अपनी ही धुन में बालू पर उछलता कूदता उसके आगे आगे चला जा रहा था। लालमन ने सोचा, बच्चा का यह भालापन, यह निर्दिष्टता बड़ हो जाने पर कहा गायब हो जाती है।

वह उस ऊबड़ खाबड़ रास्त पर चलने लगा था जा बलगाडियो के चलते रहने से अजीबोगरीब हालत में थी। जिन दो किनारा पर गाडियो के पहिय पड़त थे वहाँ दो नालिया सी बन गयी थी। अगल बगल नोकीले पत्थरदाता की तरह बाहर निकले हुए थे। बीच में दूर तक जाती हुई हरी दूब की लम्बी बतार थी। रास्ते में एक आर भाव के पेड़ थे, दूसरी ओर ईख के सहलहाते खत बटन के लिए तयार सड़े थे। भाव के पेड़ के बीच फुसफुगाहट थी। उधर देखे बिना ही लालमन का मालूम हो गया कि गाव के कुछ लोग भावे की लकड़ी चुरा रहे थे। धीरे धीरे आस पास के सभी जगला के उठ जाने के कारण सचमुच ही लकडियो का मुहाल था। उस आर अधिक ध्यान न देकर वह अपने ही खयाला के साथ कदम उठाता हुआ घर की ओर बढ़ता गया।

जान-बूझकर उसने यह लम्बा रास्ता लिया था। यह रास्ता उस पगडडी से लगभग दुगुना लम्बा था जिससे हाकर उसका रोज का आना जाना होता है। जिस रास्त से वह इस वस्त चल रहा था उमी पर गाँव का शिवालय मिलता है। इस समय लालमन की आँखें शिवालय के कलश पर थी। इस शिवालय को ध्यान से देखते हुए वह अपने उन पूवजा के बार में माचने को विवश हो जाता जो भारत से यहा कुलिया के रूप में आय थे। उन गुलामी के दिना में भी जिन लोगो ने बिना किसी आधुनिक उपकरणों से इतना विशाल मन्दिर बना डाला हो वे कैसे लोग हाग ? इस प्रश्न के सामने लालमन की कल्पना वावसी हो जाती। घम सम्बन्धी बातों पर बहुत कम ध्यान देते हुए भी उसका मस्तिष्क इस शिवालय के सामने भुक् ही जाता था। वह नतमस्तक हो जाता अपने पूवजों के गौरव के सामने। उसे लगना कि लोगो की यह धारणा गलत है कि आज का इंसान पहले के इंसान से अधिक आगे है। वह तो यही माचता रहता था कि सभी सुविधाओं का पाकर भी आज का इंसान अपनी अमुविधा का कारण बन बैठा है।

लगभग आधा घंटे बाद लालमन अपने घर पहुँचा। वह जानता था कि उसकी माँ उसे देखते ही पूछ बैठगी कि आखिर आज उसने इतनी देर क्या कर दी। उसका प्रश्न अभी पूरा भी न हुआ था कि लालमन ने उत्तर देते हुए कहा—

—धूमन चला गया था समुद्र की ओर।

—धरमन तुमसे मिलने आया था।

लालमन जानता था कि धरमन किस कारण उससे मिलने आया था।

अगल बगल धूमधाम के साथ इया की कटाई हो रही था।

ईश के घने खतों के बीच था वह सजिया का खत जिसमें वह सुनह से गाम तक कुछ-न कुछ बरत हो दिखाई पड़ता था। आज तक उससे पहले अभी भी कोई इन खतों के बीच नहीं पहुँचा था और उससे दूर कोई खतों को छोड़ता भी नहीं था।

जुलाई का महीना था— ठंड से भरपूर। लहलहाती ईया की कटाई शुरू हो चुकी थी। ईश के खत जितने घने होने उतना ही घना होता मजदूरों का संकल्प। उजाला हाने से पहले ही खेतों में चहल पहल शुरू हो जाती थी पर चूँकि वह हमेशा सभी से पहले खेत पहुँचने का आदी था इसलिए कटनों के मौसम में भी ठका लिये मजदूरों से पहले ही वह अपने खेत में पहुँच जाता। सामने की पगडडिया से गुजरते हुए गाँव के पास उसे खत में मौजूद पत्र लेकर म पठ जाते। कुछ लोग कहते कि यह लालमन शायद खत ही में सोकर रात बिताता होगा, तभी तो इसे प्राप्त जाते कोई देखता नहीं। अजीब नीजवान है यह—कोई कहता।

इसके हरे भरे खतों में सब से लहलहाते हुए तयार दीख रहे थे। इधर उधर के एक दो खत कटनों के बाद साफ दिखाई पड़ते। ईश के मूँय पत्ता का पीला वालीन बिछा सा दिखता जिस पर जहाँ जहाँ मुँडर के काने भूरे पत्थर भी दिखाई पड़ जाते थे।

शाम का सुनहरा रंग खतों की हरियाली से आग्न मिचौनी खल रहा था। जब लालमन ने सिर उठाकर नितिज की ओर देखा मूरज तब चुका था। तभी तो सुनी में समुद्र का गजन जागृदार हो चला था। मूरज को नियंत्रित हिंद महासागर की लहरों उफनती हुई अपने उल्लास को व्यक्त कर रही थी। सुनहली किरणें भी धुँधला पड़ती गयीं पर उनकी छाप जाकि मूरज के डूब जाने के बाद

मौ आसपास के खेतों पर अपनी छाप को बनाये रखती थी, आज भी ईख क हरे पत्ता स फिसलना नहीं चाह रही थी ।

घटे हुए खेतों की रौनक ममाप्त हो गयी थी । मना और गोरया के भुड़बने के, काँय-काय और ची ची की आवाजों के साथ उठे जा रहे थे । आधा मील की दूरी पर क मन्दिर और गिरजाघर के घटे एक साथ बज उठे थे । य घटे कभी आग पीछे भी बजते पर लालमन के लिए छह तभी बजत जय य घटे एक साथ बजत । यहा स ईश्व का कारखाना कोई तीन मील की दूरी पर था फिर भी माहिल गा त होने पर कभी कभार उसके चिंतलान की आवाज भी इन खेतों तक पहुँच ही जाती ।

देखत ही देखत सावलपन को घना करते हुए अंधेरा बढ़ता गया था और कधे पर कुदात्री और भात की टोकरी धाम लालमन भी घर की ओर बढ़चला । कभी तो वह अंधेरे म और कभी घटाटाप अंधरे म भी इस पगडंडी से होकर घर पहुँचा है । रास्ता भूलन की नीवत उसके सामन कभी नहीं आयी । उस इस मटियाली पगडंडी पर पूरा विश्वास था — अपनी जवान आँसों से भी अधिक् क्याकि यह उस सीधे घर तक पहुँचाकर हाँ दम तोटती थी । अपन घर स खत तक पहुँचाने वाल इस तग रास्त का छोड़कर वह अपन गाँव के बहुत कम रास्ता का जानता था । वह तो यही सोचता था कि हर काम मौके से हाता है और उसे तो इस रास्त स हमरे रास्त पर पञ्चन क बहुत कम मौके मिले थ ।

उस अपन गाँव क तुलसी महता की बात हर बयत याद रहती है । वह कहता था कि आदमी का अपन लिए एक निर्धारित रास्ता होना चाहिए । एक सीधा रास्ता । यह बात कहत हुए तुलसी महता का त जान क्या तात्पर्य रहा हो पर लालमन क लिए तो वह एकदम सीधी सीधी बात थी जिस पर वह अमल करता आ रहा था । उस यात्र है बचपन म वह एकाध बार डमलों के पडा वाले रास्त म मित्रा क साथ खलने चला गया था और उसक बाप ने उस कान पकडवाते हुए कहा था कि वह कभी भूल स भी उस रास्त स न जाय । उसके बाप ने इस फ्वावट का कोई भी कारण उग नहा बताया था पर उसकी मा ने उसक बालों पर हाथ फरते हुए कहा था कि उम रास्त म अच्छे रोग नही जाया करत । लालमन का इस बात स बडा आश्चर्य हुआ था और काफी दर बाद जब वह कुछ बडा हाँ चला था तब उसे मानूम हुआ था कि उस रास्त म दो तीन एसी औरतें रहती हैं जा अपनी गरम को बचकर जीती हैं । यह बात भी उगकी ममभ म उस समय अच्छी तरह नहीं आयी थी पर इस मामूली बात पर सिर खपाना उचित न ममभ उसन उसे भुला दना ही ठीक ममभ था ।

ईख क हिलत डोलत पत्ता को ठट से बापत देग उसक अपन गरीर म भी सिहरन आ ही गयी थी । जगली कीडा की मिली जुली आवाजा क साथ स्वर

मिलाकर गुनगुनाते हुए वह चलता रहा। उस सिनमा का बहुत शौक था और उसने अपने साथिया की तुलना में बहुत कम फिल्म देखी थी पर फिल्मी गाना का उस बहुत अधिक शौक था। बात बात पर फिल्मी गीत गुनगुनाते रहने के कारण वह कई बार अपने बाप से खरी छोटी सुन चुका था पर यही एक बात थी जिसे वह अपने बाप की बातों से भी अधिक महत्व देता। एक तरह से ये फिल्मी गीत उसके एकाकीपन के अच्छे साथी थे। कभी तो एक-दो गाना पर वह देर तक सोचता ही रह जाता था। उस ऐसा लगता मानो उन गीतों में बहुत बड़ी-बड़ी बातें कह डाली गयी हों। और उसके मन में भी गीत रचने का विचार पदा हो जाता। धीरे धीरे गीत की एक नयी पत्तिया बन भी जाती और वह उन्हें फिल्मी धुन के साथ गुनगुनाने लगता। ठंड में अपने इन गीतों से उस गरमी भी मिल जाती। इधर कई दिनों से वह एक ट्राजिस्टर रेडियो खरीदने की बात भी सोचता आ रहा था।

हर शाम जब रात होने लगी होती उसकी माँ घर से बाहर आँगन में खड़ी उसकी राह देखती। उसका बाप अपनी आँसों की कमजोर रोशनी के कारण सूरज की बिदाई के साथ ही अपने को घर के भीतर बंद कर लेता। जबकि दिन ही में उसे कुछ ही दूरी की चीज पहचानने में दिक्कत होती थी तो फिर रात तो रात ठहरी। लालमन की माँ रोज अपने बेटे की राह देखती और रोज उस देखते ही उसके हृदय की घड़कनें तेज हो जाती। उन खिंची की घड़कना के साथ वह लम्बी साँस लेकर अपने बेटे का बंधा थाम घर के भीतर पहुँचती।

अपने घर के चिराग पर नजर पड़ते ही लालमन गीत गुनगुनाना बंद कर देता। अपने बाप के सामने उसका सारा समय खामोशी में बीत जाता था। उसे अपनी खामोशी खलता सी लगती पर न जान क्यों चाहकर भी वह अपने बाप के सामने बातें न कर पाता। इस बात के लिए उसकी माँ और दोना छोटी बहनें भी उसे कई बार टोक चुकी थीं। उसकी माँ बार बार यही प्रश्न उसके सामने रखती कि आखिर बात क्या है जो वह अपने बाप के सामने होते ही गूंगा बन जाता है। वह अपने बाप से उतना अधिक तो नहीं डरता जितना कि स्कूल के अध्यापक से कभी डरता था। अगर वह सरकारी स्कूल में चार कक्षाओं से अधिक नहीं पढ़ सका तो चौथी कक्षा के अपने अध्यापक के कारण ही। दुनिया में वही एक व्यक्ति था जो उस कभी भी आत्मी जसा नहीं लगा। वह सचमुच ही उससे भयभीत था। पर अपने बाप से डरने की बात को वह खुद नहीं समझ पाता। अपनी बहनो से बातें करत हुए वह इसी नतीजे पर पहुँचता कि वह बात डर जसी कोई चीज नहीं है और कुछ और ही थी। उन दिनों की एक धुंधली याद उसके भीतर बाकी थी जब उसका बाप उसके बोलने के हर प्रयास को रोकते हुए वह उठना या कि बड़ा के गामने बच्च नहीं बोला करत और अगर अब भी वह

उसके सामने नहीं बोलता है या बहुत कम बोलता है तो केवल इसी एक बात के लिए कि वह अब भी अपने को छोटा और अपने बाप को बड़ा मानता था।

वह तीस पार कर चुका था। उसके ऊपरी हाठ की मूँछें भी घनी होने लगी थीं। चेहरे पर एक-दो ऐसी फुसियाँ भी आ गयी थीं जिनसे उसके साथी जवानी की फुसिया कहते। तीन बप पहले ही चारी से उसने अपने बाप के उस्तर को अपने गालों पर फरा था और तभी से दाढ़ी बनाना उसके लिए जरूरी हो गया था। लालमन ने विरासत में अपने बाप के शरीर को दृढ़ पाया था और चेहरा माँ का था। उसका चेहरा अपनी दोनों बहनों से एकदम मिलता जुलता था। वह केवल प्रमा का रंग था जो कि घर के किसी भी व्यक्ति के रंग से नहीं मिलता था।

उसकी माँ का घर पर सबसे अधिक खयाल मफाई का हाता इसलिए लालमन को विषय यह आदत बना लनी पड़ी थी कि खेत से लौटते हुए चाहे कितनी ही रात और ठंड क्यों न हो हाथ-पाँव धोकर ही घर के भीतर पहुँचना होता। इस आदत को बनाए रखने में लालमन प्रायः अपनी माँ की आखी में घुल भौंक जाता। उस दिखाते हुए वह नल के पास तो पहुँच जाता था पर उस अँधरे में नल को पूरा खानकर वह बाद मिनटों के लिए दूरी पर खड़ा रहता और फिर मुट्ठी भर पानी हाथ मुँह पर लपटकर वह घर के भीतर पहुँच जाता। उसकी दोनों बहनों ने प्रमा उसकी इस बात का जानती थी पर उसे मना लेना लालमन के लिए बाएँ हाथ का खेल था। उसके सामने मुमकराकर केवल इतना कह देना उसके लिए बहुत होता कि ठंडक हड़िया तक पहुँच रही है। इस तरह के बहाने उसे गरमी में नहीं करने पड़ते थे क्योंकि उस मौसम में रोज बिना नहाये उससे रहा नहीं जाता था।

घर में प्रवेश करके लालमन एक नजर अपने बाप की ओर देखता गया वह उसका मौन अभिवादन ही। फिर दूसरे कमरे में पहुँचकर अपनी भात की टोकरी को दीवार की खूटी से लटका देता। छाया जिसे हमेशा अपने भाई की प्रतीक्षा होती थी, रसोईघर से दौड़कर आती और उस गाँव की कोई न कोई बात सुनाने लग जाती। छाया की उम्र कोई बारह बप थी। उसकी बातें लालमन को बहुत अच्छी लगती पर उसकी माँ को यह बात तनिक भी पसंद नहीं थी। वह बार-बार छाया को कोसती हुई यही कहती कि उसकी जीभ बहुत लम्बी है, साम के घर उसका गुजारा कैसे होगा। लालमन को यह बात अभी-बसी लगती कि भागिर लड़कियों को भूगी बनाने की कोशिश क्या की जाती है? उसकी अपनी चुप्पी पर माँ उसे कोसती और छाया और प्रमा को वह हमेशा अधिक बोलने से रोक करती थी। प्रमा लालमन से तो ही बप छोटी थी। छाया की उम्र की हौन पर वह भी उमी की तरह चाँय चाँय बोला करती थी पर जल्द

जलती सिगरेट छुटन न पाती। लालमन का लगता कि सचमुच ही आदत बहुत ताकतवर होती है। उसके मस्तिष्क में प्रश्न पदा हो जाता—क्या अच्छी आदतें भी इसी तरह साक्त हुआ करती हैं? वह अपने ही भीतर तलाशता रह जाता। पर उसे अपने में कोई भी आदत दिखाई नहीं पड़ती और फिर आदत के लिए तो अवकाश चाहिए जो कि उसके पास विलकुल नहीं था। अधिक सोचते रहने पर खेत की जिदगी उसे आन्त सी ही प्रतीत होती, पर अपने आप से तक करके वह उसे कुछ और ही समझना अधिक उचित समझता।

बालू के भारी बोझ के साथ चिल्लाती चीत्कारती लारी रास्त से गुजरी। उसकी उस प्रलयकर घरघराहट से हर हृदय दहल गया हागा। काफी दूर तक वह आवाज लोगों के कानों में गूँगी रह गयी। लालमन की तद्रा टूट चुकी थी। उसने प्रभा की ओर देखा। वह कडाही में फोरन तैयार कर रही थी। लालमन ने जाना कि भव दाल छौंकी जान वाली थी और चंद ही मिनटों में भात की थाली उसके सामने होगी। उसने सोचा भूख भी क्या अजीब चीज है। जिस बगन की तरकारी से उसे चिड़ है उसी के लिए भूख उस बेनाब कर रही थी।

उसकी माँ और छाया के रसोई के भीतर आन पर उसके हाथ में थाली आ गई थी। सभी चीजें गरम थीं और थाली की वह गरमी उस बहुत ही अच्छी लग रही थी। कौर गरम होते हुए भी वह उहे मुह तक पहुँचाता ही गया। पहली बार बगन की तरकारी उसे इतनी स्वादिष्ट लग रही थी। उसके ठीक सामने बठी राधिका उसे एकटक देखे जा रही थी। लालमन आज भी उसके लिए वही न हा सा लल्लू था जिस गाढ़ में लिय आगन में घुमा घुमाकर वह खिताया करती थी और जब लल्लू खान से इनकार करता वट उसे लखडबग्घे का डर दिखाते हुए जल्नी जल्नी एक दो कौर अधिक खिलाकर आत्म सताप की गहरी सास लेती। इस समय भी अपने बेटे को ताते देख वह उसी पुरान सुप का मन-ही मन अनुभव करने लगी थी।

लालमन दोबारा भात मागता कि इससे पहले ही प्रभा ने भर कलछी भात उसकी थाली में रख लिया और दिन कुछ बहे लालमन थाली की बची दाल के साथ उस सानने लगा।

खाना खा लेने के बाद घर के सभी लोग बीच वाले कमरे में चन्दन के इद गिद बठ जात । टिमटिमाते चिराग के प्रकाश में सभी की आँखें चन्दन पर होती । प्रभा और छाया उससे एकदम सटकर चारपाई पर बठी होती और लाल मन अपनी मा के साथ सामने की दूसरी चारपाई पर । अपनी म्वासी पर कजा पाकर उसका बाप कहानिया सुनाया करता और वे सभी सुना करते । लालमन कभी सुनत सुनत दूररे न्यालो में भी खो जाता । बड़ी ही रोचकता और सजीवता के साथ चन्दन कहानियाँ सुनाया करता था । इस परिपाटी को निभात हुए उसकी सभी कहानिया समाप्त हा जाती और फिर से वह उहा कहानियो को कुछ दूसरे ढग से जोड तोडकर सुनान लग जाता जो पहले सुना चुका होता । हर कहानी का गुरू करने का उसका ढग एक ही जसा होता । गुरू हमेशा वह इस तरह करता—'बहुत दिन पहल एक देश मे और समाप्ति के बाद इन चन्दन कहाना का कहना कभी न मूलता— वे लोग सुख चन से रहन लग । उसकी सभी कहानियो में कोई न कोई राक्षस या कोई परी अवश्य होती थी । सभी में दुख और सपप के बाद अंत में सुख और खुशी होती ।

अपने बाप की उन कहानिया पर गौर करते हुए लालमन अपने आप सोचता रहता और पूछता कि वे सभी राक्षस और परिया अन्न कहा चली गयी । फिर सोचता—वे कही गये न हागे वल्कि इस दुनिया में किसी दूसरे रूप में छिपे हुए होंगे सभी तो दुनिया में बुराइयाँ और अच्छाइया आज भी होती रहती हैं । वह तो यही मानता था कि सभी बुराइयो को धरन वाले वे राक्षस ही होते होंगे और सभी अच्छाइयाँ परियाँ ही बरती हागी ।

बीच में रली अँगोठी के कोयला के अँगारे अपनी चमकती लाली को खोकर अब अपनी खासियत को खोने लगे थे । भूरी राख की परता के नीचे से एकाध

बार हवा के किसी अकारण भोके से प्रभावित व फिर से प्रज्वलित होना चाह कर भी असफल रह जाते । अपनी खोयी हुई शक्ति को दायारा पाना बड़ा ही कठिन था उनके लिए । लालमन अंगारा से आगे हटाकर अपने बाप की ओर देखने लग जाता और उसे लगता कि सम्मुख ही खोयी हुई शक्ति का फिर से पाना कठिन ही नहीं असम्भव है । उस अपनी शक्ति का भान था । लोधा के मुह से सनकर वह इस सच्चाई को भी जानता था कि गाब म उसकी तरह शक्ति रखने वाले बहुत कम । उन्का बाप भी यही कहता था कि उसके अपने जीवनकाल म कोई भी उसकी टक्कर वा नहीं था । वह तो अपनी जवानी और ताकत का सदुपयोग कर चुका था । अपनी मा से लालमन को यह बात भी मालूम हुई कि इस घर म आज जो कुछ भी है वह उसका बाप की ताकत की बंदोबस्त है । इस घर म कभी कुट भी नहीं था और आज बहुत कुछ है और इन सभी बातों के पीछे सघन लगन और परिश्रम की एक लम्बी कहानी थी । राधिका से शादी के समय च दन उस खत म एक मामूली सा मजदूर या जा आज उमका अपना खेत है । घरने चलचूने आज वह बार घोषा खेत का मालिक था । अपने बाप के सभी विस्मा व माय माय वह उसकी इस गन्धी कहानी के बारे म भी बहुत ध्यान से सावधानता और उसका भीतर अपने आप एक प्रश्न सा पदा हो जाता कि उम भी अपनी जवानी और शक्ति का पूरा लाभ उठाना है । घघकत अंगारा को वह गिथिल पडते देखता आ रहा है वो इस बात का प्रमाण था कि हर शक्ति वा कभी न कभी अत हागा । अपनी शक्ति का अधिक-अ अधिक उपयोग करने के लिये सही वह अपने समय के अधिक भाग को सना के हवाने करता आ रहा है ।

ऐस तो अपनी और प्रेच उमका कबल घोषी तन पनी थी परन्तु अपनी हिंसी की पत्नी उसका काफी दर तन जारी गी थी । एक तरह म उमका बन् पत्नी अभी भी नहीं रुकी थी । उमका की परीक्षा न सन व बाद भी वह पत्नी ही रहता । उम खुद इन बात का आश्चर्य जाना कि हिंसी की पत्नी को उमने इतनी लगन व माय कर अपनाया था । सन म भी उसकी भाव की टानरी म हिंसी की पत्नी न का पुनक अवश्य जानी थी लेकिन उम का उमका ही आभास जाना कि इस पत्नी म उसका अधिक महत्त नयी करना पडी है । उमका अपनी मित्र सरकार म हिंसी अयापन बनन की कच्छा निय पत्नी थ निजम म कवन मुमुवा का बन् म काम मगन रहा । लालमन व हिंसी पत्नी व पाछ को भी काम मगन नयी था । हिंसी म उम तगाव था मगतिर व उम पडता था । कुछ मित्र उमका बन् कि आन्दिर व अग्रजी और प्रेच का आकुल अध्ययन क्या नहीं कर जाता निजम उमका मकराग म नवा म हिंसी अध्ययन उन बात की आता होनी इस पर लालमन हमकर रह जाता । उमकी आता नकरा

म खेता के काम से अच्छा कोई भी दूसरा काम नहीं था। यह सच था कि खेती के काम में अधिक थकावट होती है अधिक पसीना बहाना पड़ता है पर काम की जरूरत इन बातों को ध्यान में रखकर किया जाता था फिर वह काम किस काम का।

वह कृषि क्षेत्र अधिक पसंद था और उसके भीतर अपनी अनुभूतियों को भी लागू करने की प्रतीति देती थी पर प्रतिक्रिया के भय से वह ऐसा नहीं कर पाता। फिर भी अपनी इस प्रतीति को समय के साथ कभी न कभी साकार करने की उसकी आशा कभी भी धुंधली नहीं पड़ पाती थी। यदा कदा वह अपने भीतर के कुछ भावों को घनश्याम के सामने गुनगुना दना और घनश्याम हर बार यही कहता कि उसे अपने इन भावों को लिखना ही चाहिए।

केवल गनिवार के दिन वह अपने मत से सवेरे नौटंका था और उमी मौक पर वह अपने इन गिने गिना के बीच जाता। रविवार को आम पान के किसी भी खेत में काम नहीं होता तब वह था कि अपना मन का एक चक्कर काटे बिना रह नहीं सकता था। अगर रविवार के दिन वह खेत नहीं पहुँचता तो उसकी दोस्ती घरमेन से कभी न होती क्योंकि घरमेन गहर में रहकर पड़ता था और कबन अपना शनिवार और रविवार गाव में बिताता था। पहले लालमेन घरमेन को नहीं जानता था। इसी बात को नहीं थी पर उसके साथ उसकी दोस्ती नहीं थी। हर रविवार कंधे पर एक लटकाय घरमेन खरगोश के गिहार का निबन्ध था। और इस अवसर पर हमारा लालमेन से उसकी बातें होती थी और फिर समय के साथ दोनों के बीच घनिष्ठता बढ़ती गयी। इन बातों से लालमेन की माँ को भी कम खुशी नहीं हुई थी कि रमेश्वरसिंह के बेटे से उसके बेटे की मित्रता हो चली थी।

सभी के चेहरे पर मिट्टी के तल के चिराग की आभा थी। सबसे अधिक प्रकाश उसका बाप के चेहरे पर था जिससे उसकी कानो मूछा के बीच के इन गिने सफेद बाल उसका हर सक्रियता के साथ चमक उठते। उसकी धूमिल आँखें सूरज की तरह चमक उठती जिससे देखने वाले को यह भावना में टिकिचाहट होती कि वे धूप की सतही आँख थी जिन्होंने अपनी आमा का तीन चौथाई भाग खेता में चमकती मूय किरणों को दे दिया था ठीक उसी तरह जिस तरह उमने अपनी शारीरिक शक्ति को भी अपने खेतों के चपे चपे पर बिखेर दिया था। आगे के दिन उसे अपनी एक चौथाई शक्ति के साथ काटने थे और बाकी दुस्रों को एक चौथाई रोगनी से देखना था। उसकी अपनी कमजोर आँखा के सामने चीजें भी एक चौथाई हैमियत रखती थीं। वह तो यह मानता था कि आज भी सही सलामत था और धुंधला तो बाहरी वातावरण था। उसे लगता था कि चिराग अब पहले जसी लगन से नहीं चलता। उसे इस बात का डर था कि कहीं यह हवा उसके बेटे का भी न लग जाये और वह भी पुराना की लगन में

निधिलता ग सा द । घर म पढ पढे भी उग घाट्ठी टुनिया की कुल न कुछ एबर मिल ही जाती थी । नय जमाने क नय साग उग घाट्ठी प्रतीन हा । इन टयासो स चितित उसे पुरगा की यात्रा भा जाता स्वाभाविक था । बह घाट्ठी के साथ यह अपन आपन प्रान करता रि क्या यह तयो पीढ़ी अपन पूवजा क खून स चितित है और घर नही ता फिर उगम यह सत्रियता थी कभी कहीं ग भा गयी । क्या य उही भारतीय कुनिया की गाता है जिहा अपन माय क पसीने की रूँ नूद ग इस घरती का गीचा है । यह यह कम मान न कि य नय लोग इस बात का भी भून गय है रि इस दग की मर्मादि उनर बाप-गाता की थानी है ।

भाज बह अपनी घीना को करोन कन्विन किस्म गुनाया करता है पर कभी उसकी माँ उस इस दग की सच्ची कहानियाँ सुनाया करती थी—उन प्रथम अत्रवासिया की कहानी जिहने असा और अनावटि स तग अतर अपने प्यारे बिहार को छोडा था अपनी भारत माँ का छोडा था—इग उम्मीन स कि मारीच के देग म क अछे दिन दय पायेंग ।

चदन के सामने वे दक्ष साकार और गजीव हा जात । उन तमाम दक्ष को जिहें उसन देगा तो नही था पर अपनी माँ क मुह म मना था क अपनी आँया के सामने देखने लग जाता और उसके साथ ही उसकी माँ का स्वर भी स्पष्ट होता जाता ।

‘ बडी उम्मीदवा क सग हम सब हियाँ पहुच ली जा पर उम्मीदवा पर पानी फिर गयल जय गवन को मालूम भयन रि परयर क नीचे माना नही बिठू ही बिच्छू होवे । ही दुग वनन क स हाई । नुत्ता स भी गाल गुजरल जीवन वितावे परल । एक दाना चावल के खातिर सौ बूद पसीना और दस बूद खून ।

चदन बिह्वल हो जाता पर फिर लालमन की ओर देखत हुए वह मन-ही मन सतोष कर लेता क्याकि उसका लालमन किसी तरह के बहानावे म नही आया था । उसे नेता की जमीन से घुणा नही थी और वह सरकारी नौकरी के प्रलोभन म नही आया था इस बात की उस सुनी थी । उसे इस बात का भी सतोष था कि अमी से अगर उसका परिवार कुछ भी न करे तब भी घर क पाँचा सदस्यो का जीवन काफी लम्ब समय तक सुख गाति क साथ गुजर सकता था । लेकिन अनपढ होते हुए भी चदन इस बात को महत्त्व दता था कि अच्छे कामो के लिए सतोष मीत की निगानी है । इसलिए उसे इस बात का सतोष नही था कि इतना कुछ हो गया अत्र इससे अधिक क्या होन को । उस अब भी अपने बाप और दादा के कामा और सफलताया की तुलना म अपनी सफलता अधूरी सी प्रतीत होती । यही कारण था कि वह चाहता था रि उसके अधूरे काम का

उसका इक्लौता बेटा पूरा करे। किस्मत से उसे इस बात की गिफायत जन्म ही कि उमन उसे एक ही बेटा क्या दिया पर इस बात का सतोप भी था कि लालमन अधूरा मर ही था।

अंगीठी के अंगारा के अमित्वहीन होते ही बाहर की ठंड ने भीतर प्रवेश पा लिया। परो के पास स मम्बल उठाने चन्दन ने उसे अपने गले तक लपेट लिया। लालमन अभी उस ठंड को महसूस भी न कर पाया था कि उसकी माँ ने अपनी साड़ी के अंचल को उसकी पीठ पर फला दिया। लालमन ने माँ की ओर देखा और फिर कहानी सुनने लग गया। यह वही पुरानी कहानी थी जो पहले भी कई बार उसका बाप सुना चुका था और जिसमें एक रानी के दो बेटे होते हैं—एक के मुँह में तारा और दूसरे के मुँह में चाँद।

कई बार इस कहानी को सुन चुकने के कारण लालमन का ध्यान उस पर न होकर टाजिस्टर रेडियो पर था। तीन बप हाने को है जब पहली बार उसने अपनी माँ से रेडियो खरीदने की बात कही थी। उस समय उसके बाप ने कहा था कि पड़ोस के रेडियो की आवाज जब अपने घर में इतनी साफ हो तो फिर रेडियो खरीदना मूल्यता नहीं तो और क्या। उसकी माँ को भी अपने पति की बात जब गयी थी और उसने भी हँसकर लालमन से यही कहा था कि जब घन श्याम के रेडियो की आवाज अपने यहाँ एकदम साफ सुनाई पड़ती है तो फिर दूसरा रेडियो खरीदने में क्या लाभ! कुछ निराशा के साथ वह अपनी माँ की बात मान गया था लेकिन इधर कुछ दिना स उसके भीतर रेडियो की नई इच्छा जागी थी। इसलिए नहीं कि घरमन का टाजिस्टर उसे बहुत पसंद आ गया था बल्कि उसमें आकाशवाणी और सीलोन रेडियो स जा सुन्दर गाने प्रसारित होते थे उसे बेताब-से कर गये थे। वह चाहता था कि खेत में काम करते समय वह अपने रेडियो को बल के पेड़ से टाग दे। उससे आत समीत में खोकर वह कुछ अथिक काम कर लेने की बात सोचने लगा था।

अम्मी रुपये में रेडियो मित्र जान की सम्भावना थी। माँ के पास उसके अपने पचहत्तर रुपये धरोहर थे। जो कम होगा वह माँ दे देगी इसकी पूरी उम्मीद थी उसे। पहल तो उसने सोचा था कि घनश्याम ही को पसा दे देगा और वह अपना ही जसा रेडियो शहर से खरीदकर ला देगा, पर फिर खुद शहर पहुँचकर खरीदने की उमग को वह मोही दबा भी तो नहीं द सकता था। अपने जीवन में उसने बहुत कम चीज खरीदी थी। पिछली सत्राति के अयसर पर जब उसने अपने लिए नीले रंग की कमीज खुद खरीदी थी उस समय तो उसे ऐसा एहसास हुआ था मानो उसने दुनिया खरीद ली हो। सचमुच ही चीजें अपने आप खरीदने में एक आनंद था। वह उस आनंद की ललक को छोड़ना नहीं चाहता था।

आज कहानी उस लम्बी प्रतीत हा रही थी । वह चाहता था कि वह जल्दी पूरा हो जाये ताकि दूसरे कमर म पहुँचकर वह अपनी माँ स रडिया की बात कह सके, पर जितनी जल्दी वह चाहता था कहानी समाप्त होन म उनकी ही देर हो रही थी । अपने बाप की अब तक की कहानियाँ म इतनी नीरमता का आभास उस कभी नहीं हुआ था । उस हैरत थी कि उसकी दोनों बहन उस कहानी का उतन अधिक ध्यान स कैसे मुन पा रही था । उसकी माँ भी तो पलकें नहीं झपका रही थी । इन कल्पित बातों को सुनत हण उसकी माँ की आवाँ म हमेशा आसू आते रहत थे । कभी कुछ कहानियाँ लालमन के हृदय को भी छू जाती पर वह ऊपर से मुसकराते हुए अपनी माँ को पगली कह जाता ।

उसके बाप के दोनों हाथ कमबल के भीतर काँपत मे लग रह थे । वह कपन उसकी आवाज म भी था । बाहर स पेडा क पत्ता क ठिठुरन और काँपने की आवाजें भी रह रहकर सुनाई पड जाती । कोई आधा मील की दूरी स समुद्र के कराहन की आवाज भी तीस लिय आ जाती थी । ठड की कसक सभी स्वरो म थी । एक आबारा खयाल ने लालमन को यह साचन को विवश कर दिया कि दस बडाके की ठड म रात नगी काँप रही थी । हवा म जो सिसकिया थी वट रात की व्याकुलता थी । इस आबारा अकारण खयाल के साथ उस उन लोगो की याद भी आ गयी जो अपने छाजनहीन घरों म अधनग सो रहे हागे । यह तयाल एकदम अकारण नहीं था क्योंकि अपना कहानी म उसका बाप इसी तरह का मिलती जुलती गरीबी का शिकर रहा था और लालमन ने अपनी माँ की आँखों क आँसुआ म चिराग की भिनामिलाती रोशनी को भनरत दया । लालमन जानता था कि पुराने दिना की याद क थे आँसू थे । उसकी माँ अपने बचपन के दिना की कहानी सुनाती हुई कभी नहीं रानी थी । वह अपने सभी आँसुआ को भीतर ही रोके रह जाती थी पर उसकी तीना श्रीलाद अपने आँसुआ को नहीं थाम पाती थी । लालमन की आँखा से अगर कभी आँसू टपने थ तो वह केवल अपनी माँ का अतीत सुनकर ।

बिल्ली जोकि ठडो पडो अँगोठी के पास बठी थी किसी चूहे की भाँव पाकर दूसरे कमरे की ओर भपट पडी । चूहा चू चू करता हुआ जान बचाने के लिए बिल की ओर दौडा । कहानी एक क्षण थमकर फिर अपनी बही रफ्तार त चुकी थी । बिल्ली भी निराग लाट आयी थी । लालमन न सोचा कि चूहा हर क्षण अपने को भीत स बचाता रहता है । बिल के बाहर हर कक मौन उगना त्तजार करती रहती है । उसकी परवाह किय त्रिना क बिल स बाहर हाता हा रहता है । मौन जब उस पर भपटनी है तो वह किसी-न किसी तरह बिल म पनाह पा ही लता है । यह साचत हुए लालमन का इमान और चह म एक बहत मारा पक त्रिनाई पन्न नग जाना ।

चिराग की लौ का भी अभी बहार ठंड से काप जाना उतना ही स्वामाविक था जितना कि लालमन का भी एकध बार ठंड का महसूस करके सिहर जाना। चिराग के कापने से रात का रस और भा चटकीला हो जाता। चप्पन नया सिगरेट जलाए और कग के बाद कहानी को आगे बढ़ाया। बीच बीच में उसकी खासी भी जारी रहनी। छाया को आखें नींद से बोभिल होन लगी थी, फिर भी अपने को भपनिया से बचात हुए वह अपने बाप की बगल में बठी रही। बिल्ली की चमकती हुई आखें अपने खाय हुए गिंकार की तलाश में चंचल थी और लालमन का अपना ग्याल भी चंचल था।

कहानी बाफो दर से समाप्त हुई। अपनी मा के पीछे पीछे लालमन भी बिनाबैबाले कमर में पहुँचा जहाँ उसकी मा अपनी दोनों लडकियों के साथ सोती थी। वह अपनी माँ की चारपाई पर बठ गया। बिना कोई भूमिका वाले उमन सीधे मा के सामने ट्राजिस्टर की बात रखी। राधिका पहले तो कुछ सोचती रही, फिर लालमन की घोर दखनर बोली—

—मैं सोचती हूँ तुम्हें रडियो से अधिक आवश्यकता कपडा की है।

—कपड बाद में खरीद लूँगा।

—मैं तो चाहूँगी कि तुम रैन्थो बाद में खरीदो। तुम्हारे जो पस में पास हैं उनसे नया सात के लिए अपने कुछ कपडे खरीद लो, नन्नु।

—नया सात तो अभी दूर है मा।

—सातन में दूर है पर तुम देखो कि देखत ही खेत कटनी समाप्त होगा और सामन आ जाएगा। दिन बीतते दर नहीं लगनी।

अपने भाग्य में रेडियो नहीं। लालमन ने जान-बूझकर इस ढंग से कहा जिससे उसकी मा को उस पर त्याग आ गई।

—तुम तो बच्चा की तरह बातें करने लगे। मैंने यह थोड़े ही कहा कि तुम रेडियो न खरीको। भर कहने का मतलब तो बवल इतना है कि पहले उससे भी आवश्यक चीज का प्रयत्न कर लो, फिर त्याग जाएगा।

—पर फिर क्या कहेंगे मैं आँगा ?

—मैं दूँगी।

लालमन ने कुछ नहा कहा और टलकी निरागा के साथ उस कमर में लौट गया जहाँ उसका चारपाई के नीचे मिनी चूह की ताक में बठी थी। घनश्याम के घर में अत्र भी रेडियो का संगीत गूजना हुआ चला आ रहा था और लालमन का ध्यान अब भी खयाल में जकटा हुआ था। उसी के बोझ के साथ वह अपनी चारपाई पर बठ गया।

वहनी बार परमन को धरत कुश व गाय सरगोग व पीदा, पीदा व पारत तालमन का एसा लगा था कि उस गिहार १, १ घागा है । सरगोग भा की मुरा को पार करता हुआ उसके गाम । स गुजर गया था । परमन का मुत्ता ऊँचा मुठर व पाम भीरता हुआ धाय पीदा, दीरता हुआ उस पार करत म प्रसमप था और परमन निगाना साध गटा का गटा रह गया था । पदन तालमन भी दा सरगोग व पीदे हाय धारत पटा हुआ था । उस समय उगत भा म सम और बगत व पीध ध—सरगोग का मापाहा साध । सेत व पारा और की मुरा व बीच-बीच म उसात जा जाल डाल रहे थ उनसे भी छूटकर व निरल भागत । सरगोग की कीर्द बहुत ही बुद्धिमान जातवर बताना तो कीर्द बहुत मूस । तालमन सोचता, सायन उस पतत्र का यह सरगोग मिल जाये जा गिह ता का पत्रमा दे गया था । उससे कम होंगियार सरगोग उस कीर्द दगत को मिने थ जो जाल व भीतर से न हारत मुठर व उपर छत्रांग माररर निरल जान थ । उस वे चार पाँच मूग सरगोग भी मिन थे जा बगत व पीधा को चट करन से पहल ही जाल मे फस गये थे । पाँचवाँ सरगोग जो उस मिन था यह जीवित था । छाया को बहुत प्रच्छा नग्ने व कारण तालमन ने उसी गाम तगडी और सोहे व तारा से एक कठपरा बनाकर उस उसम रल छोडा था । दूगरे तिन से उसके लिए हरी पतिपाँ सान की जिम्मेदारी भी उस पर आ गयी था । और सेत से सौटते हुए पजे भर घाम लाना वह कभी नहीं भूलता । धीरे धीरे उसे भी छाया की तरह सरगोग से लगाव हो चला था और वह भी उससे बाँते करने लग जाता ।

एक सप्ताह बाद ही एक दूसरा सरगोग भा उसके हाथ आ गया था । उसे भी उसने उसी पिंजड म रखा । सरगोग हमेशा उस एक उदास जानवर सा लगता था पर दूसरे खरगोश के आते ही दोना सरगोश हर वक्त उसे हसते-से

लेगते। अपनी अपनी मूछा पर ताव दत हुए दोनों आपस में खेलते रहते और उस दिन जब घनश्याम ने कह दिया था कि खरगोश सभी जानवरों से अधिक प्यार करना जानते हैं तो लालमन भी उनकी नीटाना का अध्ययन करने लग गया था। उम भी ऐसा ही प्रतीत हुआ था कि दोनों खरगोश जी भरकर एक दूसरे से प्यार करते थे। दोनों खरगोशों को अपने से बहतर समझते हुए उसे क्षणिक ईर्ष्या भी हो जाती। पिजरे में वह खरगोशों के खेला को देखते हुए वह मन ही मन सोचता कि इस आजाद देश में आजाद लागा से अधिक खुशमनसीब तो य बंदी हैं। अधिक सोचते रहने पर वह इस नतीजे पर पहुँचता कि जो जीना जानता है वह हर जगह इसी खुशी के साथ जी सकता है।

पिजरे के दाना खरगोशों से मारी लगाव हो जाने पर लालमन ने अपने खेत के सभी जालों को हटा दिया। अब खरगोश उसके खेत में स्वच्छन्द घूमते। चकि खेत में उनका खान पान सजिया नहीं थी, इसलिए जगली घास पत्तों को खाकर वे बिला में लोट जाते। अभी कल ही की तो बात है, कुएँ की बगल वाली झाड़ी में उसने दो खरगोशों का आपस में खेलत देखा था। दोनों जवान खरगोश अपनी ही पुन में कुछ इस तरह प्याय हुए थे कि उन्हें लालमन की उपस्थिति का तनिक भी भान नहीं था। अपने कानों को खड़े किए, मूछा का मटकते हुए, एक दूसरे की नाक से नाक रगड़ते हुए दाना प्यार भरी बातें किये जा रहे थे। वह दृश्य ही कुछ इतना अधिक प्यार था कि लालमन के हृदय में भी बरबस ही एक इच्छा सी जाग उठी थी। लेकिन उस एसा एहसास हुआ था कि स्वतन्त्रता केवल जानवरों को नहीं है इंसानों को नहीं। मन ही मन उसने सोचा—क्या इंसान भी इतनी स्वतन्त्रता के साथ एक दूसरे को प्यार कर सकता है? न जाने वह कौन सी दीवार थी कौन सी भिन्नक! दाना खरगोश लम्बी घासों के बीच कभी लोट जाते और कभी कभी इधर उधर की दौड़ जाते। कहते हैं खरगोश सतक जानवर है लेकिन लालमन देख रहा था कि अपने प्यार भरे खेल में वे बेखतर थे। प्रलयकर आवाज और मौन दोनों से बपरवाह वह अपनी ही मस्ती में खेलते रह गया था।

खरगोशों के पास अपनी रक्षा के लिए ही कोई सीमा था न ही कोई ताकत, फिर भी प्रकृति ने उनकी टांगों का वह रफ्तार दी थी कि दौड़कर वे अपनी रक्षा कर लेते। लालमन की नज़रों में यह छोटा सा प्यारा जानवर अजीब ताकतवर ठहरा। कभी न थकने वाली उसकी टांगों के धारे में सोचते हुए वह मन ही मन कह उठता कि आखिर आत्मा के परा को भी यह रफ्तार क्या न मिली। पर तभी खयाल आता कि इंसान का अगर यह विशेषता मिली होती तो गायद वह दुनिया की हर अच्छाई और अपने पदोंस की समृद्धि को चुराकर इसतेजी से मागता फिरता कि कभी उसे कोई पकड़ न पाता। फिर हँसकर सोचने लग जाता कि अच्छा

हुआ भगवान् ने इसात को बहुत जल्द थक जाने वाला जीव बनाया था यथा वह अनर्थों से कभी नहीं पकता। उसे लगता कि आत्मीय के भीतर की हरमहत्त्वयता एकदम खोखली चीज है, तभी तो हरछोटे से छोट जानवरकी निजी विप्रेयताआ के सामने वह लाघव भावना महसूस करता होगा। जानवरा की विप्रेयताआ से हीन वह उनकी बुराईया की अपने म पावर अपनी विप्रेयता समझ बठता है। यही कारण है कि कभी वमार कुत्ते का आत्मीय स अच्छा बतयाया जाता है उसक बाद गुणा के कारण और कभी आदमी को कुत्ते से भी गया गुजरा कहा जाता है।

पूरी आजादी के साथ इन दो मोल मान जानवरो को खेत देख उसने सोचा था कि घर जात ही अपने यहा के बाद दोनो खरगोण को भी मुक्त कर देगा पर छाया उस ऐसा करने दती तब तो। पहले दिन जब उसके घर खरगोण पका था उस समय वह अपने बाप के लिए दो माप शराब खरीद लाया था। घर के सभी लोगो ने कहा था कि गोशत बहुत ही नरम और स्वादिष्ट था इस लिए उस भी मानना ही पचा था। अब खरगोणो मे एक तरह की दोस्ती भी हो जाने पर वह सोचता क्या अब उसी चाब से खरगोण का मास खाना उसस हो सकंगा? कभी उस अपनी भावुकता पर हसी भी आ जाती। उस दिन घरमन न कहा था कि कुत्त का पकड में खरगोण के आ जान पर दौडकर उस कुत्ते के पजा और मुह से छीनना पडता है। इससे साफ था कि कुत्ते को भी खरगोण का गोशत उतना ही आता था जितना कि आत्मी को।

गाम कुछ अधिक सिद्धरी थी। बगल के खतो में ईस के बगनी फूल कुछ अधिक मस्ती के साथ भूमरह थे। घरमन का कुत्ता उससे पहले ही लालमन के खेत में घुस आया था। इन कुत्त को अपने खेत में दौडते देख लालमन भीतर ही भीतर खीभ्रतर रह जाता। खरियत यह थी कि सजिया के पीछे बढ साथ थे जिससे नुकसान का उतना डर तो न था फिर भी उसे यह बात पसंद नहीं थी। मिच मिडी और बगन की जगह अगर टमाटर के पीछे हाते तो न जाने उनकी क्या गत होती। अप्रत्यक्ष रूप से लालमन कई बार घरमेन से कह चुका था कि उसके कुत्ते का इस तरह खेत में दौडना उसे पसंद नहीं पर घरमन बात समझने की कोशिश ही नहीं करता।

कुत्ता मिट्टी सूधता हुआ कुण की ओर चल गया। कुछ ही मिनट बाद सामने की पगडडी से घरमेन भी कंधे पर बडूक घामे आता दिखाई पडा। निराई समाप्त करके लालमन कमर सीधी कर रहा था। घरमेन को अपनी ओर आने दख, बेल के पड के नाचे पहुंच चहा पड एक बड से पत्यर पर बठ गया। इधर कुछ टिना से कॉजिज की छुट्टी थी जिसस घरमेन का इधर आना प्राय रोज ही हुआ करता था। अपने कुत्ते के पीछे न जानर घरमेन पगडडी छोडत हुए बल के नीचे आ गया। लालमन के पास ही बठते हुए उसन जत्र से सिगरेट का पकेट निकाला

और लाईन्टर से मुलगाते हुए दूसरे हाथ से पकेट को लालमन की ओर बढ़ा दिया । लालमन कुछ न बोलकर उसे दगता रहा और धरमन ने पकेट को अपनी कमीज की ऊपरी जेब में पहुँचाते हुए अपने निचले हाठ का आगे बढ़ाकर पहले कश के घुए को ऊपर फेंका और हँसते हुए कहा—

—मेरे कनिज की लडकियाँ तक सिगरेट पी लेती हैं ।

—समी ?—हैरत के साथ लालमन ने पूछा ।

—समी तो नहीं । फिर भी अनक हैं ।

—हिंदू लडकियाँ ?

—हिंदू लडकियाँ भी ।

—बस राम हागी व ।

—तुम तो मेरे भाइ स भी अधिक बूढ़े विचार वाले हो । खर ! कल मेरे यहा पहुँच रहे हो या नहीं ?

—तुम्हारी ये सिगरेट धीनवाली लडकियाँ भी बहा आयेंगी ?

—उह दखना चाहत हा ?—लालमन के मुह पर धुआँ फँकते हुए धरमन ने पूछा ।

—उनसे वचना चाहता हूँ ।

—ता इतमीनान रखो व नहीं आ रही हैं ।

गितिज पर शाम की लाली जमी सी लग रही थी । समुद्र का गजन क्रमश बढता ही जा रहा था । पीनी उड जा रहे थे । धरमन की व दूक इम समय उसके परा के पास थी । उसका कुत्ता गध लाकर दुम हिनाता हुआ लौट आया था । कुछ ही दूर के किसी घेन में ईश की पुरानी जग को हटाने के लिए आग लगायी गयी थी । घघकती लपटों के साथ काला धुआँ आकाश में उठता चला जा रहा था । आग का आग खेता में प्रवण पाने से राकन के लिए बहुत म लोग के इधर से उधर दौडने का दश्य भी उस धुआँधार वातावरण में स्पष्ट था । मिसी जुली आवाज का बोलाहल लपटा के साथ जोर पकडता जा रहा था ।

कुछ मिनट बाद सूरज की किरणों अपनी लालिमा को छोडकर सागर की अघाह गहराई में खो गयी थी । आग की लपटों के साथ मिलकर वह लाली और भी चटकीली थी । नीचे से बढूक को उठाने उसकी नली को पाछते हुए धरमन ने कहा—

—आज गिकारी शिकार व पीछे नहीं जायेगा !—उसकी नजर आग लगे खत का ओर थी ।

लालमन उसकी इम बात का मालव समझ गया था । यह जान गया था कि आज धरमन यही बडे गिकार करेगा । इस बात में जरा भी सपेह नहीं था कि आग से बचन के लिए उधर के खगोश भागत हुए इधर आ निकलेगे । कुछ

ही देर बाप धरमन ने अपना का एक म तयार पाया । बरून तो वह इधर से उधर चहलकामी करता रहा । अपना कुत्ता का एक एक मौतन पाकर वह अधिक्तक होकर सामान की धार लगा । गरगराहट ! धीरे उमन गया एक बड़ा-सा सरगोण बतहाया पीडा पला घा रहा था । कुत्ता की आवाज सुनकर उमन रास्ता बन्ध गया । धरमन ने जल्दी कर दी थी जिससे गानी कुत्ता पट्टन ही निश्चल गयी थी । सनताती हुई वह सरगोण की नाच की बगन में निश्चल गयी । सरगोण ने दावारा जिया बालरर दोड़ता मुह बन गया था । एक लम्बे फामर से धरमन का कुत्ता भी उसका पीछे दोड़ता रहा । एक क्षण के लिए लालमन को ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह वही सरगोण था जिस बल उसने भागी व बीच एक दूसरे सरगोण के साथ संसत पाया था । उमक बररर निश्चल जान पर राहन की सम्मो सोम तत हुए उसी धीरे से कहा—

—तुम फिर चूक गये धरमन !

उसने कुछ इस ढंग से कहा गाया वह जीवन भर चूकता ही आया हा ।

धरमन के घर के सामने से वह कई बार गुजर चुका था । चारा धार से बांस की घिरावट के बीच में था उसका यह बड़ा मा घर । प्रवाणद्वार पर लोह का बड़ा सा पाठक था जिसकी छत्रा के बीच से उसका भांगन की पुनवारी साफ दिखाई पड़ती थी । लालमन जब भी इधर से गुजरा था उसकी आँखें पुलवारी के फूलों पर इस तरह निसार हो जाती कि सामने के मुन्डर घर को वह कभी भी अच्छा तरह देख नहा पाया था । पाठक खुता था फिर भी भीतर जात हुए उस हिचकिचाहट हो रही थी । इतना बड़ा भांगन और इतने बड़े घर में दाखिल होने का उस कभी मौका नहीं मिला था । मेत का काम देवती और जगदीश पर छोड़कर आया था इसलिए उधर से तो वह मिलजुल निश्चल था । देवती नाते में उसकी बहन लगती थी और जगदीश धनुवा भगत का नाती था । जगदीश गुरु से ही उसके साथ काम करता आ रहा है जबकि देवती केवल उन मौकों पर लालमन का काम करती है जबकि खत का काम बढ जाता हो या सजियाँ तोड़नी पड़ती हो । आज उसने रात में मिच और बगन एक साथ तोड़े गये थे । वह उस समय खत से निवला था जब धनुवा भगत की गाड़ी सजियाँ बटोरने उसका खत में पहुँच गयी थी और देवती जगदीश के साथ बगना को बोरे में भर रही थी ।

धरमन के घर के सामने पहुँचकर उसने उस आवाज दी । दरवाजा खोलकर उस भीतर प्रवेश कराने वाला घनश्याम था । घनश्याम को सामने पाकर उसकी हिचकिचाहट और भिन्न जाती रही । जिस बड से कमरे में उसे बठाया गया उसमें पहले से गौतम और विगोर भी बठे हुए थे । लालमन गौतम के विसा

—पार्टी में दो लाख बरब चार पाने की उम्मीद भी तो थी।—बचाव बर्काल के स्वर में घनश्याम ने धरमेन की ओर देगते हुए कहा।

—यह भी एक कारण है जो मुझे झिलझिल पसा नहीं। एक तो पार्टी के कोलाहल से मुझे चिढ़ है दूसरी बात यह भी है कि मैं आनपण का कन्द्रियिदु बनना नहीं चाहता।

—अब तो मानाग न कि तुम्हारी इन्ही बातों के लिए तुम्हारे मित्र तुम्हें अजीब कहा करते हैं। आधुनिकता और आशावादीता की ओर हमें भाग्य भुके रहते हुए भी तुम पाटिये और आधुनिक रम्य रिवाजों से बतराते हो।

गौतम की इस बात पर धरमेन ने उसकी ओर देगा और फिर मुसकराकर कहा—

—तुम्हें यह मेरी विनयना ही नहीं प्रतीत होती ?

—ठीक है अपनी भी तो मौलिकता चाहिए।

—तो अपने तमाम दास्तों में कम उतासी में भाग लेने के लिए तुमने हमी चारों को अधिक याग्य समझा।—विगोर ने कहा।

—यही उतासी थोड़ा ही है। और फिर उतासी और खुशहाली में उदासी अधिक जीनियस है यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा क्योंकि तुम नेत्रसपियर के स्पेशलिस्ट ठहरे।

—यही बात अगर पहले कह दी होती तो कम से कम हम खाली हाथ तो न आते।

—जबकि तुम्हारा खाली हाथ आना मुझे अधिक पसन्द है। आदमी जब खाली हाथ आता है तो उसका हृदय खाली नहीं होता।

और देगते ही देखते उस बड़े से कमरे में अच्छी खासी पार्टी जम गयी। लालमन अपनी हल्की आत्महीनता के कारण सबसे कम बोल पा रहा था। धरमेन की भाभी जब अपने हाथों चारों को खाना परोस रही थी उस समय धरमेन ने उसकी ओर एकटक देखते हुए कहा था—

—इस घर में मैं भाभी का सबसे प्रिय हूँ।

जिस निगाह से उसकी भाभी ने उसे देखा था उससे किसी को धरमेन की बात पर अविश्वास न हुआ। उस छोटी सी पार्टी में जो सब से बड़ी बात हो गयी वह थी चारों मित्रों के विवश करने पर लालमन का भी धीरे धीरे गिलास खाली कर जाना। दूसरे गिलास को भी उसी भिन्न के साथ उठाते हुए वह अपने घर लौटने से डरने का लक्षण था। पर इस डर के बीच भी उसे प्रभा पर विश्वास था।

पिछले तूफान से पहले रसोईघर बहुत ही छोटा था पर तूफान से छाजन उड़ जाने के बाद जब चन्दन न उसकी मरम्मत गुरू की थी तो साथ ही उसने रसोईघर का कुछ अधिक विस्तृत भी कर दिया था। ऐसा करके उसने अपनी पत्नी को बहुत खुश पाया था। कभी इसी रसोईघर में प्रवेश करने के लिए राधिका का कमर काफी भुंकानी पड़ती थी जबकि अब सालमन भी जा निघर में सबसे लम्बा था बिना सिर झकाय भीतर आ जाता। राधिका पत्थर की नीवार से मत्कर बठी मयूर की दाल पटकार रही थी। ऐसा करत हुए भी उसकी नजर प्रभा पर थी जो चूत्हे की अधमीगी लकडिया का ठीक कर रही थी। रसोईघर धुआधार था। लकडिया को अच्छी तरह अलगा देने से लपटें धधक आया और धुआ कछ कम हुआ। कोने से ईन्व के दा मूने पत्ता को मरोड कर उसने लकडिया के बीच रख दिया जिमसे लपटें कुछ अधिक उपर उठ आयी। लकडिया अगर अधमीगा थी तो प्रभा अपने ही को उसका कारण मानती थी क्याकि बल बादला के उमरने से पहले ही उसकी मा न उसे आवाज दत हुए आगन से लकडिया का उठाकर रसोई में रख लने की बात कही थी। उस समय प्रभा अपनी नीली ओडनी में सफद बल बाड रही थी इसलिए उठने में उसे कुछ देर हा गयी थी और इतन में बारिश गुट हो गयी थी।

राधिका उसे पहले ही परी खानी मुना चुकी थी इसलिए अब चुपचाप उसे देख रही थी। प्रभा को हर बार कोसकर वह वाद में पछताती सी रह जाती थी क्याकि प्रभा छाया से भिन थी। छाया अधिक दुलार की होन के कारण वान-वात में मुहजोरी करती रहती जबकि प्रभा सभी कुछ मुनकर भी कभी मुह नहीं घालती थी। उसकी भून जितनी ही बडी हाती उतनी ही अधिक चुप्पी

साध रहती थी वह । कम से कम उमरी दस आठ पर राधिका का गुणी थी । छाया को वासती हुई वह हमसा यहा कहती कि उन पूरा विश्वास है कि प्रमा की समुगल से उन सभी भी काई उगाहना गुन उनो नही मित्रगा और अत म छाया का भी समझानी हुई बह यही कहती कि लडकियां जिनना कम कोने उतना ही अच्छी समझी जाती हैं । इस पर छाया तपान से कह उठनी—

—“गाम्” समुगल म । पर सभी तो मैं नहर म हूँ ।

और जब राधिका उसे यन्ने ग आत बनान की बात रहती तब वह दुनर कर कहती कि सभी तो बहुत सारे है । सभी से उनाई आत यही पढ़त पढचन छूट सकती है । उससे तब बरक जीतना राधिका का सभी नही थाया इसलिए हर बार वह यह कहकर चुग रह जाती मिठीर है नू ही मरी सास टहरी ।

ईय के मूम पता से प्रा माहन पानर चह की आग न मीगी लकनिया पर अधिनार पा लिया था । उन धधकती लपटा से राधिका के नहने का रग बदन सा गया था । उसने अथ कुम्हनाय चहर पर भी लपटा के कारण नई चमक आ गयी थी । उसरी आंला म अत्र भी आग की लपटा को एकटक अत रहन की ताकत थी । अपन पनि से मात्र दस बप छाटी होते हुए वह उससे कुछ अधिक ही कम उम्र की दीसती थी । उसके बाला के बीच बडी ही कठिनाई से किसी को एक दो सफेद बाल मित सकते थे । अगर उससे चेहरे पर एक दो सिलवटें थी तो उस पिछली बीमारी से जिससे कारण वह तीन महीना तब चारपाई नही छोड सकी थी । उसे एक ही साथ मधुमेह और बवासीर दाना की गिकायत थी । उसके परा म कुछ इस तरह की जलन हाती कि वह उस सह नही सकती थी । आपरेणन के वाट किसी तरह उसे बवासीर से तो छटकारा मिल गया था पर उसका मधुमेह अब भी बराबर था । मकी का मात और गहू की रोटी खाकर उसे जीना पड रहा था और वह जो रही थी उसी जगन के साथ जिससे उसने पहले भी सभी जीवन को जिया था । वे क्षण दाहण दण्ड यत्रणा और समाव के ये पर जब उह किसी तरह जी लिया गया था तो फिर उन क्षणा के सामन य दुख तो मामूली थ । उसे अपने इस रोगी जीवन म भी विनेपता दिखाई पडन लगी थी । वे दिन अपने और अपने पति के सुख के लिए जीने के दिन थे और ये दिन अपन बच्चो के सुख के लिए जीने के थे । अपन पति के प्रति बच्चो के आदर को बढ़ाते रहन के लिए वह हमगा कहती रहती कि इस घर की कुछ से कुछ बनाकर यहा तक लाने के लिए उसके पति को बहुत कुछ करना पडा था । अपने तीनों बच्चो को बहुत कुछ सुनाकर भी वह कुछ बातें नही सुनाती जिन पर बहुत सारे आमू पहले ही वह चुके थे ।

दाल फटकती हुई वह प्रमा की यह भी कह चुकी थी कि वह चल्हे म लकडी

विषासत स डाल । आसपास व सभी जगल साफ हो जाने व कारण लकड़ी का अभाव हो चला था । वह तो लालमन है जा बेत स लौटत हुए कभी-कभार कुछ लकड़िया लाता रहता है । वर्षों दान को है जय पिछली बार तुलसी महतो की पत्नी और पताहू के साथ वह समुद्र तिनारे भावे की सूखी लकड़ियां बटोरने गयी थी । अब न तो व लकड़िया थी और न ही उसम सिर पर बोझ ढोने की हिम्मत ।

दाल स चुने क्वड पयरा को वह बाहर फेंकती जाती और मुर्गिया उहे चुगती जाती । कभी उन मुर्गिया के बीच एक दो गौरया भी आ जाती और जय मुर्गिया उन पर भपटती तो वे पुर स उड जाती । मुर्गिया जब तग करती हुई पास तक आ जाती उस समय उनकी और त्रिना देखे ही राधिका अपने हाथ के सूप को थपथपाती हुई उन्हें खट्टेडने की कोशिश करती । एक क्षण के लिए मुर्गियां वहाँ स हट जाती पर दूसरे ही क्षण वे फिर आ जाती ।

प्रभा को कभी बेपरवाही के साथ रसार् में काम करते पाकर राधिका उसे समझान लग जाती । उसे लापरवाही और फिजूलखर्ची से चिड थी । तरकारी मे कुछ अधिक तेल पड जाना या जल्दी स चीनी या नमक का गिर जाना उस अच्छा नहीं लगता । वह चाहती था कि उसकी दोना लडकिया भी चीजा का मून्य समझें और उह सतना आय, क्योंकि वह यह मानती थी कि सतने से बरकत आती है । यह बात एकदम सही थी कि उसके पति ने अपनी जवानी स धोर परिश्रम किया था पर साथ साथ यह भी सही था कि राधिका ने घर को बडी ही कुशलता से चलाया था । उसके हाथो स बरकत थी । कभी भी जानकर उसने एक दान या एक बूद को फिजल नहीं जाने दिया । उसकी इस आदत पर चान हँसकर उस नजुसा की रानी कहता । हर चीज का दाता स पकडन की उसकी आदत को अगर उसक पति ने शुरू स कुछ और ही समझा था तो बाद मे उस अपने इरादे को बदलते हुए यह मानना ही पडा था कि वह गहिणी की विशपता ठहरी ।

चूल्हे के सामने से प्रभा के हट जाने पर लपटो की झिलमिलाहट उसकी माँ के चेहरे पर और भी स्पष्ट हो चली थी । एक धोर से उस पुराने चेहरे की झुर्रिया को स्पष्ट करती हुई वे उसकी उम पुरानी सुदरता को भी चमका रही थीं । समय के घषण व बादजूद भी वह चेहरा इस बात का गवाह था कि अति सुदर न होकर भी वह अपन समय का सुदर चेहरा था । उस सुदरता स शायद घुघलापन आ गया हा पर उसकी कल्पि वाकी थी । उस आँखा और होछो पर अब भी ममता की निमलता जवान थी और पराकाष्ठा पर थी । आँखें मगनयनी न होकर भी मातत्व और प्यार से लवालव थी । होठा पर जो थिरकन थी उसम भी वात्सल्य की चमक थी । आग की लपटा की चमक उस निव्य चमक

की चूमती सी लग रही थी।

बूढ़ पुरानी बातें थी जिन्हें याद करके राधिका को बहुत भारी मुय मिलता था। उन बातों में आसपास के लोगों की बूढ़ बातें भी हानी थी। तुलसी महतो की पत्नी कहती कि आसपास की सभी मासों राधिका को सराहती हुई अपनी अपनी बहूमा से कहती कि वे घर सम्भालना उसमें जाकर सीगें। राधिका को उन बातों से खुशी होती थी पर अधिक खुशी उस अपने पति की बातों से होती जब वह ही प्यार के साथ वह उसके बालों से सात हूण कहता कि वह गाँव की सबसे अच्छी पत्नी और सबसे योग्य माँ थी। राधिका जानती थी कि उसका पति उसे खुश करने के लिए बहुत सी भूखी प्रशंसाएँ भी कर जाता था फिर भी इस पिछले वाक्य पर वह हृदय से विश्वास कर जाती थी। एकाध बार लालमन ने भी तो उस कहा था—

—माँ, सबकुछ ही तुम दनिया की सबसे अच्छी माँ हो।

इस वाक्य की अनिर्णयोक्ति को समझत हुए भी राधिका उस भूठ मानने का तयार नहीं थी। मन ही मन वह यह भी महसूस करके चुप रहती कि भगवान ने उस अच्छा पति और अच्छी आत्मा दी थी। अपनी दोनों लज्जिया का अच्छा मानकर भी वह उन्हें केवल इसलिए डाँटती डपटती रहती थी ताकि वे अपनी अच्छाई में बाज न आएं।

कभी वह इस घर में अकेली रहती थी। चन्दन सेतो में होता था और उसका कोई बच्चा नहीं था। उस समय लालमन ने जन्म लेकर सबसे पहले उस घर की नीरसता को तोड़ा था, फिर घर की बरकत को बढ़ाया था। और जब प्रभा ने जन्म लिया तब तो पति पत्नी उस घर की लक्ष्मी समझ खुशी से गतगद हो गये थे। आज भी कभी कभी वह पुरानी तनहाई इस घर में आ ही जाती थी। लालमन सेतो में होता छाया कठिना में होती प्रभा सिलाई सीखने चली जाती और चन्दन तुलसी महतो के घर आल्हा सुनने चला जाता। अकेले में रहकर राधिका पुराने दिनों के दुख सुख के बारे में साचा करती। उन दुख सुख के दिनों को एक साथ याद करने में एक आनन्द निहित था और वह घटा उसमें खोयी रहती। उस समय वह घर की दीवारों से भी अधिक खामोश रहकर अतीत की खामोशी को सनती रहती। कभी तुलसी महतो की पत्नी पुकारती हुई भीतर आ जाती और उसे सपना में खोयी देख भूख भोर देती।

कभी एकाकीपन से उठकर वह अपने पति के साथ खेता की चली जाती। ज़िद करके ही वह चन्दन के साथ ही जाती थी क्योंकि चन्दन यह नहीं चाहता था कि खेता की बड़कती धूप में राधिका अपने गोर रंग को खा दे। रंग का उसे इतना अधिक खयाल था कि जब प्रभा का जन्म हुआ था उस समय उसके साँवलेपन को देखकर वह कई दिनों तक चिन्तित रह गया था। प्रभा ने नाक

नवने मे अपनी मा की मूरत पायी थी पर उमका रग अपने बाप से भी अधिक साँवला था । इस बात की चिन्ता चन्दन का आज भी थी जबकि राधिका इस अंतर को देख नहीं पाती । उमक भीतर जो माँ थी वह रग रूप में भमेले मे कभी न पड़कर अपने बच्चो में कबल अच्छी आर्त्तें डालन की चिन्ता में रहती । वह अच्छी तरह देख और समझ सकती थी कि प्रभा साँवली थी, गायद कुछ अधिक ही साँवली थी वह पर राधिका यह कैसे मान जाती कि वह गुदर न थी । गाँव के सभी लोग अगर एक स्वर में कहत कि प्रभा कुरूप है तो भी राधिका इस बात को नहीं मानती । उस अपने तीना बच्चा से प्रगाथ प्यार था और यही कारण था कि उसकी कमजोरियाँ की ओर देखने का उसे बहुत कम अवसर मिलता था । प्रभा और छाया का बच्चा मगर डांटती डपटती रहती थी तो उनकी कमजोरियों का देखकर नहीं जितना कि उह मुशील और सुलक्षणा बनाने के लिए ।

तुलसी महतो की स्त्री जब यह कहती कि पतन की बटी के पास सऊर नहीं मूरत नेकर क्या किया जाय तब मीरत ही न हाँ तो । वह गाँव की उन सभी लड़कियों को राधिका के सामने कासती रहती जा उसकी अपनी नजरों में बिना लच्छन की थी । उसकी बातों का मुन राधिका सहम सी जाती । सोचन लग जाती—वहाँ उमकी दोना लड़कियाँ का भी कोई फूहड, लदमेसरी और कुलच्छनी न रह उठे पर इस बात की आँका उस तानन भी नहीं थी कि कोई उसकी प्रभा को बदमूरत कह बडे ।

तीना बच्चा में अगर कभी प्रभा के लिए उसक भीतर घोड़ा सा स्नह अधिक पदा हो जाता तो उसक साँवलेपन पर दया करके नहीं बल्कि अतीत के उन दिना को याद करके जब सेत खरीदन के कारण उन लोग की स्थिति कुछ नाजुक हो गयी थी । उस समय गल तब बज था । तपी और अभाव के बीच भी राधिका न अपने पति और बालमन को कभी भूखा नहीं रखा था । उस समय छाया पेट में थी । अपने साम साथ कमा बभार वह प्रभा को भी भूखे सुला लेती थी । उस समय प्रभा आधी बाता को समझती और आधी को नहीं । फिर भी मा के साथ पेट दबाय चुपचाप सो जाती थी । उस दिन को राधिका कैसे भूल सकती थी जब उसन पति ने प्रभा से पूछा था कि उसने भात खाया या नहीं और भूखी प्रभा 'हाँ' कहकर दूसरे कमर में दौड गयी थी । उही दिनी राधिका न चाहा था कि वह भी सेत में पहुँचकर वहाँ के कामा में चन्दन का हाथ बँटाये पर चन्दन का यह बात मजूर नहीं थी । उस समय उसने राधिका के सामने जो बात कही थी वह भी राधिका को जीवन भर याद रहेगी । औरत घर की रानी हानी है जगता मेना की नहीं—उसके पति ने कहा था ।

प्रभा उसकी दूसरी बच्ची होत हुए भी एक तरह से उसकी तीसरी मन्तान

पागलपन, लालमन के लिए एक सपना । प्रमा इस बात को महत्व नहीं दे पाती जबकि छाया के लिए वह एक सकल्प था ।

अपने हाथ के सूप का बगल की लकड़ा की अध टूटी बुर्सी पर रखकर राधिका अपनी जगह स उठ पड़ी हुई । कोन की छोटी मेज पर के बरतनी स फूर की बटोरी उठाकर उसन उस प्रमा का दिखाते हुए रहा—

—लूड और राग की कभी हो गयी है क्या ?

प्रमा को समझते देर नहीं लगी कि उसकी मा बटोरी की सफाई से मतुप्प नहीं थी । मा के हाथ की बटोरी का उसन छिपी नजरों स दग्धा और सिर झुकाय खड़ी रही ।

—या खाती नहीं हो ? बरतना का रगटने की ताकत भी तुम्हारे हाथ स नहीं ! क्या कारण है कि मरे घान पर य ही बरतन सोन की तरह चमकन लग जाते हैं !

सामने के तस्ते पर से लाटे को उठाकर प्रमा को दिखाती हुई कहती—

—मेरा घाया हुआ है यह लोटा । उसम मुह दिखाई पड रहा है । आखें उठाकर देखती क्यों नहीं । साम के घर जाआगी तो भाग पकडकर मिसायगी । तुम्हे बरतन रगडना अभी तक न्ना आया ।

आग के बुझ जाने से रसोईघर धुआधार हो चला था । बटोरी को मेज पर भनक के साथ रखकर राधिका अपनी आन्वो को मलती हुई रसोईघर से बाहर हो गयी ।

सामने से फूकनी उठाकर चूह की फूकती हुई प्रमा अपनी मा की आवाज को सुनती रही । घर क भीतर वह छाया पर परस पडी थी—

—तुम्हारी टक्कर का कामचार कहीं और मिलना मुश्किल है । दिन रात पुस्तक को सामने रखे इस तरह बठी रहती हो जैसे पडिताइन बनने का इरादा है ।

—मां, तुम पन्ने नहीं देती ।

—भगवान जाने तुम पन्ती हो या हम पढाती हो ।

आग फिर से जल उठी । धुआ अपने आप कम हाता गया और प्रमा मेज से बटोरी उठाकर बरतन माजने चली गयी । बाहर की हवा स ठण्क थी ।

सबमुच प्रमा की बदौलत ही घर क किसी भी दूसरे व्यक्ति को यह मालूम न हो सका था कि उस दिन लालमन वीयर के हल्क नशे म घर लौटा था । सुबह प्रमा के सामने उसकी पलकें उठ नहीं पा रही थी क्योंकि केवल प्रमा थी जो इस बात को जानती थी कि लालमन ने अपनी मा की सबसे बड़ी सीप की भ्रवट्टेना कर डाली थी । प्रमा की उपस्थिति म भी राधिका कई बार लालमन को ये बातें मुना चुकी थी । वह शराब ही थी जिसके कारण उसकी माँ को दर दर की भिखारिन बनना पडा था । लालमन के नाना न शराब के पीछे पुरग्या की सारी कमाई पानी की तरह बहा दी थी । उन सभी दश्या को एक एक कर राधिका अपने बेट के सामने रखती जाती जो उसके परिवार के सत्यानाश के कारण बने थे । इस उद्देश्य से वह सब कुछ सुनाती ताकि उन भयानक दशयो से भयभीत होकर लालमन कभी भूल से भी शराब को हाथ न लगाये । लालमन अपनी मा के उद्देश्य को समझने म छोटा नहीं था पर क्या करता उस समय वह मिना और अपनी मा के बीच खडा था । उसन जो कुछ बिया था इस विचार मात्र स कि मा तो अपनी ठहरी उसकी उस भ्रवट्टेना को माफ कर सकती है पर मित्र अपनी अबहेलना को माफ कर देते इसका उस सदेह था । और फिर वीयर तो शराब नहीं । बहुत सारे प्रतिष्ठित लोग वीयर को यह तो वीयर है कहकर पी लिया करते हैं । गायद शराब और वीयर म बहुत भारी फक हो । लेकिन इस समय लालमन का मन इस तक को मानने के लिए तयार नहीं था । वह अपनी माँ का गुनाहगार था । उसके सामने जात उस डर लग रहा था । उसकी मा ने तो यह भी कहा था कि शराब की लत एक बार लग जान पर वह कभी नहीं छूती । और लालमन इस सच्चाई को कस नशार सक्ता था कि लत उस लग चुकी थी ।

वही अपने घर के पिता कमरे में मूर्ति की तरह अडिग था, वह उसे कैंद खान के उसी कमरे की तरह लग रहा था जहाँ कुछ दिन पहले वह धनुवा भगत के बड़े बेटे को सजा भुगतते देख आया था। लाहू की नगी चारपाइ, लकड़ी की पुरानी मेज, लकड़ी का ही दो अर्धटूटी कुर्सियाँ—कुछ कम थी तो मामन की खिडकी पर लाहू की छडें। खिडकी के सामने पहुँचकर वह दूर के दृश्यों को देखता रहा। एक ओर मुडिया पहाड़ बचन तोड़ने की सजा को भुगत रहा था। दूसरी ओर ईग बटे पेतों के उस पार नारियल और भावे के पहाड़ के बीच से उपनता हुआ समुद्र झिलमिला रहा था।

उसे अपने आप पर एक खामाश हैरत थी। कभी उसे अपना यह कमरा पागलखाने के कमरा सा भी लगता और कभी ऐसा भी लगता कि वह अस्पताल के किसी कमरे में खड़ा है। अपने आप में प्रश्न करता—क्या पहली बार मुझमें इतना बड़ा अनर्थ हुआ है? क्या सचमुच इसे नहीं हाना चाहिए था? तो फिर यह क्या हो पाया?

छाटी सी नाशाही और अब फलका मा दद। वह चहलकदमी करने लग जाता। इस कमर में उसकी माँ एकाएक आ सकती है, उसे ऐसा लगता कि अपने ही कमर में वह सुगन्धित नहीं था। खेतों की ओर दीड जाने को जी करता पर आज तो रविवार था और फिर खेत से तो लौट आया। आज खेत में धरमन से भी भट नहीं हुई बरना बातचीत में कुछ समय बट ही जाता। रास्ते में मोटरों के आने जाने की आवाज आती रही। य आवाजें पहले कभी मस्तिष्क के इतने भीतर तक नहीं पहुँच पाती थीं। इन आवाजों से वह तिलमिला उठता। उसका सिर भनभना उठता। अपने ही कमर में वह कद था और कद से बाहर के हरिमाली भर दृश्य उस बहुत ही सुहावन लग रहे थे। वे दृश्य इतने सुन्दर पहले कभी नहीं लग थे और इनमें दूर भी नहीं। वह अपने को सामने के सुन्दर हरे भरे दृश्यों से दूर पा रहा था। बीयर के गिलास को उसने कस पकटा था कस उठाया था, कम खाली किया था—इन दृश्यों को फिर से सामने लाना कठिन था। एक तरह से उसे याद भी नहीं था। सभी कुछ अपने आप हुआ था। सपनों में घटनाएँ अपने आप घटती जाती हैं। ठीक उन्ही तरह उस दिन सभी कुछ अपने आप हो गया था पत्र भर में। पलकें भपकते ही वह क्षण गुजरा था तभी तो सोचने विचारने का समय भी उसे नहीं मिल पाया था। उसने फिर अपने आप में प्रश्न किया—क्या हर गलत कदम को उठत इसी तरह जरा भी देर नहीं लगती? तभी तो दुनिया के सभी अर्थ क्षण भर में हो जाते हाने। अगर ऐसा नहीं होता तो लागा को ऐसा करन में पहले सोच विचार का अवसर तो मिल जाता।

लालमन को इस बात का भारा दुःख था कि वह वह नहीं था जो उसने

सोचा था। वह वह था जो उसन वभी नहा सोचा था। जाहर भीतर हर जगह
 ठंड थी पर वह ठंड और गरमी गभी स बसवर अपने ही ताप म जकटा हुआ था।
 खिडकी स सटकर पडा वह एकटक बाहर क खालीपन को देखता रहा। घन
 श्याम के घर स रडियो की धुन चली आ रही थी। अपने घर स सट खत म
 मुगुआ प्याज क पीधो क बीच निराई कर रहा था। इसी रत म गुरु स आज
 तक भुक् रहने क कारण मुगुआ की कमर भुक् गयी थी। जिस दिन घनश्याम
 को सरकारी नौकरी मिली थी उस दिन गाव क सभी लोगो न आश्चय स
 मुगुआ को सीधा पडा हाते देगा था। गाँव का वह पहला व्यक्ति था जिसने
 ग्राध बीच रत क बल अपने बट को पढ़ाकर हिंदी अध्यापक बनाया था।
 लालमन इस बूढ को देखते हुए हमेशा उस मन ही मन दाद देता था। आज वह
 किसी भी परिपाटी की री म अपने का नहीं पा रहा था। रडियो स आत हुए
 गीत के साथ स्वर मिलाकर गुनगुनाता भी आज उसे नहीं आ रहा था। खिडकी
 से हटकर वह बीच कमरे म पहुचकर पडा हो गया। कमरा उसके लिए खाली
 था। वह खालीपन उस क अपने भीतर भी था। कमरे के धुंधलपन स ऊपर वह
 फिर से खिडकी की ओर लौट पडा। मुगुआ स कुछ ही दूरी पर उसका नाती
 घर की सफ़ दीवार पर कोयले स अस्त-व्यस्त रेखाए कर रहा था। रेखाए
 आपस म मिलती जा रही थी और उस दूरी स भी लालमन देख पा रहा था कि
 घनश्याम का वह नहा मतीजा मानव आकृतिया जसे चित्र बनाता जा रहा था।
 लालमन को व दिन कस याद नहीं आत जब वह भी कोयल स सफ़द मिट्टी की
 दीवारो पर इसी तरह के चित्र बनाया करता था। उस समय उसकी मा उसके
 हाथ से कोयले छीनकर उससे कहती कि दीवारा पर लिखने से कज बढ़ता है।
 लालमन छोटा था पर बात समझता था इसलिए उसे यह बात पसंद नहीं थी
 कि उसके बाप का कज बढ़। तभी स उसने दीवारा पर चित्र बनाना छोड़ लिया
 था। वह जमीन पर भी लकीरें काटन स डरता था कही कसा करने स भी उसके
 बाप का कज बढ़ता ही न जाये। मुगुआ के नाती को समस्त मोलपन के साथ
 चित्रकारी करत देख उसके मन म आया कि यहा स चिल्लाकर उसे अपने परिवार
 का कज बढ़ान से रो न दे पर यह सोचकर उन अपने आप पर हमी आ गयी कि
 उसका बाप तो ईख क बारखाने म ऐसी जगह पर है जहा से उसे पसा ही पसा
 मिलना है मगर मून पसीना एक करके। घनश्याम का यह बडा माई तो मूढ
 पर दूसरा को कज लिया करता है।
 बच्चा लकीर काटता ही जा रहा था और उन अस्त-व्यस्त रेखाओ से
 आकृतियाँ स्पष्ट होती जा रही थी। कही कोई लडना किसी लडकी के पीछे
 दौडता सा लिखाई पड रहा था कहा कोई लडकी स्कूल जाती प्रतीत हो रही
 थी। बच्चे के उस असूदम प्रयास मे कला थी। उसकी महता बढ़ाने म लालमन

की नजरा म अगल कुछ बमी थी तो उन चित्रो के नीच एक प्रतिष्ठित हस्ताक्षर की छोट फिर बह कला आयुनिकता की पराकाष्ठा पर थी। उस अपन द्वीप के उस प्रव्यात कनाभार की याद आ गयी जिस पर कभी पत्रकारा न आरोप लगया था कि वह झूफ ठहरा। उसकी चित्रकारी बच्चा की सी थी। इस पर चित्रकार न उत्तर दिया था कि निरुछल कला का जन्म बच्चे ही दे सकत हैं और उसे तो इस बात का भी विश्वास था कि का अगल भगवान धरती पर उतर आय तो वह दुनिया क बीच बच्चे की तरह पेश आना ही अधिक पसंद करेगा तथा उमके हाथ स भी जो चित्र बनेंगे उनम बच्चा जैसी कलात्मक स्वामात्रिकता और निरुछलता ही हागी। उस चित्रकार का आज भी कुछ लोग बहुत बडा दाशनिक और कुछ लोग पागल तक भी मानत है पर लालमन उम पागल नही मानता।

क्षण भर की उमका खयाल अपन ही बनाये दायरे से बाहर हो गया था पर फिर भटके स दायरे के भीतर लौट आया। खिडकी से हटकर वह अपनी चारपाइ के पास आ गया। प्रभा उस पर कपूर की तरह सफेद चान्दर बिछा गई थी। लालमन ने साधा कि उमक बठने स उस पर सिलबट आ जायेगी पर चूकि खडा खडा वह थक गया था इसलिय बठ गया। सामन की दीवारो पर रामायण महाभारत के कुछ चित्र थे। बहुत ही पुराने हागे य चित्र। खुद उसे नही मालूम य चित्र इस दीवार पर कब लटकाय गय हाग। उसकी माँ की अगल सफाई का बहून अधिक ध्यान न होना तो इन चित्रा के ऊपर धूल की मोठी परतें होनी पर चित्र साफ थ कयाकि प्रभा हमेशा इन पर नाफियाँ चला दिया करती है। उन चित्रा को देखत हुए वह सोचता—कया क दिन सच्चे थे? कया सचमुच राम और वृष्ण कभी इस धरती पर थे? तब तो रावण और कस भी रह होग। सीता का हरण भी हुआ होगा और महाभारत का युद्ध भी। तो फिर दुनिया म नया क्या है?

ठीक पिटकी क नीच एक आबारा कुत्ता कही स आकर अकारण भूकने लग था। मरकारी नल भी ठीक सामने था जहा स धारी के लिए भगन्ती औरतो की बालाहलमय आवाजें आ रही थी। बिना साईने तर की एक लारी दहाडती हुइ रास्त से गुजरी जिसस वह मकान भी बाँप उठा जिसके भीतर लालमन था। बगल म वास की घिरावट के उस पार जगदत्त महतो की मत्यु मे जो बेस उजडा पडा था उसे गात्र के बच्चा न गन् खेलने का मदान बना लिया था। उन बच्चा क बिल्लान की आवाज भी सुनाई पडती। इस समय केवल समुद्र शान्त था और पीपल का वह पड भी जिस पर सुबह शाम दुनिया मन् के पक्षी चहचहात रहते हैं।

चाहा कि अकन समुद्र किनारे चना जाए पर फिर खयाल आया कि वहाँ की रमणीकता और रौनक उस नही भायगी। रविवार हान क कारण द्वीप के

कौन कौन से लोग अपनी सप्ताह भर की कमान को समुद्र में डुबाने भागे होंगे। समुद्र उसे उस समय बहुत ही मुदर लगता जब उसके इस छोर से उस छोर तक सन्नाटा होता है। अकेले किसी बट्टान पर बठर लहरा ना कराहा उसे बहुत अच्छा लगता है। उसे माँ दर का खयाल आया। वहाँ भी इस समय भीड़ होगी। कहीं-न कहीं उसे जाना ही था क्योंकि घर के भीतर एक अनुत्साहट सी थी। खेतों की ओर जाने का उसका विचार जरा भी नहीं था। गाँव के छोटे से सिनेमा-घर के सामने भी अधिक भीड़ होगी। घनश्याम भी घर नहीं होगा। हर रविवार को वह हिन्दी की माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने जाता है। यह निशुल्क काम लालमन भी कर चुका था। अब भी करता रहता अगर वह छोटा सा काण्ड न हो गया होता तो। वह घटना बहुत छोटी बात हुए भी लालमन को कभी बहुत अधिक प्रतीत होने लगती। मामा से उसकी घनिष्ठता हो जाना एकदम स्वाभाविक था क्योंकि वह उस पाठशाला का मुख्य अध्यापक था और मामा वहाँ की एकमात्र अध्यापिका थी। उसके कबिता पढ़ने के दिन को मामा बहुत अधिक पसन्द करती थी और वह मामा की आशा में देखता बहुत पसन्द करता था। लेकिन जो बात सबसे अधिक स्वाभाविक थी वह थी मामा के बाप द्वारा पाठशाला के सभी बच्चा के सामने उसका अपमान। ताति भेद जसी बातों को उसने कभी भी महत्व नहीं दिया था पर उस दिन मामा के बाप ने अपनी सभी ताकत के साथ चिल्लाते हुए कहा था कि उसकी अपनी जाति के सभी लोग अभी मरे नहीं। उसी गाम घनश्याम की वह बात भी लालमन की समझ में नहीं आयी थी जब उसने कहा था कि मामा का बाप उलटी गंगा बहा गया क्योंकि लालमन ने तो कभी इस सच्चाई पर भी गौर नहीं किया था कि अलग जाति के माँ बाप की झीलाद होते हुए भी वह मामा से बहतर जाति का था। कम से-कम उसे इस बात का तो संतोष था कि उसके अपने घर से किसी ने उसे यह नहीं कहा था कि वह अनर्थ कर रहा है। उस घटना के बाद उसकी माँ ने केवल इतना कहा था कि यह एतराज जो मामा के बाप को और से हुआ एकदम निराधार था और अगर आपत्ति की बात पदा भी होती है तो वह अपने परिवार की ओर से होनी चाहिए थी मामा के बाप की ओर से नहीं क्योंकि किसी भी हैसियत से वह अपने परिवार से आगे कभी नहीं हो सकता। उसकी माँ ने यह भी कहा था कि कुछ भी हो अपनी जाति उससे बहुत अच्छी है और फिर वह आत्म सात्वता थी जब उसने कहा था कि अच्छा ही हुआ मामा आछी जात की ठहरी। यह बात भी लालमन की समझ में नहीं आयी थी।

आज एक खयाल से बचन के लिए दूसरे खयाल का सहारा लेते हुए लालमन ने अपने को इस दूसरे खयाल में और भी सख्ती में जकड़ पाया। बहुत दिनों बाद तो नहीं फिर भी कुछ दर ही लालमन को मामा की याद आयी थी।

मोमा को मूल जान की कोशिश उसने कभी नहीं की, फिर भी अपनी हर धड़कनें में मामा को मजबूत रखना भी उसने ठीक नहीं समझा। अभी उसी दिन जब मामा उस खेत के बीच की पगडंडी पर मिल गई थी उस समय उसका भीतर का तार तार भनभना उठा था। वे सभी दृश्य सजीव स हो गए थे जब बरगद के पेड़ के नीचे वह उसे कबिताएँ सुनाया करता और मामा तन मन से उठ सुना करती थी। पगडंडी पर मिल जाने पर उसकी माँ भी साथ था, फिर भी बिना किसी झिझक के उसने पूछ ही लिया था कि आखिर लालमन का उसकी सुधि क्या नहीं रहनी। उसकी माँ की उपस्थिति में लालमन से कोई उत्तर नहीं बन पाया था। प्रश्न करना चाहकर भी वह कुछ न पूछ पाया था परन्तु मामा ने उस के साथ चार टग चलकर जो कुछ कहा था उससे यह स्पष्ट था कि मामा उस हर वक्त याद करती है। उसके गिरने वाले हवा से प्रोत्साहन पाकर लालमन के चेहरे से आ लगे थे। कुछ ही दूर चलेकर मामा को दूसरा रास्ता ले लेना पड़ा था और उस दोराह पर खड़ा लालमन सोचता रह गया था कि शायद ऐसा ही हाना है। दोनों का चार पग चलकर हमारा क लिए अलग रास्ता ले लेने पड़ेंगे।

घनश्याम ने उससे कहा था कि वह डरपोक है और उसने उसकी बात को मान लिया था। और किसी बात के लिए न सही पर इस बात के लिए सचमुच ही वह डरपाक था। वह खुद नहीं जानता कि उसके भीतर हिम्मत की कमी थी या मामा के प्रति स्नेह की। दा गिलास वीयर के नशे में उस दिन उसे मामा की बहुत अधिक याद आयी थी। घरमन की वह बात उसने वेबुनियाद-सी लगी कि नौ म बहुत सारी चुम्बन वाली बातों की मुला दन की ताकत या जाती है। नशे में तो उसे एक विपरीत गति दी थी। वह तो याद का और भी ताजा करने वाली ताकत थी। उस याद में टीस थी और हल्का उल्लास भी था इसी लिए लालमन कुछ तप नहीं कर पा रहा था। वीयर पी लेने की उस बात को वह अच्छा न मानकर बुरा भी नहीं मान पा रहा था। फिर एक बार पीने की म्वाहिश न रखते हुए भी वह उससे तावा करने को भी अपने को तयार नहीं पा रहा था।

वह अब भी खेत में काम करने वाला बपड़ा में था। उसकी माँ कालीमाई गई हुई थी वहरिया पूजा में बरना अब तक उन मले बपड़ा में वह नहीं रह पाता। प्रभा तो बार उसे बपड़े बदलने का कह चुकी थी। चारपाइ पर अब भी उसकी नीला कमाज और काली पतलून ज्या के-र्या रमे हुए थे। रिठकी की बगल में दीवार से टगा था वह छोटा सा शीशु उसके सामने लड़े होकर वह दानी बनाया करता है। उसे और न देखते हुए भी उसकी आँख कई बार पीने से टकरा गयी थीं। उसके चेहरे पर सप्ताह भर की दाने थी। अगर प्रभा उसके पीछे न पडी रहे तो वह दादी भी महीना तक नहीं बन पाती। अपने चेहरे को

नाली के साथ ऐतना उसे भी पसन्द नहीं था पर क्या करे रोज दादी बनाना उसके लिए दुनिया का सबसे कठिन काम था । वह धरमन को दाद देता । गांव के लोग उसके लम्बे बालों और दादी के कारण उस सनरी कह सकते थे पर लालमन को उसका वह रूप पसन्द था । घनश्याम उसे धरमन नाम से न पुकार कर हिप्पी नाम से पुकारता था । शुरू में यह सम्बोधन लालमन के सामन कोई मतलब ही नहीं रखता था पर बाद में घनश्याम ने उन तमाम विलायती नव युवका और नवयुवतिया का कहानिया सुनाई थी जो अपने परिवार से बंट हुए थे जिन्हें अपनी निजी दुनिया की तलाश में और जो भारत को एक बार फिर गुरु मानकर आत्मगर्हित के लिए उधर लपके चले जा रहे थे ।

एक बार भारत ही आने की प्रयत्न इच्छा लालमन के भीतर भी हुई थी । आज तक वह भारत को मात्र पुस्तकों में ही देखना रहा है । बिहार का वह प्रांत दखन की ज्वालन्त भूमिलापा भला किस मारोगमीय हिन्दू को नहीं घनश्याम बात-बात पर यह कहता जहां से समी के दादा-परदादा आये थे । लालमन की कल्पना को उस भूमि पर लोटना बड़ा ही स्वाभाविक था । महागिराजिन के दिन जब स्वामी जी ने अपने भाषण के दौरान कहा था कि वह राम वृष्ण की जन्म भूमि से आया है उसने भ्रमण और बुद्ध की चर्चा की थी । कालिदास और खीन्द्रनाथ ठाकुर के देश की महानता को बताते हुए उसने मुनाप और गांधी की बात की थी और लालमन के भीतर की भारत आन की भूमिलापा रो और भी तीव्र कर दिया था । इस समय अपने ही कमरे में बस लालमन अपने भीतर की हर चाह का सिधिल पा रहा था ।

वन्त मानव की तरह एक चेतनाहीन सक्रियता में उतने अपने बपड बदेने और घर से बाहर हो गया । बिना किसी निर्धारित ठौर को लक्ष्य किए वह चलता रहा । उसका भीतर कुछ निश्चय करने की ताकत जमे नहीं थी । चलते समय उसका परा से कोई भी आवाज नहीं पैदा हो रही थी । उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह चल रहा था । अपने आप उसके भीतर कविता की एक दो पंक्तियाँ पदा हो गई थी । किसी को सुनाने की जिदलता थी उसकी सोना में ।

वह चलता रहा नींद में चलने जाने की तरह ।

जो पंक्तियाँ उसके भीतर पदा हुई थी वे अपने आप फिर गयी । ठीक नहीं थी इसलिए उसने भी उठ खिन्नर जान लिया । उसने गंगा की एक सूत्र में गूथा था पर वह गंगा भ्रमण भ्रमण भ्रमण रखते हुए भी एक सूत्र में गुथकर काइ भ्रम नहीं रखते थे इसलिए उसने उठे हवा में खो जाने दिया । कुछ पुराने गाने थे वे जो उसके हृदय में चुम्बन रखे थे । वे मिलकर बगना उनमें लग रहे थे । अपने अपने भाव-भारत में वह उन गानों को नहीं भरभार पा रहा था । उस एका महमूग हुआ कि बाहर तो वह नगा भ्रम में उगवी घमनिया में

था। तभी उसने अपना नाम सुना किसी दूसरे के मुह में। वही जानी पहचानी आवाज थी वह। मामा की सुरीली आवाज। पर वह तो ईख के खेता के बीच में पहुँच आया था। वह मामा की आवाज कस हा सकती थी। वह तो उसकी अपनी ही आवाज थी। और बहुत दिनों के बाद उसने हृदय से चाहा कि सशोग स मामा की आवाज को अपने पीछे से धात हुए वह क्या नहीं सुन लेता ? सच-मुच ही एक बार मामा उसके सामन आकर खड़ी बयो नहीं हो जाती ? उससे दूर होकर मामा और भी सुन्दर दिखाई पडन लगी थी।

सामने का समुद्र शांत था। प्रवाल रेखा के उस पार फेनिल लहरा का वह विद्रोह अदश्य था पर जिस तरह मामा की याद उसक भीतर छिपी हुई थी ठीक उसी तरह काली चट्टाना के बीच उन ज्वारभाटा का अस्तित्व भी छिपा हुआ था, एकाएक साकार हो जाने के लिए।

रात को सभी के खा लने के बाद प्रमा सत्र से पीछे रसादघर ही मे खाना खाती थी। कभी उसकी मा सामन हाती और कभी वह अनेली ही होती। पूब वाला कोना ही उसका वह स्थान था जहा रोज बठकर वह भोजन करती थी। विल्ली पूछ उठाय म्याऊँ म्याऊँ करती इधर से उधर घूमती रहती। ऐस तो प्रमा की खुराक घर म सत्रस कम थी फिर भी वह बहुत ही धीरे धीरे भोजन करती थी। और खाने के तुरत ही बाद वह भाडू उठाकर रसोईघर को बुहारने लग जाती। रात हाने के कारण बुहारे हुए जूठन और कूडे करकट को बाहर न करके वह उ ह पं चमी कोने म एकत्र कर दती और वही पर भाडू को भी लटा दती। शुरू म कई बार वह भाडू का लडा रख लिया करती थी और इस पर उसकी माँ उस कोसन लग जाती। इस सच्चाई को जानकर भी कि बहुत कम उअर स ही प्रमा घर के कामा को समाल लेती थी उसकी माँ उसकी बहुत कम सराहना करती थी। उसे इस बात का डर बना रहता था कि वही वह खुद अपने कामो से सतुष्ट होकर अपनी प्रगति म गिधिलता न ला दे। राधिका जब छोटी थी उस समय घर के कामा म उसकी सफाई और बुगलता को देखती हुई उसकी माँ उसे चित्रनढट्टी बहकर पुकारा करती थी। वह अपनी बनी को भी बारीकी और सफाई म उसी तरह माहिर बनाना चाहती थी पर उसकी धार स जो ज्यागती होती रहती उससे तग आकर भी प्रमा चुपचाप अपने कामा म जुटी रहती।

प्रमा की आँखें बहुत ही सुन्दर थी। उसका धान भी जितन लम्ब था उतन ही सुन्दर भी था लेकिन मुग्ड की सम्पूर्ण बनावट म सुन्दरता का कुछ कमी हो गयी थी। गुफ म प्रमा का कम बात का त्रिचक्रुन पता नहीं था पर एनाथ बानें मुनकर वह महमूम करन लग गयी थी कि उसम अपन भाई और बहन का

वह गौरव रग नहीं। वह सुन्दरता भी नहीं थी जिसने कारण तुलसी महतो की पत्नी उन दाना को सुगा सुगी कहा करती थी। जब वह उस बात को समझने लग गयी थी उस समय घर की भलमारी के बड़े स गीने व सामन लडी होकर अपने को निरखती हुई अपने चेहरे में मुदरता की जो कमी थी उसे धाकती रहती। पहल पहल तो वह सुन्दर नहीं समझ पायी थी कि उसके चेहरे की बनावट की कमजोरिया का भ्रमलो जिम्मेवार कौन था। वारी-वारी से वह अपनी माँ अपने बाप और भगवान तक को इस बात के लिए बोलती रहती पर समय के साथ वह अपने आपको कासन लगी थी फिर अपने भाग्य को और अब तो वह उसे भाग्य की बात भी न समझकर बस सयाग समझन लगी थी। एक दिन उसने किसी का कहते सुन लिया था कि जब इस लडकी को पूरी मूरत देने में कजूसी करनी थी तो फिर भगवान ने उसे इतनी सुन्दर भाँवें और बाल क्यो दिये। समय के साथ और प्रभा अपनी लाधव भावना को भूलकर भी अपने को बनाती सवारती रहनी तो इस लयाल स नहीं कि वह अपने को अधिक धाकपक बना सके वलिन इस आदत से बिबाग होकर कि सफाई उसकी माँ की दी हुई उसकी सबसे बडी सीख थी। उसकी मा बात रात पर कहती थी कि सफाई गहिणी का सपस बडा धम हाता है। छाया को डाँटती हुई वह कहती—

—केवल मुह साफ रखने से क्या होता है।

कभी कभार राधिका के पास प्रभा के लिए एकाध अच्छे गड भी होते। छाया का डाँटती हुई अप्रत्यक्ष रूप से वह उसकी प्रशंसा कर जाती।

—प्रभा का अनुकरण करके भी तुम सफाई सीख सकती हो।

घर के आग के आगन का वह राज मूरज का प्रथम किरणो के साथ बृहारती। इस काम में प्रभा कुछ इतनी अधिक निर्मात और समय की पाबंद थी कि ऐसा प्रतीत हाना मूरज की किरणें शायद कभी समय के आगे पीछे हो जाती हागा पर प्रभा नहीं। वह बृहारती हुई आगे बढ़ती जाती और मूरज की व प्रथम रश्मियों पीछे पीछे उन बृहार भागों को चूमन लग जाती। हमेशा साफ सुधर रहन वाल उस आगन के दा तरफ बास की घिरावण थी जो कई लिन स न काटे जान के कारण काफी बढ आयी थी। घनश्याम के घर की और का भाग खुला हुआ था। एक लिन जन लालमन न उधर भी दाम बाने की इच्छा प्रकट की थी, उस समय उसकी माँ ने उसे यह कहकर रोक लिया था कि घनश्याम और अपने परिवार का एक परिवार समझना चाहिए। एक परिवार के बीच दीवार टोक नहा हागो। घर के पिछवाडे जो थोडी सी जमीन थी अधिक उपजाऊ न हान के कारण उसमें जगल उग आया था। फिर भी उसने बकरिया के लिए घास मिल ही जाती थी। इसी जगल पडे मत के बल उसकी माँ कभी दस गड बकरिया को पालती थी लेकिन पिछन सूखे में जब घास की लगी हो गयी थी उस समय

प्रभा के माई ने माँ को बखरिया बग दान की बात कही थी । घर का कोई भी यह नहीं चाहता था कि राधिका दूसरे जगला से घाग लाय द्रमलित लालमन की बात को समी ने मान लिया था और दूसरे ही दिन सात बखरिया को बच दिया गया था । सभी के पूरे चार सौ पचीस रुपये मिल के और लालमन ही ने कहा था कि उस पता से प्रभा के गहन बना लिया जाए क्योंकि उसे विश्वास था कि यही कोई दो तीन बय से अधिक प्रभा हम घर में रह नहीं सकती । उसका बाप हमें यही कटता रहता था कि लडकी के हाथ जितनी जल्दी पीले ही मक्के उतना ही अच्छा होता है । लालमन की बात राधिका को जँच गयी थी अतः दूसरे ही दिन सुनार भी घर पहुँच गया था ।

प्रभा को हम बात का गौरव-सा था कि घर में लालमन उसे ही सबसे अधिक प्यार करता था । आज सुबह पनरुपाम की बहुत एक बडा सा रामफल दे गयी थी । उसे हाथ में लत ही प्रभा को अपने माई की यात्रा आ गयी थी । वह जानती थी लालमन को रामफल बहुत ही भाता था । उस अघ पीले और अथ लाल फल को देखकर उसने अपने मुँह में भी पानी आ गया था फिर भी उसने उसे समी की नजरों से छिपाकर रग लिया था । वह चाहती थी कि लालमन अपने हाथ उसे बाँटे । उसके हाथ में जब भी कोई अच्छी चीज आ जाती वह उस अपने माई के लिए सँजो दती । जिस दिन उसने गहन बाबर आय के उस दिन प्रभा का लालमन का उतना ही खयाल था । उसकी माँ जब डिब्बा खोलन लगी थी उस समय प्रभा ने उसे रोक्ते हुए कहा था—

—इतनी जल्दी क्या है ? भया का आ जान दा कही अपने हाथ छोलेगा ।

—बाह बिना मुर्गा मबेरा नहीं होगा । हमारे देख लेने से ये गहने जूठे पड जायेंगे क्या जो तुम्हें अपने माई की यात्रा आ गयी ।

प्रभा की बात का अनसुनी करती हुई राधिका ने डिब्बा खोल ही दिया था । उस समय उन गहना को देखकर प्रभा का वह खुशी नहीं हुई जो उसेहानी चाहिए थी । रात को जब लालमन लौटा था उस समय वह उस बच्चे को तरह जो नया खिलौना पाकर मित्रों के पास दौड जाता है, उसके पास डिब्बा लिये पहुँची थी और लालमन के श्रोतों के बीच मुसवान देखकर वह सचमुच बहुत अधिक खुश ही चली थी । उसने उससे पूछा था—

—कैसे है ये गहने ?

—डिब्बे में तो सुंदर हैं पर

—पर क्या ?

—इनकी असली सुंदरता का पता तो तुम्हारे पहचाने ही से चलेगा ।

लालमन को कहे देर नहीं हुई थी कि डिब्बा उठाया प्रभा दूसरे कमरे में दौड गयी थी और कुछ ही मिनट बाद उन गहनो को पहने लालमन के सामने आ

खड़ी हुई थी। लालमन चुपचाप उस एक्टक देखता रह गया था। प्रभा न अजीब अज्ञान से पूछा था—

—अब कैसे लगते हैं ?

—बहुत सुंदर !

—और मैं ?

—तुम भी ! —प्रभा के गाल पर चिचोटी नत हुए लालमन उसका उम मोले पन का देखता ही रह गया था। कुछ दर बाद एकाएक पूरी गम्भीरता लात हुए लालमन ने कहा था—

—य गटने एन बात कहते से प्रतीत हा रह हैं।

—कौन-सी बात ?

—य कह रह हैं कि तुम्हें बहुत जल्द हमस जुदा हो जाना पडेगा।

यह सुनते ही प्रभा की उम गुंती में एक धुधलापन आ गया था। वह उदास होकर अपने भाई की आर दगती रह गयी थी। वह जानती थी कि इस घर में उसके बने जान का सबसे अधिक दुख लालमन को ही हागा। छाया को गायद सबसे कम दुख हा क्याकि वह तो बात बात पर उससे भगडती रहती थी। एक दिन जब घर पर प्रभा की गादी की प्रथम चर्चा हुई थी उस दिन छाया ने तालिया बजात हुए कहा था कि बहुत अच्छा होगा। प्रभा को इस बात का तो पूरा विश्वास नहीं था कि सचमुच ही छाया का उसका चल जान की बहुत अधिक खुशी हागी। अगर उसे खुशी भी हुई तो ठपरी। कम से कम एक बात की खुशी तो उम कभी भी नहीं हो सकती थी कि प्रभा के जाते ही घर का सभी कामा की जिम्मेदारी उम पर आ जायगी। दोनों के बीच बात बात पर छोटे माटे झगडे हात रहत थे पर प्रभा न कभी भी यह नहीं चाहा था कि छाया का घर के व सारे काम करन पड। उसका अपने मन में भी यह अभिलाषा थी कि खुदा इन झगडा में न पडकर पड लिखे और सचमुच ही कुछ बन। गांव की एक लडकी सरकारी अध्यापिका थी दूसरी अस्पताल में परिचारिका और तीसरी गहर के किमी दपतर में काम करती थी। प्रभा चाहती थी कि वह सब काम वहन भी कम से कम उन लडकियां जसी बन जाय।

अभी घंटे पहले ही कपड धोकर वह घर के भीतर पढ़ाई कर रही थी अपनी मा को अपने बाप का कहत सुना था कि अगले रविवार को घर छोड़ रहे हैं। प्रभा का बात ममभन दर नहीं लगी थी। यह सब सुनकर वह होती आ रही थी और अत उन लोग के ध्यान का विचार ही नहीं करता चुका था। पहले ही दिन से प्रभा इन ध्यानवाला व दार में बसती रहती, वारी वारी से वह उन सभी के बारे में साचती और कहती रहती कि अच्छा हा अगर उसकी होने वाली मामलत में कोई भी काम न हो।

ऊपर से चाहे बटोर पर भीतर से बहुत अधिन कोमल । अपने पाप की तरह समुद्र पाना चाहती थी वह । और वह व्यक्ति जो उसे पसंद करके जीवन भर उसका बनने जा रहा था वह भी बहुत अच्छा ही ठीक उसके भाई लानमन की तरह । इन बातों की वजह हर बार मोचती रहती तबिन आज इही बातों में वह एक तरह से खो गयी थी । बहुत मारे प्रश्न थे उसके मस्तिष्क में । १ जान उसके सपने साकार होंगे या नहीं वह दुविधा में थी । कसा होगा वह घर ? कसे होंगे उस घर के लोग ? ये पराये अपने कसे वा जाते हैं और अपने पराये कसे हो जाते हैं ? क्या सभी नडकियों का जम बंधन इसी परिपाटी का पूरा करने के लिए होता है ? रसाईघर के सामने की धूप में बठी प्रभा कुछ अधिन आजादी से सोचने में लगी हुई थी । उसने अपनी माँ के मुँह से यह भी सुना था कि अगर बात पक्की हो गयी तो इसी वष के अखिरी महीने तक उसकी गान्धी हो जाने की संभावना थी । इस गान्धी गान्ध के प्रति उमक भीतर जा जिजासा थी उसमें सुख का भी कुछ अंश था लेकिन दुःख का अंश कुछ अधिन था । एक नयी दुनिया पाने की खुशी से बन्ना अपना से विछुटने का दुःख था । सपने अधिक वह उस व्यक्ति के बारे में सोचती जो उसका सवर्ग बनने जा रहा था । उसने तो ऐसा ही सुना था—अपनी माँ से तुलसी महतो की पत्नी से और अय लोणा से भी । उसके लिए यह बड़ी अजीब बात थी कि कोई आधी उम्र के बाद मिलकर पूरे जीवन का मालिक बन जाय । कसा होगा वह व्यक्ति जो उसका सभी कुछ बनने वाला था । क्या वह लालमन की तरह होगा या घनश्याम की तरह ? ये ही तो तो मंथ जिह कुछ अधिन नजनीन से वह जाती थी । वह तो यही चाहती थी कि इही दोना में से किसी एक की तरह वह ही । क्या उमरी आवाज भी लालमन की आवाज की तरह सुरीली होगा ? पर सभी लागा की आवाजें सुरीली बाड ही होती हैं ? उसका स्वभाव क्या होगा ? मगवान न करे वह रामदेव गरायी की तरह हो ।

रविवार में केवल चार ही दिन तो रहने थे । उसका निरा मयम बड़ी बात थी उम दिन साडी में उन लोणा के सामने लडा जाना । माँ कहती है—लहोंगे और द्वाउड में उन लागा के सामने जाना गीक नहीं होगा । प्रक तर केवन दो अवसर पर ही उसने साडी पहनी थी—एक बार महागिबरात्रि के अवसर पर जब वह परी तानाज जल नान गई थी और दूसरी बार जमुमनी की गान्धी में । माटी पन्नन की चाह तो उमक भीतर काफी प्रयत्न थी पर उमम लिपटी अजनबिया के सामने जा लना जाना उमबन्ना कठिन प्रनीन हो रहा था । फेरीवाने उसमान चाचा से उमरी माँ न नीन रग की नई गान्धी परोनी की उमक निरा । वह माटी उम बहून पसल थी । उमी रात अपनी माँ की आँसु बचाकर उम माँ की में वह अपने भाई के गामन पटुनी थी । लानमन अपनी

ध्यान भरी निगाहों से उसे देखता ही रह गया था। फिर उसकी बलाई पकड़कर उस अपने पास चारपाई पर बठाते हुए उससे कहा था—

—तुम बहुत सुन्दर लग रही हो प्रमा।

लालमन को अपने इस वाक्य पर खुद विश्वास नहीं था। प्रमा बदसूरत नहीं थी, फिर भी उसे बहुत सुन्दर कहकर उससे ममत्व प्रेम ही तो प्रदर्शित किया था। वह जानता था कि यह अतिशयोक्ति थी लेकिन उसकी नज़रें यह मानने को भी तैयार नहीं थी कि उस साड़ी में उसकी बहन पत्र नहीं रही थी। लोग चाहें कुछ कहें, लालमन के लिए प्रमा भी उतनी ही सुन्दर थी जितनी छाया। कुछ हद तक अपने स्वभाव के कारण वह छाया से भी अधिक सुन्दर थी पर कौन मानता इस बात को।

प्रमा धूप में बठी अपने भीतर बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ रही थी कि छाया भी उसके पास आकर बैठ गयी। पर मचोट आ जाने से जूत न पहन सने का बहाना करके वह दो दिनों से कॉलेज नहीं जा रही थी। कई बार छाया की ओर देखती हुई प्रमा अपने आप से पूछ उठी थी कि आखिर भगवान न उसे भी छाया जसा रंग रूप क्यों नहीं दिया। कभी उसे ऐसा भी एहसास होता कि छाया की सुन्दरता से उसे ईर्ष्या थी। उसकी यह भावना क्षणिक होती थी। उसे इस बात की खुशी थी कि छाया पास पडाम की सभी लड़कियों से अधिक रूपवती थी। उसके चेहरे के साथ साथ उसके शरीर की गठन भी बमिनाल थी। प्रमा उससे बड़ी थी पर ऐसा लगता कि छाया में अधिक जवानी थी। वह डाली के किसी तैयार पत्र की तरह थी। सिर से पाव तक उसमें कशिश थी आकर्षण था, मात्कता थी नजाबत थी। प्रमा अपलक उसकी ओर देख रही थी। वह परख रही था उसके शरीर की बनावट को। उस अपनी ओर एकटक देखते पाकर छाया ने पूछा—

—क्या देख रही हो दीदी ?

जिस समय वह प्रमा में भगडती नहीं थी उस समय वह उसे दीदी कहती, पर भगड लन पर उसे लोलू कहकर पुकारती। लालू अब नहीं रहा। उसकी मृत्यु महीने पहले अकस्मात ही हुई थी। प्रमा और उसमें काफी बन्ती थी। धन ध्याम की बहन ने एक दिन छाया से वह लिया था कि दोनों एक-दूसरे का प्यार करते हैं। तभी से जब भी दोनों के बीच झगडा होता छाया प्रमा को लालू नाम से चिन्ना करती थी। लालू की मृत्यु का प्रमा का बहुत दुःख हुआ था क्योंकि वह उस उमर ही चाहती थी जितना कि अपने माई को। गाँव के मर्दा लालू की मृत्यु का दुःख हुआ था। बहुत सारी लड़कियाँ उसके पास रही थी।

छाया के प्रश्न से चौंकर प्रमा ने उस पर नज़रें हटाईं।

दोवारा प्रश्न किया ।

—क्या देख रही थी, दीदी ?

—देख रही थी कि तुम तो आजकल मुझमें बड़ी दीखने लगी हो ।

—सच, मैं तुमसे बड़ी दीखने लगी हूँ ?

—हाँ ! —प्रमा ने सिर हिलाते हुए कहा ।

—तब तो तुम से पहले बूढ़ी हो जाऊंगी ।

—बूढ़ी से मेरा मतलब यह थोड़े ही था ।

—तो फिर यह कहना चाहती थी कि मेरी गादी तुम से पहले ही जानें चाहिए है न ? —मुसकराती हुई छाया बोली ।

—जब स मेरी गादी की बात चली है तब से तुम कुछ अधिक खुश दिखाने लगी हो ।

—मना अपनी बहन की गादी की बात से किसको खुशी नहीं होगी ?

—पर तुम्हारी इस खुशी का कारण

—तुम से पीछा तो छूटे ।

—मेरे चल जाने पर समझ जाओगी ।

—क्या समझ जाऊँगी ? —प्रमा की आँखें देखते हुए छाया ने पूछा ।

—घर के सभी काम तुम्हें करने होंगे ।

—मैं यहाँ से भागकर तुम्हारे यहाँ आ जाऊँगी ।

—मेरे यहाँ ?

—तुम्हारे यहाँ न सही जीजाजी के यहाँ ।

—अभी तो पीछा छड़ाने की बात कर रही थी ?

—तुमसे न भागने का दुःख तो हर घड़ी बना ही रहगा ।—बड़े ही गम्भीर स्वर में छाया बोली ।

—छाया, आज से मैं तुमसे कभी नहीं भागूँगी ।

—पर भागती तो मैं तुमसे हूँ ।

यह कहती हुई छाया ने अपने मिर के प्रमा के कंधे से सट लिया । आराम पर कुछ थकल बादला के छा जाने से आँगन की धूल मिट चुकी थी । मामन दो मुँगियाँ आपस में भागड रही थी । प्रमा ने मामन से एक कबड उठाकर दाना के बीच में मारा । एक क्षण के लिए अलग होकर दाना मुँगियाँ फिर एक दूसरे पर चाँच द्वारा प्रहार करने लगी तभी भीतर से प्रमा का आवाज दनी हुई राधिका ने कहा कि वह आँगन से कपड़ा का उठा ल, वर्षा की सम्भावना है । यह सुनते ही प्रमा छाया का बड़ी बड़ी छाँ खडो हा गयी ।

घासास भरी एक पगडंडी थी वह जो धनुवा भगत के घर तक ल जाती थी। यह रास्ता इतना अधिक उबड़ खाबड़ था कि इस पर केवल पदल ही चला जा सकता था। लालमन ने एक दिन जब साइकिल पर सवार धनुवा भगत के यहाँ पहुँचने की कोशिश की थी तो नतीजा यह हुआ था कि साइकिल के उलट जाने से वह तमाकू के खेन की मुडर पर जा गिरा था। चोट गहरी घायी थी और धनुवा भगत न हँसत हुए कहा था—

—मरे महल तक पहुँचने के लिए तो पदल या हवाई जहाज की सवारी चाहिए, साइकिल की नहीं।

उस घाय का दाग लालमन के माथे पर आज भी स्पष्ट था। रात की वर्षा के कारण यह रास्ता आज कीचड़ और फिसलन से भरा हुआ था। जहाँ तहाँ मिट्टी का रंग लिये पानी अब भी जमा था। बड़ी सावधानी से परा का उठाते रखते वह धनुवा भगत के घर के सामने पहुँचा। उसके आगम के इकटठे पानी में कुछ बच्चे नाव चलाने और मछलियाँ मारने का खेल खेल रहे थे। उनमें जगन्नीश भी था। वह भी बच्चों के साथ बच्चा बना हुआ था। लालमन ने उसे कुछ कहना चाहा पर तभी खयाल आया कि वह तो उससे भी बड़ी उम्र तक बच्चा का खेल खेला करता था और फिर जगदीश की उम्र तो कठिनाई से दस वर्ष रही होगी। धनुवा भगत अपनी झुकी छत वाले बरामदे में बठा बच्चा का खेल देख रहा था। लालमन पर नजर पड़ते ही अपने हाथ की चिलम की राख को झाड़ते हुए उसने कहा—

—कस भूल पड़े इधर ?

गाँव की गध अब भी ताजी थी। इस गाँजे के कारण धनुवा भगत दो बार कप की सजा भगन आया है। एक बार तो उसका आगम में गाँजे के पूर घीस

पौष मिले थे जिसके लिए उसने बीम महीने जेल काटा था, दूसरी बार उसने घर से सेर भर गांजा बरामद हुआ था। एक दिन जब सालमन ने उससे अपनी इस श्रावत से वाज मा जाने को कहा था तो भगत ने हसकर उत्तर दिया था—

—बटा यह श्रावत तो अब मौत के बाद ही छूटगी और अगर मौत देने में भोलें गकर दर करत है तो इसमें मेरा क्या दोष ! उस घर में तेरह यन्त्रिया को उनका प्यारा हाते देखा है। एक में हूँ जिस के बेकार ममभत है।

इस पुराने घर में भगत अपने नाती के साथ अकेला रहता है। कोई दस बप हुए उसकी पुत्रवधु भी एक दिन अकस्मात् गगदीश को जन्म देकर चल बसी थी। उसकी मृत्यु के सात ही महीने पहले उसके पति की मृत्यु भी अकस्मात् ही हुई थी। गाँव का पुजारी कहता कि भगत पर देवी मया का प्रकोप है। भगत की बहू की मृत्यु के बार में सालमन को कुछ भी याद नहीं था। उस समय वह बहुत छोटा रहा होगा लेकिन उसने सुन रखा था कि उस चुड़ल लग गयी थी। मूतकर काटा हो जाने पर भी उसका प्राण उसके गरीर का छोट नहीं पा रहा था। मृत्यु गया पर उसका उस दारुण दुख को दसकर गाँव के सभी घरों में बुरे यही चाने लग गया था कि जल्द ही उसका मौत आ जाती तो बहुत रहता। हर रात का लोगो को ऐसा प्रतीत होता कि कल की सुबह वह नहीं दस सकेगी पर हर सुबह के साथ उसकी व सूपी हुई आमाहीन भाँस टकटकी लगाय आस पास के लोगो को देखन लग जाता। एक जोती लाग की तरह वह मनीना चारपाई पर पडी रही थी। एक दिन गाँव के पुजारी को कुछ सूझा और उसने भगत से एक लाल में कुछ पस डलवाय और उसमें पानी भरवाया फिर कुछ अस्पष्ट मात्रा को पढ़न हुए उसने ग्राम के पत्त से उस पानी के दो घूट भगत की पनी को पिनाय। गल के नीचे उन घूटा के उतरत ही बुनियात और स मुह गारा और किन्हेगा हमारा के लिए सो गयी थी। इस बात में बहुत न रागा को गुगल आचय हुआ था। सिमी तरह उसका प्राण निकल पाय था मय दान की ममी को सुनी थी। बाद में पुजारी जी ने कहा था कि भगत की पनी का पसा का बहुत भारी माह था। उसकी चारपाई पर के त्रिस्तर के नीचे जा थाड बहुत पस जमा था उस छोडकर जाना बुनिया को गवारा नहीं था।

गाँव के बटन कम साग थे जिन्होंने पुजारी जा की दान पर विनाग न दिया है। कबल एक तो नौजवान थे जिन्होंने यही तथ कह दिया था कि मैं म के जहर का पानी में धान कर पुजारी ने बचारा का मौत में पटा है मार टाला। कुछ साग नौजवानों की इन आवाजों का महापाप ममभकर दान कर कर सन।

धनुवा भगत के घर का भावरी भाग धूमिल था। सालमन का वह धुपना पन पट्टे पना था। अमगुना गिटकी म मामा का घर सात दिनाग पन रहा

था। लकड़ी की कुर्मी लालमन की घोर बढान हुए भगत ने हमरे कमरे स अपने लिए पीढा उठा लिया। एम तो घर म एक ही यन् सा कमरा था पर बीच मे सन के बोरा की छत तन जेची दोवार थी जिस पर वर्षो पुरान समाचार पत्र सटे हुए थे—कही भीधे कही उलटे। जपह जपह पर उन अलवारा के पट जाने से बारे दिग्याई पड रहे थे। लालमन को मामा के घर की ओर देमत पाकर भगत ने कहा—

—अर तो तुम्ह मामा की याद भी इधर नही लाती।

लालमन अपने ही विचारो मे था। क्या मामा ने रास्त म उसे आत नही दखा था ? तो फिर अब तक वह सामने क्या नही आयी। सामने का दरवाजा ओर वह लाल खिडकी भी खूनी थी। उसे अपने आपको आश्वासन दना भी आता था इसलिए कह उठता—गायद उसने मुझे देखा ही न हो। भला लालमन का मन यह कैसे मान सकता था कि मामा उसे बिसार चुकी थी।

वह जिस स्थान पर बठा था वहा क गावर से लिप हुए फस का एक गोल भाग अब भी भीगा हुआ था। उसने सिर उठाकर ईख के सूने पत्तो के छाजन की ओर देखा और उमे जानत देर न रगी कि वषा मे छन रिसती रहती है। सामने की पथर की दीवार का एक भाग भी भटास के पानी स भीग चला था जिस पर की सफे मिट्टी का लप अपना रंग गो चुका था।

लालमन को बार बार खिडकी के जरिये मामा के घर की ओर दखते पाकर धनुवा भगत ने कहा—

—वह कल से कुछ बीमार है।

—मामा ?—लालमन के स्वर म आश्चय था।

—हाँ अभी अभी तो उसकी मा बता गया।

—क्या हुआ है उस ?

कई दिना से लालमन ने मामा की कोई खबर नही ली थी लेकिन वह यह मानने को भी तयार नही था कि उसका चि ना उसे नही थी। उमने शायद कमी भी यह नही सोचा था कि मामा कभी बीमार पड सकती है। और अचानक ही यह एकाएक की छटपटी सी जो उसक भीतर पदा हो गयी थी इमना भी उसे कोई पूव प्रबोध नही था। भगत को चुप पाकर उसन तुरत ही अपन प्रश्न को दोहरा लिया—

—क्या हुआ है मामा का ?

—बुखार है।

—बहुत अधिक ?

—नहीं मैं सोचता हूँ मामूली है। सर्दी के कारण हुआ होगा।

—दवा आदि का कोई प्रबोध ?

—उसकी माँ ने बताया कि रात में उसने अदरक और अगियाखर एक साथ उवालकर उसे दिया था ।

—अदरक और अगियाखर से बुखार थोड़ा ही छूट सकता है । यह तो सर्दी की दवा है ।

—सर्दी मिटने के बाद ही बुखार मिट सकता है । सचमुच तुम तो बहुत अधिक परेशान दिखाई पड़ने लग । पर बेटा, जब तुम्हें उसकी इतनी ही चिन्ता थी तो फिर इतनी देर बाद उसकी खबर लाने की क्यों सोची ?

—चाचा मैं एक बार उसे देखना चाहता हूँ ।

—शामत आयी है । अरे बेटा उसका बाप इस वक़्त घर पर ही है । एक बार अपमानित होकर भी तुम ऐसी हिम्मत कर सकते हो ? तुम्हें क्या मालूम कि वह मुझे भी ख़री ख़ोटी मुना गया है । कहता था कि मैंने तुम्हारे साटसको बढ़ाया होगा । ऐसी बात एकदम झूठ भी तो नहीं पर उसका कहना का ढग मुझे जरा भी पसन्द नहीं था । पाजी अगर नये मन हाता तो उसे करारा सा जवाब देना पर चुन रह जाना पड़ा ।

—इस हालत में अगर मैं उस एक बार न दूँ तो मैं अपना को स्थिर नहीं कर पाऊँगा ।

—वह बहुत अधिक बीमार थोड़ा ही है ।

—बुद्ध भी हो मैं उस एक बार अपनी आँखों से देख बिना महा से नहीं हटूँगा ।

—समझ गया ।

—क्या ?

—सचमुच तुम्हें मामा से बहुत अधिक प्यार है । पर फिर भी एक बात समझ में नहीं आती जब सचमुच ही तुम उसे इतना अधिक प्यार करते हो तो फिर इतने दिना बाद उसकी सुध कैसे ली ? यह बसन्ती जो तुम्हें दस वक़्त हो रही है पढ़न क्या नहीं हुई ?

—चाचा तुम्हें यह कैसे मालूम कि यह बसन्ती मुझे पहले नहीं हुई होगी ?

—हई होती तो यहाँ दौड़ नहीं आते ?

—यहाँ दौड़ आने की बात कई बार सोची थी ।

— तो फिर जब वह रोज़ टकटकी लगामे बठी रहती थी तो तुम पढ़न क्यों नहीं ?

—क्योंकि पढ़न उचित नहीं था ।

—और आज उसका घर तक पढ़न की बात की उचित समझने लगे ?

—वह बीमार है ।

—मानना हूँ पर उसका घर पढ़न वाली बात का अपना जिम्मा स निदान

दो । तुम चाहो तो मैं जगतीश को भेजकर या खुद जाकर उसकी खबर ला देता हूँ ।

धनुवा भगत वह पट्टा मादमी या जिसे मामा भौरलालमन के प्यार से प्यार था । जिस दिन अपनी उदासी को न छुपा सकत पर मामा न पट्टी वार उस अपन हृदय की बात कह डाली थी उस दिन भगत के अपन भीतर का तार तार भनभना उठा था । मामा को लालमन की माद मे उदासपाकर उसे अपने जीवन की वह भारी उगासी याद आ गयी थी । उन दिना उसे एक नया अनुभव हुआ था । एक नयी वात उसे मालूम हुई थी और उसने मान लिया था कि बराबरी म भी अतर हाता है । भुनिया के परिवारवाला ने केवल इतना कहकर उमे ठुकरा दिया था कि वह उन लोगी की जात का नही है । वात का उसकी समझ म आ जाना उतना आसान नही था । उसकी अपनी माँ तो हमेशा यही कहती रहती थी कि भुनिया सबसे गयी गुजरी जात वाली थी और भुनिया के परिवारवाल कहत कि भगत की जाति सबसे नीच ठहरी । धनुवा भगत ने तो कमी मी भुनिमा को छोटी जात वाली नही माना था और न अपन ही को नीच जात का मानने को वह तयार था ।

धनुवा भगत का एक बडा भाई था जा चारा और अपने को सुधारक कहता फिरता था । हवन मात्र की एक दा पुस्तक रटकर वह पंडित बन बठा था । शुरू म तो वह मी जाति पाँति का कट्टर विरोधी था पर बाद म भगत के सामन पहुँच कर वह भी यह कहन लग गया था कि उनकी अपनी जाति हिंदुमा म सबसे ऊँची जाति थी ।

—हम तो सीधे महाराणा प्रताप के वंशज हैं ।—वडे गब स वह कहता ।

गायद इसी कारण उसन अपनी मूँछें भी एकदम महाराणा प्रताप जसी रख छोडी था । भुनिया के परिवारवाला को वह किसी जूत सीन वाले का वंज बताता और अपन को असली राजपूत । धनुवा का इस वात से और भी आश्चय होता जब इधर उधर की कुछ पुस्तको से वह अपनी दलील को और भी मजबूत बनान की कोशिश करने लग जाता । भगत को वे प्र ण जाली प्रतीत हात । वह अपने को बडी जाति का मानने को विलगुल तय नही था कयोकि अगर वह इस वात को मान लेता तो सचमुच भुनिया उसकी नजरो मे गिर जाती । उसे यह जरा भी गवारा नही था । किसी मी हालत म वह यह नही चाहता था कि भुनिया उससे कम हैसियत की प्रमाणित हो जाये । उसन कमी भी किसी तरह के भेद भाव को नही माना था और न मानन का तयार था । उसे अपने को ब्राह्मण मानना भी गवारा नही था । उने मात्र इसा रह जाना अधिक पसंद था ।

वह जवान था उस समय जब उसके बापद्वारा हर वष वाराह पूजा हुआ करती थी । सूअर का गोश्त जा देवता का प्रसाद था, खाने के लिए उसका बाप उमे

जवरदस्ती करता। माँ कहती—इस प्रसाद को ठुनराग वाला दधता की नजर स गिर जाता है। तभी से भगत यह कहन का आदी था कि दधता की आँखो स गिर जाने का उस कोई गम नहीं। वह आदमी की आत्मा स गिरना नहीं चाहता था। लालमन की ओर देखत हुए उसन कहा—

—कहो क्या कहत हो ?

—क्या कहना है ?—लालमन ने जिस भगत क पिछले प्रश्न का बिलकुल जवाब नहीं था पूछा।

—जगदीश को भेजकर उसकी हालत का पता लगाऊ ?

—नहीं चाँचा।

—तो फिर मैं खुद जानर देख आता हूँ।

—अगर हालत अच्छी हुई तो

—जहर साथ लेते आऊँगा।

यह कहकर धनुवा भगत गाँजे की महक को अपने साथ लिय घर से बाहर ही गया। बाहर क बच्चो का कोलाहल पराकाष्ठा पर था। दीवार पर क अलवारी चित्रा का देखत हुए उसन अपने आप स प्र न किया—यह विह्वलता पहले क्या रही हुई ? और जब कोई सतोपजनक उतर नहीं सूझा तो वह अधिक सोचना बंद कर धनुवा भगत की वापसी का बसन्ती क साथ उत्तजार करने लगा। इस प्रतीक्षा म वह कुछ इतना अधिक शा त और अडिग था कि उस अपनी सुद की चटकने सुनाई पड जाती। वह अधीरता थी जो उसके ऊपर बोझ बनी हुई थी। समय के साथ वजन बढ़ता चला जा रहा था। वह केवल यही चाह रहा था कि धनुवा भगत के साथ वह मामा को भी अपने सामन पा ले। उस विश्वास था कि मामा की हालत सुधर गयी होगी और वह भगत क साथ अवश्य आयेगी।

और यही हुआ जिसका उसे विश्वास था। धनुवा भगत के पीछे मामा को देख कर उसे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ पर मामा की मूरत देखकर उस बत अधिक हैरानी हुई। दो दिन की उस बीमारी म वह दो मुग की मरीज सी प्रतीत हो रही थी।

—जोरा का बुजार है इसे, फिर भी तुम्हारा नाम सुनते ही चारपाई से उतर पडी।—भगत न कहा।

लालमन उस चुपचाप देखता रहा।

मन ही मन उसने कहा—तुमने अपनी क्या यह हावत बना रखी है मामा ?

उसक मुरभाव चहरे पर भी एक उपरी मुगदान थी। अस्त-व्यस्त वाला की कुछ तट्टे अधिक तन क कारण चहर पर इधर उधर चिपरी हुई या जिसत उसक चेहरे की कंगि और भी बगी-भी लग रही थी। उसकी आँखा स बुजार का अज्ञान लगाया जा सनता था जिम अपनी ऊपरा मुगदान की परत स दीपना

चाह कर भी वह असफल थी। उसके शरीर की कमजोरी का खयाल करते हुए लालमन न अपनी कुर्सी उसकी ओर बढ़ा दी। घर का बाहर हान के लिए दरवाजे तक पहुँचते हुए धनुवा भगत ने कहा—

—खरियत रही इसका बाप नशम सा रहा था।

धनुवा भगत के चले जान पर भामा कुर्सी पर बठ गयी। उसका कंधा पर हाथ रखते हुए लालमन न बरुण म्वर म कहा—

—मुझसे रुठी हुई हो न ?

—क्या रूठू तुम से ?

—तो फिर बीमारी की खबर मुझ कयो नहीं दी ?

—दो दिन की मामूली सर्दी भी कोई बीमारी हाती है। और फिर न जान बीमारी की बात का भी तुम वहाना समझ हसकर रह जाते।

—तुम अब भी बातों का उरटा सीधा अर्थ लगा रहे हो, भामा ?

—बहुत ज़िना बाद तुम्हे मेरी याद आयी !

—तुम्हारी याद तो हर दूसरे क्षण आती है।

—और हर दूसरे क्षण तुम मेरी खबर लेने आ जाते हो! तुम निपटुर निकले, लाल। पर शायद तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुम्हारी जगह कोई दूसरा भी ऐसा ही करता और फिर मेरे बाप न तुम्हारे साथ जो कुछ किया है उसका बदला लेना भी तो जरूरी है।

—भामा तुमने किसी डॉक्टर को नहीं लिखाया ?

—नहीं लालमन, तुम अपने को इतना अधिक गठार न बनाओ।

—मैं गठार नहीं हूँ भामा।

—बनने की कोशिश भी मत करो। मैं जानती हूँ तुम पत्यगलिल नहीं हो, कोई दूसरा तुम्हें मुझसे अधिक कैसे जान सकता है। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता। तुम्हें जानकर भी मैं आज अनजान बनी बठी हूँ। तुम जो नहीं हो उसे बताने का झूठा प्रयास क्या करते हो ?

—तुम्हें जोरा का खुशवार है भामा। तुम्हें यहाँ बुलवाकर मैं अछा नहीं किया।

—मैं खुद आयी हूँ।

—विश्वास करो अब तुम्हें देखने रोज आया कहेगा।

—छोड़ पाओगे अपने खेत को ?

—तुम्हारे लिए छोड़ पाऊँगा।—भामा के गरम माथ से अपने माथ को सगाते हुए लालमन ने कहा।

बरामदे से भगत के आल्हा गुनगुनाने की आवाज आ रही थी।

प्रभा ने घर के हर काम को अपनी माँ की कड़ी देख रेख में किया था। अपनी माँ का सतुष्ट करने के लिए उसे हर काम में दुगुनी मेहनत करनी पड़ी थी दुगुना समय देना पड़ा था फिर भी उसकी माँ को मनचाहा सहाय नहीं मिला था। चन्द मिनट पहले उन बरतनी के सामने पहुँचकर जि हलुड और राख से रगड़ रगड़कर धोने में प्रभा ने घटा लगा दिया था उसने कहा था कि व साफ नहीं हुए थे। प्रभा का एक मोटी सी गाली देने के बाद उसने कहा था कि महमानों को ऐसे बरतना भी ब्याय देकर अपनी फूहड़पन जताना है। मेज पर जिस डग से प्लास्टिक की चादर बिछाई गयी थी वह भी उस परसत नहीं था। ऊपर से फूलदान और तश्तरी गिलासा को हटाकर उसने अपनी हाथी चादर को ठीक किया। यद्यपि प्रभा और उसके विछाने में कोई अंतर था नहीं एक तरह से राधिका के विछाने पर चारों ओर कुछ लटक सी गयी थी फिर भी ऐसा करके राधिका ने एक लम्बी साँस ली थी। इसी तरह कुतिया के स्थान भी उसने बन्ने फलदान के फूलों को ठीक किया। दीवार के चित्रों पर साफी चलाई बोन-बूच में भाड़ू दी। आगनेस पत्त पत्त को चुना। हर अस्त ध्यस्तता को दूर किया और तब जाकर वह चैन से बैठ सकी।

सालमन ने जब हँसकर अपनी माँ से कहा था कि आज वह उसमें अजीब स्फूर्ति दग रहा था उस समय राधिका ने कबल चन्ना कहा था कि जो मन्मान था वह है व साधारण थाड ही ठहर। व गहरी लाग दूए सफाई परगवम अधिक् ध्यान दन हाने। गहर के लाग और अधिक् सफाई, सालमन को यन् धान उतनी ठीक नहीं जेधी थी। गहर धान जान के उस यन् कम अवसर मिल था फिर भी उमन वहाँ जा सजाई दगा थी उस वन् सफाई मानने का तयार नहीं था। एक तो अभी गनियाम यह गुजरा था जहाँ के नाना की टुंग घ के टिना तक

उसकी नाक म रही थी। जगह जगह उसने कूड़ा-कड़कट व ढेर देखे थे और उन पर भूरे घावारा बुत्ता के भण्डका दला था। कुछ जगहा पर नाल के पानी का वामी भात और तरवारियो व सामन गिथिल पड जाते दला था। उन दश्या को साचत हुए जब गहर व प्रति उसका मन छट्टा हो गया था उस समय कुछ अधिक सोचन के बाद उसन अपने घाप को इम दलील स मना लिया था कि गहर म सफाई भी तो थी, अच्छाई भी तो थी।

प्रमा को समी वामा स निवक्त होत देख राधिका ने उस जागर नहा घाने को कटा। फिर छाया का भी कपडे बदल लन को वाली। लालमन स ममय पूछा। मालूम हुआ कि मेहमाना के पहुचने म अधिन समय नही रह गया है। सूजी का मोहनमोग वह अपने हाथो बना चुकी थी। सोचा, कोई पन्द्रह मिनट म चाय भी वह अपने ही हाथा तयार करेगी। उसे पूरा विश्वास था कि गाय व ताज थी म उसन जो मोहनमोग तयार किया था उससे उसके मेहमान प्रभावित होकर ही रहेंग। वह जो चाय तयार करने वाली थी उसके लिए भी वह इलायची, आदि का प्रबन्ध पहल ही स कर चुकी थी। वह चाहती थी कि उसक घर आये महमान यह मानकर रह कि घर के काम वाजो और रसोई म उसका यह घर अपना निजी स्थान रखता है। प्रमा म खूबमूरती की कुछ कमी के लिए उस डर था। वह उस अय विनोपता से दूर कर देने का निणय किये बठी थी। वह चाहती थी कि लोग इस घर की सफाई और गील स्वभाव स मुग्न हो जाय। इस बात म उस जरा भी सदेह नही था कि प्रमा के स्वभाव का देखकर वे उसकी और अवश्य आकर्षित होग। आखिर चेहरे की जरा सी उतावट और रग की कमी के अलावा उसम और किस दूसरी बात का अभाव था। गाँव की समी औरतें इस बात का मानती हैं कि प्रमा पूरे गाँव की सबसे सुगील लडकी थी। उसकी आवाज की वह मिठास भी अनूठी थी। छोट से बडे समी उसे प्यार करत थे। वामा के लिए उसम जो स्फूर्ति थी वह शायद ही गाँव की किसी लडकी मे थी।

च दन बहुत पहले ही स तयार बठा था। नयी घाती और महाशिवरात्रि के प्रवसर पर खरोती गयी नयी सफे कमीज म था वह। माये का फूलदार रूमाल भी साफ था। वरामदे की आरामकुर्सी पर बठा वह रास्ते की ओर ताक लगाये हुए था। मन ही मन वह यही मना रहा था कि लोग का प्रमा पसन्द आ जाये। उसक लम्बे जीवन का यह पहला अवसर था कि वह अपनी श्रीलाद की शादी रचाय। लालमन उसका पहला लडका था पर चूकि लडकिया पहले ही शान्ती के लिए तयार हा जानी हैं इसलिए प्रमा की वारी भी लालमन स पहले आ गयी थी। चन्तन तो यही चाहता था कि वह अपने तीनों बच्चा के विवाह अपनी आम्वा से देख ले पर अग्न उसकी दलती उम्र व कारण यह असम्भव हुआ ता

भी प्रभा और लालमन के विवाह वह देख ले, यह उसकी सज स बड़ी अभिलाषा थी।

आस पास के के चार पांच लोग भा आ गये थे जिन्हें पता था। वह तुलसी महतो की पत्नी था जो सबसे पहला पहुँची थी और जा यहाँ से सब स बातें म निकलेगी इस बात में भी किसी का संदेह नहीं था। वहाँ जहाँ भी जिस काज म जाती है सजसे पहला पहुँचती है और सजसे बाद में विदाश होती है। जहाँ तक प्रसाद मिठाई आदि की बात रानी उमक धारे में उसकी अपनी रास नीति थी। प्रसाद या मिठाई का अपना हिस्सा ले ले के बाद वह भोजन अपनी बहुरिया और नाती पात के नाम लती हुई दाना हाथा को आग बनाती। यही कारण था कि कुछ लोग उस परमात्मा वाली कहकर पुनारत थे और चूनि परमात्मा गौज का सबसे कामचोर था इसलिए तुलसी महता की पत्नी का इस नाम से चिह्न थी।

लालमन अपनी मा के आदेश पर रास्ते ही में मटमाना की प्रतीक्षा कर रहा था। निश्चित समय से कोई आधा घंटे बाद दा माटरेँ घर के सामने रूकी। बड़ आवभगत के साथ लालमन सभी को घर में ले आया। दस व्यक्तियों में सान स्त्रिया थी। पहले ही से पड़ोस से कुसिया मागकर दा कमरा में सजा दी गयी थी। घर की कुसिया जो काफी पुरानी हो चली थी उसे पीछे रख लिया था। पुष्प एक कमर में बठे और स्त्रिया दूसरे में। बात हाती रही। पारिवारिक बातों से हात हटाने की समस्याओं पर पहुँचते हुए धनश्याम के बाप ने कहा—

—जितने आदमी उतनी समस्याएँ !

—कभी कभी तो यह समझना भी कठिन हो जाता है कि आज के इस अभाव भरे जीवन का असली जिम्मेदार कौन है। कोई दोष मरकार पर डालता है तो कोई जनता पर।

सुखुवा ने इस बार अतीत की स्मृति के साथ कहा—

—आज से तीस पतीस वर्ष पहले जीवन इतना दुस्वार नहीं था। गरीबी में भी किसी तरह रूख मूल खाकर सभी खुश थे। लाग जी जान से मेहनत करके किसी न किसी तरह अपने और अपने परिवार के लिए रोटी का प्रबंध कर ही लेते थे।

—उस समय की यह सबसे बड़ी विशेषता रही होगी कि जनसंख्या की कमी होगी और बकारी का कही नामो निगान न होगा।—लडके के बहनोई ने कहा।

—उस समयकी हर बात निराली थी। मैं अपनी बात कहना हूँ। कबल लोटा भर पानी पीकर मैं काम पर पहुँच जाता था। ग्यारह बजे तक काम करते रहने के बाद मैं अपनी पत्नी को खाना लिए आते देख कमर सीधी करता था। उस समय के पानी और अनाज में जो ताकत थी अब कहाँ है। अब तो दूध में

वह मलाई भी दिखाई नहीं पड़ती जा पहले दिखाई पड़ती थी ।

सुसुवा की बातों में प्रभावित होकर चन्दन ने भी अपनी ओर से कहा—

—आज तो लोग जितना घात है उतने ही कमजोर दीपत है । अब तो लोग में महान करन की वह लगन भी दिखाई नहीं पड़ती ।

—बात एकदम नहीं है । पहले आदमी जो कुछ करता था एक अनुराग में करता था अब तो बचपनी से करना पड़ता है । अभी कल का बात है, हम त्रिभोल के शिवालय गए थे । वह मंदिर दयत ही बनता है । यह साचन की बात है कि उतना विशाल मंदिर उस समय जागो बनना था जब सुविधा और साधनकी कमी थी । आज हमारे पास हर तरह का सुविधा और साधन है, फिर भी नय सिरे से वही मंदिर लड़ा करना आज के लोग के लिए एकदम नामुमकिन है ।

—इस बात से अचरज होना है आखिर पहले की सभी अच्छाइयाँ वहाँ गायब हो गयी ? अतः वहाँ बात पर भठ चारी, अन्तर्गामी धोखेबाजी, चरित्र हीनता और गिथिलता नजर आती है ।

—जमाना बदल गया ।

—जमाना कम बदल सकता है । हम खुद बदल गये हैं ।

—और फिर हमारा बल जाना भी कस अस्वामाविक हो सकता है ।—हंस कर लड़के के वदनों ने कहा

—वह स्वामाविकता क्या है ?

—बातावरण ही जट्टरीला हो गया है ।

—आप गायद ठीक ही कह रहे हैं । फल, सजिया और अनाज में दवाई डाल गलकर उनकी सभी गक्तियों का घटा दिया गया है ।

—हमारे अमाने में जो तरबूज होत थे अब तो सपने में भी वे नहीं दीपते । फलों के वे रंग और मिठास भी अब गायब है । मला अब बेलें आड़ू और अन्नास जैसे फल में भीड़ पड़ जाते हैं । अगर ऐसा ही रहा तो कुछ दिनों में हमारे देश से नारियल का नामोनिशान भी मिट जायगा । सभी पेड़ों को कीड़ तहम नहम करत जा रहे हैं ।

—सुना है आजकल ईला में भी गोमोज नाम की काई बीमारी फलन लगी है ।

—भगवान जाने और क्या क्या होन वाला है ।—चन्दन ने कहा ।

—जितनी दवा उतनी बीमारी वाली बात हुई ।

—मैं तो कहूँगा इमान की नीयत ही आज बदल गया है धरना प्रगति का फल दुख कैसे हो सकता है ।

लालमन के भीतर भी बहुत मार विचार थे । वह भी कुछ धोयना चाहता था लेकिन बड़ा के सामने कुछ बोल जान का साहस उसमें नहीं था । बातें हो ही

रही थी कि उसकी माँ ने दूसरे कमरे से आवाज़ देकर उस बुलाया। औरता के बीच जाते उस कुछ भिन्न तो हुई पर पहुँचा। जिस कमरे में मंत्रिया बठी थी उसी की बगल वाले छोटे से कमरे का परना पकड़े छाया खडी थी। लालमन के साथ राधिका उसी छोटे से कमरे में पहुँची जहाँ प्रभा गुलाबी साडी में तयार बठी थी। उसके मुखड़े पर की लज्जा साफ दिखाई पड रही थी। कपन भी स्पष्ट था। लालमन पहली बार अपनी बहन का साडा में देख रहा था इसलिए अपलक दसता रहा। तभी उसकी माँ ने कहा—

—सुखुवा चाचा को बुला लाओ।

प्रभा के चेहरे पर छाया भय के कारण को समझन का असफल प्रयत्न करत हुए लालमन मदों के कमरे की ओर बट गया। दूसरे ही क्षण औरता के बीच से न होकर, दूसरे दरवाजे द्वारा सुखुवा को लिय वह अपनी माँ के सामने पहुँचा। उसकी माँ ने सुखुवा से कहा—

—प्रभा तयार है।

—लौटे में पानी लेकर आना होगा।

—सभी कुछ तयार है।

—प्रभा बठी, उरने और शमान की कोई बात नहीं है। सामने पहुँचकर सभी को प्रणाम करना।

मेज पर के लौटे की ओर सकेत करते हुए राधिका ने उसे उठा लेने को कहा फिर उसकी ओडनी को कुछ आगे की ओर खींचकर उसने कहा—

—अगर नाग कुछ पूछें तो चुप न रह जाना।

जिस रास्ते से सुखुवा आया था उसी रास्ते प्रभा उसका बगल में अपने भारी बंदमो को उठाती हुई मदों के बीच पहुँची। इतना बडी परीक्षा उसने पहले कभी नहीं दी थी। इधर कई दिनों से उसकी कल्पना बावली थी। पिछली रात तो बडी देर से उसे नींद आयी थी। अपने परिवार को छोडकर कही और की बात जाने की बात का वह काफी देर तक सोचती रह गयी थी। उस अजनबी के बारे में भी उसने तरह-तरह की बातें सोची थी। कड़वाहट और मिठाम की तरगा में डुबकियाँ ली थी। दद भी अनुभव किया था और खुशी भी। और उस अजनबी को एक बार देखने की अपनी अधीरता पर उस आश्चर्य भी हुआ था। समय के साथ उस देखने की इच्छा प्रभा के भीतर जितनी प्रबल हुई थी इस समय वह उतनी ही टब गयी थी। वह लज्जा का बहुत भारी बोझ था जिससे उसकी पलकें उठ नहीं पा रही थी।

सभी लोगो को नमस्कार करके उमने लौटे को मज पर रख दिया और अपने ही आप में सिमटी हुई वह मूर्ति की तरह खडी रही। उस पस बात का जरा भी मान नहीं था कि अनेक नजरें उस घूर रही थी। सुखुवा दाँटा की

आवाज थी जिस वह सुन पायी—

—लडकी आपके सामने ह ।

सभी एक दूसरी आवाज सुनाई पडी—

—क्या नाम है तुम्हारा, बटी ?

प्रभा की जवान धोखा देती-सी प्रतीत हुई । किसी तरह साहस बटोरकर उसने अपना नाम बताया । फिर उसी स्वर ने दूसरा प्रश्न किया—

—पढना लिखना कुछ जानती होगी न ?

—हि नै पढ लेती है । रामायण इतना अच्छा बाँधती है कि मुनकर आप मुग्ध हो जायेंगे ।—प्रभा को चुप देग सुलुधा न कहा ।

—ठीक है बटी तुम जा सकती हो ।

यह सुनकर प्रभा न राहत की लम्बी साँस ली । वह पीछे को मुडी ही थी कि दूसरे कमरे से उसकी माँ की आवाज आयी—

—इधर आना प्रभा ।

वहाँ पहुँचकर प्रभा ने सभी स्त्रियाँ को प्रणाम किया । उसे बठ जान को कहा गया । उसके बठन ही किसी ने सवाल किया—

—घर के सभी काम काज कर लेती हो ?

—हाँ ।

—घास आदि भी काट लेती हो ?

इससे पहले कि प्रभा कुछ कहती तुलसी महतो की पत्नी बीच ही में कह उठी—

—भगवान की कृपा से हमारे घर की लडकियाँ घास के लिए जगल जगल मारी नहीं फिरती ।

—मिलाई तो आती होगी ?

उसका जवाब भी तुलसी महतो की पत्नी ही ने दिया—

—चारपाई पर की यह चादर इसी की ब्याई हुई है । घर का कोई भी कपडा सिलाई के लिए बाहर नहीं जाता ।

और कई प्रश्न हुए । कुछ के उत्तर प्रभा न दिये कुछ के तुलसी महतो की पत्नी ने । फिर आवाज देकर लडके को सामने बुलाया गया । उसके आते ही तुलसी महतो की पत्नी ने उससे कहा कि वह लडकी को अच्छी तरह से देख ले । लडका साबला था । राधिका को विश्वास था प्रभा उसे पसंद आ जायेगी । जलपान के दौरान तुलसी महतो की पत्नी ने लडके से भी कुछ प्रश्न किये जिससे पता चला कि वह अपनी उम्र से भी कुछ अधिक बडा दीखता था । सरकार म तीन दिन की इधर उधर की नौसरी थी । लडको का अभाव था इसलिए छोटी मोटी बातों पर नक्काचीनी करना ठीक नहीं था । लडकीवालों की ओर से लडका पसंद था ।

रही थी कि उसकी माँ ने दूगरे कमरे से आयाज दर उठा बुलाया। धीरता के बीच जाते उस कुछ भिन्न तो हुई पर पहुँचा। जिस कमरे में स्त्रियाँ उठी थी उसी की बगल में न छोटे से कमरे का परना पड़े छाया गड़ी थी। लालमन के साथ राधिका उसी छोटे से कमरे में पहुँची जहाँ प्रमा गुलाबी साड़ी में तयार बठी थी। उसके मुँह पर की लज्जा साफ़ दिखाई पड़ रही थी। वपन भी स्पष्ट था। लालमन पहली बार अपनी बहन का साड़ी में दग रहा था इसलिए अपलन देगता रहा। तभी उसकी माँ ने कहा—

—सुखुवा चाचा को बुला लामो।

प्रमा के चहरे पर छाया भय के कारण की समभन का असाफ़ प्रयत्न करत हुए लालमन मर्दों के कमरे की ओर बग गया। दमर ही क्षण धीरता के बीच से न होकर, दूगरे दरवाजे द्वारा सुखुवा को लिय वह अपनी माँ के सामने पहुँचा। उसकी माँ ने सुखुवा से कहा—

—प्रमा तयार है।

—लोटें में पानी लवर आता होगा।

—सभी कुछ तयार है।

—प्रमा बेटी, डरने धीर गर्माने की कोई बात नहीं है। सामने पहुँचकर सभा को प्रणाम करना।

मज पर के लोट की ओर सक्त करत हुए राधिका ने उसे उठा लेने को कहा, फिर उसकी ओर की कुछ आगे की ओर लीचकर उसने कहा—

—अगर लोग कुछ पूछें तो चुप न रह जाना।

जिस रास्ते से सुखुवा आया था उसी रास्ते प्रमा उसकी बगल में अपने मारी कदमों को उठाती हुई मर्दों के बीच पहुँची। इतनी बड़ी परीक्षा उसने पहल कभी नहीं दी थी। इधर कइ दिना से उसकी कल्पना बावली थी। पिछली रात तो बड़ी देर से उसे नींद आधी थी। अपने परिवार को छोडकर कही ओर की बन जाने की बात का वह काफी देर तक सोचती रह गयी थी। उस अजनबी के बारे में भी उसने तरह-तरह की बातें सोची थी। कइवाहट और मिठास की तरंगों में डुबकिया ली थी। दद भी अनुभव किया था और खुशी भी। और उस अजनबी का एक बार देखने की अपनी अधीरता पर उसे आश्चर्य भी हुआ था। समय के साथ उसे देखने की इच्छा प्रमा के भीतर जितनी प्रबल हुई थी उस समय वह उतनी ही दब गयी थी। वह लज्जा का बहुत भारी बोझ था जिससे उसकी पलक उठ नहीं पा रही थी।

सभी लोगों की नमस्कार करके उसने लोटें को मज पर रख दिया और अपने ही आप में सिमटी हुई वह मूर्ति की तरह खडी रही। उसे इस बात का जरा भी मान नहीं था कि अनेक नजरें उसे घूर रही थी। सुखुमा दादा की

आवाज थी जिसे वह गुन पायी—

—लडकी आपक सामने ह ।

तमी एक दूसरी आवाज सुनाइ पडी—

—क्या नाम है तुम्हारा, बटी ?

प्रभा की जबान धोखा देती सी प्रतीत हुई । किसी तरह साहस बटोरकर उमने अपना नाम बताया । फिर उसी स्वर ने दूसरा प्रश्न किया—

—पढना लिखना कुछ जानती होगी न ?

—हि नी पढ लेती है । रामायण इनना अच्छा बाँचती है कि मुनकर आप मुग्ध हा जायेंग ।—प्रभा को चुप देख मुसुवा ने कहा ।

—ठीक है बटी तुम जा सकती हो ।

यह सुनकर प्रभा न राहत की लम्बी साँस ली । वह पीछे की मुडी ही थी कि दूसरे कमर से उसकी माँ की आवाज आयी—

—इधर आना प्रभा ।

वहा पहुँचकर प्रभा ने सभी स्त्रिया को प्रणाम किया । उसे बठ जान को कहा गया । उसके बठत ही किसी ने सवाल किया—

—घर के सभी काम काज कर लेती हो ?

—हाँ ।

—घास आदि भी काट लेती हो ?

इससे पहले कि प्रभा कुछ कहती तुलसी महतो की पत्नी बीच ही म कह उठी—

—भगवान की कृपा से हमारे घर की लडकियाँ घास के लिए जगल जगल मारी नही फिरती ।

—सिलाई तो आती होगी ?

इसका जवाब भी तुनगी महतो की पत्नी ही ने दिया—

—चारपाई पर की यह चादरइसी की बढाई हुई है । घर का कोई भी कपडा सिलाई के लिए बाहर नही जाता ।

और कई प्रश्न हुए । कुछ के उत्तर प्रभा ने दिए, कुछ के तुलसी महतो की पत्नी ने । फिर आवाज देकर लडके को सामने बुलाया गया । उसके आते ही तुनगी महतो की पत्नी ने उससे कहा कि वह लडकी को अच्छी तरह से देख ल । लडका साँवला था । राधिका को विश्वास था प्रभा उस पसन्द आ जायेगी । जलपान के दौरान तुलसी महतो की पत्नी ने लडके से भी कुछ प्रश्न किए जिससे पता चला कि वह अपनी उम्र स भी कुछ अधिक बडा दीखता था । सरकार मे तीन दिन की इधर उधर की नौकरी थी । लडका का अभाव था इसलिए छोटी मोटी बातों पर नक्काचीनी करना ठीक नही था । लडकीवाली की ओर स लडका पसन्द था ।

परिश्रम मेरे मित्र थे उस रात व
 जमीन से ऊपर नहीं आ पात
 उसके आगे गंगाघुम्बी पेडा का
 यह घना जंगल जो राडा है
 जिन म शीव स व अच्छे काम लोग
 गिवार करत हैं हिरणा के
 हस्या की प्रतिभोगिता जिमसे होती है
 उस भयानक जंगल व कारण ही
 पूर्वी हवा पहुच नहीं पाती कभी मूल स भी
 ऊपर आने की शक्ति नहीं द पाती कल्ला को
 सूरज की उष्ण किरणें कभी ।
 गरीब व सूरज का इसी तरह रोकन का
 प्रयास हर दिना स होता रहगा
 और प्रतीक्षा वनी रहगी
 जंगल व हटन की नहीं
 सूरज को दिशा बदलकर आ जान की

हरियाली से हाती हुई खाली समुद्र के नीलेपन स जा मिली थी । धुधलपन
 को बढत दम गालमन ने कागज को चार तहा म मोडकर अपनी जेब म रख
 लिया । एक दो नयी पकितियाँ उसके मस्तिष्क म चक्कर काट रही थी । उह याद
 रखने के लिए कई बार दोहरात हुए वह उन पकितियाँ को गुनगुनाता रहा ।

घर के रास्त म दिन ने चाहा कि मामा क घर की ओर से होकर गुजरे ।
 पर फिर खयाल आया कि यहाँ पहुचत पहुँचत तो मधेरा हो जायेगा । जब मामा
 से मँट ही न हो सकगी तो फिर वहाँ पहुचने स क्या काम ! यह सोचकर वह सीधे
 रास्ते पर चलता रहा । मामा को रोग मिलने का वचन देकर भी वह उसे निमा
 नहीं पा रहा था । उसे सत्रसे अधिक चिंता इस बात की थी कि मामा उसकी
 प्रतीक्षा करती रह गयी होगी । उसने अपने आपको कठोर कहा, फिर खुद को
 समझाते हुए मन ही मन बोला—उसकी उस बीमार हालत म उससे रोज मिलना
 जरूरी था पर अब तो वह स्वस्थ हो चली है । उसने अपने आप से प्रश्न किये—तो
 क्या उसकी बीमार हालत म ही मैं उसे हृदय से प्यार करना हूँ ? अगर यह दया
 हुई तो फिर दया प्यार से अधिक सशक्त कैसे हो पायी ? उमे रोज मिलने का
 वचन देते समय तो मैं काफी गम्भीर था । तो फिर मुझ उस वचन का खयाल क्या
 नहीं ? दिल्लगी भी इस तरह की हुआ करती है ?

शाम की लालिमा की तरह उसके य खयाल भी क्षणिक ठहरे । जिस समय
 वह घरमेन व सामने था उस समय उसने अपने को दूसरे विचारो म खीय हुए

पाया। रास्ते में ठीक कालीमाई की बगल वाले पुराने नीम के पेड़ के नीचे धरमेन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लालमन के साथ वह उसके घर पहुँचा। उसकी बातों को टालने के कारण लालमन ने कपड़े बदले और उसके साथ हो लिया। उसके घर से बाहर जाने ही उसकी मा ने आवाज दी। लालमन ठिठक गया। उसकी मा धुधले आकाश की बदली के बीच दूज का चाद देख रही थी। आग बटकर उसने लालमन के गालों को चूमते हुए कहा—

—एक ही साथ मैं तुम दादा के मुँह देखे है।

धरमेन हौल से हँस दिया।

—चाची, मेरी सूरत देखकर तुमने मनहूस की सूरत देखी है। इस महीने कोई भी अच्छा दिन नहीं देख पाओगी।

—मुझे विश्वास है कि तुम दोनों के मुँह एक साथ देखने का मतलब है खुशियाँ भरा महीना।

लालमन का कंधा धाम धरमेन हसता हुआ वहाँ से चल पड़ा। दूज का वह चाँद काली बदली के एक टुकड़े के पीछे छिप चुका था। कुछ ही दूर जाने पर लालमन का मालम हो गया कि धरमेन के साथ वह गाव के उस एकमात्र रस्ते की ओर जा रहा था जिसे वह आज तक मजदूरों के लिए गन्त स्थान समझता था। वह उन सभी मजदूरों की भली भाँति जानता था जो उस दूकान से नंगा परीशत थे। उनमें बहुत ऐसे थे जो अपनी कमाई का तीन चौथाई दूकान में छोड़ जाते। उसने कहना सुना था कि जीवन की थकावट का मिटाने के लिए शराब ही मजदूरों की एकमात्र दवा थी मगर उसके अपने जीवन में तो किसी तरह की थकावट नहीं। तो फिर वह क्या बड़े जा रहा था उस ग़ार ? उस दिन वीयर पीकर अपने भीतर की जिंदासा को तो उसने मिटा लिया था पर उसके मिश्रित ही एक प्यास सी क्या लग आयी थी उस ? धरमेन उससे बातें करते हुए चल रहा था पर वह खोया हुआ था अपने ही प्रश्न में। धरमेन की जिस बात को वह सुन पाया था वह थी उसकी पत्नी बदल कर देने की बात। गाव के कई लड़के अपनी पत्नी के बीच ही मर जाते थे पर उन सभी के लिए तो ऐसा कर जान की मजबूरी थी। उनमें एक भी ऐसा नहीं था जिन्होंने अपनी इच्छा से पत्नी छोड़ दी हो। सभी के लिए पैसे का अभाव ही सबसे बड़ा कारण था। पर धरमेन के लिए तो ऐसी बात नहीं हो सकती। मना उसके पास पैसे की क्या कमी थी ? कारण जानने के लिए लालमन का कोई प्रश्न नहीं करना पड़ा था क्योंकि धरमेन ने यहाँ तक कह दिया था कि वह अपने माई के साथ खेता की जिम्मेदारी सम्भालने जा रहा है। धरमेन को खेता की ओर भुक्त पाकर खाने का खुशी थी पर उसकी पत्नी एक जान का उस दुख भी था। उसने एक पद लिखकर डाक्टर के पास जाने का। जो बनना चाहता था

मिलता और जिस अयसर मिलता है वह बनना गी चाहता ।

वह समय था जिसस दूकान के सामने पहुँचने ही घनपाम मिल गया । तीना एक साथ भीतर पहुँच । लालमन के दाता मित्र दुग दूकान में पहल कितनी बार पहुँच चुके हाग । इस बात का पता लालमन को नहीं था पर वह पहली बार इसके भीतर दागिल हुआ था ।

पहली बार जब प्रभा का यह बात हुआ था कि उमरा भाई पोतर घर आया है उस दिन उस आरचय तो हुआ था पर उस साधारण नग में पातर वह घबराई नहा थी । आज भी लालमन पर उसकी नजर सजस पहन पनी थी और आज उस दरत ही वह घबरा गयी थी । कथा देकर प्रभा उभ उस कमरे में पहुँचा आयी जहाँ कोई नहा था । उस चारपाई पर लिटाकर उसने लिडकी खाल दी । इस बात के लिए उसने भगवान को धयशांटिया कि घर के सभी लोग गहरी नींद में थे । कुछ दर तन इधर उधर की बातें करत रहने के बाद लालमन को उववाई धान लगी । प्रभा भयभीत थी कि वही उसका बाप आवाज सुनकर जाग न पड़े । चारपाई से उठाकर प्रभा ने उस लकड़ी की कुर्सी पर बिठान की कोशिश की और जब वह छाती पकड़े पूरा मह सोताकर ओकान लगा उस समय वह दीडकर बाहर गयी और पुरानी बाल्टी लिय भीतर आ गयी । तैरिन उसक पहुँचने से पहले लालमन फग पर जलनी कर चका था । अजाय दुग घ आ रहा थी उस वमन से । उसके आग बाल्टी रखकर प्रभा पानी लाने चली गयी । उस जिस बात का सबसे अधिन डर था वह था उसक बाप का जाग जाना । वह जानती थी कि उसक भाई को इस हालत में दगकर उसका बाप एक ही वाक्य में सभी कुछ कह जाएगा जिसका यह तात्पय होगा कि गराबी के लिए इस घर में कोई स्थान नहीं । उसका बाप अपना घर को मंदिर कहता है वह हमारा यही कहता आया है कि मंदिर में कभी भूठ बोलने की कोशिश न की जाय । भगडा फूट गालिया—सभी बाता से वह घर के हर व्यक्ति को रोकता आया है । मंदिर में शराबी ! भला यह बात उस कैसे पसंद आ सकती थी ?

वमन के बाद जब लालमन कुछ गात हुआ तो प्रभा उसे दोभारा कथा देकर चारपाई पर ले गयी । दो तकियो के सहारे उसके माथे को टिकाकर सब प्रथम वमन से भरी बाल्टी को वह बाहर छाड आयी । वह दुग घ उसकी नाक में समा सी गयी थी । जलनी जलनी उसने फग साफकिया फिर भी दुग घ का एक दम मिट जाना दुश्वार था । हाथ पाँव धोकर लौटने पर प्रभा ने अपने भाई को चारपाई पर वेसुध साथ पाया । पताने से चादर लेकर लालमन को ओढाने के बाद उसने लिडकी बग की चिराग बुभाया और उस कमर में चली गयी जहाँ उसका अपना बिस्तर था । घर के किसी भी व्यक्ति को कुछ भी पना नहीं चला था इस बात की उसे खुशी थी ।

अपनी मा की चारपाई के पास ही नीचे बिछे विस्तर पर लेटकर प्रमा फिर से उही खयाला म खा गयी जिनम दिन भर खोयी हुई थी। उसके ये खयाल अनीत के उन धुधल दशयो स गुरु हुए थ जत्र घनश्याम के आगन म वह आस पास की लटकियो के सम खेला करती थी। इमली का वह बडा मा पड अब न रहा। पिछेने तूफान म उसके उखड जाने का उस वतुत दुख हुआ था क्योंकि उस पेड के नीचे उसके बचपन के बहुत से अविस्मरणीय क्षण बीने थे। उसी की छाया म घनश्याम की बहन के साथ वह गुडियो की शान्ती ग्चाती थी। वही पर घनश्याम की बहन उसमे अमली शादी की बातें किया करती थी। सोमा बडी थी इमलिए इस तरह की ममी बातें वही करती थी। प्रमा पूरे ध्यान से कवल सुनती रहती। जिस दिन सोमा की शादी हा रही थी उम तिन पटली वार प्रमा न अपने दूल्ह की कल्पना की थी।

उम दिन जत्र वह व्यक्ति उमे देखने आया था उस समय साग चाहकर भी प्रमा अपनी नजर ऊपर नहा उठा पायी थी। उसके चले जाने पर वह घटो तक सपना म खोयी रह गयी थी। उम समय उस ऐसा एहसास हुआ था कि वह वही व्यक्ति था जिसकी कल्पना उसने उम दिन सोमा के विवाह म की थी। उम व्यक्ति को गये आज पाचवा दिन था। जान हुए लोगो ने मही कहा था कि कुछ त्तिना क भीतर उत्तर भेज देंग। घर के सभी लोग बेसत्री से उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थ। प्रमा भी अधीर थी। लालमन को चिंता थी। इम समय उसकी चिंता नशे म सो रही थी लेकिन प्रमा की अधीरला अब भी जाग रही थी और उसकी कल्पना भी उतनी ही सजीव थी। वह जहा जायगी वह एक सुंदर घर हागा। अपने इस घर की तरह बडा न भी हुआ ला कोई हज नही पर वह सुंदर हो वहा के सभी लाग अच्छे हा। लोग उसन कामा को पसन्द कर और वह उनके प्यार का इस घर का प्यार समझे। अपने भाई का आज इस विचित्र सी हालत म देखकर उसने मन ही मन एक प्रार्थना की। वह नही चाठती थी कि उसका हान वाला पति गारागी हा। पास पराम की कई औरता म वह सुन चुकी थी कि शराबी अच्छा पति नही हुआ करते। वह हर मूरत म एक अच्छा पति चाहती थी और इस एक इच्छा के सामन वह वाकी दच्छाओ को छोड सकती थी। उसे चानो की कहानी याद है। चानो की शान्ती एक बहुत ही धनी घर मे हुई थी। उसके सास मसुर भी बहुत अच्छे थ। रानी बनकर वह उस घर मे पहुची थी पर कुछ ही त्तिनो म उम घर मे उमका जीना दुश्गार हा गया था। अपनी शादी क पहल तीन दिन एक रूद भी न पीकर उमक पति ने अपने घर के सभी लोगो को चकित कर लिया था। चौथे त्तिन उमके घर क भीतर आते ही भूचाल आ गया था। किसी तरह महीना तर उम घर म रहकर एक त्तिन चानो वहां स भाग आयी थी। उमकी कहानी स प्रमा का दिल दहल उठा था। इस समय

भी वह उस बात को सोचकर भीतर ही भीतर बहिन रही थी। मात्र त्रिग हानन में उमरा था। भाई का जगना था उमरा उमरा भीतर का मन धीरे भी बढ़ गया था। फिर भी उमरा भरोसा था कि वह यह था। भाई ने वह भी गहरा बाँध बनाया और उमरा ही इस सुरी घातन को सजाकर रखी।

प्रभा था तहा था रही थी। शहर का कुछ जाने उमरा निरागरा रही तमाम सारा म भिन्न थी जब था। थाप क मामा कर्णा। जो गुना गुना उमरा मही पर मोन धाने सम जाती। शहर कर्ना शरी उमरा कर्णा। जो तहा मुनी था। उमरा एसा प्रीत ही। सगा था कि वह था। पर क सगा म एसाए कर्ना भी गया थी। यह था। धारता समझा की कर्णा। कर्ना धीरे समझा था।

कल उमरा घाने मामा। शिवाय जब उमरा। जो उमरा मरा रही थी उमरा समय भी उमरा यह धनुभव किया था कि सभी गुना उमरा म धनग हानन क सिल किया जा रहा था। उमरा। जो उमरा मरागे बाँध उमरा सामन रही थी और सभी का मार वाली था कि मगुरान का यह था। पर समझ धीरे यहाँ क सभी सगा की घाँगा म था रहा क सिल मभी म धनग। जमा पग धाय। हर भूमी मटकी थाप को समझा। हूण उमरा। जो कर्णा। कि सडकिया का साचा पर तो उमरा मगुरान ही हाता है। धन। हा विपारा म मोय रहा क कारण प्रभा धरती माँ की ममी बाँधे तहा मुन पाता। एसाथ बार - स एसा धामास हुआ था कि एम पर म उमरा विमानन म एम तरा की जन्मराजा की जा रही थी। इतना तो यह समझती थी कि सडकिया माँ-बाप धीरे भाई क सिर बोझ हुआ करती हैं। एसाथ उमरा जन्मराजा क मयात म उस धामचय नहीं होता।

बाई बार रहा शिवाय शिवाय उमरा। जो उमरा पर गाँविया की बोझार कर चुकी थी। कभी उस पर पृथ्वी घना था थी कभी धिमरा कभी भाडू। कभी प्रोध म धारतर उमरा मृत्यु की कामा। जो कर चुकी था। उन मोरा पर प्रभा तिमो कौन म पट्टककर शिवायती रह जाती। उमरा समय मन ही मन यह कही दूर चल जा की बात माचती। उमरा एसा लगता कि उसकी माँ अपनी न हाकर सीतेली थी लकिन धाने धीरे उसकी घाँगा क घाँसू जस जस मूगत जात, यह अपने सयाल का बलती जाती। उसकी समझ म धाने लगता कि वे सब धत्याचार नहीं थे। समय क भाथ उस इस बात की जानकारी भी होती गयी थी कि उसकी माँ उस बेहूँ प्यार करती है। उन तिरस्कार। धीरे ताडन म भी प्यार छिपा हुआ था। एम तिन बहुत पहन जब उसकी माँ ने उसे बहुत धधिन कोसा था उस वक्त प्रभा क मुह स एका धीमी मानी निवल पडी थी और उसने साथ ही भनकर यह यहाँ स हूँ गयी थी। बाँध मे इस बात के लिए उसे जो पश्चाताप हुआ था वह उसके जीवन का सबसे बड़ा पश्चाताप था। मन ही मन कोई हज़ार बार उसने अपनी माँ से क्षमा माँगी थी।

इस समय भी चारपाई पर लटी बटी वह उ ही पुरानी बातों को सोचनी जा रही थी। पुरानी स्मृतियाँ क धाग के साथ वह भविष्य का दावने का प्रयास कर रही थी। उसने सहेलिया स यह सुन रखा था कि लडकियाँ क लिए शादी एक जुए की तरह होती है—कभी हार, कभी जीत, कभी बेहतर, कभी बदतर। इस बात का उसे पूरा यकीन था क्योंकि अपनी सहेलिया म सबमुच ही उसने कुछ को मायके से अधिक सुखी समुराल म पाया था और कुछ के लिए जो सुख मायके म मिला था वह समुराल म सपना बनकर रह गया था। इन बातों को सोचते हुए प्रमा अपने भविष्य के भरोसे से अपने भाग्य को भँकने का प्रयत्न करती। इस घर म सभी दनों क वावजूद भी उमे जा सुख मिला था वह बहुत भारी सुख था। उसे विश्वास नहा था कि किसी दूसरे घर म उम यहाँ जसा प्यार और सुख नसीब हो सकता है। फिर भी उमकी आगा उम हताग नहा होने देती थी।

प्रमा के भीतर की आगा उसे घीरज बँधाती हुई कहती कि उसके समुराल के लोग कभी भी निदयी नहीं हो सकते। अपने पति से उमे वह प्यार मिलेगा जिससे वह निहाल हो जाएगी। वह किस तरह उसक सामन जायगी किम तरह उससे बातें करेगी वह किस तरह उसस पेश आयेगा—बन इही बातों को प्रमा सोचनी चली जा रही थी। किसी अजनबी के प्रति इतना कुछ सोच जाना और उसस इस तरह आकर्षित हो जाना उसे एक बहुत बड़ा रहस्य-ना लगता। वह अपनी सहेलिया से पूछकर दम्बना चाहती थी कि क्या सभी लडकियाँ उसी की तरह मोचती हांगी या वह सभी से भिन्न थी।

उस दिन जब उसके भाई ने हसते हुए कहा था कि शादी के बाद लडकियाँ अपने मा-बाप और भाई-बहन को बहुत कम याद करती हैं उस समय प्रमा उससे भगड पडी थी। वह मानन का लपार नहीं थी कि लालमन को वह एक क्षण के लिए भी बिसार सकती है। वह सोचती कौन सा ऐसा काम होगा जिसे करत समय वह अपने भाई को याद नहीं करेगी वह सोचकर हार जाती पर घर के कामों मे कोई भी ऐसा काम न था जिसके साथ उमके भाई का कोई न कोई सम्बन्ध न हा। उसके चावल बीनत समय उसका भाई मूष से चावल लेकर बिखेर जाता। वह पानी भरती होती तो लालमन छोटे देकर उस भिगो जाता। रसोई घर मे होती तो वह पीछे मे आकर उस चिकोटी काट जाता। कोई भी ऐसी जगह न होती कोई भी ऐसा दिन नहीं था जय दोना के बीच एक छान्नी-सी रूट मनोमल न हा जाती।

प्रमा खयाला म डूबी जय तक जागती रही बाहर की नीरवता को भग करक भाती हुई भीगुरो की धावाजा को मुनती रही।

पहले तो लालमन ने घनश्याम क प्रस्ताव को योही खेल मात्र समझा पर अंत में जब उसे पता हुआ ही गया उसके वे चारों मित्र उनसे ही गम्भीर थे जितना कि वह खुद था तब तो उसे समझते देर नहीं लगी कि वे मजाब नहीं कर रहे थे। सभी को नीचे से ऊपर तक तयार पाकर उस भी तयार होता ही पड़ा पर इतने पर भी अपने मित्रों की पवतारोहण की रात का वह सनक समझने से अपने को रोक नहीं पा रहा था। उसकी अपनी नजरों में तो किसी समुद्र किनारे की पिकनिक अधिक ठीक रहती। उसके इस सुभाव को काटते हुए घरमेन ने कहा था कि पहाड़ पर चढ़ने में जो आनंद जो सनसनी हाती है वह समुद्र किनारे नहीं मिल सकता और फिर समुद्र तो रोज वाली चीज ठहरा। उसके सनसनी गान से लालमन प्रभावित हो गया था। सोचा इस सनसनी का भी अनुभव करके देख ल।

घनश्याम ने तो कहा था कि एक बार खतर से खेलकर उसका आनंद भी लूट लिया जाय और जब खाने पीने की चीज खरीदते समय किशोर ने बीयर लेने की बात कही थी उस समय फिर घनश्याम ही ने कहा था कि अगर मरने का इरादा है तो बीयर की कुछ बोतलें अवश्य ले ली जायें। इस पर घरमेन ने हँसकर कहा था कि वहाँ तो परा में अपने गाँव लडखडाहट हागी उसके लिए दूसरी चीज की क्या आवश्यकता है।

घनश्याम को छोड़कर बाकी लोग व लिये यह पहला अवसर था इसलिए शुरू करने के लिए एक छोटे पहाड़ को ही ठीक समझा गया। पूरा पर्वत का प्रस्ताव घनश्याम ही ने रखा था और सभी ने उस मान लिया था। उसका कहना था कि घासपास के पहाड़ों में इसी की चढ़ाई सबसे आसान थी। तब ही बस द्वारा वह गहर पहुँच। वहाँ से आधा घंटे की चलाई व बाद में पहाड़ की गोठ में

पहुँच गये। वहाँ पहुँचने से पहले मन के कारवाने के पुल के पास कीचड़ और गन्गी को देखकर लालमन की आधी हिम्मत जाती रही। पहली बार उसने मल कुचल मूँचरा और उनक बच्चा का नालिषा की गदबी मलोटत दखा था। वहाँ की दुग घ इस समय भी उमकी तक म थी।

भाडिया, जगलो को पार करके वे उस पगडटी पर पहुँचे जो चक्कर कान्ती हुई ऊपर का जाता थी। ऊपर दक्कत दूण वह रास्ता लालमन को बहुत ही दुगम प्रतीत हुआ पर अपन का वाकी मिना म अधिन डरपोर बतान का विचार उसे नहीं था। घन-धाम लोगो का पथप्रशान था। आधा पहाड चढ़ने के बाद जब लालमन भी हाफन लगा तब जाकर उम मालूम हुआ कि सबमुच पहाड की चढाई म एक आनन्द निहित था। वह जितनी कठिन थी उतनी ही मनोरञ्जक भी। एक दूसरी वान जा उस मालूम हुई वह यह कि इस चढाई म घनधाम का अपना खास मकसद था।

प्रशिक्षण विद्यालय की ओर सजो वापिन प्रदानी होने वाली थी उसमे पवतारोत्थन पर उम प्रजेकट तयार करता था। अपने साथ लाये कमरे से वह ठौर ठौर पर चित्र खींच रहा था। हलक जलपान के लिए जिस बट्टान पर वे रुक वहाँ से समूचा गहर फम म वर एक चित्र मा दीस रहा था। उँची इमारत और बरगगाह के सभी जहाज मिलीन स प्रतीत हो रहे थे। सभी उन दश्या का निरखते रहे। इनके सुंदर नजारे लालमन न कमी नहीं देखे थे। सूरज की कोमल किरणों के साथ जगमगान गहर और समुद्र सुनहरे सपने स लग रहे थे। उम सौंदर्य म आराग तक बढ़ चल जान का प्रोत्साहन था।

जिस समय बके मादे लडखडात कल्मा से वे चाटी पर पहुँच सूरज की किरणें अपनी काभलता भी चुकी थी और सभी के चेहरे पर पनीने की बूँदें चमकन लगी थी। अपन सेन म दिन भर कडी मेहनत के बाद भी लालमन ने इम तरह की थकावट कभी नहीं महसूस की थी। सामन क काले पत्थर पर जिस समय वह दठा उस समय उमने पर काँप रहे थे। उसके ठीक सामने एकदम नीच की ओर घुल्लौड का मलान था वागज पर मानचित्र की तरह। कुछ आगे रंग बिरंग घर थे और उनस आग अपनी माद में जहाजो को सजोय नीला समुद्र था। पीछे की ओर अधकट सेतो की हरियाली थी और निम्नथ वस्तिर्मा थी।

यकान दूर हात ही नारंगी का रस लिया गया फिर बाने गुरू हूड। देग की स्थिति परिस्थिति, अभाव थकारी और महगाई स होती हुई वहस राजनीति पर जम गई। लालमन का अगल किसी चीज से चिन्त थी ता वह राजनीति ही थी। यही कारण था कि वह कुछ भी न बान पाकर कवल सुन रहा था। उसन मुना धरमन न मारन क सामन उड रिनी बाट मागन बाल व्यक्ति की तरह

कहा—

—राजनीति से नाम लिखोइन यातों को मैं और कुछ न कहकर भी प्रजाव्यवस्था कहूँगा क्योंकि शासन प्रणाली के लिए राजनीति की उतना ही आवश्यकता है जितनी कि जीने के लिए आत्मी को हवा की ।

—तुमने ठीक कहा, धरमन !—अप्य भरे स्वर में धनश्याम बोला, इसका तो यही मतलब हुआ कि बचल हवा फौजदार जिया जा सकता है ।

—मरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आयी ।

—तुम्हारी बात मरी समझ में आ गयी । तुमका तो यही कहा कि जीने के लिए इसका को हवा की जरूरत होता है । इससे तो यही साफ हुआ कि प्रजा के पालन-पोषण के लिए भी राजनीति पर्याप्त है । जिस तरह जीने के लिए भोजन पानी दूर की बान टहरी उसी तरह प्रजा के लिए शासक अधिकार की रक्षा तथा अन्य मौलिक आवश्यकताएँ भी कम महत्व की बातें टहरी ।

—तुम दोनों तो अपने-अपने ढंग से कह जा रहे हो । तुममें से कोई एक यह तो बताने की कोशिश करे कि आखिर राजनीति का उद्देश्य क्या है ?—
मौतम ने पूछा ।

—देना चलाना ।

—चाहें सिर के बल ?—धरमेन के उत्तर पर धनश्याम ने प्रश्न किया ।

—मैंने तो ऐसा नहीं कहा ।

—मैं तो वही कह रहा हूँ जो आजकल हो रहा है । आज देना का सही ढंग से चलाया जा रहा है मैं इस बात को कैसे मान लूँ ! अगर ऐसा ही होता तो फिर दुनियाभर में असंतोष की भावना क्या ?

—तो तुम दुनियाभर की बात कर रहे हो ?

—तो क्या तुम राजनीति का पक्ष बचल अपने देना के बल पर ले रहे हो ?—
हसत हुए धनश्याम ने पूछा ।

—तुम्हारा मतलब है कि दुनियाभर की राजनीति नपुंसक है ?

—मैंने तो ऐसा नहीं कहा ।

—तो फिर ?

—दुनियाभर के राज्यों में अशांति है इसे तो नकारोगे नहीं ।

—राजनीति को इसका कारण बताओ ?

—प्रजा का इसका कारण नहीं हो सकती ।

—वह प्रजा भी नहीं जो अपनी जिम्मेदारी को समझने का प्रयास तक न करे ?

—पहले राजनीतिक नेता अपनी जिम्मेदारी समझें तब तो । सरकार की अच्छाईयाँ के विरुद्ध जान की नादानों काई क्या करे ? आवाजें तो उसकी

सापरवाहिया के लिए बुलन्द की जाती है।

—देग चलाने के लिए सरकार असहयोग नहीं, सहयोग की उम्मीद रखती है।

—अपने अधिकारों के लुप्त जाने का सहयोग कौन किसी को देगा ? क्या राजनीति यही उम्मीद रखती है कि जनता अपनी बर्खादी के लिए किसी को अपना सहयोग दे ? यह तो अपने हाथों अपना घर जलाने वाली बात हुई।

—तुम सोचते हो कि सरकार यह नहीं समझती कि जनता का खयाल रखना उसका कर्तव्य है और अगर मानते हैं कि वह इस बात को समझती है तब तो यह कहना कि सरकार इस बात से बेपरवाह है नादानी होगी क्योंकि सरकार यह कस नहीं समझ सकती है कि जनता की प्रगति ही उसकी प्रगति है।

—समझन न-समझने की बात कहीं पदा होती है ? बात तो प्रायः यह होती है कि समझत हुए भी दिखाई जाती है।

—तुम्हारा मतलब ?

—आसान बातों को समझना कभी मचमुच ही बहुत कठिन होता है। अभी पहाड़ से नीचे उतरते हुए तुम अनुभव करोगे कि उतरना चढ़ने से भी अधिक कठिन है। राजनीति में आज दो-तीन ऐसी बातें आ गयी हैं जिसके कारण जनता के बीच असंतोष बढ़ना एकदम स्वाभाविक है।

—कौन-सी बातें हैं वे ?

—पहली बात तो नेपोटिज्म है। राजनीतिक चुनाव में मुंह के बल गिरे हुए असफल उम्मीदवारों को राजदून ग्राहक विदेश भेज देना याय सगल नहीं हो सकता। दूसरी बात तब रफतार से बढ़त चले आने वाला माई भतीजावाद है। स्वायत्तसिद्धि और फिजूलखर्ची आज के राजनीतिक नेताओं का परिचय है और कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें स्टेकर में तुम्हें उत्तजित करना नहीं चाहता।

—राजनीति में एक बात है जो मुझ भी पसंद नहीं—घनश्याम के चुप होते ही गौतम ने कहा।

—तो फिर तुम भी सुना दो अपनी बात।—कोकाकाला की बोतल खोलते हुए किशोर ने कहा।

—जात पात के बखेड़े को राजनीति ही ने फिर से प्रोत्साहन दिया है।

गौतम के इस वाक्य से प्रोत्साहन पाकर घनश्याम ने कहा—

—तुम तो मानागे कि एक ठाँ ऐम राजनीतिक नेता है जो ऊपर से तो जात पात का खण्डन करते हैं पर भीतर ही भीतर उसका प्रचार करते फिरते हैं। ऐसा करने में उनका अपना उल्लू तो सीधा हो जाता है पर जनता के बीच जो भेदभाव फैल जाता है उसका जिम्मेदार किसे ठहराया जाय ! अपने ही भाव को लो। पिछले चुनाव में जो कुछ हुआ इसी जात-पात के बल पर हुआ।

क्या इस बात को भी तुम राजनीति की देन नहीं मानते ?

अगर फिरार था तो व गानन कोसाला और विस्तृत नहीं बड़ा था ता गाय" बहुत म गिधिनता भी नहीं आनी । बहस नहीं नहा थी । मथर-गति स तक और "लीनें पग हाती रही । पूरे घन् वा" थ अपनी जगह छोडकर गड हुए । फोगे निचे गये । प्राट्टिन मुपमाधा को निरगा गया और तन पूरी गायधानी बरतत हुए गाना व्यक्ति उतरन लगे । प्रट्टिन का भी उनका साथ देने को गुम गया था । मूरज क ऊपर वा"न मिर आय थ जिसस वातावरण धूमिल और पीतल था । सनकता क साथ उतरत हुए भी धरमन और घनस्याम को बहस जारी थी ।

लालमन न हमेगा यही मुना था कि मारीगस एक बहुत ही छाया देग है । लोग कहते हैं कि दुनिया के मानचित्र पर वह एक बिंदु की तरह है लेकिन पहाड़ के ऊपर से उतत जिन मारीगस को रंगा था वह काफी बड़ा था । उसरी हरियाली इतनी अधिक विस्तृत थी कि गागर क नीचतन स मिनरर वह समाप्त नहीं हो रही थी ऊपर म उमन मना की गहरी हरियानी को हि" महामागर के पीचेवन स मिनरर रंगा था और गागर का नीचतन आगाग क नीचतन स जा मिला था । हर नीच का सगम था वह जिनमे उमन अमन द्वीप को विगाल पाया था । पहाड़ की चोटे से मारीगस एक दूसरी ही दुनिया सा उस प्रतीत हुआ था । सबमुन भी वह हि" महामागर का तारा और धरती का मुनहरा सपना था । अत्र तन नीच म उसने जा कुछ ेला था उसस भि न था वह मारीगस । उसके लिए मारीगस हमंगा स एक कविता थी एक जमा हुइ कविता जिसे हि" महामागर अपना गा" म सजोय हुए था तकिन ऊपर म भिन थी वह कविता । क्षण मर पहन उसन जिस मारीगस को दगा था वह कल्पना का स्वग था । इस द्वीप को ऊपर से देखने वाला कोई भी परदेशी यह मानने का तगार नहीं होगा कि उसके अपने भीतर भी अय दशो की तरह या मात्रा मे उनम कुछ अधिक ही दद छिपा हुआ था । राजनीति इस दद से बेलबर रह सकती है पर तु लालमन उन तमाम ददों से परिचन था । उसके अपने जीवन म चाह ददों का अभाव रहा हो पर अपने मौव के अभाव के ददों को वह देखता आ रहा था और अगर वह अपने का कमी कमार बहुत अधिक कमजोर समझता तो केवन इसलिए कि उह वा"ने की गवित उसम नहीं थी । हरियाली और सूख की तरह उसने अपने गाव म दुप मुख दोना "य थ पर दुख उसे अधिक बलमान और स्थायी सा लगता । एनात म जब उसक अपने खयाला म कविताए नहीं हाती उस समय प्रश्न हात—क्या यह दुप कमी भी समाप्त होने वाला नहीं ? और तत्र अपना आप कविताए पदा होने लगती और वह अपने आप को मुनाने लग जाता कि एक आर से एक हाथ सभी दुखा को मिटान का प्रयास करता है

और दूसरी ओर स दो हाथ उस वजात रहने की कारिग म रहत है ।

लालमन के घर पहुँचते ही उसकी मा ने उससे कहा कि उन लागा के यहाँ स चिट्ठी आयी है जो प्रमा को देखन आये थे । अरनी थरावट को भुलकर उसने जानना चाहा कि पत्र म क्या था । त्रिना कुछ बहे उसनी मा न नीले रग के लिफाफे का उसके हाथो मे रग दिया । जिस ढग से उसना मा न वह पत्र उसके हाथ मे रखा था उसमे बात स्पष्ट थी, फिर भी लालमन ने खुने हुए लिफाफे स वच्चा की वही स पाठ गय उस कागज को बाहर निवाला जिस पर वह पत्र लिखा हुआ था ।

टिप्पणी की अस्पष्ट लिखावट म पत्र इस तरह शुरु हुआ था —

प्रिय भाईजी,

सात्तर नमस्वार

इसम पहन हम आपको उत्तर नही भेज सके कमर त्रिण क्षमाप्रार्थी है । इधर परिवार के एक सदस्य की बीमारी के कारण हम वगेरान थ । आपका घर हमारा जो सेवा सत्कार हुआ उसके लिए हम आपको त्रिण स धन्यवाद दते है । हमने आपकी लडकी देखी । वह उठन ही अच्छी और सुगिन लडकी दीखती है इस बात स हम सभी का खुशी हुई । अगर आप इसे अथथा न समझ ता हम आप से कहगे कि हमार लडके का आपका वह दूसरी लडकी अधिक पमत्त आ गयी है इसलिए इस बार म हम आपकी राय जानना चाहेंगे । हम आगा है कि आपना अपनी छोटी लडकी हम दत हुए कोई आपत्ति नही होगी । यह भी आशा रखत ह कि आप शीघ्र ही हम इसकी सतापजनक उत्तर दगे ताकि हम दूसरी आर न बढ । आपका यह जानकर आश्चय नही होगा कि हमारे यहा रोज किसी न किसी परिवार को आर स लकी देखत का अनु रोध पहुचता ही रहता है । इसलिए आप स एक बार फिर आग्रह है कि आप यथाशीघ्र हम उत्तर दें ।

इससे पहल कि लालमन उस वक्ति का नाम दखता जिनन पत्र पर हस्ताक्षर किया था वह पत्र उसके हाथ स छूटकर नीचे गिर पडा । वह एउटक अपनी मा का दखता रहा । उसकी मा क चहरे पर मौत की सी उगयी था । अपन को सम्हालने हुए लालमन ने धीरे स पूछा—

—प्रमा कहा ह ?

—प्रमा कहा है छाया ? —लालमा के प्रश्न को राधिका न छाया स पूछा ।

—रसाईघर मे ।

—क्या कर रही है ?

—बठी है ।

लालमन उसके पास पहुँचा। अपने भाई पर नजर पड़ते ही प्रभा ने जल्दी से भाखें तो पोछ ली पर अपनी सिसकिया को नहीं रोने सकी। उसके निकट पहुँचकर लालमन ने उसे अपनी बाहा मँल लिया। प्रभा उसके साथ चिपक कर छोटी बच्ची की तरह रोने लगी।

—पगली तुम रो क्या रही हो ?

अपने कंधे को आँसुओं से तर पाकर उसने कहा—

—मैं अभी जिंदा हूँ। चीनिया की सी सूरत वाले उस गँवार स अच्छा लडका तुम्हारे लिए ढूँढ निकालूँगा।

प्रभा सिसकती रही और लालमन उसके बाला का सहलाता रहा।

उसी शाम को लालमन ने उस पत्र का जवाब लिखना शुरू किया—

'प्रिय महोदय

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। अपने पिताजी की ओर से मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। अगर उस दिन हमने अपने घर आपका स्वागत किया था तो केवल यह समझकर कि आप कोई शिष्ट लोग होंगे। अगर आपको सामने मरी बहन को उपस्थित किया गया था तो भी यह जानकर कि आप कोई सभ्य परिवार क होंगे। हम जिस बात की तनिक भी उम्मीद नहीं थी वह यह रही कि आप लोग सीदागर ठहरे।

अपने बाप की ओर से मैं आपका बहुत ही सरल और स्पष्ट भाषा में यह कह देता हूँ कि मुझे अपनी बहनो को बेचना नहीं है मरा घर बहू दूबान भी नहीं जहाँ स आप मनपसंद चीज खरीदन की उम्मीद रगत हैं। आप लोग म अगर जरा भी जान होता तो आप इस तरह पग नहीं भात। मरी बड़ी बहन को आप लोगो ने अपने माध्य नहीं समझा एक लिए हम दुःख तो अवश्य है पर आपने मेरी छोटी बहन के बारे म जो बात का है उसके बारे म मुझे खतना कह जान की इजाजत दीजिए कि मैं भी आप लोग का अपनी छोटी बहन के योग्य नहीं समझता।

आप इस बुरा न मानकर अपना रास्ता दगिए, और हम अपना रास्ता देखत हैं। भागा है आप इस पत्र का बुरा न मानेंगे।'

इसक बाद पत्र के नीचे लालमन ने कुछ इस भावण में दस्तखत किए कि कलम की नोक कागज म घँसकर रह गई। थकान से चूर चूर हान हुए भी चार पाई पर उस बनी तर स नाए भायो। मुनह जय वह उठा तो मामा की याए लिए हुए। पहला बार उसके मन म अपने सत म दूर रह जान का विचार पग हुआ। भाज एकाएक उसे धनुवा भगन से गिरहा मुनन की इच्छा भी हुई थी।

वह अपने को अपने ही घर की चारदीवागी के भीतर बंद पा रही थी। खिड़की से बाहर एक अलग दुनिया थी उसकी अपनी दुनिया समित्त। अपनी दुनिया से खिड़की के रास्त वह खुली हवा वाली दुनिया को देख रही थी। पेडा की आडम सूरज ओभन होना जा रहा था। पत्तो को डोलते दग्न वह उस शीतल हवा को अनुभव कर रही थी जिसे दुर्भाग्यवश वह अपनी चारदीवारी के भीतर नहीं पा रही थी। उस खुली हवा में उस मद और शीतल हवा में जीवन का स्पन्दन था मुक्ति का उल्लास था अरमानो की सजीवता थी सासो की सक्रियता और जीवन की सफलता थी। नीले आकाश के दूध से बादला में भी उसी मुक्ति की सक्रियता और सफलता थी। वही उल्लास वहा भी था। प्रभा सोचने लगी थी कि आखिर में बेजान बादल इस तजी के माथ कसे दौडे चले जा सकते है जन्कि वह जीव सहित निर्जीव थी। पक्षी भी उडे चले जा रहे थे उसी स्वतन्त्रता के साथ। खिड़की से बाहर के उस विस्तृत ससार में उमगें थी उसने अपने ससार में उमस और उस उमस में वह अकुला भी नहीं पा रही थी।

उसके भीतर जो अकुलाहट थी वह बाहर आने के लिए उधम मचा रही थी पर इस बात के डर से कि कहीं उसकी उम अकुलाहट को काई देख न ले वह उसे बाहर आने से रोक रही थी। अपनी वल्ना को वह भीतर बंद किय हुए थी और खुद उसे कन् किये हुए थी उसकी लाघव भावना। अब यह मानने से वह अपने को कसे रोक सकती थीकि छाया के सामने उसकी कोई भी हैसियत नहीं थी। उसने तो हमेशा छाया को चाहा है लेकिन आज भी वह उसे उसी तरह चाहती हो इस बात का उसे शक हा चला था। छाया से उसे ईर्ष्या नहीं हो सकती, फिर भी उसके लिए जो भाव एकाएक प्रभा के हृदय में पदा हा गया था वह ईर्ष्या ही जसी कोई चीज था।

तुम्हीं ही मगव गहू र छाया उना मगमा गरी था । उना भङ्गे की उगमा क परी । म प्रभा । बोई दूगरी भीज ग्या थी । उम मर विगम कगता कतिन हो गया था—यह भीज छाया क भङ्गे पर भा मा उगरी घपती ही छांगाम । छाया परारती भी घोर कुछ घनगुन भ उमम पर तु घानी मूरत का घमिमा मी उतम ही दम यात का जन्म मात मता प्रभा म गहा हो रहा था । यह उम घपती ही छांगाम का म नृ मातरर घना का घातगत न बगी ।

घातमहीता का गोक म रबी प्रभा घूम गिरार एक यात मायता जा रही थी । उम घपता म मूरत घोर घातगत की कमा का उनात गयता गता का जितना हि टूटगाय जाने का । यह टूटगाई गयी भी घोर यह मोम उम कुछ म कुछ मोचा का विषय पर रहा था । उमरी माँ र भी उम घपती थी । म तहीं लिया । प्रभा र ता गाता था कि घगर माँ एगा करक उत कयम इगता कह जानी कि बटी टुगी मन हा तो मममुन ही प्रभा को मांयता मिन जानी मतिन यन्त म उगरी माँ उगी को गात बटी थी । बगदा— बह मातामट्टरी— जिन्गी पर उमक फिर बोभ घनकर बगी रहगा । घपती माँ की एम बात स प्रभा का टुम टूमा था गहा उगी भी बह । उम तिन तिमर मरी गोगी गुनात रहन क वात घात म जय उमरी छांग डरहया छापी थी उम समय घपती माँ क घातन का उमा छांगाम पर महगूम लिया । उमरी माँ की छांगें भी सजल था घोर मरई हई छायात म उमा प्रभा क माय को गाय लिया था । वहा था कि करम ही पूरा है उमरा घोर प्रभा न भी इगी को सचाई मात कर घपन छांगुछा का पाछ लिया था ।

रडिया स घात हुए पि मी गीत भी उमर गयला को मणिन नहा कर पा रह थ । कल गहर स लोटत टूण तालमन ने घपन मोना हाथा का पीछे निय हुए उससे कहा था—

—देगो प्रभा मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हू ।

इतना बहृत हुए उसने नया ट्रांजिरटर प्रभा के हाथा पर रस दिया था । प्रभा जानती थी कि उसने भाई को इस छोट म रडियो का भारी गीव था— फिर भी उस समय उस यह जानते दर नहा लगी थी कि लालमन ने अपने शौफ को कम महत्व दकर एक दूमरे ही विचार स उस तरीका था । यह चाहता था कि प्रभा इसम घपन दिल को बहला लिया करे । संगीत स प्रभा का मन कभी बहल जाता घोर कभी वह घोर भी विह्वन हो जाती । वे गीत मरहम भी थ घोर घात म नमक भी । वह कभी डहू घयान स सुनती घोर कभी एक ही साथ कई गीत घनसुने चत जात । आस्वासन घोर टीस भरे उन गीतो म घपने को बाँध देने का उसका प्रयत्न घमफल चला जाता ।

जिस समय अपनी माँ को उसने बरतन माजवे पर बठ बरतन माँजते देखा

उम समय उसे अपनी शिथिलता का खयाल आया। काई और घड़ी होती तो उसकी मा उस पर गालियाँ की बौछार गुरू कर देती नेमिन डधर दो-तीन दिना से वह घर के बहुत सार काम राजा को खुद सम्हाले आ रही थी। कभी-कभार प्रभा क साथ उमका हाथ पटाती हुई वह उस समझती भी जाती। कहती कि कुछ घरा म तो दस तरह के लोग आते है तब कही जानर लडकी किसी एन् को पसन्द आती है। पहनी ही वार म हताश हो जाने के लिए वह प्रभा को नानान बताती। मगर प्रभा जानती था कि न तो वह हताश थी और न ही नादान। उसे किसी बात का दुख था तो केवल अपनी हीनता का। कोई ठूमरा उसे पसन्द करे या न करे इसकी जग भी चिन्ता उसे नहीं थी। उम चिन्ता थी तो वम पहली ही वार की अमफलता की। लडक तो दम बीस घर घूमने के बाद एक घर से लडकी पसन्द करते हैं—अपनी मा की इम बात को गौर से सोचती हुई वह असमजस म पडी रही। लन्कियो और लटका क बीच क इम मारी अन्तर को समझना उसकी पहुँच स बाहर की बात थी। वह अपन आप से पूछती— क्या लडकिया को अपनी पसन्द का अवसर न देना भगवान ही का बनाया हुआ निषम है या इमक पीछे काई ठूमरी बात भी है? उमका छोटा सा दिमाग इसके आने नहीं सोच पाता।

प्रभा अपन माई क काम के कपटे म पेबद लगा रही थी। काम अथिक् परिश्रम का रही था इसीलिए उसन मस्तिष्क म विचारा की रफतार तज थी। भविष्य क वार म माचना तो उसने एकदम ही बद कर लिया था। क धीत हुए दिना की यादें था जिह वह एक सूत्र म बांध रही थी कि तभी अपने बाप की आवाज सुनकर हाथ की सूई को कपडे म लगाकर वह कुर्मी से उठी और अपने बाप के पास पहुँची। उसे दखत ही चन्दन न पूछा—

—तुम्हारी मा कहा है ?

—दूकान गयी है।

—आज गाम को क्या पका रही हो ?

—माँ न कहा है आनू उगन मसाल मे पकाने को।

—मेरा जी दाल पीटठा पान को करता है।—चन्दन न इस ढग से कहा गोया वह कोई छोटा-सा बच्चा हो।

—तो फिर दाल पीटठा ही पकाय लेती हूँ।

—उपर स धी डालना न भूलना और हाँ धनिय की चटनी।

प्रभा के सूभ हाटा से बीच मुमकान धिरक गयी। धनिय की चटनी तालमन को भी उतनी ही मानी थी जितनी कि उसके बाप को। पर प्रभा की मुमकान का कारण गायर दुष्ट और ही रहा। वह वहाँ स जान को हुई लकिन चन्दन न उसे रोक लिया।

—ठहरो, बेटी।

प्रभा ठिठक गयी। उसने अपने बाप की ओर देखा। चप्पा भी उम देग रहा था। उसे कुर्सी पर बठन का कहकर च दन ने पूछा—

—आजकल तुम इतनी उत्साह क्या दिखाइ पड़ती हो ?

प्रभा चुपचाप कुर्सी पर बठ गयी। सामने की आरामकुर्सी पर चिल्ली सो रही थी। वह अपने बाप की ओर न देखकर एकदम उसी बिल्ली की ओर देखती रही। उसके बाप ने प्रश्न दोहराया—

—आजकल तुम इतनी उत्साह क्या दिखाई पड़ती हो प्रभा ?

वहाँ से उधार ली हुई मुसकान अपने हाँठा पर लात हुए उसने उत्तर दिया—

—नहीं ता।

—पगली कही की मरी मुनो जो हुमा अच्छा ही हुमा।—एक क्षण दमरर उसने आग कहा—सच पूछा जाय तो वह लडका मुझ विनतुल पसन्द नहा था। बोलचाल चालचलन और सूरत—सभी स बिलतुन गगार दीलता था।

प्रभा सभी बातें नहा समझती थी। उसका माई बात-बान पर उसे भूगों की नानी कहता रहता था। सचमुच ही उसका माई की बातों में कुछ बातें ऐसी भी हुमा करती थी जिन्हें समझना प्रभा के लिए टैनी गीर था पर अपने बाप की इस बात को भी वह न समझी हा यह मानन को वह तयार नहीं थी। वह जान गयी थी कि उसका बाप उम एक भूटी जिनामा दे रहा था। एक ऊपरी मुसकान के साथ वह उस मुननी रही।

—तुम अपना बटी दम बार जा लडका तुम्हें टैनी धापगा वह म दिग्म मे कई मुना अधिक अच्छा हागा। एक के जान हा मपर कई लडका की बातें मा गयी हैं। मुझ ता पूरा विन्याग है कि इस बार ता भी इस पर म काम रगगा उसी की तुम बतबर रहागी।

प्रभा जो पूछता जानती थी पूछ न सता। विर भनाय वह बटा रही और चप्पन कहता ही गया। अपने बाप की गमा बाना म उम भूटी जिनामा ही नजर आती और उन भूटी जिनामा म जा घोली-नी विनयाग थी वर भी उमर हर गम म छिपी अगाध स्नह का तरणें। वर उ हा तरणा र बार रही। उम अपने गम म काम करन वाली लडकी की वर आ जाना ग्यामाविज था। म मा म उमका म कुछ कम हा घना। जिमी भी गूरन म लडकी का माप उमर भाग्य स मा गारा न था। मना बाग वर र उम तर बाई ममन भी गरी लडका था। एक-नी ममन म न आ धाप उ म भा वर ममन म मा धारा था। पधाय की उम म जब ममन म हा हा बता कि उमर म म म मुनि बाना नगी जिनामा था ता एक विर वर ममु का मुनि वनन की गान ब। था। उम जि

पायल की तरह वेहनागा दीडा वह और उवार माग के आम्रण को स्वीकारती हुई समुद्र किनारे पहुँच गयी । न जाने दब ती व दुर्भाग्य स प्रमा का भाई भी समुद्र किनारे की बालू पर बठा सूरज को धरती स विदाई लत देव रहा था । देवती के समुद्र म कूने ही वह मा उसक पीछे कू पडा था । बाद म दबती के प्रमा म कहा था—

—लानमन न जिम मीत से मुके बचाया है उसे तो मैं इस जीवन से बेहतर समझती हूँ ।

उस समय देवती क उस वाक्य म प्रमा को केवल आत्म तरस की भयक दिताई पडी थी आज वही बात सोलह आने मच प्रतीत हो रही थी । वह निराशा नही वास्तविकता था । उसके अपने जीवन की भी वही वास्तविकता थी । न जाने वह कसा निराशावाणी विश्वास था जो उसक भीतर पर बर गया था । उस विश्वास सा हो गया था कि ठीक देवती की तरह उसे भी काई पस द नहीं करेगा और वह जीवन पयत कुवारी रह जायेगी । फिर खुद को सहानुभूति न की गरी आ जाना और वह अपने आपस बहती—

—क्या जीन ए निए दादी इतनी जरूरा है ? गादी न होन स जि दगी थोडे ही रक जायगी ।

तमा उस याद आया कि ये तो व ही बातें थी जो वह दब ती को सान्त्वना देती हुई कह चुका थी । उसे देवती का वह उत्तर भी याद आ गया—

—प्यार के बिना जीना अपने गरीर के बोझ को जि दगी भर ढाने वाली बान हागी ह ।

देवती क इस उत्तर को वह उस समय नहीं समझ पायी थी लेकिन आज वही कठिन उत्तर उसक सामन अपने आप सरल हा गया था ।

प्यार ?

प्यार क बिना ?

देवती ता गरा क यहाँ पली थी । हो सकता है कि सचमुच ही उमे प्यार न मिना हो लेकिन अपने वार म मोचती हुई प्रमा यह उसे मान सकती थी कि वह भी इस प्यार नामक चीज से अनभिज्ञ थी । प्यार उसे अभी भी नहीब नही हुआ वह यह उसे मान सकती थी । उसे तो भाँ-चाप, भाइ बहन—समी का प्यार मिना था । बाद दूसरे दग का भी प्यार हुआ और व न भी मिता ना बरा हुआ । उसे तो जीवन म जितने प्यार मिने हैं उनम जीवन बोझ कस बन सकता है ?

अपनी ही बालों को समझना उस कठिन प्रतीत हान लगता । एक बात स्पष्ट थी, देवती जब अपने बदतर और सून जीवन को जीना हुई भी हरम हसती रह सकता है, ता फिर क्या कारण था कि प्रमा अपने प्यार स समुमार जीवन का नही जी सकती ।

पतनगाम की बहुत प्रभा न कोई न। तीन वय छापी थी फिर भी मर्दा।।। रात्रि स पढ़ने ही उगवा रिवाह सय हा चुना था। प्रभा जिग बाय न करी थी यह यह रि प्रोप न बाकर उगवा मी फिर बहा बहा न या रि यह सुमस होगी है फिर मा उग मरगार मिन नया। एग सुम हा सुम्हारी तराद म तो इग घर म बुझिया बाता रिगा है। न जाद एग गाय म क्या था रि प्रभा को ध्याती मी की गमा गानिवा स धरिा बाय मग ती था।

रात को लालमन बागी षेर स पर सोया। उग नन म न पाकर प्रभा न राहा की ताता सा। धनन भाई क चहरे का धोर एग न एग नमा मगा मातो य उगत बाई बहुत हा जररी बाय बहना बाह रहा हा। उग चुनी गाप दग प्रभा न पूछा—

—क्या बात है मया ?

प्रभा क प्रान का बाई उत्तर निय रिा लालमन धनन गामा क गू प का मन्ता र्हा। जिग समय प्रभा न उगन गामा बाजा की वाली रगी उग समय भी यह गवाता म गाया ता गगता रहा। उगता धनन म पीठ पर बटनी हुई प्रभा न फिर स पूछा—

—क्या बात है मया ?

—बुछ गहा।

प्रभा धपनी रिनामा को मूल बठी थी। उसन देगा लालमन न धनचाह मात का कीर धपने मह तर पढवाया धोर किसी बहुत बडी चिन्ता म हुआ वह सिर भूगाय रहा।

—तुम इस तरह गोप-गोप मे क्या हो ?

लालमन की उस सामोगी स डरकर प्रभा को दाबारा प्रन करन का साहस नही हुमा। उगन भाई क चहरे पर परगानिया थी। उस स्पष्ट भाव को छिपाने का प्रयत्न करके भी लालमन उस छिपा नही पा रहा था। फिर भी जिग बात को वह धपने भीतर छिपाय हुए था धोर जिस किसी भी हालत म वह दूधरे क सामन जाहिर नही होन देना चाहता था वह थी भामा स मुनी उसकी मगनी की खबर।

यह खबर सुनात हुए भामा उसके प्रति पास लठी थी। लालमन न उस दिल्लगी समझा था धोर भामा की दोनो बाँहा को धामकर उसने बहा था—

—जानती हा भामा धगर सचमुच ही एक दिन यह बात सच हो गयी तो।

—मैं सच कह रही हूँ।

—उस दिन मैं पागल हो जाऊँगा।

—मैं सच कह रही हूँ लालमन। अगल महीने मेरी मगनी होने जा रही है।

उसस अलग होन तक लालमन को इस बात का विश्वास नही हुमा था।

लालमन साँसे अपने को एक सख्त इंसान समझता था और उसे अपने म भावुकता की कमी नज़र आती। अपनी बठोरता का पिघलते पाकर वह किसी भी परिणाम पर नहा पहुँच पा रहा था। कुछ दिन हुए जब मामा उसके एक दम निकट थी, फिर एक दिन एकाएक वह उससे कुछ दूर चली गयी थी, फिर भी लालमन का बहुत बम दुख हुआ था। उस विश्वास था कि मामा दूर जाकर भी उससे बिछुड़ी नहीं थी। वह उसकी थी, उस बात का उसे पूरा यकीन था। अगर उसके दूर चले जान पर वह छटपटाया नहीं था तो इसलिए नहीं कि वह कठोर था बल्कि इसलिए कि उसकी उम्मीद बनी हुई थी। उम्मीद के बल उसने अपने को कठोर महसूस किया था और आज एकाएक जब उम्मीद जाती रही तो उसकी सन्नी को मोम की तरह पिघलते देर न लगी।

बाहर की अंधरी रात की खामोशी को चीरती हुई घनश्याम की आवाज़ घर के भीतर पहुँची। प्रभा की ओर देखते हुए लालमन ने कहा—

—हम लोग समुद्र की ओर जा रहे हैं मैं देर से लौटूंगा।

वह बाहर आया। उस अंधरे में भी उनमें घनश्याम, धरमन, गौतम और किशोर को पहचान लिया। दिन को उसी के खेत में जब रात में बेकड़े के शिकार की बात चली थी उस समय लालमन ही सबसे पहले तयार हुआ था लेकिन गाम का जब वह मामा से मिलकर लौट रहा था उस समय उसने इरादा बदल लिया था। सोचा था कि रात का मित्रा के आने पर वह सिर नद का बहाना कर बढेगा लेकिन जब उसने घनश्याम का स्वर सुना उस समय एक दूसरा उपाल उसका मन में पनप हो चुका था। उसकी समझ में आ गया था कि आज रात नींद उसे बड़ी कठिनाई से आयेगी इसलिए मित्रा के बीच रहकर रात काटना उसमें से सरल उपाय जैसा। उसने बाहर आते ही गौतम ने पूछा—सच लाइट ली

या नहा ?

बिना कुछ कह लालमन घर के भीतर पहुँचा और इस बार जब वापस आया तो हाथ में जलती हुई टाच के साथ । टाच के प्रकाश का आग आग फैकते हुए वह मित्रों के साथ चल पड़ा । पत्ते नहीं डोल रहे थे । उमस थी । गाँव के सभी कुत्त किसी गाँधी के घर पर कले के पत्तों से जूठन चाट रहे होंगे, तभी तो नीरवता अखण्ड थी । उस भारी खामोशी में उनके अपने परो की आहट स्पष्ट थी । सबसे पहले धरमेन ने ही बात शुरू की । फिर उसने खुद महसूस किया कि उसकी बातें नीरव थी इसलिए उसने धनश्याम से कहा—

—कोई कहानी सुनात चलो ।

—मुझे एक चुटकुला याद आ गया ।—बीच ही मैं किशोर कह उठा ।

—तो फिर सुनाने में दर क्या कर रहे हो ?

किशोर ने अपनी चाल कुछ धीमी की जिससे बाकी सभी की चाल अपने आप धीमी पड़ गयी । किशोर ने अपने उसी पुराने आँदाज के साथ कहना शुरू किया—

—जिस होटल में मैं कहानी गुजारी है वह शहर की विधान सभा के ठीक सामने है । एक दिन रावेश नाम का एक व्यक्ति उसके भीतर पहुँचा । दीवारी को देखा । उस पर आधुनिक पेंटिंग्स नशे में झूमती सी लग रही थी । सामने की मेजों से हाते हुए वह सीधे काउंटर के पास पहुँचा । काउंटर पर की लडकी का नाम मीमी था । मीमी उसकी ओर देखकर मुसकरा दी । मीमी को खुद अपनी उस मुसकान का पता न चला क्योंकि हर नये पुराने ग्राहक के स्वागत के लिए उसे इसी प्रोसीजर से काम लेना पड़ता था । रावेश की ओर देखते हुए उसने पूछा—

—जी, मैं आपकी ?

प्रश्न पूरा भी न हुआ था कि रावेश ने भट्ट कहा—एन हिस्की ।

मीमी ने झिलमिलाते गिलास में अपने ही हाथों हिस्की उड़ली और उसी कार्मशियल मुसकान के साथ गिलास को रावेश के आगे बढ़ा दिया । एक ही बार में गिलास को साली बरक रावेश ने कीमत चुकाई और हॉटल से बाहर हो गया । दूसरे दिन रावेश अपने साथ एक दूसरे मित्र को लिए उसी होटल में पहुँचा । मीमी ने उसी मुसकान से दोनों का स्वागत किया और इससे पहले कि यह कुछ पूछती रावेश अपनी दो अंगुलियाँ सँभारा करत हुए आँदरे दे यठा—

—प्लोज दा हिस्का ।

मीमी ने दा गिलासा में हिस्की उँडेली और दाना पान रावेश के सामने बढ़ा दिया । रावेश ने पहले गिलास का अपने मित्र के हाथ में थमाया और दूसरे की अपने हाथ में ले लिया । बगल से बाउल्स की धुन आ रही थी ।

बस उम दिन मैं एक सप्ताह तक राकेश अपने मित्र के साथ उस हाटल में आता रहा। दोवार के मदहाग आधुनिक चित्रा को देखते हुए अपने मित्र के साथ हिल्स्की के गिलास खाली करके बाहर होता रहा। एक सप्ताह बाद एक दिन राकेश हाटल में अकला पहुँचा। भीमी की मुसकान का उत्तर देने के बाद उसने उसी पहले बाल स्वर में आडर दिया—

—डबल हिल्स्की।

भीमी को हैरत हुई। उसने कहा—

—पर आप तो अकेले हैं!

—मरा मित्र विदेग चला गया। उसकी याद बनाए रखने के लिए उसका हिस्सा भी मैं पी लेता हूँ।

भीमी ने दो गिलास भर लिये। राकेश न बारी बारी से दोनों को खाली किया और हाटल से बाहर आ गया। इसी तरह एक सप्ताह तक वह अकला आता रहा और मित्र की याद में दो गिलास खाली करके चला जाता। एक दिन कुछ उदास सा वह हाटल के भीतर पहुँचा और आते ही धीरे में उमन आडर दिया—

—एक हिल्स्की।

भीमी को हैरानी हुई। उसने तुरन्त पूछा—

—कवल एक?

—हाँ, कवल एक—अफ के साथ।

एक क्षण चुप रहकर भीमी बोली—

—कही आपका मित्र को कुछ हो तो नहा गया?

—नहा! मरा मित्र सही सलामत है।—राकेश ने कहा।

इस पर भीमी फिर बोली—

—आपका शायद उससे भगडा हो गया?

—नहीं।

—तो फिर आज आप कवल एक ही हिल्स्की क्यों ले रहे हैं?—गिलास में वाट सिक्स्टी नन उडलते हुए भीमी ने पूछा।

भीमी के हाथ से गिलास लेकर उस मुह तक पहुँचाते हुए राकेश ने कहा—

—बात यह है कि कल स मैंने गराय पीना छोड़ लिया है।—और इसके साथ ही अपने मित्र के हिस्से की गराय उमने अपने मन के नीचे उतार ली।

किंगार अभी चुप भी नहीं हुआ था कि सभी जोरा से हँस पड़े। वह केवल सालमन था जिस पर चूटकृत का कोई भी प्रभाव नहीं पडा था।

गाँव पीछे छूट चुका था और व लोग पगडडी पर बत्तार में चल रहे थे। दाना तरफ के पडा के भूरमुट से जगली पीडा की आवाजें आ रही थी। उनके

उठा कन्ना व साय माय ममुं का गजा भी अधिक् गात जात जा रहा था ।
 गात घोर व भाव व परा न हा । टूण व ममुं तट पर प्वा । काती गात की
 तरफ ममुं भी जाना था । उमक गजा गजाव व । गिार की घादी दूरी पर
 गुं । तक पाती म कुछ मालु वमी सगाय गद म । वगजा म घागा जगा ममुं की
 साह पर जहाँ-जहाँ प्रकाग टिक्वा हुआ था । सा की काविमा म ममुं गिा म अधिक्
 विगुग प्रतीग हा रहा था सति सायमा व विग घपत मांर का घ रा इमम भी
 अधिक् विगुत घोर गहा था । घरो शरीर की उगता गिात व विग परमन
 ठनी बासु पर भट गया । घा वाम घोर गोम त भी उगता अनुगता दिया ।
 गावमा घोर गिागेर गद म । दूगरे घा सावमन का गीग व बीच गद छा
 गिाग भी घाव बड़ गया जहाँ मरें घा घारर गिनारे का चूम रही था । उम
 घपर म भी सावमा लहरा व घा-जात रो मरूम कर रहा था । गहरा व
 घाने जाने की गिा घावाजें । उम घपत बाव की बहु गहाती वा घा गयी—लहरा
 की कहानी ।

उमर बाव व घा म य घा जात याता गागर की गना तरों जा ए
 दूगरे का पा म वमा रही घाती गिा उमान म माई-बहन थी । उम राजा की
 सात बियाँ घोर ए बटा था । ए गिा राजगुमार बही मे ए बहन ही गुनम
 पय उठा लाया । उम मज पर रगवर गिार व विग गिात टूण उसा घपती
 बहना से बट गिया रि जा मा इम पत्र का गात की कोगिा करेगी उसी स वह
 घपती गानी कर बठगा । उमरी छोटी बहा वहाँ न थी इमलि ए उमन बाव
 नही गुनी । मेज पर जब उसने बहूत ही बडिया पत्र दता ता उमके मुह म
 पाती घा गया । यह सावसर नि उसरा प्यारा माई उसी व वि ए पत्र छाड गया
 है उसन उत ता लिया । गाव का जय माई लीग घोर उत मालूम हुआ कि
 उसकी छोटी बहन त पत्र सा लिया है तो उसन बहा कि भय चाह कुछ भी हा
 बट उसी स घादी करगा । यह मुनवर छोटी बहा घर स निकल भागी
 घोर तमा स ए लहर बावर वह घपना पीछा करन बाल माई दूसरी लहर
 स भागती रहती है । बहते हैं जिस गिा पहनी लहर दूगरी लहर की पकड म
 आ गावगी घोर माई बहन के बीच गादी सम्भव हो जावगी उत गिा प्रनय
 मच जायगा ।

लानमन की घपती कहानी के सामने यह कहानी टिक न सपी और उसन
 फिर से मामा व सयाला म घपने का डुवकी सत पाया । एव बाल और अथाह
 पानी की डुवरी थी वह । सामने का अधरा जितना घना था उतनी ही स्पष्ट
 थी भामा की वह याद । लहरा की आवाज व अलावा समुद्र म छोटी मोटी
 तरगा की भी आवाज थी । धुपल प्रकाग के साथ एव दा नावो के मछुवे नावो
 की लरडी व टुकडा स थपथपात हुए गाल उदारन म लगे हुए थ । नावें अधिक्

दूर न हाने के कारण त्रिभोली मेगा की आवाज भी स्पष्ट थी। वह आवाज सभी की जानी पहचानी थी। नाव का काइ भी आदमी कह सकता है कि आवाज रेमा ने बने मार्ले की थी। नाव की थपथपाहट और लहरा की आवाजें मगीत का काम कर रही थी और मार्ले अपनी ही धुन मगाता जा रहा था—

अनिता मो गाते अनिता मा लावी
 मो दा ला मेर तो दा ला तर
 (अनिता मेरा प्यार अनिता मेरी जान
 मैं सागर में हूँ तू घरती पर
 तरगे इतनी जोरदार हूँ कि गायद
 मेरी पुकार तुम तक पहुँच न सके
 वीन जान इस समुद्र में जब तूफान आ जाय
 और बर मरी नाव डूब जाये
 पर अनिता, मेरे दिन म तुम्हारे लिए
 जा प्यार है वह कभी नहीं डूबगा
 कभी नहीं डूबगा अनिता कभी नहीं डूबगा।)
 मो लामूर अनिता जाम लिपा पू बाय

यह गीत सभी सुन रहे थे पर इस गीत का जो असर लालमन के हृदय पर हा रहा था वसा किसी पर नहीं हो रहा था। कुछ क्षण बाद घरमान ने लालमन की तन्ना को तोड़ते हुए कहा—

—मेरे यार, यहाँ हम बकडे पकडन आये है।—और अपने हाथ की ताना टोक्री लालमन की पीठ पर द मारी।

विशोर ने टाच अपने हाथ में ली थी। उसकी रोशनी का बालू पर नचात हुए वह धीरे धीरे आग बन्दने लगा। लालमन अब भी मन मारे पीछे पीछे चल रहा था जबकि उसके बाकी तीना साथी टाच के प्रकाश में पूरी मतकता से चल रहे थे। उनकी आख शिकारी आत्मा की तरह बालू पर टिकी हुई थी। वस बकडे पर नजर पड जान की दर थी। बकडे पकडन का यही सब से सरल साधन था। बिल फाडकर बकडे को बाहर निकालने में एक तो बहुत मेहनत करनी पडती है और फिर समय भी बहुत बर्बाद होता है। कभी तो कई घिंटा का फोड लंने के बाद भी कोई बकडा हाथ नहीं लगता। यह तरीका सबसे आसान था। टाच की रोशनी में जब बकडे घनाचौब होकर सिटपिटा जाते उस समय छलांग के साथ बालू में मेटेड उड़ दरोगे त्रिदस जातस। सबसे पहली छलांग गीतम न मरी पर बार खाली गया। उसका शरीर का परछाई पडते ही बकडा बिल में चला गया और उसका हाथों में बवल बानू आयी। सबसे पहला बकडा घनश्याम की मुट्ठी में आया। मुट्ठी भर का था वह।

इससे पहले कि वह केरुडा उसकी मंगुलियों को काट बैठता घनश्याम ने जोर से उस बालू पर द पटका और फिर उठाकर टोकरी के हवाल किया ।

पूरे दो घंटों का वह शिकार काफी सनसनीभेज और सश्रियता से भरा रहा । टोकरी के तीन चौथाई भर जाने पर लालमन ने कहा—

—दस वज्र चुके होंगे ।

—अभी तो सारी रात बाकी है ।

—तुम्हें तो कल दिन भर घर पर बठना है जबकि अपने का मूरज निकलने से पहले ही खेत पहुँच जाना है ।

—नारियल के बगीचे तक चलते हैं फिर वही राँ घर का रास्ता ल लेंगे ।—
घरमेन ने कहा ।

शिकार पन्द्रह मिनट और चलता रहा । इस दौरान अब तक के सभी केकड़ों से बड़ा केरुडा हाथ आया जिसे टाच के प्रकाश में प्रदर्शित करते हुए घरमेन ने लालमन से कहा—

—अगर तुम्हारी बातों में आ जाते तो यह माल हाथ नहीं आता ।

घर लौटते हुए रास्ते में घनश्याम ने प्रश्न किया—

—अब तक तो सभी कुछ ठीक रहा पर अब तो यह जानना जरूरी है कि प्राण का काम किसके जिम्मे सौंपा जाय ।

—प्राणों का काम ?

—हाँ भाई ये केकड़े कौन संभालेगा ?

—कोई भी संभाल सक्ता है इममें क्या ?

—केवल संभाल लेने से काम थोड़ा ही चल जाता है । इनको पकाने और मूस तयार करने के बाद सभी को अपने यहाँ बुलाने की बात भी इसी में है ।

—घरमेन की भाँभी से अच्छी तयारी अगर कोई कर पाय तब तो ।

—तो तुम्हारा मतलब है कि कल हम सभीका घरमेन के घर पहुँचना है ?

—भाई तो और जायेंगे वहाँ ?

—बात तो ठीक है लेकिन

घरमेन के खेत ही गौतम पूछ बटा—

—लेकिन क्या ?

—अगर वन मरा भाई घर रहा तो बीघर नहीं चल सकेगी ।

—अपनी चिन्ता क्या करते हो ? पुन पर पंच दिना उत्सव पार करने की किन्तु क्या करने पग ?

—लेकिन बिना ड्रिब ?—मं बनाने हुए शिकार न कहा ।

—तो फिर बटा बात ! कौन कहता है ड्रिब न रखा ? टोकरी तो भर साथ होंगे । अगर अचर रखा तो बातमें बाहर भाँ हाँ जायेंगे ।

—और अगर बरबसर न रहा तो ?

—तुम तो आल्डस हक्सले की तरह बातें करने लग ।—घरभेन न बहा ।

—यह आल्डस हक्सले कीन है भाइ ?—किंगोर, जाकि हक्सले को सबसे अधिक जानता था उसी ने प्रश्न किया ।

—इतमीनान रखो, वह हम जसा कोई बेबडामार नहीं ।

लालमन का छोड़कर सभी हस पड ।

लालमन देर से सोया था इसलिए देर से जागा। अगर छाया उसे भक्भोर कर न जगाती तो शायद अब तक वह सोया ही रहता। खीझ के साथ चारपाई छोड़ते हुए वह बाहर पहुँचा। उठते ही वह रोज जिन पत्तियों का कलरव सुनता था वह इस समय धीमा पड़ गया था। आज सूरज भी उससे पहले जागा था। प्रभा मुरगिया को भी दाने दे चुकी थी। अपनी माँ को उसने सूरज की ओर मुह किये अर्घ्य दते पाया। मुह-हाथ धोकर जब वह रसोई के भीतर पहुँचा उस समय प्रभा मात पका रही थी। आज उसे भी अपने कामों में देर हो गयी थी। मात की देगची को फिर से आग पर रखकर उसने चूल्हे की लकड़ियाँ को खीचकर बाहर कर दिया ताकि मानवा रहा सहा पानी अगारा से सूख जाय। दूसरी देगची खोलकर एक रोटी निकाली फिर उस पर रात की तरकारी जिसे कुछ मिनट हुए उसने गरम किया था रखकर गोल लपेटा और लालमन के हाथों पर रख दी और उसके लिए चाय छानने लगी।

जब लालमन चाय पीकर उठने लगा तब प्रभा ने दरते पर से सूची का कागज और पस लालमन को देत हुए कहा—

—विजय चाचा सजिया के पस दे गये हैं।

—कब आया था वह ?

—तुम सो रहे थे।

लालमन सूची के कागज पर सजिया के भावा को देखता रहा। कुम्हड़ा और बड़ी मिच अच्छी बीमत में गयी थी। बरें के दाम उस उतना पसंद नहीं आया। उसने सभी पस गिन। पूरे पत्तीम रुपय थे। तीन दिन पहल उमन सोचा था कि हम सज्याह के पस से भागा के लिए एक अच्छी-सी साड़ी खरीनी जा सकती है। लेकिन वह उमाट जा तान दिन पहल उमन भीतर या बह जाता

रहा। साड़ी तो वह अवश्य ही खरीदेगा पर पहली शका जो उसके दिल में हुई वह यह कि न जाने मामा इस बेंट को स्वीकार करेगी या नहीं। वह तो साहस बटोरकर एक साड़ी खरीद सकता था पर मामा के इनकार कर दो पर उमकी जो दगा होगी उससे वह भयभीत था।

आज दिन में उससे मिलन की बात थी। वहां से हाकर उस घरमें के यहाँ पहुँचना था। न जाने मामा के सामने क्या गुजरेगा। यह भी अनिश्चित था कि वहां से निकलकर वह घरमें के घर पहुँच सकेगा या नहीं। बिना मूड उमका वहां जाना कैसे हो सकेगा। उमें खाय हुए देख लाग उसकी नाक में दम कर देंगे। पिछली बार मामा और उसका राव जा बाने हुई थी व अर भी अस्पष्ट था, फिर भी उसे विश्वास था कि आज सभी कुछ स्पष्ट हो जायगा।

खेत पर पहुँचकर देवती और जगदीश को सभी काम बताय और वहाँ से सीधे धनुवा भगत के घर की ओर चल पडा। उसने भगत का कंधे पर हँसुआ लिये बरामदे में खडे पाया। लालमन को देखकर वह आगे बढ़ आया और यह कहते हुए कि मामा भीतर उसकी प्रतीक्षा कर रही है वह बाडे की ओर चल पडा जहा उसकी गाड़ी तयार थी। धनुवा भगत का दरवाजा अघखुला था जिसे थोडा सा और खोलत हुए लालमन भीतर पटुचा। बीच कमर में सिर झुकाय मामा खडी थी। अपने हाथ के बडल को उसकी ओर बगते हुए लालमन ने धीरे से कहा—

—मामा ! बहुत दिना से तुम्हे कुछ भट करना चाहता था पर हिम्मत नहीं हो रही थी। तुम्हें याद है तुम्हें उस गुलाबी भगले में दखना मैं बहुत पसंद करता था इसलिए आज उसी रंग की एक मामूली साड़ी तुम्हें भट कर रहा हूँ।

मामा पत्थर की प्रतिमा की तरह ज्यों की तया खडी रही।

उसके दोना हाथा को अपने हाथा में लेकर अपने हाथ का पकेट उसके हाथा में धमातं हुए लालमन उस एकटक देखता रहा। मामा को मानो किसी न जोर का धक्का दे दिया हो वह लालमन से लिपट गयी। अपने मुक्त हाथा से लालमन ने उस एक दणिक बंधन में बाध लिया। फिर अगले ही क्षण बंधन अपने आप ढीला पड गया। लालमन ने देखा मामा की आँखा में आँसू थे। बिना कुछ कहे उसने दोदारा उसे अपनी बाँहा में जकड लिया। तभी उसने मामा को लडखडाई आवाज सुनी—

—एमा क्यों हुआ लालमन ?

एक पल चुप रहकर लालमन ने जवाब दिया—क्याकि एमा हाना था।

—कल रात भर मैं भगडती रही। वह नहीं चाहती कि मेरी गान्गी बहरी और हो पर पिताजी बार बार गही कहते रह जाया तो मेरी गान्गी उनके मनचाहे वरस होगी या वह मेरी जान लेंगे और फाँसी पर झूल जायेंगे।

वत ही रात धनुवा चाचा भी घटा तब पिताजी को समझात रहे । उनकी भी पिताजी न यही कहा कि य दो ही बातें होकर रहेंगी—दा महीन क भीतर मरी गानी या मेरी मोत । लालमन, मैं तो जय स होस समाला है तुम्हारी बनकर रहने का सपना देखती आ रही हू । मैंने तो कभी भूल स भी यद कल्पना नहीं की कि मैं किसी दूसर की हा सबूगी । इसस मैं मर जाना बहतर समझती हूँ ।

श्रीर लालमन की बांहो से छूट साटी के बण्डल को छानी से चिपकाय वह बोने म पहुँच सिसकियाँ लन लगी ।

—तुमन भेंट भी मोरे स दो है । कपन का काम देगी ।

उसके पास पहुच लालमन न भारी आवाज म पूछा—

—मामा, तुमन मुझ प्यार किया है न ? तो क्या यह प्यार इतना कमजोर है कि तुम्हारी गानी होने ही वह टूट जायगा ? मैं तो यह नहीं मानता । फिरतुम यह क्यों मानती हो कि शानी के बिना प्यार का अस्तित्व नहीं ।

—मैं ऐसा नहीं सोचती लेकिन

—तो फिर रोती क्यों हो ? जब तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी गानी होने जा रही है तुम्हारा प्यार की मृत्यु नहीं तो फिर इस तरह दु खी होना नादानी है मामा !

लालमन की अपने प्रचारक का यह स्वर स्वय पसन्द नहीं आया पर वह कहता ही गया—

—विवाह विवाह होता है श्रीर प्यार प्यार होता है । तुम्हारा विवाह तुम्हारा घरवाले कर रहे हैं श्रीर प्यार तुम करती हो । दोना दो अलग चीजें हैं मामा ।

—ता मेरी इस बरबादी को रोकने के लिए तुम कुछ भी नहीं करोगे ?

—किसी की शादी रोकने का अधिकार किसी को नहीं ।

—मैं मर जाना बहतर समझूगी ।

—तब तो अपने साथ तुम मेरे प्यार की भी मार डालने की सोच रही हो जिसका अधिकार तुम्हें नहीं है मामा ! तुम जो बात बात पर भगवान की दुहाई दनी रहनी हो इस सचाई का क्या नहीं मानती कि अगर इसी घरती श्रीर इसी जन्म म आदमी को सभी सुख श्रीर सभी सफलताएँ मिल जाए तो फिर भगवान के यहा श्रीर दूसर जन्म म क्या लेना बाकी रह जायगा ? नहीं मामा यह विवाह करके भी तुम्हें यह आशा बनाय रखनी है कि इस बार न सही अगले जन्म मे हम अवश्य मिलेंगे । पुनजन्म की बात मानने की यहा तो सब स बड़ी विगपता है मामा कि आदमी कभी हताश न होने पाये । याद है तुम्हीं ने तो मुझ बताया था कि जीवन का दु ख जितना धना हो उतना ही बडा अगल जन्म का सुख होता है । श्रीर फिर मिलन भी तो जुगाई के वाज होता है ।

अपनी बानो से स्वय उसे प्रचारक की बू आ रही थी । यह जानत हुए भी कि

ये सारी बातें खोलली थी वह चाहता था कि उनसे मामा को एक राहत सी मिले। पाठशाला के समय से उस ज्ञात था कि मामा बड़ी-बड़ी बातों पर विश्वास करनी है। यही कारण था कि वह भी आज उससे सामने मांगी बातें रख रहा था। उन बातों पर विश्वास न करते हुए भी मामा के सामने उन्हें रखने में उसका उद्देश्य केवल इतना ही था कि मामा को कुछ हद तक आश्वासन मिल जाय।

—नहीं लालमन इस गान्धी का रोकने के लिए तुम्हें कुछ न-कुछ करना ही होगा। शादी चाहें माँ बाप ही क्या न करते हैं पर उसमें लड़की की पसन्द की बात भी तो होती है। यह तो बिना माँ की शादी ठहरी। तुम्हें इस गान्धी को रोकना ही होगा लालमन नहीं तो मैं

—तुम पागल। जसी बातें कर रही हो। जिन उप-यासों के बीच तुम अपना समय बर्बाद करती हो क्या उनमें तुमने कभी भी यह नहीं देखा कि लोग, जिन्हें समाज भी कहा जाता है हमें माँ बाप का साथ देते हैं तब नडकियों का नहीं ?

—मुझे लोका से लेना देना याद ही है। मैं तो अपनी और तुम्हारी बात कर रही हूँ।

—अपनी बातें तो खुदगर्ज ही हैं।

—लालमन सब माना अगर तुमने कोई उपाय नहीं किया तो मैं जान दे दूँगी।

—मैं तो तुम्हें साहसी समझता था।

—तुम्हारी ये बातें मुझे यह सोचने का विषय कर रही हैं कि तुम वह लालमन नहीं रह जाओ बात बात पर मुझमें पूछना रहता था कि मामा एक दिन मुझे अपने छोड़ दूर तो नहीं चली जाओगी। उस समय जब मैं तुमसे दूर नहीं थी तो इस ख्याल मात्र में तुम्हारे चेहरे पर भारी उन्मत्ती छा जाती थी। आज जब सबकुछ मैं तुम से दूर जा रही हूँ तो तुम मुझे रोकने की कोशिश भी नहीं करना चाह रहे हो ?

—असम्भव के लिए कभी कोशिश ?

—लालमन मेरी शादी तुम से होगी, तुम्हारे अलावा किसी से नहीं।

जिस समय मामा लालमन की बाँहों में थी उस समय बाहर वर्षा शुरू हो गयी थी जिससे धनुवा भगत के घर का घुमनापन और भी बढ़ गया था।

कोई घंटी बज लालमन अपने कमरे में आये था। मूरज शोभन हो चुका था और उसमें बहुत पहले ही दब नी और जगतीन पर तीट गया था। मेल में लालमन के लिए कोई भी काम नहीं था। अगर वह इधर भटक आया था तो अपने हरे मरे पौधों के बीच अपने कुम्हलाय मन को हरा करने के लिए। कुछ

दूरी पर वे भावे के पेड़ आज अजीब साथ साथ के साथ कराटते से लग रहे थे। समुद्र का रोदन भी आज जारा का था। नालमन उन वाता के बारे में सोच रहा था जो घटो पहले मामा और उनके बीच हुई थी। जो बात उनके अजन मुह से निकली थी इस समय उनसे कोई अर्थ निकालना उनके लिए आसान नहीं था। वे दूर से लायी गयी एकदम खाली बातें थी और इस समय वह उसी सीखलपन में समा गया था।

अपने को बहुत कमजोर जानकर मामा का पूरे होश हवास के साथ किसी दूसरे की वार्ता में लगे देना उस अजीब में लग रहा था। उसने तो हमेशा अपने को सशक्त इंसान माना है। जो व्यक्ति चट्टानों पर भी चीजे उगा सकता है वह कमजोर कम हो सकता है। लेकिन सामने की परिस्थिति पर विचार करते हुए वह अपने को गतिशाली भी तो नहीं मान सकता। जब उसमें मामा की रोने की ताकत नहीं रही तब वह बड़े बड़े अर्थहीन गन्तव्य का सहारा लेकर उसके सामने मोक्षला उपदेश देता रहा। वह जानता था कि मामा जैसे उसने बेमनलव की बातों से ऊदा दिया था इस समय अपनी चारदीवारी के किसी काने में घासू बहा रही होगी। भावे के पड़ा और लहरो के कराहन में वह मामा की सिसकियाँ को मटसूस कर रहा था।

मामा को कस मुताया जा सकता है? यहाँ उनके मस्तिष्क में मुलायम गन्तव्य अपने दोना अर्थों के साथ था। उसमें भीतर जो दूसरा गन्तव्य गरम पानी की तरह खोल रहा था वह था—उपाय। कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था उस। उसके खेत के पीधो के पत्ता पर के कीटाणुनाश की तरह उसके दिलो दिमाग में जा कीड़ा रेंग रहा था वह था—

कोई उपाय!

कोई रास्ता! !

मामा से विछुड़ जाने पर जिस बात से उसने अपने को सात्वना दी थी वह थी आशा। विछुड़ जाने के बाद भी उस आशा थी कि मामा उससे सत्य के लिए नहीं विछुड़ी है। आज नहीं तो कल वह उसकी धनकर रहेगी। इसी उम्मीद के सहारे उसने उस क्षणिक विरह की वेदना को सह लिया था। इस समय उसकी वही आशा टूट चुकी थी और वह पुराना रूढ़ सजीव हो गया था। मामा के सामने अपने इस हृदय को छिपान की कोशिश में उसने उस और भी ददनाक बना दिया था।

समुद्र की लहरें उस पर व्यापक करती हुई जारा के साथ कराट रहा थी। अपने जिस खेत के बीच उसने जीवन की सपसप यन्त्री पायी थी उगी गेहूँ में दा घासू उठाना उसे गवारा नहा था। वह नहीं चाहता था कि उन गरम बूदा से उसके खेत की हरियाली झुलसकर रह जाय इसलिए वह उह भीतर

ही रोके रहा। इस प्रयास में उसे ऐसा आभास होने लगा था जैसे वे आसू मीतर ही मीतर उफन रहे हो और कब वे वाद के रूप में आ जायें पता नहीं।

कुत्ते के भौंकन की आवाज आयी। अपने खयालो से छूटकर लालमन ने उस घूमिल वातावरण में सामने की ओर देखा। धरमन का कंधे पर बंदूक लिये आ जाना संयोग ही था। काँई और अवसर हाता तो लालमन को इस आगमन पर बेहतर सुशी होती मगर इस समय तो यह बात उसे सटकर रह गयी। कुत्ते की खेत के पीछा का रौन्ने से राकन हुए धरमेन ने चुटकी वजाकर पुचकारते हुए उसे अपने पास बुला लिया। लालमन एकदम भूल गया था कि आज रात उसे धरमन के यहाँ पहुँचना था और जब उसे यह बात याद आयी तो धरमेन को यहाँ पाकर उसे हैरत हुई। उसकी हैरानी को मिटाते हुए धरमेन बोल पडा—

—लोग आठ बजे पहुँच रहे हैं इसलिए सोचा कंधे पर बंदूक रखकर तुमसे मिलने आ जाऊँ। अगर खरमोश मिल गया तब तो पार्टी ही समझो। अरे हाँ, पहले तुम्हें यह खुशखबरी सुना दूँ कि मेरा भाई आज घर पर नहीं रहेगा।

लालमन इस बात का मतलब समझ गया। आज रात बीयर चलेगी इस बात से उसे जो सुशी होनी चाहिए थी वह नष्ट हुई। कोई आधा घंटे की असफल निवार के बाद दोनों ने घर का रास्ता लिया। रास्ते में अपनी बंदूक को एक कंधे से दूसरे कंधे पर पहुँचाते हुए धरमेन ने कहा—

—आजकल मेरे घर पर एक भमेला चल रहा है।

लालमन को अपनी ओर ताकते पाकर धरमेन को मालूम हो गया कि बात उसकी समझ में नहीं आयी इसलिए उसने आगे कहा—

—आजकल खेता के सभी कामों की देखरेख एक तरह से मैं ही कर रहा हूँ, भया बाहरी कामों को सभालता हूँ।—एक क्षण चुप रहकर उसने कहा—
‘श्रियत है तुमने यह नष्ट कहा कि भला मुझ से क्या संभलेंगे। मेरी माँ तो कहती है कि मोटाइल बकरी लकड़ी चबावे। वह श्रय भी यही चाहती है कि मैं कॉलेज लौट जाऊँ।

—आखिर तुम खेता में करते क्या हो ?

—धूमा फिरा करता हूँ। जहाँ काम अच्छा होता है वहाँ रुककर मजदूर से दो बातें कर लेता हूँ, और जहाँ नहीं अच्छा होता है वहाँ मजदूर को इगारा करते भाग बढ जाता हूँ।

—तुम क्या पहचानो खेत के कामों का ?

—सारा ठेका तुमने यहाँ ही ले लिया है। भाई, मुझे देखकर बूट सरदार को भी हट जाना पडता है।

—यह ता तुम्हार खेता के बाच पहुँचन पर ही जानूगा ।

—कब आ रहे हो ?

—निरीशक की तरह आऊँगा और निरीक्षक दिन देकर नहीं आता । तुम्हें यह भी कहे देता हूँ कि वहा पहुँचकर मैं मजदूरो के पक्ष म होउगा ।

—तो फिर पाँच दस रुपये तुम्हारे हाथा पर रखकर तुम्हारे प र को खरीदना ही पडेगा ।—हँसते हुए धरमेन बोला ।

—आखिर जमीदार का बटा जो ठहरा ।

लालमन सीध घर पहुँचा । गरमी के कारण उसे मजबूरन स्नान करना पडा । कपड बन्तकर जब वह घर स निकलन लगा उस समय इधर कइ दिना के बाद उसने प्रमा क चेहरे पर मुसकान की एक भलक देखी । उस मुसकान का कारण जाने बिना वहा से जाना उससे नहीं हुआ । ठिठककर उसने प्रमा से उसका कारण पूछा । प्रमा हँसकर रह गयी ।

रास्ते म भी लालमन प्रमा की उस हसी का कारण समझन की कोशिश करता रहा । धरमेन के घर पहुँचकर उसे मालूम हुआ कि वह सबसे पहले पहुँच गया था । उस समय धरमेन भी किसी जरूरी काम से च द मिनटा क लिए बाहर गया हुआ था । धरमेन की भाभी न एक माली माली मुसकान स उसका स्वागत किया और धरमेन के कमरे म उसे बिठाती हुई बोली—

—मुझ तुमस कुछ जरूरी बातें करनी हैं ।

लालमन ने हैरत भरी नजरा से उसे देखा । इससे पहले कि वह कुछ पूछ पाता धरमेन की उस पतली सी गोरी भाभी न जिस धरमेन क राप ने लाता क बीच स दूडा था हसते हुए कहा—

—अभी नहीं, फिर कभी ।

लालमन कुछ समझ पाता कि तभी धरमेन हाथ म टोकरी घामे भीतर आ गया ।

धरमेन के घर के सामने से वह जिस समय गुजरा उस वक्त सूरज ऊपर आ चुका था। सुबह के उस उजाले में अपने गर्मले आंचल से चेहरे को सामन कर लिया था जिससे चीजें अपने आप स्पष्ट हो चली थीं। जिस पगडंडी से होते हुए वह अपने खत की ओर बग उसकी घास पर ओस कण अब भी मोती की तरह चमक रहे थे। सूरज की लोलुप किरणें अब भी उह मोती समझ निगलती जा रही थी। रास्त के जिन सभी लोगो को हाथ उठाते हुए लालमन आगे बगना आज उही लोगो से वह बटा हुआ सा था। छोटे बडा के सामने एक यांत्रिक सक्रियता से उसके हाथ उठत थे कभी सचमुच ही नभस्वार के लिए और कभी आदत से विवश या औपचारिकता के इतारे पर, लेकिन आज उसी आदत, उसी आदत और उसी औपचारिकता को एकदम भूलकर वह यत्र मानव की तरह चलता रहा।

आज वह हर बात और हर चीज से अलग था। खेत की ओर बढ़त हुए वह केवल परिपाटी को निभा रहा था। उसे अपने गाव का खयाल था, न अपने खत का। कौन पीछे छूटता, कौन पास आता जा रहा था—इसका भी उसे भान नहीं था। ईख के बने हुए खेतो से कहीं कलने भाकने लगे थे कहीं पीछे छुटने तक आने को थे। इन सभी पौधो को कण कण बढ़त वह देखता आ रहा था। जिस दिन उसे ऐमा आभास होता कि आज पौधे अधिक नहीं बन पाये उस दुःख सा होता। उसका अपना ईख का खेत तो नहीं था पर ईख उसके देग की आगा थी, इस बात को वह कसे नहीं समझ पाता। वह नहीं चाहता था कि किसी भी हालत में ईख के पौधे बगने में पीछे रह जायें। उसके मस्तिष्क में किसी तरह का कोई खयाल नहीं था और वह गूथता लिय चल रहा था। खयाल से खाली मगिनी चाल से वह अपने खेत में पहुँचा जहाँ

देवती और जगन्नीग अपने अपने कामा म लग हुए थे । उस हाल चाल पूछन तक का खयाल भी उसे नहीं रहा । जगन्नीग और देवती को ग बात स आश्चय न हुआ यह बात नहीं थी, फिर भी व दोनों आपस म बान करत हुए अपने अपने कामा म लग रहे ।

लालमन चट्टान पर चमकती धूप म बठ गया । जगन्नीग और देवती ने सोचा लालमन को ठड लग रही होगा इसीलिए उनर पास तक न पहुँचकर धूप म बठ रहना ही उसन टीर समझा हो जबकि लालमन ठर स बनने क लिए धूप म नहीं बठा था । उस न ठड लग रही थी न गरमी उने तो ग्रानी सांगा का भी आभास नहीं था । टीर सामने की ब्यारिया म बगल और टमाटर क पीय तपार थे । प्रतिरोपण इसी सप्ताह गुरु कर देन की बात हुई थी इस समय उस यह भी याद नहीं था । भासा की याद भी नहीं थी उस ।

उपरत समु के प्रलयकर ज्वार भाग की आवाजें भी आज उसके बानी तक नहीं पहुँच रही थी । तुरई और कद्दू की बला पर आय नय फूला पर उसकी नजर नहीं पड पा रही थी । वह बठा रहा यह न जानते हुए भी कि वह अपने सेत म था जहाँ आज से पहले वह कभी भी चेतनाहीन होकर नहीं बठा था । कोई आधा घंटे बाद देवती उसके पास पहुची । वही हमगा की औपचारिक वाता के बाद उसने लालमन स उसकी उदासी का कारण पूछा और जब लालमन ने सूखी मुसमान स बात को टाल दिया तब देवती ने अपने दिमाग पर जोर दिया और जब उसे विश्वास हो चला कि बात वही हो सकती है जो वह सोच रही थी तो उसने अपने स्वर म आश्वासन का भाव लात हुए कहा—

—लालमन मया, भासा की गादी हो रही है इसी बात के लिए तुम इस तरह उदास हो न ?

देवती की इस बात से लालमन को विस्मय नहीं हुआ । जब गाँव के छोटे बड़े सभी जानते थे तो फिर कोई कारण ही नहीं था कि यह बात देवती से छिपी रहती । देवती लालमन को अपने ढंग से समझाती रही और लालमन हसते रहने का असफल प्रयास करता रहा । उसकी आँखें और ध्यान क्षितिज पर थे । सामने के पेड़ो क बीच की खिडकी स वह सागर अंधर के सगम को देखता रहा ।

भात खाने क समय देवती फिर स लालमन के पास आकर बठ गयी ।

—भोजन नहीं लाय हो आज ?

उसने मुस्कराते हुए सिर हिला दिया ।

—तो फिर तुम्ह मरे साथ जाना होगा ।

—नहीं मुझे भूल नहीं ।

—या मुझ गरीब का खाना तुम्ह पसन्द नहीं आया ?

—अगर पहल कमी न खाया हाता तो वह सजती थी ।

—तुम्हें खाना ही होगा ।

—वहाँ न नहीं खा सकूँगा ।

—योडा-सा ।—यह कहती हुई अपना खाने के बरतन की ढपनी में वह तरकारी और मात रखने लगी, फिर लालमन की ओर देखती हुई बोली—
जामो, हाथ धो जाओ ।

एक क्षण बंटे रहने के बाद लालमन चट्टान से उठा और कुएँ की ओर बढ़ गया । बहुत पहले ही उसने देवती के बारे में अपना विचार बना लिया था । वह सूरत से जितनी गरीब थी दिल से उतनी ही धनी थी । लालमन उसे प्रभा से कम प्यार नहीं करता था । बल रात जब उसने यह सोचा था कि अपनी कहानी प्रभा को सुनाने से उम्मीद मन कुछ हल्का हो सजती थी लेकिन उनी समय उसे यह बात भी याद आ गयी थी कि प्रभा तो पहल ही से दुखी थी उस अपनी बातों से अधिक दुखी पया किया जाय । इस समय देवती का सामन पाकर उसे अपना मन हल्का करने की बात फिर सूझी । हाथ मुह धोने के बाद अपने दोना हाथों को कमीज के छोर से पाछत हुए वह देवती के पाम लौट आया । देवती ने ढपनी का मोजन अपने लिये रखकर बरतन लालमन की ओर बढ़ा दिया ।

—पागल तो नहीं हो गयी ।—लालमन ने पूछा ।

—पागल क्या होने लगी ?

—मैं सभी कुछ खा लूँगा तो तुम क्या खाओगी ?

अपने हाथों की ढपनी की ओर सखन करत हुए देवती बोली—मैं भी तो खाने जा रही हूँ ।

—ढपनी भेरे हवाल करो और यह तुम खाओ ।—बरतन का अपना सामन से हटात हुए लालमन बोला ।

कुछ देर तक की हान-हान के बाद देवती का विवग हा बरतन लाना पडा और लालमन को ढपनी देनी पडी जिसमें खाना कम था ।

बिना रुचि लालमन खाता रहा और सोचता रहा कि उसे जा कुछ कहना था किस ढग से कहे और कस गुरू करे । काफी देर तक इसी तरह सोचते रहने के बाद अंत में उसने अपने आपसे प्रदन किया—कहने और न कहने से क्या होता है ? कहने से कुछ बनने की उम्मीद तो नहीं । मन हल्का करने की बात भी तो दूर की बात रही ।

सूरज ढलने से पहले ही वह अपना खेत को छोडकर समुद्र की ओर चल पडा । पडा के भुरमुट से आता हुआ मूरज का प्रकाश अंतिम अंख मिचीनी खेल रहा था । एक विचित्र चाल से लुप्तता सा हुआ वह बालू भरे रास्ते पर

चलता रहा। समुद्र पास आना गया और उमगा प्यारीपन बढ़ना गया। वह कुछ न साबने हुए भी बबल इतना मोच रहा था कि बाना का गुजरना था व गुजर चुका। उसरी काई चीज पीछे छूट चुका था। पीछे लौटकर उम उठा लने की तमना थी उमक भीतर पर यह सोचकर आगा टिक न सगी कि उम चीज को धर तक कोई उठा पुरा होगा। पीछे लौटना मगव की बरानी व प्रलावा और हो ही क्या सकता है? समुद्र का गजन अधिर स्पष्ट होना गया। उस चलती हुई आवाज से भाग जान की इच्छा हुई पर जिन मामागी की उस तलाग थी वह और भी चलने वाली चीज ठहरी इसलिए कोई दूसरा चारा न पाकर वह समुद्र की ही आर बढ़ता गया और फिर समुद्र से तो उस वह प्यार था जो क्षणिक नहीं हो सकता।

सूरज सोने की धाली की तरह गतिज पर टगा हुआ था। डोर टूटने ही वाली थी और उसक लुत्क जाने में गायन अधिर देर न थी। कम-स-कम यह एक दृश्य था जिससे लालमन की अगाति क्षण भर के लिए मग होकर रही। वह उस स्थान पर जा पड़ा हुआ जहाँ लहरें भयास सहित पूरी गति व साथ कठोर चटाना से टकरा रही थी। भयास के पानी को अपने चेहरे पर महसूस करके उसने ठडक पायी। दो पानी काँव काँव करते हुए उसके सिर पर से गुजर गये। दो अथ जोड़ियाँ गतिज की लालिमा को चुगने के लिए तज रफतार के साथ डूबते सूरज की ओर बढ़ी जा रही थी। वह कोई पागत नाविक रहा होगा जो पाल चलाये उस उफनते सागर के सीन को चीरते हुए सिद्धरी गतिज की आर अपनी नाव को दौड़ाये लिये जा रहा था। क्षण भर के लिए लालमन ने उस नाव में अपने बठ होने की कल्पना की। कुछ भी हो उसके लिए वह एक आनन्द यात्रा थी। दृविया रग की एक बड़ी सी फनिल लहर लालमन के परो के पास आकर चकनाचूर हो गयी। उसका समूचा गरीर भीग चला था। अपने को सम्हालते सम्हालते उसने देखा नारगी छाप छोड़कर सूरज सागर में डब चुका था।

रात की वह बिना री कविता पूरी करने में लगा हुआ था। प्रमा उसके सामन बठी हुई थी। अभी चन्द्र गितट पहल वह लालमन से भोजन न करने का कारण पूछ रही थी और लालमन ने सिरदद का बहाना दिया था। लालमन भात खाने से इनकार कर जाये एसी स्थिति पहले कभी नहीं आयी थी। यही कारण था कि इस बात से प्रमा को आश्चर्य हुआ था। उसके बार-बार कहने पर भी लालमन ने बात नहीं मानी थी और अन्त में प्रमा को चुप रहना पडा था। उससे भी खामा नहीं गया पर जब लालमन न पूछा तो उसने कह दिया कि वह पहले ही खा चुकी है।

कविता पूरी न हात दख लालमन ने बही को मज पर रख दिया और प्रमा की ओर दखा । प्रमा के चेहरे पर वही रहस्यमय मुसकान थी । वह प्रमा को देखता रहा । एक सावले चेहरे पर किसी गोरी सूरत की मुसकान थी वह । बातें करने के री म न हात हुए भी लालमन ने पूछा—

—कल से तुम बहुत खुश नजर आ रही हो ।

—हा । —प्रमा ने उस मुसकान के बीच छोटा सा उत्तर दिया ।

—कारण ?

—कोई खास कारण तो नहीं है बात सिफ इतनी है कि मैंने एक प्रण किया है ।

प्रमा को चुप हो जात देख लालमन ने पूछा—कसा प्रण ?

—गादी न करन का ।

—जो चीज असम्भव हो उसके लिए प्रण कैसे किया जा सकता है ?

—असम्भव क्यों है ?

—यह बात कवल तुम्हारी मर्जी की थोड़े ही है ।

—मैं जानती हूँ कि इसम सभी की मर्जी है पर यह भी तो सच है कि मेरी मर्जी के बिना कुछ कस हा सकता है ।

आश्चर्यचकित लालमन अपनी बहन को देखता रहा । वह किसी पढाय हुए तात की तरह बोल रही थी । उसकी इस आवाज पर लालमन को विश्वास नहीं हुआ । वह आवाज उसकी बहन की आवाज सी नहीं थी । वह अभी उस वाक्य को समझने की काशिंग कर ही रहा था कि प्रमा आगे बोल उठी —

—गादी जरूरी है इस बात को मैं मानती हूँ पर शादी न करके अपनी मा के घर रह जाना काई पाप भी तो नहीं हो सकता ।

—किसने सिखाई तुम्हें यह बात ?

—किसी न नहीं ।

—यह मैं कस मान जाऊँ ?

—कौन सिखायगा मुझे ऐसी बातें ?

—गादी न करना काई पाप न सही पर लागू की आवाजा को रोकना भी तो आसान नहीं ।

—मैं यह सब नहीं जानती । मैंने तो निणय कर लिया है कि अब कुछ भी हो जाय मैं गादी नहा करूंगी ।

—तुम खुद नहीं समझती हो प्रमा कि तुम कह क्या रही हो ? लडके के लिए गायन यह बात कुछ हल तक सम्भव हा जाये पर लडकी का इससे बचना कठिन ही नहीं असम्भव है । सजम पढ़ने तो मा और पिताजी तुम्हारे इस प्रण को तोडने म कुछ भी बाकी नहीं छाडेंगे ।

—महा भगव, मे गा वर गाती है कि गो वात का छाती वर को गाती का मरम अधिक् मरम होत है ।

राज का पारसाई पर वर हूँ गातमा छतः। मभी वात भूतपर प्रमा क
 का म गात रता था । एम ममय भी उम इम वात का ऐगनी धा कि दागिर
 प्रमा उम तरत को बाते व म कर गाती थी । व गा सुक ग पात्र मर प्रमा का
 एर मा ते मरता ममभगा का रता था । व एरकाक उम म गोपी बाते वर व म
 कर । मग ली थी । उमरी व ममा वात कुल ए मर मरता मरता गो पा पर
 हा । पर भी वे वात गापाए म भी । गातमा का एगा प्रामाण होने मगा कि
 प्रमा मर परिदरा म वातर मा ममा था । वर वर निम्व लही कर गा रता था
 कि उता । जो कुछ गापा था व वती मर गाता था । प्रमा । वातो एर तर
 मरवा-मरवा बाते का दी । व मारा बाते उम पुमरका की बाता-नी प्रीय
 हूँ थी मगर मातमा जातगा था कि वे पुमरका की बाता उती था । मपाय का
 मंग उत बाता म वती अधिक् था । वर मपाय उमग भा विमग लही था ।

एक ही वार म गातमा क माम । व मभी ए वम उ जब प्रमा छाती भी
 घोर उमरी म रिदी उम दुि हन वरररपुमरका करती था । वर इमविण कि जय
 भी उतर बाय मुदिया की दाना रपा जात भी प्रमा हममा दुि हन की मी
 बाती थी । मातमन का मर वर मत्रीव-मा मगा कि वषणारी दुि टापा रिना
 दुि हन का व म रत जाणगी । मातमुष उता मगी महा क पतर पर जा मात्र
 दगा था वर दुइ था । वर मुमरान भी सवत्व की मुमरान थी । वम स-नम
 तातमा का इम वात की ता गुनी था कि मगी वर व उता गुनी मरी
 मुमरान क साथ दगा था । उम ममा बाता गिरागा घोर उतासी व बा उतने
 उमर भहर पर जा उने ममन दगी थी यह मगाधारण था ।

घोर फिर उतन मपने वारे म सोचना मारम्भ किया ।

मपन वार म साधने क लिए उतन पाग बटन कुछ था घोर कुछ भी नहीं
 था । धनुवा मगत की एव पुरानी वात मधर कुछ निना स वार-वार उसे पा
 था जाता । धनुवा मगत उत बाता की गीत क म म गाता था घोर सातमन
 उह मपन डग स ममभगा । उन बाता म यह बात भी थी—

खिदगानी ता ए वो तो मरता पानी है ।

पट्टान घोर वहाड स जो होकर वर जाय

वस यही सबसे बड़ी खिदगानी है ।

सातमन को गाने का राग मच्छी तरह नहीं धाता था फिर भी मन ही मन
 यह उस गुनगुनाया करता । न जान इन चन्द गाना म कौन ता मारवाता था ।

धरमेन की मामी ने जिस बात के लिए लालमन को बुलाया था उस न गुरू करके कोई दूसरी ही चर्चा शुरू कर दी थी। गाव के सभी लोग लालमन और मामा की बात जानते थे। इधर जब मामा की गादी के प्रेम में कुछ ही दिन रह गये थे तो बातों का रूप भी बदलता आ रहा था। कोई कहता—मामा के बाप की आँखें हमेशा से धनवान दामाद के ऊपर टिकी हुई थी। उसे भी तो इस बात का पता था कि उसकी बटी के पास अनुपम सुंदरता थी। सुंदरता की अच्छी कीमत न लगाई जाये यह बात उसे कस पसंद आ सकती थी। कुछ लोग ने यह भी कहा कि अपनी जाति उमके लिए सोना है बाकी जातियाँ कुछ भी नहीं। धरमेन की मामी ने आरा से जा कुछ सुना था उसी के आधार पर लालमन से प्रश्न किया—

—यह बात कहा तक सच है, लालमन ?

—कौन सी बात ?

—जो आजकल हर एक के मुँह से सुनी जा रही है।

—बातें तो बहुत सुनी जा रही हैं मामी। तुम कौन सी पूछ रही हो ?

—सचमुच क्या मामा मा बनन वाली है ?

—यह झूठ है मामी।

—तुम न भी यह बात सुनी है या नहीं ?

—सुन चुका हूँ।

—अगर ऐसी बात है तो गादी तुम्हारे ही साथ होनी चाहिए थी।

—गादी किसकी किसके साथ हानी चाहिए यह तो और बात हुई। मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मामा के साथ मैं इतना नीच नहीं कभी उतरा और उसकी माँ बनन वाली बात एकदम बबुनियाद है।

धरमेन की मामी क्षण भर के लिए चुप रही। लालमन भी चुप रहा। दूसरे क्षण धरमेन की मामी ने अपने स्वर में अधिक मृदुता लाते हुए पूछा कि क्या सचमुच ही वह मामा को बहुत प्यार करता है। और जब उसने इस प्रश्न का उत्तर लालमन ने हाँ में दिया तो वह फिर कुछ क्षण के लिए चुप रह गयी। उसके इस प्रश्न का लालमन ने कोई उत्तर नहीं दिया कि क्या मामा की गान्धी के बाद भी वह उसे प्यार करता रहेगा? लालमन को चाय देने के बाद वह फिर से उसी विषय पर टिकी रही। इस बार उसने लालमन से यह प्रश्न किया कि मामा की जुदाई को वह कैसे सहगा। लालमन मुस्करा दिया गोया वही उसका उत्तर था। धरमेन की मामी ने भी यही समझा कि वह हसकर सह लगा। इतना आत्मविश्वास था लालमन की उन गहरी नीली आँखों में।

लालमन की अपने पाग बुलाने के विनिष्ट उद्देश्य पर वह काफी देर से पहुँची। वह भी लालमन के पूछने पर कि आखिर उसे क्या बुलाया गया था, धरमेन की मामी ने बात प्रश्न के सहारे सुन ली।

—धरमेन जो कुछ कर रहा है उससे तुम परिचित हो ?

इस प्रश्न से लालमन के भीतर जो दूसरा प्रश्न अपने आप पदा हो गया वह यह था कि आखिर धरमेन अनुचित कस कर सकता है ? प्रश्न का उत्तर उसने प्रश्न से लिया—

—क्या कर रहा है वह ?

—अगर तुम नहीं जानागे तो और कौन जानगा ?

—सनीवारी में लगा हुआ है।

—सतीवारी का उजाड़ रहा है।

—यह कस हाँ सकता है ?

—धरमेन तो वही कर रहा है जो नशा हो सकता।

—वह सती का उजाड़ कस सकता है ?

—तब तो इसका यह मतलब हुआ कि सचमुच हाँ तुम कुछ भी नहीं जानते ?

—अगर हममें धरमेन की बात हुई है तो सचमुच ही मैं नहीं जानता।

धरमेन की मामी चुप रही। लालमन भी धरमेन की बातें सुनकर चुपचाप बसा रहा। धरमेन की मामी का साथ देना उमर नहीं हो रहा था पर जब काफी देर तक उसने उम चुप पाया तो धरमेन उठकर उमरी घाट खनन हुए पूछा—

—क्या किया है उमर ?

—मनक मगर है उम पर। धरमेन की बातों की वजह से मैं गया कुछ मुग़ा रहा है। मना में काफी कुछ काम करता है। उन लोगों का मानना न होकर वह उन लोगों का नता बन गया है। उनका धरमेन का साथ मगर वह

पर मे वजालत करता रहता है। विछले सप्ताहस वह उन सभी को समय से दो घंटे पहले ही छाड़ता था रहा है। विछने ही सप्ताह तुम्हारे भाई १ उसे पसे की जिम्मेदारी द दी थी और यह कहत हुए कि मादूरा का हक मारने स उसका तिन दुसता है उमन बिना सोचे समझे सभी के पस बना दिये। अत्र तुम्ही सोचा इस नतागिरी से मन जायेंगे या रहेंगे। वह ता घर का आटा गीला करने पर तुला हुआ है। तुम्हें इसीलिए बुनाया है कि उस समझान की बोगिस करो। उसके भाई के स्वभाव को ता तुम जानत ही हा। घरमन कुछ भी क्या न कर दे वह उसे कुछ भी नही कहगा। घरमन की यह बात उस जरा भी पस नही फिर भी उसस कुछ न कहकर वह मुझे गुनाता रहना है। मैं घरमन को समझान का बहुत प्रयत्न किया लेकिन वह अपने इस हरिश्चन्द्र स्वभाव स बाज आय तब तो 'हमर कहता है कि समुद्रसे एक गितास पानी निकाल लेने स क्या कमी पड सकती है। तुम तो अपने हाथा नेन सम्हालन हो इसलिए जरूर जाते होग कि आजकल सभी म क्या मिलता है, क्या नही मिलता। य ही खेन जो सचमुच ही कमी सोना उगतत थ अत्र ता निगलत से तगत है।

घरमन की भाभी क चुप हात ही लालमन न धीरे से पूछा—

—तुम सोचती हो कि वह मेरी बात मान जायेगा।

—क्यागि करके देखो। पनाई छोडकर यह न जान क्या कर रहा है वह।

बाइ पाद्रह मिनट बाद घरमन का घर छोडते हुए लालमन न घरमन की भाभी की तिलासा दिया कि वह उसस बातें करेगा और किसी तरह का प्रतय करने से उसे राखेगा। बात कह जान पर भी उस यह विश्वास नही था कि घरमन जो कुछ कर रहा था वह अनय ठहरा। घरमन की जगह पर वह भी तो ऐसा ही करता। वह यह मानन का जरा भी तयार नही था कि उसके अपने देग म मजदूरों की उनका सही पारिश्रमिक उह मिलता है। अगर मजदूरों की जायज कर्नर नहा होनी तो कबल इसीलिए कि उ ह पर्याप्त पैसा नही मिलता जिसस व अपने लिए मान खरीद सकत।

दूमर ही तिन गरने खेन के कामा स छुट्टी पाकर लालमन घरमन से मिलने उस इलाके म पहुँचा जहा उसक खत थे। ताने का समय था। सभी मजदूर एक स्थान पर बठ या रह थे। घरमेा कुछ ही दूरी पर डिठोरी के पेड की छाया म बठा पड रहा था। लालमन पर नजर पडने ही पुस्तक बन् करत हुए वह खडा ही गया। आगे बढकर बोला—

—कही तुम भी शिकार के इरादे स तो इधर नही आ गय। दरवार इस प्रात म खरगोश नही मिलत।

—गुन अगार कभी शिकार करने का आवश्यकता पडी तो मैं बाप सिंह का शिकार करुगा।

—मारीगस में तो तुम्हें बाध सिंह गही मिलेंगे । अलपता बूढ़े और नेवले बहुत मिल सकते हैं । मैं सोचता हूँ बूढ़ा का गिवार करके तुम दग के लिए वरन बड़ा उपकार करोगे । ईश बं खेतो को बट होने से बचा लोग ।

—बदूक तो तुम्हारे पास है, गिवार मुझ से कस होगा ।

दोना डिठौरी बं नीच छाया म बठ गय । सेता म बडवती धूप थी । अकुला देन वाली गरमी थी चारो ओर लेकिन टिठौरी की छाया म एक शीतलता थी जिसे वहाँ पहुँचते ही लालमन ने महगूस कर लिया था । सामन के ईश के पत्ता पर धूप झिलमिला रही थी । गरमी के कारण मजदूरा से भरपट खायाम नहीं जा रहा था । भोजन से अधिक पानी पिया जा रहा था । धूप म इतनी दूर तक चलकर आने बं बाद लालमन को भी जोरो की प्यास लग आयी थी । अपनी आस्तीन से चेहरे पर के पसीने की बूदा को पाछत हुए उसने धरमेन से पानी की फरमाईश की । धरमेन रुद आग बढकर मजदूरो के बीच से पानी की बोतल ले आया । पानी पी लेने के बाद धरमेन ने पूछा —

—कहो कसे टपक पडे इधर ?

—तुम्ही तो बहा करत थे कि मैं कभी इधर नहीं आता ।

—खरियत है आ तो गये । खारर आये हो या नहीं ?

—मैं तो लाकर आया हूँ पर तुम नहीं खा रह हो ।

—इसी एक काम म मैं किसी से पीछे रहना नहीं चाहना । मैं तो दस ही बजे खा लेता हूँ ।

दाना के बीच उस वकत तक इधर उधर की बातें होती रही जब तक कि सभी काम करन वाले अपने अपने कामो म नहीं जुट गय । मद ईश के सूखे पत्तो को कस रहे थे और औरतें निराइ कर रही थी । महा आन के अपने विगिप्ट उद्देश्य पर पहुँचत हुए पहले तो लालमन को सबमुच ही हिचकिचाहट सी हुई पर फिर उसने साहस बटोरकर बात गुरू की । धरमेन उसे मुनता रहा और जब लालमन की बात समाप्त हुई तब उसने हँसते हुए कहा —

—तो मरी भाभी की बात म तुम भी आ गये ?

—मैंन तो केवल इतना बहा हूँ कि पहले अपने घर म दीया जला लेने के बाद अगर कोई मस्जिद म दीया जलाय तो यह बात जवती हूँ लेकिन अपने घर म दीया जलाने से पहले मस्जिद म दीया जलाने वाली बात गोमा नहीं देती ।

—तुम्हारी वह कविता बहा गयी जो उस दिन तुम मुझ मुना रह थे जिसम तुम्हारे भीतर का कवि चिल्ला चिल्लाकर बहना सा प्रतीत होता था कि उह हक है अपने हक का ?

—तुम मुझे गलत क्यों समझन लगे ?

—तुम्हारा मतलब कविता म हूँ या अमी की बातो स ?

—मेरी कविता की बातें भी सही हैं और इस समय की बातें भी

—तब तो मेरा यही कह देना अधिक अच्छा होगा कि अपनी समझ में कुछ नहीं था रहा है।

—तुम से पहले तुम्हारे बाप-दादा न इन बातों का कभी महत्त्व से बाधा और काटा है। तुम्हारे भाई ने खून पसीना एक किया है तब जाकर कही आज तुम्हारा परिवार गांव में सब में प्रतिष्ठित बन पाया है। उन सार परिश्रमों को महत्त्व देकर ही तुम्हें कुछ करना है। मजदूरा का अधिक पसा देने का मैं विरुद्ध नहीं पर तुम तो उन्हें पसा अधिक भी दान लग और ऊपर में उठना घटे पहने भी छोड़ने लग। अगर तुम्हें गणित आता है तो गिनकर देख सकते हैं इससे तुम्हें कितना घाटा पड़ता है।

—घाटे की बात सोचने से अधिकार केवल हम ही हैं या गरीब मजदूरों को भी ?

—सभी को है। लेकिन मैं जानूँ कि तुम्हें समझना चाह रहा है उस तुम समझना नहीं चाह रहे हो। मेरे कहने का मतलब केवल इतना ही है कि तुम्हें अधिक परिश्रम की आवश्यकता है और उन्हें अधिक पारिश्रमिक की।

हिठौरी का पेड़ एक टील पर था। फ्रांसिसिया के जमान में इस स्थान पर कोई बहुत ही सुंदर भवन रहा होगा जिसका कुछ अवशेष अब भी खण्डहर के रूप में बाकी था। इस ऊँचाई से काफी दूर तक के दृश्य दिखाई पड़ते थे। लाल मन ने समुद्र की ओर दबा जा नीली चादर की तरह झिलमिलाता सिखाइ पड़ रहा था। दूसरी ओर दूर तक फैले इन्व के हरे भरे खेत थे और उनके पीछे पर्वतमालाएँ थीं। लालमन ने सोचा कि अगर उसका अपना खेत भी ऐसी ही जगह पर हाता तो वह आज की मेहनत से दुगुनी महत्त्व के उस दुगुना उपजाऊ बना देता। सचमुच इधर के खेत समुद्री इलाक़ के खेतों से कहीं अधिक आकर्षक थे। इधर के खेतों में अधिक नवानी थी अधिक लावण्य था। लालमन के लिए इन खेतों में कविताएँ थीं। उमने कल्पना की—शाम की मिठूरी बेला में ये खेत कितने अधिक सुंदर दीखते होंगे। यहाँ से हटने का जी नहीं करेगा। धूप के स्थान पर जब इन खेतों पर बादलों की परछाईयाँ होंगी उस समय इन्हें निरखते हुए मन को गीत और गीतलता दोनों मिल जाती होंगी। उसने धरमन के मजदूरों को काम करत देखा। उस तो वह उन सभी को जानता था पर आज इस कटी धूप में उमने उन सभी की अनलियन को चमकते देखा। उन सभी के माथे की बूँदों के साथ उनकी सक्रियता भी चमक रही थी। इन खेतों की रीतक और छटा का ही कारण था। लालमन का मान मक्ता था कि इन मेहनतकारों को अधिक महत्त्व देकर धरमन ने अतिशयोक्ति कर डाली है। उसकी भाभी ने उस खेतों के लिए अयोग्य बताया था। तब भी लालमन ने भी

तो यही साचा था। वधे पर बंदूक लटकाय अपने शिकारी कुत्ते के साथ नेता को रौंदने जाता प्रच्छा सेतिहर हो सकता है यह बात उसके लिए कुछ असम्भव सी थी मगर इस समय जब धरमेन के चेहरे के रंग को यह नेता के रंगों से मिलात पा रहा था तो उसकी पुरानी धारणा को मिटत दर नहीं लगी। धरमेन उस सेतो का देवता सा लग रहा था अपनी समस्त सुनुमारता के साथ।

जिस समय धरमेन उन च द मिनटा के लिए उस अक्ले छाडकर अपने मजदूरों के बीच पहुंचा उस समय पूर्वी हवा का एक उष्ण झोंका आया जो लालमन के मस्तिष्क के किसी कोने में दबे ज्वालामुखी को मड़का गया। सामने की जिस लडकी को निराई के बाद बमर सीधी करते उसने देखा वह एकदम भामा जसी थी। अकुला देने वाली गरमी में भामा की याद उसकी अनुलाहट को चरम सीमा तक पहुंचा गयी। देखते ही देखते तो सभी कुछ हो गया था। उसने अभी अगड़ाई नहीं ली थी कि भामा की गादी का दिन इतना निकट आ गया था।

आज शाम को उस भामा से मिलना है। उसी के विषय विणय अनुसार यह उसका अन्तिम मिलन होगा पर इससे पहले भी तो उसने ऐसा ही सोचा था। फिर उस अन्तिम भट के बाद भी दो और मुलाकात हा ही गयी थी। हर बार वह खास भवसद ने उससे मिला था पर इस बार के मिलन का क्या उद्देश्य था यह खुद उसे भी नहीं मालूम था। भामा की आँखों में आसूँ दखने की उसकी इच्छा कभी नहीं हुई थी। तो फिर आज वह उससे क्या मिलने वाला था। भगत की बात उसने नहीं मानी थी। उसने कहा था कि जब हृदय पर पत्थर रख ही लिया है तो फिर उस पीडा को सह लेने में ही बुद्धिमानी है। एक तरह से इस अन्तिम घड़ी में अपनी भावुकता के हाथों बिककर भामा से बार बार मिलना उस भी कमजोर बनाना था। पिछली बार जब लालमन ने उसे अपनी बाहों में लेकर सभी कुछ समझाया था तो उसने अपने आँसुओं को भीतर ही रोककर उसकी बातों का मान लिया था। ऐसा करके भामा ने गायद यह भी अनुभव किया हो कि लालमन की आज्ञा को मान लेना भी तो उसका कृतव्य ही ठहरा। एक बार मना कर चुकने के बाद लालमन उससे फिर क्या मिलना चाहता था? अपनी इस बात को खूट भी न समझत हुए वह उधेडबुड में पडा रहा। इस समय भी वह कुछ तय नहीं कर पा रहा था। उस खुद नहीं मालूम था कि आज शाम वह भामा से मिल रहा है या नहीं।

यह बात सुनकर लालमन को आश्चर्य नहीं हुआ कि गाव की एक बठक में धरमेन मजदूरों की यूनियन की नींव डालने की बात साच रहा है। अगर पहली बठक का भवन समय पर मिल गया होता तो नींव बट्टन पहले ही डाल दी गयी होती। बठक का मंत्री मनन दन का तयार हो गया था पर प्रधान के साथ एक दो सदस्या न इस बात का विरोध करते हुए कहा था कि उनसे राजनीतिक नेता को शायद यह बात पता न था इसलिए धरमेन से कही और जगह ढूँढने की माग की गयी थी। गाव में साम्प्रदायिकता के नाम पर कुछ और बठकें थी। अतः एक बठक के सभी सदस्य ऐसे निकले जिन्हें राजनीति का बहुत कम खयाल था।

सूचना पाकर लालमन भी वहाँ पहुँचा। वहाँ पर काँई चार सौ की संख्या देखकर सचमुच उसे हैरत हुई। उसने तो साचा था कि कोई छोटी सी बठक होगी पर मीटिंग का मा आयोजन देखकर बात उसकी समझ में नहीं आयी। भवन में जगह नहीं थी इसलिए प्रायः सभी लोग आगन में इस तरह खड़े थे गोया वे राजनीतिक मीटिंग सुनने आये हैं। साम लोणा को बठान के लिए बरामदे में जगह बनायी गयी थी। एक भज के आस-पास कोई दस बारह कुत्तियाँ रखी हुई थी। धरमेन के आग्रह पर लालमन को भी वहाँ जगह लेनी पड़ी। सामने की भीड़ की ओर दखते हुए लालमन ने साचा गायद ही गाव का कोई मजदूर यहाँ न पहुँचा हो। धरमेन के इस आयोजन पर भी उस कम आश्चर्य नहीं हुआ।

समा का उद्देश्य लागो को बताते हुए धरमेन ने अोजपूर्ण ढंग में यही कहा कि आज देग में मजदूरों की देगा चिन्ताजनक है। खेतों में काम करने वाले मजदूर खून पसीना एक करके जो पाते हैं वह नहीं वे बराबर है। सरकार

घोर तमांगार था। धरम मजदूर का जग गिरा पर क्या तमांगार तो कबल इगलिन कि मजदूरों का बीतमगता की कमा है। धरमारा का मांग पर तमांगार दिया जाता है जवति तमांगार विगध धोर मगता का धार म की जाती है। मगता म सभी पगों त मागा म अधिा परिश्रम करक भी धाज मजदूर पान म भी अधिा करीय है। मगा है मगा क्या ? इम प्रान का तमा गुलभाया जा मगता है जय मगता है। गुलिया मजदूरों की मरग वढी गतिन है। गुलियन पां तन तम मगती है। इम मजदूरों त विग ता कुल गो करता तानन है व; मगी कुल तय है मगता है जय धाप यह ममभ म ति गुलियन ही धारपी पति है। इमार मीर म पान गो मजदूर हैं। इम ताहत है कि मगी को एम गुल म बीधवर उापी हातत का बहार बाल।

यह कहता ही गया। पूर एव घट तर तमांगार बातत रहन व बाद जय य धरमी कुमी पर बढे लगा उम ममय भीड म गता तरह की धाराजें आयी। एत वहा—म तरह व गतिगाली नोत्रवाना की धारश्यकता है धाज हम तो दूगर ने वहा—म धनी लाग धातत कुछ हैं करते कुछ।

तानमन मली भाति जानता था कि धरमन जो कुछ कर रहा है उस उसका माई मिलकुल पसा नही करेगा। इगलिण भीड व हत ही उसने धरमन से पहा प्रश्न दिया जिसता यह मतनय था कि वह सवेना म धाकर जो कुछ कर रहा था उस समभना भी है या नही। धरमन हंसकर रह गया था।

दूगरे ही तिन धरमन स दोयारा मेट हान पर लालमन को पता चला कि उसरा वट जुगव सफल रहा। नीन सी स ऊपरकी सत्यता की धारा बध गयी थी। धरमी बढव म जाति बाधकारिणी समिति की नियुक्ति व लिए हाने वाली थी धरमेन ने लालमन की उपस्थिति को वढन ही महत्त्वपूण बताया। लालमन न मुमकरात हुण पहुच जाने वा बचन द दिया। उसन जय यह जानना चाहा कि धरमन धरमेन यह सब कुछ क्या कर रहा था तो धरमनन बहुत छोटा सा उत्तर दिया—

—आत्मशांति के लिए।

आत्मशांति के लिए तो लालमन को भी कुछ न कुछ करना था पर करे तो क्या ? आत्मशांति की आवश्यकता तो उसे धरमेन से भी अधि थी। यह सोचत हुए एकाएक उसने अपने आपको एक नय तयाल और नय प्रश्न के सामने पाया। धरमन धरमेन को आत्मशांति की आवश्यकता कमे पड गयी ? आत्मशांति की आवश्यकता तो उन लोगो को होनी है जो अस्थिर होते है। धरमेन म किती तरह की अस्थिरता कहीं से आयी ? काफी देर तक सोचते रहने के बाद लालमन का एसा आभास हुआ कि धरमन को धाज भी वट अच्छी तरह नही जान पाया है। उसके सामने वह एव रहस्य था। वट अपने धाप से धार

वार प्रश्न करता रहा और वार वार धरमेन उस एक रहस्य ही प्रतीत होता रहा । सयोग स धरमेन उमका मित्र बन बटा था बहुत कम समय म बहुत ही घनिष्ठ । उसी घनिष्ठता की हैमियत स लालमन यह जानन को अपन को बसत्र सा पान लगा कि आखिर धरमेन क जीवन का वह रहस्य क्या है ? उसक मुह स आत्मगाति की बात सुनकर न जाने क्या लालमन को विश्वास हा चला था कि उस व्यक्ति क भीतर कान् न कोई ऐसी बात अवश्य है जिस वह सभी स छिपाता आ रहा है । एकाएक उसका कॉलेज छोडकर खेता म लग जाना और अपन परिवार क विरुद्ध जात हुए अपन आपका मजदूरा क पथ म मिला दना किसी साधारण बात का परिणाम नहीं हा मरता ।

लालमन के खेन म सजिया तोडी जा रही थी । देवती की बगल के पीधा से लीगिया मित्र ताडत हुए लालमन मन ही मन गद से गद को जोड रहा था । देवती की दायाँ ओर जगदीग था । दोना किसी नई फिल्म पर बातें किय जा रह थ । जगदीग अपनी नयी दखी फिल्म की कहानी देवती को सुना रहा था और देवती जहा नहीं समझती वहा प्रश्न करती जाती और जगदीग बात को विस्तार से समझाने लग जाना । लालमन क भीतर की कविता आज दूसरे ही ढग की थी । पहल भी मामा क मम्मुख वह दस तरह की कविताएँ सुना चुका थापर एसी रचनाआ का लिपिवद्ध करने की आवश्यकता उमन कभी नहीं समझी । इस वक्त भी वह अपनी नयी कविता को गुनगुनाकर हवा के हवाले कर देना चाहता था । उसन मुह स पकितया निकलती जाती और हवा उँह लिय सागर की ओर उची चली जा रही थी ।

जीवन क उन मून-मून क्षणा म
 रिमा के पगा की आवाज सुन मैंन
 दखा था और पाया था एक प्ररणा को
 जीवन को हँसकर जी लेन का
 साहस दागुना हा चला था
 आज घटकनें पूत्रे जा रही मुझ स
 कय यहाँ आया कय चली गयी ।
 समुन की वाली चट्टाना स
 टरकर फनिन लहरें कय आया
 और कब अस्तित्वहीन हो चरीं ।
 पूना को जब ढाली स जुटा हाना ही है
 तो फिर वह पूनना क्या ?
 क्याकि पूना की जुलाई पर ही

शानी पर पत घा । १ या दग्गिण ?

सातमा क ि माग म उगत हृत्प क िमी घना १ पान म घोर भी माव थ घाभूनि थी पर घनी ंग कविना को दभी प्रतिम थाप क साथ समाप्त कर द्या उग अधिा घ-छा प्रतीत हुआ । प्रतिम दो पत्रिया को वह बार बार दोहराता रहा । हुना उ ट लिय र्पा चम का मागती गयी ।

इपर कुछ िना स उस घपत गत की हरियाली भूमिज सी लगन लगी थी । वर्षा भी इपर कुछ िना स घमी हुई थी । वात्त रात्र छात घोर रोज वर्षा की सम्भावना हा ि फिर भी ह्वा उन पान वात्ला क । उडारर समुद्र तक छात् घाती । सभी ऐतिहर सलचाई नजरा स समुद्र म वर्षा हात दग्गत रहत । साग भगवान को मासन लग जात । उस भी न जान क्या सूभना है ि पानी म पाना बरसाता रहता इ जवनि धरती प्यासी पनी हुई है । कुए क पाना स पार पाना सभी सनिहरा क लिए दु-वार था फिर भी मुबह गाम जहाँ तक सिचाई हा सकती थी व करत रहत थ । लालमन का कुप्रा भी जिसम हमगा स सभी कुप्रा स अधि क पाना पाया जाता था इस बार जवार द चुका था । तालमन का सभी किसाना स अधि क बि-मासथा कि च-द ही िना म मूसलाधार वर्षा होकर रहेगी । उस अगर िसी बात का डर था ता अपन लीगिया मिच क पीधा क सूख जाने का क्योकि इस समय वही एक चीज थी जा उसक खत म सभी खतो स अधि क था और जिसकी कीमत भी बाजार म चार पांच रुपय थी । जब भी टमाटर की कीमत सभी स जया स अधि क गिर जाती है उस समय मिच की कीमत का ऊपर उठ जाना हमगा स्वभाविक रहा है । इस समय मिच क पीधे उसक खेत क प्राण थ । उस तीती चरपरी चीज म उसक परिश्रम का सभी माधुय छिपा हुआ था ।

बहुत दिन नही हुए उस दिन जब भामा अपनी मुसकान स इस खत की सु दरता को बढ़ा रही थी । उस मौक पर लालमन की महत्वाकाक्षा भीतर ही भीतर विद्रोह कर उठी थी । पास म एक जमीन बिनाऊ थी । उसने उस भी खरीदकर अपने खत स जाड लन की बात सोची थी । ठीक रगल ही म था वह खत । उसकी मिट्टी भी इसी खत की तरह घनी थी । वहा की उपज भी अपनी सानी नही रखती थी । लालमन उस जमीन का खरीदकर ही रहता पर बीच म जब प्रभा की गादी की बात चल पडी उस समय उसने यही ठीक समझा था कि पहल प्रभा का विवाह हो जाय फिर तो जहा भी चाह जमीन खरीदा जा सकती है । उस समय अगर जमीन खरीदन की बात उसक भीतर उधम मचा रही थी तो कवल इस लिए ि उसने अपनी वगल म भामा को पाया था । भामा को उसने अपनी नक्ति के रूप म माना था । सोचा था उसक नय खत की वह जान होगी । उसकी उपज और हरियाली की वह दवी होगी । उसने भामा क काना म यह बात वह भी डाली थी । उस दिन भगत क घर भामा न अपने अंगुआ के बीच उसस पूछा

था कि क्या अब वह उम्र अपने खत की जान नहीं मानता ? लालमन की चुप्पी पर उसने कहा था कि अगर अब भी मानत तो मेरी शादी खवाकर मुझे अपनी बनाने में कुछ भी बाकी नहीं छोड़त। लालमन ने उन शब्दों को मुनकर उन्हें अपने ही भीतर दफना दिया था। भामा को उस बात से उसका समूचा अस्तित्व काप उठा था। उसने भामा को अपने जाने के लिए सचमुच ही कुछ न किया था यह बात सही नहीं हो सकती। उसने बहुत कुछ किया पर किसी भी उपाय से वान बनत नजर नहीं आयो और उसने अपने जीवन में पहली बार अपने को भाग्य के सहारे छोड़ दना ही ठीक समझा था।

अपनी आर से भगत ने भी सभी कुछ किया था जिससे भामा का वाप मान जाए पर जब उसने उसे अपने हठ पर अड़े दखा तो वह भी ताव में आकर कह ही गया था कि गंगा उलटी वह निकली है। लालमन को धय दत हुए उसने कहा था कि वह अपने भाग्य को सराहे नीच जाति वाना के बीच जाने से बच गया। लालमन को धनुवा भगत की इस वान से धय से अधिक दुख हुआ था।

खेत से लौटते हुए लालमन की भट धनश्याम से हो गयी। उसी ने बताया कि धरमन उससे मिलना चाहता है। धनश्याम किसी काम से वही जा रहा था पर लालमन के विवश करने पर वह भी उसके साथ धरमेन के घर की आर चल पडा। रास्ते में वे धरमेन और उसकी यूनियन की चचा करते हुए चले। धनश्याम की नजरो में वह धरमेन का पागलपन था। यूनियन की आवश्यकता वह महसूस करता था मगर धरमेन के द्वारा यह काम सपन रहे इस पर उम जरा भी विश्वास नहीं था। धरमेन में योग्यता है, लालमन के साथ तक करत हुए उसने कहा लैफिन वह धनवान ठहरा और धनवान गरीबों का साथी बनकर धनिया के साथ युद्ध छेड़ दे यह वान स्पष्ट नहीं थी। लालमन ने उस कुछ ऐसी बातें बताई जहां धनी ने गरीब का भगवान बनकर धनिया के विरुद्ध आवाज बुलंद की है युद्ध किया है और मफल भी हुआ है। धनश्याम के लिए ऐसा करने वालों में त्याग की भावना नेतागिरी की बातों से अधिक होनी चाहिए जबकि धरमेन जो कुछ कर रहा था मात्र नेतागिरी के खयाल में कर रहा था। लालमन को धनश्याम की इस बात पर विश्वास नहीं था। उसने यही सोचा कि धनश्याम सरकारी आदमी ठहरा और सरकारी आदमी गायद क्रांति और आंदोलन जसी वान पसंद न करते हैं।

धरमेन के घर तक पहुँचते पहुँचते वातावरण धूमिल पड़न लगा था। चीनी दूकानों के बरामदे में बठ लात राजनीतिक वाता में लग हुए थे। आमन सामन की दोनों शराव की दूकानों में चहल पहल शुरू हो गयी थी। वालीमाई के नीम के पेड़ के नाच से गाजे की गंध आर धम की चर्चा भी पूरी रफ्तार के साथ चल पड़ी थी। पास की हिन्दी पाठशाला से बच्चे हटलड करत हुए लौट रहे

थे। उनका कोनाहल को घोर भी मारी बनाया व लिंग गुप्त भी उनका साथ भावाञ्ज मिलाय भौंरने लग था।

दाना व्यक्ति धरमन एक मिनट दर स पहुचत ता उनको मट धरमन स नहा हो पाती क्याकि वह घर स बाहर भाकर अपनी माटर म सवार हाने ही वाला था कि दोनो भात नियाई पडे। दाना को साथ लिंग वह घर क भीतर पहुचा। अनुमान स सालमन ने जिस वान को सोचा था वही हुई। धरमन यह चाहता था कि वह इस भादोलन म सत्रिय भाग ल। उसने लालमन क सामने युनियन का कोपाध्यक्ष बनने का प्रस्ताव रखा। उसन उस यह भी बताया कि सभी औपचारिक बातें धीरे धीरे सफनतापूर्वक पूरी हा रही हैं। सरकारी बातचीत भी काफी सफल रही। वह यह चाहता था कि कायकारिणी कमेटी की नियुक्ति के लिए होने वाली बैठक स पहल ही एक वार सभी कुछ तय हो जाना चाहिए। धरमन की हर बात स सहमत हात हुए भी उसन केवल इतना कहा कि इस भादोलन म वह सत्रिय भाग लगा। यथायोग्य वह सभी कुछ करणा और इसक लिए यह जरूरी नही था कि उस कापाध्यक्ष या किसी तरह का पत्र निया जाये।

धरमन के वार वार कहन पर भी जज वह तयार नही हुआ तो धरमन ने उसस यह अनुरोध किया कि चाह वह कायकारिणी का सदस्य न रह फिर भी पहली बैठक म उसका आना जरूरी था। जब लालमन न यह बात मान ली तो धरमन ने उसे वह सूची बताई जिसम कुछ ऐसे लोगो क नाम थे जिहे कायकारिणी के पद सौंपने क इरादे थे। उस सूची मे कोइ भी ऐसा नाम नही था जिसे लालमन शयोग्य समझता। खुगी खुगी अपनी सहमति दत हुए उसने एक वार फिर धरमन का विश्वास दिलाया कि वह उसको अपना पूरा पूरा सहयोग दता रहेगा।

लालमन और घनश्याम घर से बाहर होने ही वाने थे कि धरमन की भाभी ने दोना को रोककर कहा कि वे धरमन को इस गरात रास्ते पर जाने से रोकत क्या नही। इस पर घनश्याम ने तो बहुत कुछ कहा लकिन लालमन ने केवल इतना कहा कि वे लोग निश्चित रहे क्योकि धरमन गलत रास्ते पर नही है।

सूरज की प्रथम किरणें जब गर्माती दुल्हन की तरह पत्तो के घघट से आँख भिचौनी खेलने लगी थी और हरी दब से ओस बूँदें सूखी जा रही थी उस समय खेतों के काम पराकाष्ठा पर पहुँच चुके थे। धरमेन अपने स्थान से उठकर आगे बढ़ा। काम करने वाली औरता के बीच से होते हुए वह मर्दों के पास पहुँचा और वहाँ से होते हुए उस ऊँचाई को चढ़ने लगा जहाँ से उसका पूरा गाँव दिखाई पड़ता है। ऊपर काली चट्टानों के बीच मुहता के बरगद के पेड़ की छाया में बैठकर वह कुछ एस खयाला में खो गया जिनमें न खोन की उसने एक तरह से सौगंध सी खापी थी। गरमी यहाँ भी थी। ऊँचाई चढ़ते चढ़ते उसके चेहर पर पसीने की बूँदें चमकने लगी थी। सूरज आज शुरू से ही समुद्री के साथ पेश आ रहा था। बारह बजते बजते न जाने किस तरह की उष्णता होगी।

रह रहकर पूर्वी हवा के एक दो भौंके मरहम का काम कर जाते पर इससे भी उसके खयालों की गरम कड़ियाँ टूट नहीं पाती। गरमी से भ्रुकुलाकर ईश्वर के पौध घुटना से ऊपर आ गये थे पर इधर के लम्बे मूँदों से वे कुम्हलाये से लग रहे थे। अपने आँदोलन की सफलता के उल्लास के पार्श्व में धरमेन कुछ और ही महसूस करने लगा था। उसने तो प्रण कर लिया था कि उस और अपने ध्यान को कभी नहीं ले जायगा लेकिन उस बात का जो एक बड़ी सच्चाई थी वह बिसार देना चाहता था। उससे अनभिज्ञ हो जाना कठिन था। न जाने कस वह बात अपने आप उसके सामने आ जानी और वह हतप्रभ-सा हो जाता।

लालमन को याद था उसने उस विसरी हुई बात को सामने लाकर रख दिया था। कल गिठौरी के पेड़ की छाया में लालमन ने उससे कोई प्रश्न किया था। वह धरमेन के जीवन का कोई रहस्य जानना चाहता था। उसके उस प्रश्न से धरमेन को अचम्भा हुआ था फिर भी उसने हँसकर बात टाल दी थी। बहुत

पहल भी कई बार उरावे मन म यह बात ग्रन्थी भी कि किसी न किसी को बात बता दना अच्छा होगा मगर उम किसी न किसी का न निकालना उसन लिए बठिन था । विश्वास की बमी उस किसी पर नही थी । वह तो अजनबी पर भी उतना ही भरोसा करता जितना कि घनिष्ठा पर । मगर जब सवाल होता इस रहस्य को किसी के ऊपर सौंपना तब वह अजीब दुविधा म पड जाता था । लालमन क प्रश्न करन पर मन म आया था कि उस वह बात कह ही द । बाकी समय तब अपन आपस सघप करव भी वह उस बात नही कह पाया था । लालमन क चले जाने पर उस अपन स्वभाव पर पछतावा हुआ । उस समय लालमन तब दौड जान की बात पता हुई थी उसक भीतर पर तभी खयाल आया था कि अपना बोझ किसी दूसरं पर क्या रखा जाय और फिर वह उस बोझ स दवा हुआ थोडे ही था । बोझ तो जित्नी भर का था और जब तक जिन्दगी चलती है बोझ को फरकर चलना तो मर जाने स भी बन्तर है ।

मजदूरो के शरीर स पसीने की धाराएँ बही जा रही थी ।

धरमेन अपनी यूनियन के बारे म सोचन लगा । वह चल पडा था । उसके सामने एक अवधि थी—छह महीन की छोटा सी अवधि । यह एक दायरा था जिसके भीतर धरमेन बंद था । उसके अपने जीवन की यही एक बात थी जिस कोई दूसरा नही जानता था । इन छह महीनो के भीतर उसे अपने आन्दोलन मे सफल होना था । इस सफलता के बाद जो कुछ भी होना था वह हो सकता था इसकी उसे कम परवाह थी । इस अवधि म यूनियन को अपनी शक्ति परख लेनी है । पहल ही प्रयास म यह साफ जाहिर हो जाना चाहिए कि सरकार और जमींदार मजदूर की शक्ति को महत्व देते हैं या नही । कुछ ही दिन हुए शहर के मजदूराने हडताल की थी पर वह हडताल असफल थी । पत्रो न उसे फियारको कहा था । उसने असफल रह जाने का कारण धरमेन अच्छी तरह जानना था । यूनियन के नेताओ न जिस बात पर ध्यान नही दिया था वह था मजदूरो के बीच फला टर । हडताल स पहले उस भय को निकाल फकना जरूरी था । धरमेन को विश्वास था कि वह बहुत जल्द ही गाँव के मजदूरो के बीच से भय की जड को उखाड फेंकेगा क्योंकि जब तक ऐसा नही होता वह जमींदार और सरकार को हडताल की सूचना नही दे सकता ।

वह बलदेव का छोटा भाई था जो धरमेन को आवाज देता हुआ चला आ रहा था । उसे देखकर धरमेन को यह समझत देर न लगी कि कोई असाधारण घटना घट गयी होगी । वह भी जल्नी जल्नी नीच उतरा । बलदेव क छोटे भाई क पास पहुचकर उसने पूछा—

—क्या बात है ?

—दोना भगड रहे हैं—हाफत हुए उसने कहा ।

—फिर से ?

—हां, इस बार बलदेव भया एकदम आपे से बाहर हैं ।

—चनो देखत ह ।

दोना इमली के पेड़ की छार दौड़ पड़ जहाँ कुछ मजदूर ईव म नमन डाल रहे थे । बलदेव और रामजनन का यन् भ्रमण सप्ताह पहन से शुरू हुआ है । हर बार कोई न कोई बीच में आकर दोना को अलग कर देता था । आज सुबह दोना के बीच खुद धरमेन को आ जाना पड़ा था । भगडे का कारण पूछने पर उस बताया गया था कि बलदेव पनपन पर रामजनन की पनी स बातें किया करता है । इधर कुछ दिना स रामजनन उस गमकियाँ भेता आ रहा है । अब तक तो दोनो के बीच क्वल माली गलौज होती रही थी पर आज हायापाई भी हो गयी । जिस समय धरमेन दोनो के पास पहुँचा उस समय दो तरफ स लोग दोना को पनपे हुए थे पर दोना और स मालिदा और उमकिया जारी थी । धरमेन पर नजर पडन ही दोना इस तरह चुप हा गय गाया उनका रोहने के लिए स्त्रीच आफ कर दिया गया हो । बारी-बारी स दोना को समभाकर उमने उह अलग अलग कामा मे लगा दिया । उनमे अलग जाते हुए उसने समी मजदूरा को सुनाने के लिए उँवे स्वर म कहा—

—मैं मजदूरो म सगठन चाहता हूँ और तुम लोग छोटी मोटी वाता के लिए आपस मे भगडकर एक दूसरे के दुश्मन बन रहे हो ।

टीले पर पहुँचकर वह फिर स अपने खयालो म खो गया । कुछ ही देर बाद उमने दोबारा भगडे की आवाज सुनी । तुरत अपने स्थान से उठकर नीचे को उतरने लगा । पर इस बार शायद देर हो गयी थी । उसके पहुँचते पहुँचते वह हा चका था जिसे नही होना चाहिए था । रामजनन वनदेव पर पथर चला चुका था । वनदेव का मिरपन गया था खून की धारा बहने लगी थी । एरुक्षण के लिए धरमेन स्तन्न रहा । दूसरे ही क्षण अपने कोम्हानन हुए वह बलदेव के शरीर पर झुक गया । मुडेर के सहारे उमे लिटाया गया । यह देखकर कि चीट गहरी थी उसन तुरत आदेश के स्वर म कहा—

—तुम समी यही ठहरो मैं मोटर लेकर आता हू ।

वह घर की ओर दौट पडा जा कि आधा भील की दूरी स कम नही था और आधा घटे से कम समय मे वह घननी मोटर के साथ घटनास्थल पर वापस आ गया । जिस समय कुछ लोगो ने मिनरर बचदेव को मोटर म लिटा दिया, उस समय समी के बीच रामजनन को दूनन हुए उमन पूछा —

—कहाँ है रामजनन ?

—घर भाग गया ।

—घर मामना पुलिस तक न जान पाय । लौटने पर भेया जायेगा ।

माटर स्टाट करने से पहले उसने एक बार फिर सामने व समी मजदूरों की ओर देखा और उलाहना भरे स्वर में उसने कहा—

—तुम में से कुछ लोग न यह ठीक है ता कहा था कि मैं असम्भव काम करने का सपना देख रहा हूँ। जमींदार होकर जमींदारी व विलास जाना पागलपन नहीं तो और क्या? मैंने उस दिन भी कहा था और आज भी कहता हूँ कि जमींदारी के खिलाफ जान व लिए एक जमींदारी खन की ही आवश्यकता है। परम्परा पर कम विश्वास करते हुए भी मैं इस बात का मानता हूँ। लेकिन जिस बात को मैं सबसे अधिक महत्व देता हूँ वह है मजदूरों व बीच सगठन, जिसके बिना कुछ भी नहीं हो सकता। आज जब मेरे अपने लोग इस तरह आपस में झगड़ने लग जायें तो फिर औरों पर क्या विश्वास किया जा सकता है?

और अपने साथ दो व्यक्तियों का लेकर उसने मोटर को अस्पताल की ओर दौड़ा दिया। रास्ते में अपनी आंगणियों को मोटर में बठ दोना व्यक्तियों का सामान रखते हुए उसने कहा—

—मुझे डर है कि कभी बलदेव के पक्ष वाले रामजनन का घर धरन बर्से।

—तुम निश्चित रहो बटा हम समी का समझा चुके हैं—नात में धरमन का चाना लगने वाले उस शक्ति न कहा जो उसका बाप का समय से इन सनो में काम करता चला आ रहा है। मजदूरों में वही सब में वृत्त था और उसी का धरमन समी मजदूरों से अधिक महत्व देता था।

अस्पताल पहुंचने पर मातूम हुआ कि बलदेव का घाव जिनना गहरा दीवता था उतना गहरा न था। सूई दवाई और मरहमपट्टी के बाद उसे लिए धरमन घर लौटा। बलदेव के घरवालों के जी में भी आया। उसकी बूझी मा सरम पहले दौड़कर उससे लिपट गयी थी। बलदेव की भापटी में कुछ अर्थ मजदूरों के साथ घरे भर रहने का वाद धरमन अपने घर लौगा। मामी से मातूम हुआ कि उसका भाई उससे बर्से करना चाहता है। धरमन को आश्चर्य तो नहीं हुआ क्योंकि वह जानता था कि उसका भाई उसका युधिष्यन व आशुष्यन का वारे में बर्से करना चाह कर भी नहीं कर पा रहा था। एक बिरला अवसर था यह कि धरमन अपने भाई के कमरे में पहुंचा और उसका भाद उमम प्रदना की बौछार कर उठा—

—तुम करना क्या चाहते हो धरमन? वपों की कमाई को च ७ दिना में सुदान का तुम्हारा इरादा दानना पकसा क्या है? तुम अपने जस लोग का साथ न रहकर अपने नौकरों का साथ क्या रहते हो? क्या कमीलिंग कॉलेज का पन्ना छोड़ी थी?

और भी कई प्रश्न किए उमन। धरमन उन सनो प्रश्नों के उत्तर देता

रहा। टीक सामन उमकी भाभी लडी थी। उमकी उन गहरी आवा म भी ये ही सार प्रन थ। धरमन के भाई क चुप हान ही उमकी भाभी न मृदु स्वर म कहा—

—तुम उम दिन अधिकार की रक्षा की बात कर रहे थे लेकिन तुम ता हमरा क अधिकार की रक्षा करत हुए अपने अधिकार को मिटाया जा रह हो।

धरमा चुप रहा। उमकी उस चुप्पी से स्वीकते हुए उसके भाई न कहा—

—सून-पमीना एक करके हमारे पूवज हमारे लिए कुछ छोड गये हैं।

पूवजा की इम घाती कों तुम वर्तन करन पर तुने हुए हा। जानते हो गाव के लोग तुम्हें पागल कहते लग हैं ? क्या तुम इतना भी नही समभन कि मजदूरो को तुम अपन ही खिलाफ भडका रहे हा ? तुम उ ट अपन ही घर म आग लगाने का आदग द रह हा।

अपने भाई से धरमेन न कभी भी तक नही बिया था। इम समय भी तक करना उचिन न समभ वह चुपचाप सुनता रहा। हमरे कमरे मे भुनी जागतर रान लगी थी। धरमेन की भाभी उम गोन लन क लिए बहा से चली गयी। अपने भाई के सामन अनेले हाकर धरमेन ने अपन का और भी कमजोर पाया भाई भाई का इम तरन जीना शायद ही किसी घर म होना होगा। धरमेन समभना चाहतर भी इस बात का कभी नही समभ पाता। दोनो भाइयो के बीच बिना किसी कारण की कोई दीवार भी थी। वह भाभी ही थी जो दोना के बीच माध्यम का काम करती। धरमन की मा इस बात के लिए कई बार अपने बडे बेटे स शिकायत कर चुपी थी। तुम बडे से वह कहती तुम उससे इम तरह दूर दूर रहोगे तो वह तुम्हारे पास आन का साहम कस कर सकेगा ? लेकिन जो शान्त दोना भाइया क बीच बहुत ही छाटी उम्र स पड गयी थी उससे बाज आना दोना के लिए बठिन था।

धरमन का भाई नम उद्देश्य स बहुत कुड कहता रहा कि वह अपने भाई का उसकी नादानी मे रोक ल। वह उसे आ ग भी दे सता था पर एमा करना उमक लिए दुश्नार था। आज वह यह माचन का विवश है कि यह एक अजीब पर रहा है, यहा कभी भी किसी न किसी को आगे नने की हिम्मत ही नही की। उमका बाप हमशा यहां कहा करता था कि जो काम अनुरोध और आप्रह से करवाया जा सकता है वह राव स कभी भी नही पूरा हो सकता। वह उस जमाने की बात थी। इम जमान म यह बात उस बेबुनियाद सी लगती पर परम्परागत बात को तोडन का माहस उसम नही था।

अपन भाई के कमरे म निकलतर धरमेन अपने कमरे म पहुँचा। लिडकी क परना को हटानर उमन कमर क घुघेपा को दूर बिया। अके तेपन की तनहाई को दूर करन क लिए उसने टेप रिवाडर क मिच का आन कर लिया। उमने हमेगा स पाँप मगीन पमन किया था इमनिण उसकी गभी टेपो म पाँप सगीत

बार उमड़त बादलो की ओर देख लेता था ।

समुद्र किनारे पहुँचत पहुँचत सूरज जो कि अभी थितिज मे काफी ऊपर था काली उदली मे एकदम छिप चुका था । यह मान लेना कि इस बार भी बादल फट जायेंगे और वर्षा नहीं हागी सालमन के लिए जरा बठिन था । बादला की अधिक घन और वातावरण से अधिक साबला होत देस उमकी गुणी बढ़ती ही जा रही थी । वषा एकाएक वज्र गुरू हा जाय इस बात का पता किसी को नहीं था फिर भी मीगने का डर दानो मे स किसी को नहीं था । बालू पर चलत हुए लालमन ने कहा —तुमने ता अभी तर बात गुफ भी नहीं की ।

बुछ बदम या ही चुप चलन रहने के बात धरमेन बोला —

—यूनियन की जिम्मेदारी तुम्ह अपने उपर लेनी होगी ।

—कोई नइ बात कहा होनी ।

—इम मजारा मे न ला, सालमन । यूनियन की जिम्मेदारी बवल तुम्ही निभा सकागे, मुक्त तो चारा ओर नजर दौडाने पर भी कोई दूसरा नजर नहीं आता ।

—तुम पागल तो नहीं हो गये ?

—तुम्हारी इनकारी के बाद गायद हो जाऊ ।

—तुमन भावुकता मे यह काम आरम्भ किया था धरमेन !

—नहीं ! मैंने जो कुछ किया है अच्छी तरह सोच समझकर किया है । तुम्हें जिम्मेदारी सभालने की बात भी साच समझकर ही कर रहा हूँ । यह मत बट्टना कि तुम्ह अग्रेजी फच नहीं आती है इसलिए तुम उसके लिए अयोग्य हो ।

—बात तो सच है न ?

—नहीं बात सच नहीं है । इम आदोलन को आग बढाने के लिए मापा के जान से अधिक जगन और श्रद्धा की आवश्यकता है ।

एक क्षण चुप रहकर धरमेन ने करण स्वर मे कहा—

—जिस बात से अब तक सभी स छिपाता आया हूँ उम तुम्हारे सामने कह देना ही उचित है । तुमने उस दिन मुझसे कई प्रश्न किये थे और मैंने एक का भी उत्तर नहीं दिया था पर आज उस सच्चाई को तुम्हारे सामने रखने जा रहा हूँ लालमन जिसे जानने का तुम बहुत अधिक इच्छुक थे ।

धरमेन अभी चुप भी नहीं हुआ था कि वषा एकाएक गुरू हो गयी ।

बहुत सारी आशाएँ थीं। मैं भी सब मानकर वह उमर पर विश्वास करने को तैयार था। लेकिन यह बात जिन उमर के मित्रों के पास मुझसे उमर पर विश्वास कर जाता उमर बढ़ा गठित प्रतीत हो रहा था। हमारा सब सही पर इपर कुछ शिवा स धरमेन को दगन हुए उस यह आभास प्रकृत हुआ था कि उसके भीतर कोई न कोई बात अवश्य छिपी हुई थी। यह बात इतना बड़ी हो सकती थी इसकी कल्पना उमर कभी भी नहीं की थी। धर भी सरलतापूर्वक उमर रहस्योदघाटन पर विश्वास कर रहा उससे नहीं हो रहा था। उस इस बात पर भी आशाएँ सब विश्वास नहीं हो रहा था कि धरमेन के अनुरोध को मानकर वह उसे यूनिवर्स की जिम्मेदारी सम्भालन का वचन भी दे चुका था। सभी कुछ अपने आप हो गया प्रतीत हो रहा था। धरमेन की बातें धर भी उसका काना में गूँज रही थी—

—यह बात आज तक मैंने किसी से नहीं कही। लालमन इस डर से नहीं कि लोगो को मुझसे घणा हो जाय या वे मुझ पर तरस खान लग जाय बल्कि केवल इसलिए कि मैं चाहता किसी को दुखी करना नहीं चाहता। दो महीने होने का है जब पहली बार डाक्टर ने मुझे यह कहा था कि मेरा बेस उलझा हुआ बेस है। एक दिन मैंने डॉक्टर को सच्चाई कह देने में विवश कर दिया था और वह सच्चाई यही है कि मुझे बचाना मडिकल साइंस के बस की बात नहीं है।

धरमेन के कहने पर लालमन ने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा था। आग सी गरमी थी उसके शरीर में। धरमेन ने बताया था कि कुछ डाक्टर इसे हाट स्क्रीन डिजीज बताते हैं कुछ का कहना है कि यह कारसिनोमाटोजिस है— एक प्रकार का कैंसर। उसने गरदन पर की गिल्टिया के बारे में बताया हुए

कहा था कि पिछली चार कर्म्पग का वहाना करके वह दो सप्ताह के लिए विराम रह चुका था। गिल्टियो का आपरेशन करके भी बीमारी की जड़ को बाहर निकालना असम्भव रहा।—एक रहस्यमय मुसकान के साथ धरमेन ने कहा था—

—जब से डॉक्टर ने यह कहा है कि मैं छह महीने से अधिक नहीं जी सकूंगा तब से दो महीने गुजर चुके, अब और चार महीने गुजारते हैं।

—तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है, धरमेन। डाक्टर भगवान थोड़े ही होते हैं।

धरमेन के हाँठा की वह कठिन मुसकान बनी रह गयी थी। उसी के बीच उसने आगे कहा था—

—यह विश्वास तो अपने को भी नहीं होता कि इतनी जल्दी मैं मर सकता हूँ और दम बात का भी विश्वास नहीं है मुझे कि सचमुच ही डॉक्टर की यह बात झूठी हो सकती है। इस समय मुझे चारपाई पर होना चाहिए था पर अगर मैं चारपाई पर नहीं हूँ तो इससे यह स्पष्ट है कि मुझे डाक्टर की बात पर विश्वास हो चला है। जब मरना ही है तो चारपाई पर क्यों मरा जाय ?

लालमन ने उसका आँखा में दृष्टि देखा था। उसका शरीर के ज्वर को वह महसूस करने लगा था। वे दोनों सन के पत्ता से छड़ी मड़ई में थे। वषा होड लगाये हुए थी। देव ती और जगदीश पटोस के संत की मड़ई में जा छिपे थे जोकि उनके यहाँ से अधिक निकट थी।

धरमेन अगर मजाकिया होता तो लालमन को उसकी बात पर कभी भी विराम नहीं होता पर चूँकि वह गिरला ही मजाक करने वाला था इसलिए अंत में लालमन को बात माननी ही पड़ी। उस समय उसने चाहा था कि वह उससे लिपट जाये और उसकी पीठ पर आखें किये वह जी भरकर रो ले। वे दोनों ने बाता के लिए वह जाती पर बात यह थी कि उसकी पलकों के साथ आसू को भी लकवा मार गया था। सभी बाता का विश्वास करत हुए भी वह डॉक्टर की भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। पूरी मजबूती के साथ अपने का समभाते हुए उसने कहा कि यह असम्भव है धरमेन का जीवन इतना छल्प नहीं हो सकता। यह कहते हुए तो धरमेन ने उस और भी हताश कर दिया था कि उसे तो छह महीने की अवधि मिली है। दो तो बीत चुके। इन बाकी चार महीने के भीतर न जाने कब अकस्मात् ही उसका शरीर गब में परिवर्तित हो जाय। अपनी अज्ञानक मृत्यु का खयाल करते हुए ही उसने यूनिवर्स की बात छेनी थी। कोई पन्द्रह मिनट के तर्कों के बाद लालमन उसकी हर बात मानने को तैयार हो गया था।

पूरे दो घंटे बाद वर्षा धम पायी थी। घर लौटकर जब लालमन ने प्रभा

स वहाँ था कि आज उस भूख नहीं उस समय प्रभा ने भी खान स इनकार कर दिया था और उसके भाई का विवाह खान पर बठना पड़ा था। याली म उसकी मनपसन्द चीजें थी पर न जान क्या वह लालच म या न सका। ठीक सामने प्रभा बठी उम घूर रही थी जिसस त्रिना खाय उठ जाना भी उसके लिए दुश्वार था। किसी तरह कुछ और निगलन क बाद वह पीढा छोड़कर उठा और गिलास का पानी लिय पिडरी की ओर वत् गया। उसी की धाली म कुछ भात और तरकारियाँ रखकर प्रभा उसी पीढ पर बठ गयी। लालमन अपना मुह कमीज क छार स पाछत हुए भीतर आया और गिलास का कान म रखकर रसोई से बाहर हो गया।

अपने कमरे म पहुचकर वह खुली पिडकी के पास जा खड़ा हुआ। बाहर घटाटोप अधरा था। आनाग से तारे ओभन थ। वातावरण इस बात का बाधक था कि वर्षा फिर एकाएक गुरू हो सकती है। अगर उस धरमेन की कहानी सुनन का न मिली हाती तो इस समय वह बहुत ही अधिक खुशी म होना। खपन खेत क सिवाय वह किसी भी दमरे विषय पर सोच ही नहीं सकता था। वह अपने सन्धिवा क उन पीन पावा के बारे म सोचता जिनका पीलापन वर्षा स धुल गया हागा। हल्की लगा दूल्हा स्नान के बाद जितना सुन्दर लगता है उतना ही सुन्दर उसना खेत लयेगा। वह सुबह की प्रतीक्षा म बताव हो जाता। सुबह की किरणों म अपने नये खेत का नय लावण्य म देखन की उसकी बेताजी बढ जाती लकिन इस समय धरमेन का खयाल कुछ इतना अधिक गहरा था उसके भीतर कि खपन खेत को भूल जाना भी उसके लिए स्वभाविक था। जिस खेत को मामा के विवाह म भूलना भी उससे नहीं हुआ वही धरमेन क वार म साबत हुए पीछे छूट चुका था।

उस समय भी वह धरमेन के वार म सोच रहा था जब प्रभा भीतर पहुच कर उसकी चारपाई पर की चादर को हटाकर उस पर दूसरी चादर बिछाने लगी। बिछान के बाद वह लालमन के पास प्रा गयी। लालमन खिडकी से हटकर मज क पास वाली लकड़ी की कुर्सी पर बठा हुआ था। उसकी तद्रा को तोडते हुए प्रभा ने बहुत ही धीमे स्वर म कहा—

—स्त्री-सभा स सभी लाग परीतालाव जा रही हैं।

अनचाहे से लालमन न पूछा—

—चलकर या बस द्वारा ?

—चलकर। मैं भी जाना चाहती हूँ। पिताजी कहत है तुमस पूछन की।

—इतनी दूर तुम चल सकती हो ? तीन दिन घर स बाहर रहना पडेगा।

—मुझे भी छोटी लकड़ियाँ जा रही हैं। कुछ न ता कावर भी तयार कर

—अगर तुम सभी बुरा न मानो तो मैं तुम्हें तुम्हारी बेकारी का कारण बताना चाहूंगा ।

—पर धरमन भया हम तो इससे बचन का उपाय पूछने आये हैं ।

—कारण जान लेने पर तुम्हें उपाय अपन आप मिल जायेंगे ।

—ता फिर कारण सुनें ।

—तुम सभी पर एक धुन सवार है जिस मैं तो अपनी भाषा में सनक कहूंगा । तुम लोग अपने आप कुछ भी न करके यह चाह रहे हो कि कोई तुम्हारे लिए कुछ करे । तुम सभी सरकारी नौकरी के पीछे पागल हो । जिस दिन तुम यह मान जाओगे कि सरकार के बाहर भी बहुत सारे काम पड़े हुए हैं उस दिन तुम में से कोई भी बेकार नहीं रहेगा ।

—तुम चाहते हो कि सीनियर और एच० एम० सी० के प्रमाणपत्र लेकर हम ईश्वर के खेता की खाक छानत फिरें ?

—मैं यह नहीं चाहता, फिर भी यही मान लें । एसा हा जाने स क्या अनर्थ हो जायगा । आखिर मैं यह पूछ सकता हूँ कि आजकल के नौजवान खेता के काम से कतरात क्या है ? जमीन से नाक सिकोड़ते वाली बात तो मेरी समझ में नहीं आती जबकि मैं भी तुम्हीं में से एक हूँ ।

—हम खेत के काम का गया गुजरा नहीं समझने पर हम अपने योग्य काम पाने का भी तो इस स्वतंत्र देश में अधिकार है ।

—तो खेता का काम तुम्हारे योग्य नहीं ?—इस बार लालमन ने पूछा ।

लालमन के इस प्रश्न का उत्तर देना उचित न समझ कहने वाले ने अपनी बात को आगे बढ़ाया ।

—हम तो यह महसूस करते हैं कि हमारी सरकार अपनी जिम्मेदारी को नहीं महसूस कर रही है । अपने तीन चौथाई नौजवानों को बेकार रखकर वह इतनी निश्चित बसे है यह बात हमारी समझ में नहीं आती ।

—उमके सामने और भी तो बहुत सारे प्रश्न हैं । माफ करना, मैं सरकार का पत्र नहीं ले रहा हूँ क्योंकि हमारी यूनियन को भी उससे शिवायत है पर जहाँ तक नौजवानों की बेकारी का प्रश्न है इस दिशा में हम कुछ अधिक निरपेक्ष होकर सोचना चाहिए । नौजवान ही हैं वह जो सभी कुछ कर सकता है फिर भी अच्छी तरह देखा जाय तो वह कुछ भी करना नहीं चाह रहा है । नौकरी तलाशने से मिनती है ।

—तलाश ही तो रहे हैं ।

—गलत स्थानों में ।

—नेकिन धरमन हम तो तुमसे अपना आंदोलन शुरू करने के लिए सहयोग माँगने आये थे यह समझकर कि तुम भाति को महत्व देने वाला मे हा ।

जिस मौसैरी बहन की चचा देवती इधर कई दिना स लालमन के सामन करती आ रही थी आज उस लिए आयी । लालमन ही ने उससे कहा था कि बर्षा क बाद खेत म और एक व्यक्ति के लिए काम निकल सकता है । उसे दखकर यह विश्वास कर लेना लालमन क लिए कुछ कठिन प्रतीत हुआ कि इतना कम उम्र की दीखन वाली वह औरत एक बच्च की मां थी । बाद म उसे यह भी मालूम हुआ कि पति स तलाक लकर वह अपनी मौसी क घर आ गयी थी । मा अपनी न होने के कारण बाप क घर जगह पाना उसके लिए कठिन था । लालमन क प्रश्ना का उत्तर देती हुई वह बोली थी कि अपना बच्ची के लिए वह कठिन से कठिन काम भी करने मे नही हिचकिचायगी । नौकरी न करके भी मौसी के यहाँ उसे पेट भरने के लिए एक टुकड़ा रोटी का मिल ही जाता लकिन वह अपनी बेटी को कुछ बनाने का सपना देखती है । इम सपने को वह हर कीमत म साकार करके रहेगी । उसका सकल्प सुनकर लालमन को खशी हुई थी । वही लहरा और चट्टाना के सकल्प वाले एक दूसरे प्राणी को उमने देखा था । उसमे यह कहकर कि इस खेत म उसे बहुत अधिक परिश्रम करना होगा तब जाकर सप्ताह म उस बीस रुपय मिल सकते हैं देवती के काना म लालमन ने कहा था कि वह उसको अधिक काम न करने दे ।

जिस समय वह काम म जुट गयी थी उस समय लालमन उसे कुछ क्षण के लिए एवटक दखता रह गया था । उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि उन कोमल अंग को खेतो की घुप सहने के लिए नही बनाया गया था । उस सबसे पहले सरल काम सौंपा गया फिर भी उसके लिए वह सबसे कठिन काम लग रहा था ।

—तुमने अपनी बहन का नाम अभी तक नहीं बनाया मुझे? —देव ती के पास पहुँचकर लालमन न पूछा ।

—मैं तो उस सरग बहार पुरानी हूँ

—बढ़ा गुटर ताम्र ।

—उसका नाम सरम्बती है ।

—पर सरग अधिगु गुटर है । —लालमन का गुटर नहीं मानूँ हूँ कि यह वाक्य उसके मुह से कग निराल पाया था ।

सरस भामा की तरह नहीं थी फिर भी न जान क्या वह भामा की याद खिलाती थी । उस दलता हुआ तालमन और कुछ न साच पाकर वस भामा के बारे में सोचे जा रहा था । भामा के बीते हुए तिनके बाद में वह बहुत कुछ सोच चुका था घब । वह उसके प्रतीत के बाद में साचन लगा था । वह साचता रहा फिर जब उसकी नजर सरग पर पड़ी तो उसने उस माथ के पत्तीन की बूदा का पोछत पाया । बहुत अजीब थी उमक हाथा के बीच ही वह कठिन मुमनान । वषा के बाद लालमन का मन भी मुसकरा रहा था । दोना मुमनानो में एक हल्का सा अन्तर था । एक कठिन प्रतीत हा रही थी, बरवस लायी सी लग रही थी किसी गारीरिक् यातना को छिपाने के लिए और दूसरी एक सहज मुसकान थी वर्षा द्वारा भेंट की हुई मुसकान । दोना को यारी यारी से देखकर लालमन ने भी मुसकराना चाहा पर मुसकरा न सका ।

स्कूला की छुटी थी । मछली के शिकार पर जात हुए घनश्याम गौतम और किसोर खेत में पहुँच गए । कुएँ के पास वाले नारियल के पेड़ की ओर सक्त करत हुए गौतम ने यह जानना चाहा कि उस पर लगे फना को चोरा के लिए तो नहीं छोड़ा गया है । उसकी इस बात का मतलब समझकर लालमन ने जगदीश को पेड़ पर चढ़कर कुछ हरे नारियल तोड़ने को कहा । दूसरे ही क्षण जगदीश नारियल के पेड़ पर था । बिना किसी छरी या हसुब की सहायता से उसने पूरे दस नारियल नीचे गिरा डाल । देवती से हसुबा लेकर लालमन न चोरी चोरी से सभी में छेद किया और अपने मित्रा की ओर बगता गया । सबसे पहले गौतम ने नारियल मुह से लगाया और एक ही साँस में अपने हाथ के नारियल को आघा खाली करके उसने कहा—

—गरमी ने इसमें अजीब मिठास भर डाली है ।

—इसमें पतली गरी आ जाने पर मिठास इससे भी अधिक होती ।

आघा घण्टे तक इधर उधर की बाता के बाद लालमन को भी साथ चलने को कहा पर लालमन ने यह कहकर कि रात में इस समय बहुत अधिक काम है उन लोगों को जाने दिया । मौसम एक बार फिर धूमिल पड़ने लगा था । भान के पेड़ा के झुरमुट से कुछ पानी का न बादलो को धरती पर आमंत्रण दे रहा था । हर खनिहर की तरह लालमन को भी वर्षा वस नहीं हुई थी । मोर की तरफ उन्माहित वह बादलो को दलता रहा । सरस उससे कुछ ही दूरी पर पौधों पर

मिट्टी चढा रही थी। उमे एकटक देखते रहने से लालमन को ऐसा लगा कि उसकी जगह पर मामा थी।

बीत हुए बहुत सारे दश्या म एक दश्य सबसे अधिक स्पष्ट होता गया।

यही खतः ऐसा ही धूमिल वातावरण। देव ती और जगदीश चट्टाना के उस पार थे। इसी स्थान पर लालमन की बगल में मामा बैठी थी, पौधा के हर रंग की ओढ़नी को अपने कंधे पर गिराया। उसके बाल अनपठ विद्रोही हवा के स्पर्श से चेहरे पर मचल रहे थे। हवाओं में पौधा की मीनी मीनी गंध थी। पहली बार अपने में अद्भुत साहस लाकर लालमन ने मामा के कामल हाथ को अपने हाथ में ले लिया था। ऐसा करके उसने माना हृत्प की बात उससे कह दी हो। मामा ने पलकों को अपने ही परा पर झुका लिया था। कुछ दर तक उस कोमल हाथ से मलते रहने के बाद लालमन ने धीरे से कुछ कहा था जिससे मामा की आँखें एक बार ऊपर का उठकर दीवारा परा पर झुक गयी थी। और फिर कुछ दर बाद जब उसने लालमन के बहुत कहने पर आँखें ऊपर की थी उस वकत लालमन ने उन आँखा में जो कुछ देखा था वह स्वीकृति की चमक थी।

वषा फिर से हुई और किमाना की उमरों पराकाष्ठा तक पहुँच गयी। हरपर वरी गाने वाली औरता ने सब के साथ इस अपने भीता का फल माना। आम के बगीचे में पन्द्रह दिनों से सब हात आ रहे थे कुछ लोग ने दावा किया कि आम में घी नहीं डाला जाता तो बूद भी नहीं टपकती। मंदिर के पुजारीजी इस बात को छोड़कर दूसरी बात मानने को तयार ही नहीं थे कि अपने घण्टे की आवाज से उसने बादला को धरती पर बिखेर दिया था। लालमन ने सबकी सुनी और अपनी कही।

—कुछ भी सही, वर्षा तो हुई।

देखते ही देखते उमक खेत में इस छोर से उस छोर तक हरियाली फलती दिखाई पडने लगी। उस घनी हरियाली में दुगुना परिश्रम कर जाने की प्रेरणा थी जिस स्वीकार किये बिना लालमन से रहा नहीं गया। सरस को इस पेत में सप्ताह होने का था और सप्ताह से इस खेत की रौनक कुछ और ही थी। वर्षा का जादू और सरस की सरमता दोनों खेतकी सुंदरता का बढ़ाते से प्रतीत होत। सरस सरल भी थी। लालमन के साथ वह घुल मिलकर बातें करने लगी थी। कल ही जब लालमन ने उससे पूछा था कि आखिर तलाक की नौबत कसे आ गयी थी तो उसने मुम्वरात हुए कहा था —

—अपने पति की पहली कमजारी पर मैंने आँखें बंद कर ली थी। उसे सह जाने की शक्ति मुझ में थी। हालांकि गरावी पति की कामना मैंने कभी सपना में भी नहीं की थी मगर जब भाग्य ने वही दिया जो मैं नहीं चाहती थी तो मेरे

सामान्य ही चारा था कि मैं उसे श्वाकार कर चल ।

—तुम्हारे पति की दूसरी कमजोरी क्या थी ?

—पर की श्रौरत स सतुष्ट न हाता ।

—तुम्हारा मनलत्र है कि तुम्हारे हात हुए भी वह किसी चीज को प्यार करता था ?

—अगर हर श्रौरत को प्यार का विश्वास मिलाकर वह अपन वग म कर सकता तो ऐसा करने म वमी भी वाज नहा आता ।—गम्भीरतापूर्वक सरस ने कहा ।

—उसके ऐसा करने से तुम्हें किस चीज की वमी महसूस हाती थी ?

—सभी चीजा की । सभी चीजा को पाकर भी मैं कुछ भी नहीं पाती थी ।

—ईर्ष्या ?

—हाँ, यह मेरी सबसे बड़ी कमजोरी रही है ।

—प्यार श्रौर ईर्ष्या का साथ होना गायद स्वाभाविक भी हा ।

—गायद न भी हा पर मैं उस जितना प्यार करती थी उतनी ही ईर्ष्या भी थी मुझम ।

—कहते हैं कि ईर्ष्या केवल तत्र तत्र होती है जत्र तक प्यार म घनिष्ठता नहीं आ जाती । घनिष्ठता के आत ही विश्वास आ जाता है और विश्वास के सामने ईर्ष्या टिक ही कस सकती है ?

—मुझे अपने पति से बेहू प्यार था । उसे मुझमे कितना प्यार था यह भी तो साफ है । घनिष्ठता म असतोप की भावना कस आ सकती थी ?

लालमन को ऐसा आभास हुआ था कि सरस कोई बहुत ही पड़ी लिखी श्रौरत हो । उसका वातें करने का ढग बडा ही निराला था । लालमन के लिए यह मान लेना जरा दुश्वार था कि वह अनपढ थी । इससे पहले उसने कभी भी किसी श्रौरत को इस तरीके से वातें करत नहीं पाया था । मामा की हर वात उसके सामने रखत हुए लालमन को जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई थी । पूरी कहानी सुनने के बाद सरस के चेहरे की वह हँसमुख प्रतिश्रिया एकदम बल गयी थी । एक लम्बी खामोशी के पश्चात उसने कहा था कि कसूर लालमन का ही हुआ क्योंकि प्यार करक कोई इतना डरपोक नहीं हो सकता । अगर मामा श्रौर उसका सम्बन्ध स्थायी न हो सका तो लालमन ही उसका जिम्मेदार था । उसने यहाँ तक कहा कि प्यार करक आदमी पुराने बघना म नहीं रह सकता उसे सघप करके मनचाहा ससार बसाना पडता है । उसकी यह वात लालमन की समझम तनिक भी नहीं आयी थी ।

चद दिन वाकी ये मामा की गादी म श्रौर जस जस समय बीतता जा रहा था लालमन के भीतर का पश्चाताप भी जोर पकडता जाता । अब तो

उसके लिए बवल अपने का बोसना ही बाकी रह गया था। मन म अब वह करने का विचार पदा हाता जो समय के निकल जाने से नितात असम्भव हो चला था। मामा के उस प्रश्न का मन ही मन उत्तर देते हुए उसने कहा कि सचमुच ही वह प्यार को कुछ और ही समझ बठा था। उसके अपने भीतर ग्रहमयता जसी कोई चीज थी जा इस समय चूर चूर हो गयी थी। उसे अपने त्याग और आत्मशक्ति का जो घमण्ड था उस समय धीरे धीरे सञ्चित करता जा रहा था। मामा को कमजोर बतात हुए उसने अपने आपको बहुत ही शक्तिशाली प्रमाणित किया था। आज वह अपनी उस दिखावे की शक्ति के नीचे दब गया था। मामा से दूर रहकर उसने तरस की जो शमना की थी वह कुछ और ही म परिवर्तित हो गयी थी। उस सहानुभूति की प्यास सबसे अधिक थी। गायद उसने यह चाहा ही कि सभी लोग उसपर तरस खात हुए यह कह कि बेचारे को मामा छाड गयी। वह उसकी भावुकता ही थी जा उसके सामने दूसरे रूप से भा खड़ी हुई थी। आत्म सहानुभूति क बोझ स वह दब गया था। अब तो चिल्लात भी शम घाली थी। लोगा की दया उसे व्यग्य सी प्रतीत होती। वह केवल सरस थी जिसके सामन वह अपनी कमजोरी का इकरार करके सिर नहीं झुकाता।

सरस सुन्दर थी। उसकी वह सुन्दरता उस दिन अचिक निखर आयी थी जब वर्षा म मडई तक आते आत उसकी साडी भीगकर शरीर से चिपक गयी थी। दोनी हुई पहुँचने के कारण वह हाफ रही थी जिससे उसकी सुन्दरता सजीव हो गयी थी और वह सजीवता लालमन के हृदय मे मामा की याद और भी ताजा कर रही थी। सरस के चहर पर वर्षा की बूनों को झलकते देख मामा की आखी क के आसू लालमन को दिखायी पडने लग गय थे। उन आसुआ का अपने हाथो पीठना चाह कर भी वह उन्हें पीठ नहीं पाया था। इस समय मामा के के आसू गरम बूदो की तरह उसके सबसे कोमल अंग को दग्धकर रहे थे। न जाने किन खयाना म खोय रहने क कारण जब वह सरस को मामा बहकर पुकार उठा था वह हसकर गम्भीर हो गयी थी और लालमन न उसके हँसने का कारण समझ सका था और न ही उसके एकाणक गम्भीर हो जान का।

नारियन के पेड के नीचे लालमन ने सरस से पूछा था—

—तुम गुट म अपने पति को बहुत ही प्यार करती होगी ?

—गुरु म हो क्या ?

—अत तक तुम उसे प्यार करती रही ?

—हाँ।

—तो फिर तलाक की नीबत कस आयी ?

—आ गयी।

—प्यार क हाा हुए भी ?

—हाँ ।

—तो फिर बिछुड़ने का साहस कैसे हुआ ?

—अपनी बच्ची का फोर् भविष्य लिखाई न पढन क कारण ।

—ऐसा भी तो हो सकता था कि बच्ची तुम्हारे पति को मिल जाती ।

—तलाक की माँग मीने की थी । मिला भी तो मरे ही पग म । इस हालत

म मजिस्ट्रेट ने बच्ची मुझ सौंपी ।

—तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारे हाथ म उसका भविष्य अधिक उज्वल है ?

—गराबी को तो अपन गरीर की सुध नहीं होती है बच्ची का खयाल उस

से कैसे होता ? और फिर औरता से समय मिल तब तो ?

—ऐस पति को तुम अत तब प्यार करती रही ?

—हाँ, अब भी करती हूँ ।

—यह ता अजीब बात हुई ।

—अगर मैं अब भी हर बक्त उसकी मलाई की कामना करती रहती हूँ तो

इसका क्या तात्पर्य हो सकता है ? —सरस न मुसकराकर कहा ।

—तुम्हारी बातें समझना कभी कभी बहुत कठिन प्रतीत होता है ।

—जबकि मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि ईर्ष्या घणा को जन्म नहीं देती बल्कि

प्यार ही को ।

लालमन सरस की बाता म उसक जाता और उम उलझन से अपन को मुक्त करने के लिए वह दब ती की ओर चल पडता । देव ती की बातें जितनी ही सरल होती उतनी ही स्पष्ट और नपी-तुली । लालमन तुलना करने बठ जाता । सरस सभी मे भिन थी । कुछ हद तक वह विचित्र थी और उसकी उस विचित्रता ही मे वह आकषण था जिसकी लपेट मे आ जाना लालमन जसे ध्यक्तियों के लिए जरूरी भी कठिन नहीं था । भामा की याद को कम करने के लिए सरस की बाता म अपने को खा देना ही उसके लिए सबसे अच्छा उपाय था ।

भामा के घर हल्दी की रस्म पूरी की जा रही थी और उसके घर से कुछ ही दूरी पर बैठक में हड़ताल की तयारी हो रही थी। पसीने से तर-बतर शरीर लिए कोई तीस मजदूर काम में तंग हुए थे। झड़िया तयार की जा रही थी। तरना पर नारे लिखे जा रहे थे। घरमें सभी कामों में बारी बारी से हाथ बँटा रहा था। लालमन अब भी उधेड़बुन में था। सफलता और असफलता के प्रश्न अब भी उसकी चिंता के कारण थे। भामा के घर से आता हुआ लाउडस्पीकर का जोरदार मंगीत टास पदा कर जाता। उसे अनसुनी करके वह भी अधिवारा की लड़ाई में मशगूल हो गया। तीमर शिन हड़ताल थी। शहर की दो यूनिवर्सिटी इन् सेला और कोठियों के मजदूरों के साथ थी। जुनून की विधान सभा के सामने तक ल जान की बात थी। लालमन को इस प्रथम प्रयास में सफलता का बहुत कम विश्वास था। उस आज भी इस बात का डर था कि वक्त आ जाने पर बहुत से मजदूर पीछे रह जायेंगे। अभी उसी दिन कुछ लोगों ने भय के साथ जिज्ञासा प्रकट की थी कि उनका बहुत सारा बच्चे हैं परिवार काफ़ी बड़ा है, व अकेले रोटी के प्रश्न का हल करते हैं। अगर कोठी वाला न तथा सरकार न बुरा मानकर उन्हें हमेशा के लिए काम में निकाल दिया तो फिर उनका परिवार की क्या हालत होगी। लोया का समझाया गया था। घरमें ने विश्वास दिलाया था कि जा बुझ किया जा रहा है वह मजदूर जीवन को बेहतर बनाने के लिए, उस बन्दर बनाने के लिए नहीं। ऐसे तो उसके अपने मन में भी असफलता की आशंका ती थी पर इस बात का भी उस विश्वास था कि अगर सभी कुछ गतिपूर्वक हुआ तो ज़मींदार और सरदार दोनों समझ जायेंगे कि मजदूर जाग उठा है।

नवशुक्ल का ठाली की ओर से उन्हें दिलासा दी गयी थी। वे भी हड़ताल को सफलता प्रदान करने के लिए उसमें भाग लेने को तैयार थे। इस बात में

लालमन को जहाँ गुनी थी वहाँ कुछ भय भी था। अपने आशोक और छटपटाहट में यहाँ जाँची कुछ सन्मुख न कर बैठे। हाड बाँध के टुकड़ा और चान्नी पर श्वेत और काले अक्षरों में चतावनी और धिक्कार भरे वाक्य लिख जा रहे थे। वे सभी सम्बन्धित गतिविधियों को भ्रमभारण के लिए थे। लालमन एक एक करके सभी तरतों को पढ़ रहा था।

—रानी के बाद भी हम छह दिन की नौकरी चाहिए।

—पत्नी की बूढ़ों की कीमत इतनी सस्ती क्यों ?

—हम मजदूरों का भी कोई स्तर है। दूना यह महसूस करें कि उसको समझि दन वाले हम हैं।

—मिट्टी से साना उगलवाने वाला श्रमिक कब तक गरीब रहेगा ?

तस्ता पर सक्का वाक्य थे। सुभावा मामा और चतावनिशा सभरे थे वे। योग्य चित्रों में मजदूरों के पजर का प्रदर्शन और जमींदारों को मजदूरों का गुन चूसकर लाल दिखाया गया था। वही असंतोष जाहिर था वही पिजूल खर्ची पर धिक्कार भरे गाने थे। जब तक मामा के घर से संगीत आता रहा तब तक वे लोग अपने अपने कामों में लग रहे। बारह बजने में कुछ ही मिनट कम थे जब उधर का कोलाहल बढ़ हुआ और उधर भी बाकी कामों को बल पर छोड़कर सभी अपने अपने घर चल पड़े।

ठीक चीनी दुकान के सामने लालमन और धरमेन को रोका गया। एक काली मोटर के इंद गिद थे वे पाँच आदमों जिन्होंने दाना के पास आत हाँ उनका रास्ता रोक लिया। दुकान के बरामण्डे के धुधल प्रकाश में उनके चहरे स्पष्ट न होकर भी पहचाने जा सकते थे। दोनों को यह जानत देर नहीं लगी कि वे लोग गाँव के नहीं थे। चिह्न से पाँचों व्यक्ति राजनीतिक नेताओं के अग्ररक्षकों से लग रहे थे। वह व्यक्ति जिसके बाल सबसे अधिक लम्बे थे और जो सबसे अधिक मला भी दागता था दोनों के एकदम पास आकर बोला—

—तुम में से धरमेन कौन है ?

एक क्षण की चुप्पी के बाद धरमेन ने कहा—

—मैं हूँ।

इतने में सभी ने दाना का घर लिया।

—तुम पागल हो !— योग्य भरे स्वर में सिगरट का धुँसा धरमेन के मह पर छोड़त हुए एक तगड व्यक्ति ने त्रिआली में कहा।

—मुझ तो मालूम नहीं।—धरमेन ने कहा।

—अपने इस पागलपन को छोड़ दो वरना

लालमन जा कि अब तक चुप था पूछ बैठा—

—आप लोग हैं कौन ?

—हम अपना परिचय देना नहीं है।

—हम भी आपके वृद्ध प्रश्नाक उत्तर देना चाहते हैं।—लालमन ने कहा और धरमेन को आग करके वह चलने को हुआ कि तभी उस तगड़े यमिन ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे रोक लिया। लालमन ने अपने कंधे को मजबूत करके आगे बढ़ने का प्रयत्न किया कि तभी उस व्यक्ति ने उसे अपनी मजबूत बांहों में जकड़ लिया। दूसरे ने धरमेन को भी रोक लिया। उन सभी के मुँह से गाँजे का गंध आ रही थी। जा सिगरेट व पी रहे थे उन्हीं में गाँजे की मिलावट थी।

—आखिर तुम लोग चाहते क्या हो ?—लालमन ने पूछा।

—अपना पागलपन को तुम लोग छोटते हो या नहीं ?—लम्बे बाल वाले व्यक्ति ने कठककर कहा।

—क्या पागलपन ?

—हडताल की बात।

—आह ! अब बात समझ में आती है।—धरमेन ने कहा।

—तुम्हारी समझ में बात बहुत गलत आ जाती है। तो फिर यह भी समझना कि अगर हडताल हुई तो तुम दोनों की खरियत नहीं रहती।

—धमकी ?

—कुछ भी समझा। हम जो कुछ कहना था हम कह गये। अगर खरियत चाहते हो तो सभी बातों का यही रास्ता लो।

—सभी बातों का ता अवश्य ही रोक लेंगे पर हडताल का रोकना की बात हमारे कंधों की नहीं। इसलिए तो गाँजे के एक एक मजदूर का चेनावनी देनी होगी।—हसन हुए लालमन ने कहा।

तभी पीछे छूटे हुए लागा के आने की आवाज हुई और पाँचों यमिन जल्दी से मोटर में चढ़कर गाली पलौज के साथ वहाँ से नीचे ग्यारह हो गये।

उनके जाने पर लालमन ने धरमेन से पूछा—

—कौन ये थे लोग ?

—यह कहना तो कठिन है फिर भी उन लोगों के गुण्डे से जगत हैं जिन्हें हडताल से हानि पहुँचाने वाली है।

—माटर का नम्बर क्या तुमने ?

—हाँ पर इससे कुछ नहीं होगा क्योंकि जिनके इन्गार पर यो नाचते हैं उन्हीं के इन्गारे पर पुत्तिस भी नाचती है।—धरमेन ने कहा और दोनों आगे बढ़ गये। पीछे से बहुत से लागा के एक भाव व्यक्त करत हुए आने की आवाज मिल रही थी।

धर पहुँचकर लालमन से न सवा। चिन्ताप्रस्त वह अपनी चारपाई पर

करवट लेता रहा। उसे गुंडा की धमकी का उतना भय नहीं था जितना कि हडताल के असफल रह जान का। पिछले दिना सरकारी अध्यापक जस किवकी लोगा की हडताल सफल न हो पायी थी। गँवार मजदूरों की बात तो और भी निराशाजनक ठहरी फिर भी लालमन सहज ही भय वह विश्वास कर लेने को बिलकुल तयार नहीं था कि मजदूर जीतकर नहीं रहेंगे। धेतो क मजदूरों की बलो का भुण्ड कहा जाता है इस बात से भी लालमन की आगा सशक्त थी। अगर सचमुच ही सभी हडताल के महत्त्व को न समझते हुए भी बलो के भुण्ड की तरह एक साथ चल पडे तो कोई कारण नहीं था कि जमींदार और सरकार को उनकी अदभुत शक्ति का पता न चल जाय।

बसी के घर आज भी ओभाई हो रही थी। ओझ का हुँकार और डोलन की आवाज इस वक्त भी रात के सन्नाटे को भ्रूशभोर जाती। उन आवाजों से खीक कर बुत्ते कभी कभार भूक उठत। लालमन के कमरे का अधरा बाहर क घटा टोप अधेरे से भी गहन था और उसी अधेरे म वह अतीत और गविष्य दोनों क चित्रों का देखता हुआ नींद की प्रतीक्षा कर रहा था।

मामा की शादी के शणा को बितान के लिए लालमन के अपने पास अच्छा खासा बहाना था। हडताल की सरगमों के सामने विवाह की धूमधाम से उसे जो दाट होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। दद हुआ पर हलना सा। जान-बूझकर लालमन हडताल की इतनी अधिक जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ल बठा था कि दूसरी बातों के लिए अवकाश पाना उसक लिए असम्भव था। उसकी हर साँस में हडताल थी। अपने हृदय की घडकना और अतीत क सभी दणों की स्मृतियों से हडताल करके वह हडताल की तयारी म लगा रहा। शहनाई की आवाज को अनसुनी करके वह भावी नारा की अनुगूजा को सुनता रहा।

—मजदूर जिंदावाँ !

—पसीने की बूँदें माती के दाने !

उसके भीतर नई कविता थी। वह उस मजदूरों के गान के रूप में लिखने की सोच रहा था। उसने बलम की और तुरन्त लिखना गृह किया—

धम बूँदें पीकर जिनकी द सेत हमारे
उगलत रहत हैं मानी क हर दान
हरियानी जिनक खून की बूँदा से बनती
उन खन क मजदूरों की
अपनी शैतियन बनाय रगनी है
अपन अधिचारा की सुरक्षा से
दग का धनघाय बनाय रगना है

एनाएन लालमन की कल्पना बाबली सी हा उठी और अपनी बलम का नीच रखकर वह मामा के वार म साच उठा । उस ता वह इस मजदूर आंदोलन म अपनी सभी शक्ति लगा रहा था पर वीन जान अगर मामा आज उसके साथ होनी तो वह इससे भी अधिक लगन और विश्वास क साथ इसम लगा रहना। मामा ने तो हमारा ही उमम शक्ति का सवार किया था । मामा की यह याद उस समय उस आकुल रर रही थी जब वह दुल्हन के रूप म अपने नय घर म प्रवेश कर रही थी और वहाँ की औरतें उमरी आरती उतार रही थी ।

बारह घंटे बाकी रह गय थ ।

हुडताल गुरू करने म केवल बारह घंटा बाकी थ । लालमन गहता था कि य घंटा जल्द बीत जायें । वह अंदोर था मजदूरा की शक्ति आजमाने क लिए । और फिर उस अपनी शक्ति भी तो आजमानी थी । अपनी शक्ति को वह बहुत पहले से आजमाता चला आ रहा था । समय के साथ वह अपने को सभी शक्ति शाली अनुभव करता और कभी एकदम निबल । अपनी निबलता को परखकर दूर करने म उसे कठिनाई अवश्य महसूस होती पर वह उस करक रहता । अपनी एक कमजोरी को मिटाने क लिए ही वह इस आंदोलन म तन मन क साथ भाग ले रहा था ।

सुबह दर स हुई और लालमन ने अपने को उससे पहले जागे पाया । गाँव की चहल पहल शुरू हाने म अभी घंटा भर की दर थी । आलसी सूरज तीन घंटे बाक जागा वाला था । लालमन को हमारा स पहले जाग पाकर प्रभा भी जिसकी नीच पहले ही टूट चुकी थी विस्तर स उठ पडी । लालमन अमरुद का दातोन लिय नल नी ओर चल पडा और प्रभा जल्दी म हाथ मुह धोकर रसीई घर के कामा म लग गयी । उस मालूम था कि उसके भाई की आज समय स पहले घर से निबलना था । वह यह भी जानती थी कि आज उसके घर आने का समय भी अनिश्चित था इसलिए वह चाहती थी कि जल्दी जल्दी एक दो पराठ तयार कर द । दा ओला के चूल्ह म एक ओर उसने चाय के लिए पानी चढाया और दूसरी ओर तवा चलाकर आटा गूधने लगी ।

उधर दात घोकर लालमन सीधे स्नानघर म चला गया । ठीक पाच बजे उसे सभा म पहुँचना था जहाँ सभी लोग के जुटने की बात हुई थी । साने पाँच बजे जुलूस की पन्थाआ पर निकलना था । सात बजे स पहले जुलूस का शहर पहुँचना था । लालमन और घरमन ने सभी लोग स यहाँ तक कहा था कि दुर्भाग्यवग अगर उनके घर मनुष्य भी हो जाय ता इम यात्रा का अधिक महत्त्व समझकर वे इसम भाग जरूर रहे । सभी ने एक स्वर म स्वीकृति दी थी । लालमन उस भीड को उमडत देखने के लिए बनाय था ।

पाँच बजन स कुछ अिन्नत पडने नी लालमन बटक पहुँच गया । वहाँ की

मुनने को नती मिला था फिर भी राजनेताओं व सहमे हुए स्वर से जा तिलागामा मिला तो वह महापजार थी । इस प्रार्ति व सभी नेताओं का विश्वास हो चला था कि बहुत शीघ्र ही मादुरा की स्थिति में परिवर्तन आकर रहेगा । लालमन अपनी इस खुशी व बीच भी मामा की याद से अपने को मुक्त नहा कर पाया था ।

सहलहात खेता से हात हुए वह अपने खेत पहुँचा । उसके अपने पत की हरियाली इतनी अधिक घनी हो चली थी कि उसमें चलते समय पूरी सावधानी बरतनी पड़ती थी फिर भी किसी न किसी पौध की किसी न किसी टहनी का टूट जाना स्वाभाविक था । देव की और जगतीन अपनी ही धुन में काम विय जा रहे थे । सरस खेत में नहीं थी । लालमन ने चारा और लगी । चटाना व उस पार भी वह दिखाई नहा पटी । देवती के पास पहुँचकर लालमन ने मरम व न आने का कारण पूछा । यह बट्कर रि उस बुझार व देव की न लालमन को चिंतित सा कर लिया ।

इधर लगातार तीन चार बागिया से खेत सचमुच ही बस्त मु र दीखने लगा था । पौधा पर लाना की सरसा में फूट हँसते से लग रहे थे । व भविष्य की सुनहरी कल्पना के लिए लालमन का प्रेरित कर रहे थे । वह धूम धूमकर उन पौधा और फूलों को निरखता और उनकी उपज का आजा लगाता रहा । अपने में भविष्य की उमंग लिय वह खेत व इस छोर से उस छोर तक घूमता रहा । आज उसका जी काम करने का नहीं कर रहा था । वह केवल खेत का निहारत रहना चाहता था । सरस की अनुपस्थिति उस टटक रही थी पर यह बात वह अपने आपसे भी नहीं कह पा रहा था । उसमें भीतर हडताल की सफनता और मजदूरों की एकता की खुशी व साथ साथ अपने खेत को सुंदर पाने की भी खुशी थी । इतने पर भी अपने भीतर की हकी उदासी व कारण को वह नहीं समझ पा रहा था । उस वक्त जब हडताल अपनी पराकाष्ठा पर थी तब भी उसे इसी तरह की एक क्षणिक उदासी सी महसूस हुई थी ।

देवती तो प्रार्ति प्राप्तान जमी बानो की समझती ही नहीं जबकि लालमन चाह रहा था कि उन बातों की चचा वह किसी व सामने करे । सरस अगर होती तो वह इस विषय पर उसके साथ घटो बात करते रह जाता । उसमें माय हर विषय पर बातें करने में एक आनंद निहित था । सज्जिया के व पौध जिह्वा से सप्ताह पहल अनेमिया मार गया था अब खिने नजर आ रहे थे । लालमन ने अपने खेत में झोंखें हटाकर दूर तक फले खेता की आर देखा । चारों ओर वही हरियाली थी । चमकती धूप के बीच हरियाली भी चमक रही थी । ईश व खेता में जवानों का रंग छा गया था । उनमें काम करने वाले बवल पसर से ऊपर दिखाई पड रहे थे । वर्षा के बाद की गर्मी से ईश एकाएक बर आयी

भी मोरत का सामना सावधान दिव । शक्ति का धारता वजनमाना में गाई पट्टे का भा उता पर भी हरियाली की विविधता था । यह हरियाली बड़ा गहरी भी गा कहीं हराही कभी भाती ता कभी हराता गीनात दिव ।

गोधा व धीप मण्ठाप भाग का उगाता । हृण सामना शरी व पाण पहना जाति अगा व गोधा म कीटाणु था । पत्ता का पुन कर रही थी । सामन के तारियत व मग हृण पट्टे पर बटा हृण सावधान उगा सामन हराव की चर्चा न थी । दर ती व सामन हराव की बाँगे गाया भग व भाग बीच बजाता था फिर भी सामन बावता हा गया । उग रग बाव का जरा भी ममान नहीं था कि श्व ती उमरी बाता म शिचरपी त रही था या नहीं । य ही मान पर सामन उ प्रमा का मुना थी तो उमरी प्रविशिया भी लक्ष्म एमी ही थी जसी कि म समय दगी की थी । बटा भाव पुपना वाला प्रविशिया । गाई पट्टे मिनट तर पत्ताण मुनात रटन व या म भा म उगा पूछा—

—बल ता सरस काम पर भाण्णो न ?

—भगर युगार बना रहा तब तो नहीं भा सगी ।

—गोनी भाति नहीं त रही है ?

—मुग्ह ती थी ।

—बडी धूप म काम करने की भाति नहीं थी न इसीलिए घनाबट स बीमार पड गयी होगी ।

देव ती न भी यही कहा और तोडे हुए पत्ता की बटोरकर चट्टा व पास की भाडी की ओर फेंकने चल पडी । भवेला रह जाने पर लालमन अपने को मामा की याद स नहीं बवा सवा ।

दूसरे सप्ताह लालमन धनुवा भगत की गाडी म बठा खत की ओर जा रहा था कि पीछे से घनश्याम ने आवाज दी । भगत ने गाडी रोक ली और घनश्याम भी दौटता हुआ आकर उस पर चढ बठा ।

—भाजकल रहते कहा हो ?—लालमन ने पूछा ।

—मैं भी तो तुम से यही पूछने वाला हू पर सबसे पहले तुम्हे भलवार की एक खुशखबरी सुना दूँ ।—यह कहत हुए घनश्याम ने जैव से सुबह का भलवार निकाला और लालमन के सामन फच के भस बराबर कांठ भक्षरो को पढते हुए कहा—

—तुम लोग की हडताल सफल रही ।

—सच ! विस्तार स सुनाओ क्या लिखा है ?

—सबसे पहले मजदूरो की मजदूरी बढ़ाने की बात है । इसम सभी कुछ

स्तार से ता नहीं धाया है, फिर भी स्पष्ट है कि सरकार मजदूरों के प्रति सजग कर साच रही है और वह जमींदारों और काठीवाला का भी भ्रूणभोरकर जग करने जा रही है। अच्छी तरह जाच पड़ताल के लिए एक कमिशन की नियुक्ति होने जा रही है। सरकार का दावा है कि यह कमिशन हर तरह से जदूरो के पक्ष में रहकर उनकी शिकायतों का खयाल करते हुए परिस्थितियों को छानबीन करेगा।

धनश्याम के स्वतः ही लालमन पूछ बैठ—

—धरमेन को यह बात मालूम है ?

—पता नहा।

—चलो एक बार उमस मिल आत हैं।

गाड़ी रोक दी गयी और दोनों नीचे कूद पड़े। पीछे की ओर लौटते हुए लालमन ने जोर से कहा—

—देवती को कह देना कि मैं कुछ देर से खेत पहुँचूँगा।

धरमेन के घर पहुँचकर उह पता चला कि वह चारपाई पर बीमार पड़ा है। उसकी भाभी तानों को मीथे उसका कमरे में ले गयी। धरमेन को चारपाई पर बेमुथ साय देखकर दाना को आश्चर्य हुआ। दो दिन पहले लालमन उससे मिला था, उस समय तो वह बिलकुल चंगा था। दो दिन के बाद की उसकी इस हालत को देखकर लालमन को आघो पर विश्वास नहीं हुआ। धरमेन ने अपनी बोझिल पलकी को ऊपर उठाकर हाँठों पर एक कठिन मुसकान लाने की कोशिश की। लालमन की नजर उसकी गरदन पर पड़ी जहाँ दो मोटी गिल्टियाँ निकल आयी थीं। उसने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा। उसका माथा गरम तब की तरह तप रहा था।

—परमा तो तुम अच्छे थे।—लालमन बोला।

—बल मी अच्छा था।—धरमेन ने धीरे से कहा।

—तो फिर एकाएक ?

—अपने को तो सभी कुछ एकाएक ही होता रहता है।—अपने होठों की उस कठिन मुसकान को बनाये रखे हुए उसने उसी तरह धीरे से कहा।

—कोई दवा आदि

लालमन की इस बात को बीच ही में काटते हुए धरमेन कह उठा—

—कुछ ही समय हुए गौतम और किंगोर आये हुए थे। जो बात तुम दोनों भ्रव सुनाने आय हो उसे तो वे दोनों तुमसे पहले ही सुना गये।

—तुम अपनी बीमारी की बात करो।

—बातें करने के लिए तो इससे भी अच्छे विषय हैं।

इतने में उसकी माँ भी पीछे से आती हुई बोल पड़ी—

—तुम्ही दोना इसें समझाया । बल स इसन मुह म कुछ नहीं डाला है ।

—क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि नखाने से बीमारी और भी दबोचती है ? —लालमन ने धरमेन को देखते हुए कहा ।

—खाने को जी करे तब तो कुछ खाऊँ ।

—बीमारी की हालत म इच्छा न हाते हुए भी खाना जरूरी होता है ।

—यह डाक्टरों माया तुम्हें कब से घाती है ?

—माभी कुछ ले आओ । हम देखते हैं यह कैसे नहीं खाता है ।

—नहीं, लालमन मैं नहीं खा सकगा ।

—तुम्हें खाना ही हागा ।

—मुझे समझने की कोशिश करो ।

—माभी, क्या तयार किया है इसके लिए ?

—साबूदाना ।

—लाओ तो सही ।

चीनी के कटोरे म साबूदाना आ जाने पर धरमेन ने एक बार फिर नाक सिकुडते हुए इनकार करने का प्रयत्न किया पर उसकी माभी चारपाई के छोर पर बैठकर पहला चम्मच उसके मुह तक पहुँचा चुकी थी । बड़ी कठिनाई स उस तरल पदार्थ को मुह मे लेकर उसने किसी तरह से उस निगल तो लिया पर दोबारा लेने के लिए उसस मुह न खोला गया । उसकी माभी ने दूसरा चम्मच भागे बढ़ाया । अपनी माभी के हठ के सामने धरमेन को अपने हठ से बाज आ जाना पडा और न चाहकर भी उसे कटोरा साफ करना ही पडा । माभी के चले जाने पर लालमन ने उससे पूछा—

—तुम यह बता सकते हो कि तुम खाने से इनकार क्यों करते हो ?

—बस कहा न जी नहीं करता ।

—और मैंने भी कहा न कि बीमारी की हालत म जी न करने पर भी खाने ही रहना चाहिए । कमजोर शरीर पर बीमारी को बढ़ावा मिलता है ।

—लालमन मुझे ऐसा लगने लगा है कि डाक्टर की भविष्यवाणी को सच होने मे अब अधिक् देर नहीं ।

—तुम्हें जोरो का बुखार है और बुखार म लोगा को बटवडाने की आत्म होती है ।

—पर मुझे वह बुखार थोड ही है जिसम लोग बडबडाते हैं । इसे बुखार भी नहीं कहते ।

—तुम्हारा शरीर प्राग की तरह धधक रहा है ।

—फिर भी यह बुखार नहा । मग ऊपर का चमडा कबल गरम है । इसको महिक्न जुगान म हाट स्किन डीजिज कहते हैं ।—अपनी पीडा का छिपान का

प्रयास करते हुए धरमेन ने थके हुए स्वर में कहा ।

—मैं तो यह नाम पहली बार सुना हूँ ।—घनश्याम बोला ।

—मन भी इसे पहली ही बार सुना था ।—अपनी फीकी मुसकान को अधिक विस्तृत करके धरमेन ने कहा । लालमन कुछ कहता कि इससे पहले ही धरमेन खुद कहा उठा—

—खर इन बातों को छोड़ो ! यूनिफन की आगे की कायवाही के बारे में सुनाओ ।

—तुम पहले अच्छे हा जाओ फिर आगे की कायवाही पर गौर करेंगे ।

—म अपनी बीमारी को किसी तरह की रूपावट मानने को तयार नहीं हूँ ।

—दवा और माजन के अलावा बीमारी की हानत में एन और चीज की आवश्यकता होती है और वह है आराम । तुम्हें इस समय आराम की सख्त जरूरत है ।

—म तो यह सोचता हूँ कि आराम इसान से बीमार कर देता है । मैं इस समय अपने को बीमार मानने को जरा भी तयार नहीं हूँ ।

—तुम बहकी हुई बातें बर रह हो धरमेन ।

—इसीलिए तो तमसे कहता हूँ कि तुम यूनिफन की बातें शुरू कर दो और मैं इन बहकी हुई बातों को बंद कर दूँ ।

लालमन और घनश्याम दोनों ने देखा कि धरमेन के चेहरे पर अपनी वेदना को छिपाने का प्रयास था । इस बात को लालमन जितना समझ रहा था उतना घनश्याम नहीं समझ पा रहा था, फिर भी उससे यह बात छिपी नहीं थी कि धरमेन उधार ली हुई मुमकान का प्रश्न कर रहा था । उसमें बोलने तक का साहस नहीं था फिर भी वह बोल ही जा रहा था ।

तमी धरमेन की मामी ने आकर खबर दी कि बलदेव मिलने आया है । धरमेन ने उसे बुला लिया । अपने अधमले कपड़ा में भीतर आते ही बलदेव ने कहा कि वह बहरिया पूजा के लिए मदद मागने आया है । इस पर धरमेन ने कहा कि इससे लिए तो उसे बड़े माई से मिलना होगा क्योंकि उनके बाप की मृत्यु के बाद वही पूजा के प्राय सभी खर्च की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता आया है । काली माई का वह पुराना चबूतरा उही लोगों के नीमवाले खेत में था । उस कालीमाई के बारे में अनेक कहानियाँ थी । कुछ लोग कहते थे कि यह चबूतरा उस समय बनाया गया था जब भारतीयों को यहाँ गुलाम के रूप में लाया जा रहा था । किसी एक गोरे के अत्याचार पर एक दिन सचमुच ही उस स्थान पर कालीमाई की आवाज सुनाई पड़ी थी । उसने अपने भक्तों से कहा था कि मैं उसी स्थान पर एक चबूतरा बनाकर हर साल वन्दे की बलि दें वन्दे में वह गारा के अत्याचार से उनकी रक्षा करेगी । सयाग की बात तो यह थी कि उसी रात गोरे ने

भी सपने में काली के दान स्थित थे। काली ने उसका कहा था कि अगर वह अपने मजदूरों को चबूतरा बनाने के लिए जमीन नहीं देगा तो उसका सम्पूर्ण परिवार महाकाल का प्राप्त हो जायेगा। सुबह जागृत हो गोरे ने अपने सरदार को बुलाकर हुकम दिया था कि नीम के पेड़ के नीचे आज ही स कालीमाई का चबूतरा बनना शुरू हो जाय और सचमुच दो ही सप्ताह में चबूतरा बनकर तयार हो गया था और पहली पूजा में गोरे ने पूजा के सभी खर्च को अपने ऊपर ले लिया था। कोई तीस वर्ष बाद उसी गोरे के बेटे ने उस चबूतरे को ढकोसला देकर उस पर वह कर बटा था जो उस नहीं करना चाहिए था और उसी रात अचानक उसकी मृत्यु हो गयी थी। इस घटना का गाँव के सभी बूढ़े सच बताते हुए कहते हैं कि मृत्यु के समय उस गाँव के बेटे का चहरा कोयल जसा काला हो गया था और उसकी लम्बी जीभ बाहर आ गयी थी। उसी समय से उस पर सक्क के बाद सक्क आने लगे थे और रास्ते दामो में अपनी जमीन बेचने के लिए वह विवश हो गया था। धरमेन का दादा उसके चार सरदारों में एक था इसलिए उसने भी तीन चार बीघा जमीन खरी ली थी। कालीमाई काली जमीन उसी के हिस्से पड गयी थी। कहते हैं यही कारण है कि धीरे धीरे उसने प्राप्त पास के बाकी खेतों को भी खरीद लेने में अपने को सफल पा लिया था।

जब भी कालीमाई की पूजा होती और बकरो की बलि दी जाती धरमेन सोचता कि इस आधुनिक युग में इन रिवाजों को मिटा देना अधिक अच्छा होगा पर चाहकर भी उससे उसे रूकवाने की हिम्मत कभी नहीं हुई थी। पिछले दिना वह कालीमाई वाले खेत में काम करवा रहा था। उस समय भी उसके मन में यह विचार पदा हुआ था और उसने सोचा था कि अपने भाई से कहकर वह उस चबूतरे को वहाँ से हटा देगा पर उसी रात उसने एक भयंकर सपना देखा था और उस सपने में उसने अपने बाप को यह कहते पाया था कि अगर कालीमाई के चबूतरे को वहाँ से हटाया गया तो उसका वह परिवार तबाह हो जायगा।

बलदेव को अपने भाई के पास भेजने से पहले धरमेन ने लालमन से कहकर सूटी से टगी अपनी कमीज की ऊपरी जेब से बीस रुपये निकलवाय और बलदेव के हाथों पर रखत हुए कहा—

—यह मेरी ओर से है पूजा के लिए।

पहली बार उसने कालीमाई की पूजा के लिए रुपये स्थित थे। बलदेव के चले जाने पर उसने मन ही मन यह कामना भी की थी कि भगवान ने कने उसके पैसे से बकरा खरी लिया जाये।

दूसर दिन सरम को खेत में पाकर लालमन ने लम्बी साँस ली। अपनी गुलाबी साड़ी में खेत की हरियाली के मध्य वह पौधों के फूल सी प्रतीत हो रही थी। लालमन ने अपने आप से सवाल किया—आखिर यह कामलता कठोरता के लिए क्यों? नज़ाकत पर सस्ती की बेरहमी क्यों? सरस के चेहरे पर जब पसीन की बूँदें भनकन लगती उस समय उसका सौन्दर्य और भी निखरा-सा लगता। लालमन क्षण भर को उस व्यक्ति के बारे में सोचता रहा जिससे यह रूप सजोया नहीं गया। बाता के दौरान सरम ने कहा—

—मेरे पति ने मुझे मैं किस चीज़ की कभी महसूस की थी यह मेरे लिए बहुत ही सटकन वाली बात थी। मैं यह नहीं कहती कि औरत में सम्पूर्णता हाती है फिर भी इतना ता अदृश्य ही बहूँगी कि एक मद को जो कुछ चाहिए एक औरत दे सकती है। अगर मद उससे हर चीज़ न पाने का ढाग करके धगावत कर बैठे तो इस असतोष से औरत को अपना अपमान समझना चाहिए। मेरे साथ जो कुछ हुआ है उस में अपना अपमान समझनी हूँ। मेरी बच्ची के भविष्य की बात तो है ही, मगर साथ साथ अपमान की बात भी है। गाराब में आत्मगर्भा त डूबने वाला आदमी अपनी पत्नी का अपमान करते हुए अपने को भी मूल प्रमाणित करता है। औरत में गाराब से भी मारी गता है। उसके होने हुए गाराब की धोखल में डूब जाना मूल्यता नहीं तो और क्या? मैं अपने पति का देवता की तरह प्यार करती रही। उस सख्त दार भी मैं उससे जो कुछ पानी रही वह किसी भी हालत में प्यार नहीं हा सकता।

—क्या यह जरूरी है कि प्यार के अन्त में प्यार की उम्मीद रखनी चाहिए?

—जरूरी तो नहीं पर मुझे जसो स्वार्थी औरत की बात तो कुछ और ही है। मैं जिस चीज़ की उम्मीद रखकर कुछ कर वह अगर मुझे न मिले तो मैं

विशेष कर गान वाली धीरग है ।

—तुम्हारे धरे की योगसत्ता तुम्हारी दग या परविनाम गही करन दता ।

—धीरत जब ऊपर स कठोर हानी है तो भीतर स कामल धीर जब ऊपर स योगस तो भीतर स कठोर ।—हमारी हुई यह बाता ।

—तुम्हारी बातें धजीव है ।

—या मैं धजीव हूँ ?

—गायद दोता । गर मैं तुमस एक प्रान परता चाहता हू ।

यह कहकर यह धप हो गया । उस चुप पानर सरस न कहा—

—आप धुप हा गय ?

—मैं यह पूछ रहा था कि तुम गराव पीने वान ध्यक्ति स इतनी घणा क्या करती हो ?

—आपको यह कस मालूम हुआ ?

—तुम्हारी ही वाता स ।

—मैं सभी धराव पीने वाला स क्या घुणा करू ? मरी वातो का मतलब तो बस इतना ही था कि मुझे धराव पीने वाल पति स घुणा है ।

—पर ऐसा क्या ?

—यह धुषी हूँ फिर भी धगर मेरी वात उतनी स्पष्ट नहीं थी तो उसे स्पष्ट करती हुई इतना कहुगी कि गराव पीने वाला पति अपने प्यार को पत्नी और गराव क बीच बाँटता रहता है । गराव को यह वात गवारा हो लेकिन मुझे यह गवारा नहीं । धराव को मैं सबसे धक्तिगाली सौत मानती हू । यह मरी अपनी निजी वात है । मैं सभी पत्नियों को धार स बोलने का दावा नहीं कर रही हू । मैं किसी भी हातत म यह सहन नहीं कर सकती कि मेरा पति मुझसे अधिब महत्व धराव को द । धगर अपने जीवन मे मैंने किसी स ईर्ष्या की है तो वह धराव है, पत्नी की सबसे बडी सौत ।

सरस की वात समाप्त हो जाने पर लालमन उसे एकटक देखता रहा । उसे अपनी ओर एकटक देखते पाकर सरस पूछ बठी ।

—क्या देख रहे है इस तरह ?

—तुम कहा तक पढ पायी हो ?

—मैंन तो केवल उतना ही पढा है जिससे दूसरो का नाम पढ सकू और अपना लिख सकू । आप तो बहुत अधिब पढे हागे ?

—उतना नहीं पढ पाया हूँ जिसस तुम्हारी वाता को सरलता से समझ सकू ।

—कहते हैं मूर्खों की बातें समझन म विद्वाना की वाता स भी अधिब कठिनाई होती है ।

—यह भी सुता है कि विद्वान लोग कभी भी अपनी विद्वत्ता का ढिँडोरा नहीं

पीटते ।

—देवन्ती कहती है कि आप कविताएँ लिखत हैं पर मुझे तो आपने कभी भी नहीं सुनाई ।

—वातें बदलना काई तुमसे सीखे । मेरी कविताएँ शायद तुम्हें अच्छी न लगे ।

—ऐसा क्यों ?

—उनम अस-तोप की भावनाआ के सिवाय और कुछ भी नहीं होता ।

—तब तो विश्वास कीजिये आपकी कविताएँ मुझे सभी कविताआ से अधिक पसंद आएगी ।

—तो फिर कभी अवश्य सुनाऊंगा ।

—आपको अभी ही सुनाना हागा ।

कुछ देर चुप रहन क बाद लालमन जा कविता उसके खयाल म सब से पहले आयी, उसे ही सुनाने लगा—

घटाटोप अघरे म

जब अघरे को भी कुछ दीखता नही

जब हाथ को हाथ नही मूभता

तमी हृदय के आले म

मेरे सामने भि नमिलाने लग जाती हैं

पुराने दिना की विसरी यादें

मरे उर की किस आमा से

आकार पा लिया मेरे अनीत ने

सजीव हो गयी मेरी वदना

अघर टिके कडवे भीठे पात्र पर

जाग उठी सोयी यादगार

लिय टीस मधुर

मचल उठे तार मेरे गान के

भूले मटक दिना की

गाम की सिंदूरी बेला सी

उस लम्बी परछाइ को

मैन दौडत पाया गाधूलि सग

अनुकरण करते उस देखा

हताश भास्कर को

सागर की अचाह गहराइ मे

डूबकर

उसने आत्महत्या की
 या वह डूबी थी गंगा में
 पापों की तिलाजलि थी
 या नवचेतना संग
 उपा की किरणों का सहारा लिय
 फिर से ऊपर आन की
 वह पूव तयारी ठहरी ?

कविता सुनाते समय लालमन की आस भित्तियों की ओर थी। समाप्त करके उसने सरस की ओर देखा। उस अब भी अपलक अपनी ओर देखते पाकर उसने पूछा—

—कविता पसंद नहीं आती ?

—आपकी जगह खेतों में नहीं है।

—ऐसा क्यों कहती हो ?

—आपकी मुँह पर कविता ऐसा कहने की विवश करती है।

—तुम्हें सभी कुछ आता है, भूटी प्रशंसा भी।

—जो बात मुझ नहीं आती उसके काबिल मुझ न समझें।

यह कहती हुई खाल से भरी वास की टोकरी उठाये सरस वहीं से आगे बढ़ गयी। उसकी उस चाल को लालमन देखता रहा। उस चाल में बहुत कुछ था प्रेरणा भी।

ठीक बारह बजे खान पर बठस हुए लालमन ने पूछा—

—कभी अपने घर मुझ खाने के लिए तो बुलाती।

—हमारे घर की रखी-मूखी अगर आपको पसंद आ जाय तो आज ही आइयेगा।—सरस अपने कौर को मुँह के पास रोकती हुई बोली।

—नकी ओर पूछ पूछ। विश्वास करो मैं आज ही रात तुम्हारे घर का भोजन चलाने आ जाऊंगा।

—अवश्य आइयेगा।

इतने में छाया बल के पेड़ की ओर से आती हुई दिखाई पड़ी। आज उसका मन खेत में घूमने का हुआ था। पिछली रात जब लालमन खेत की लहलहाती हरियाली की चर्चा कर रहा था उसी समय छाया उस रौनक के दमन के लिए मचल उठी थी। उसके पास आ जान पर लालमन ने पूछा—

—तुम्हें भूख नहीं ?

—जय से गत पहुँची हूँ एक पपीता आधा तरबूज और एक सारा गा चुरी हूँ।—अपने पेट पर हाथ रखती हुई छाया बोली।

—तब तो तुम्हारे पेट का मन्त्र सगभना चाहिए।—दबकी हमर

बोली।

—बल की डाली पर भात की टोकरी है। जा, लेती आ।

—मैं लाय देता हूँ।—यह कहत हुए जगदीग अपनी टोकरी नीच रखकर बेल के पड की आर भपट पडा।

प्रभा स कहवर कि रात के भाजन क लिए वह उमकी प्रतीक्षा न करे, लालमन घर स निकल पडा। सरस के घर सात बजे पहुँचने की बात थी। घर छोड़न स पहले उसक मन म धाया था कि टाजिस्टर साय ले ले पर प्रभा न लने नही दिया क्याकि किसी भी हालत म वह आकागवाणी के कार्यक्रमो स वचित नही रहना चाहती थी। सीलान रेडियो और आकागवाणी के कार्यक्रम उतना स्पष्ट न होते हुए भी मारीगमीय घरा मे स्थानीय रेडियो से अधिक लाकप्रिय थे। लालमन की तो स्थानीय रेडियो के हिन्दी कार्यक्रमो से नानी मरती थी। वहा स प्रसारित कामजम और उनकी हिन्दी वडी मजीब होती थी। मित्रा के बीच बात करत हुए लालमन हमेशा यही कहता था कि हिन्दी को अगर गाय बढ़ाना है तो पहले उस स्थान स उमका रखा कर ली जाय जहाँ उसका दम घुटता है।

सान उजन म अभी आधा घटा बाकी था। लालमन के मन म दीयर लेन की चाह पदा हुई पर जब उस याद आया कि वह सरस के घर जा रहा है तो उमन अपन आप हँमकर इराद को बल दिया। सरस के मामन वह यह जाहिर हान नही दना चाहता था कि उम भी इन हलकी गराया का चसका है। रास्ते म वह यही मनाता हुआ चल रहा था कि अच्छा होता अगर उस गौतम, किशोर और घनश्याम म स कोई न मिल पाता। कई दिनों स वह अपन गाव म घूमा नही था इसलिए आधा घटा जितान के लिए वह इधर स उधर घूमना रहा। रास्ते म उस बहुत स लोग मिले बवल व तीनों मित्र नही मिल जिनम इस समय मिलना वह उचिन नही समझता था। उनम से किसी एक के मिल जाने का तात्पय जाना पास क गरावधान म दाखिल होना।

अत म शिवालय की ओर स हात हुए वह सरस क घर के सामने पहुँचा। एकाएक एक अनारण आबारा सा खयाल उसके भीतर पदा हुआ आर उसने अपन आप स पूछा—

—क्या सरस के घर मरा जाना उचित है ?

और उसने अपने आपस तक किया—

—दसम अनुचित की बात ही कहा है ? लोगा का तो हमेशा कुछ न कुछ कहना ही होता है। वे कहते रहे, इसस विगडता ही क्या है ?

अपन म एक आशका सी लिय जिसका उसन पहल स कल्पना भी नही की थी वह सरस के घर पहुँचा। सबन पहले देवती सामन आयी और उसा के

साथ ईश्वर के सूर्योपस्था के छाया वाला उमर का कमरा के घर में उसने प्रवेश किया। जिस कमरे में उस बठने का कहा गया वह साधारण होत हुए भी साफ-सुथरा था। पानी में पानीमार्द और अम्र दबी टवनाभा के चित्रों के सामने मिट्टी का चिराग कुछ ही क्षण में बुझने के लिए आगिरी ली के साथ जल रहा था। धूप और भगवती की भीनी गंध से कमरा सुवासित था। दीवार के बीच में महात्मा गांधी के बड़े से चित्र के इद गिद कुछ अम्र भारतीय नेताओं के काफी पुराने चित्र थे। ये सभी चित्र भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के चित्र थे। लालमन को उन सभी चित्रों को देखा हुए पहले आश्चर्य तो हुआ पर बाद में जब देवती के स्वर्गवासी माई की माता प्राणी तो बात उसकी समझ में आ गयी। वह मारीगस की सेवा समिति का नायक था। जिस समय भारत की आजादी के लिए सग्राम छिड़ा हुआ था उस वक्त इस दंग में भी उन नारों को बुलाव दिया जा रहा था। लालमन उस समय बहुत ही छोटा रहा होगा पर उन घटनाओं की धुधली भी याद अब भी उसके मस्तिष्क में थी।

लालमन के बठने के कोई पाँच मिनट बाद सरस अपनी छोटी सी बच्ची की अंगुली थाम सामने आयी। आत ही उसने बच्ची से लालमन को नमस्ते करने को कहा। बच्ची हिचकिचायी फिर अपनी अस्पष्ट तातली बोली में उसने नमस्ते की और मेज पर की चीजा की ओर अपने छोटे छोटे हाथों को बढ़ाने लगी। देवती की माँ भी आयी और लालमन से हालचाल पूछकर रसोई को लौट गयी। उसके पीछे सरस भी यह कहती हुई चली गयी कि एक मिनट में वह लौट रही है। इनारे से लालमन ने बच्ची को अपनी ओर बुलाया पर वह थी कि इनारे से डरकर अपने लडखड़ाते कदमों से सरस के पीछे हो ली। बच्ची ने एकदम अपनी माँ की शबल पायी थी। लालमन को वह बहुत ही प्यारी लगी।

इस बार जब सरस वापस आयी तो हाथ में पानी का गिलास लिए हुए। लालमन की ओर पानी देनात हुए उसने मुसकराकर कहा—

—मोजन तयार है, हाथ धोइयगा।

—खेल खेल में तुम्हें तबलीफ दे डाली।

—हमने भी तो सभी कुछ खेल ही खेल में तयार किया है।

लालमन उत्तर में कुछ कहता कि इससे पहले सरस मुसकराती हुई वहाँ से चली गयी। पीछे से देवती ने आकर एक कुर्सी मज के पास रखी और लालमन से उसी पर बठने को कहा। उसका बठत ही सरस पूरिया और कोई तीन चार प्रकार की तरकारियों के साथ सामने आ गयी। थाली से बहुत ही सोधी गंध आ रही थी। अपने सामने थाली पाकर लालमन ने हैरत भरे स्वर में कहा—

—इतनी सारी चीजें ?

—माजन के प्रति ऐसा नही बहत ।

—पर सरस, इतनी सारी चीज खाने के लिए तो मुझे तीन दिन चाहिए ।

—ठीक है तीन दिन तक बठकर खाते रहिएगा ।

—देखो इसमे से आधी चीजें निकाल लो ।

—इसमे एक मद की खुराक से कुछ भी ज्यादा नही है ।

—पर मैं इतना नही खाता ।

—खाना ही होगा ।

—नही सरस, नाहक इन चीजों का नुकसान हागा । इसमे स आधा निकाल लो जरूरत हान पर मैं भाग लूंगा विश्वास करो ।—विनयभर स्वर मे लालमन ने कहा ।

—देखिय आप जा खा सकें ग्वाइयगा जो ज्यादा हा इसी थाली मे छोड दाजिएगा ।

—पर जूठा हो जाएगा ।

—जूठा बाने से कोई मरता थोडे ही है ।

लालमन को बिबश हो खाना ही पडा ।

म पा रहे थे। घर के सभी प्राण रिस्तदारी में विवाह में गहरा गय हुए थे। घरमन की भाभी का जिस इस धान का पूव प्रयाग हा चला था तभी ता जाने से पहल घरमन को कह गयी थी कि वह घर का गरावखाना न बना बठे। उसकी मा ने कहा था कि वह घर से बाहर कही न जाय। अपनी मा की बात को उसने रग दिया था। सबसे पहल बलदेव क छोटे भाई का उसने किशोर के पास भेजा था और देगत ही श्वेत के सभी आ गय व जिह्वा आना था।

काई पंद्रह मिनट में गीयर की पाच ठठी बानना के बीच गराव की एक लजाती गर्मानी बानल भी मेज पर थी। सामान और मटर की प्रिया के साथ कोई बीस राटिया भी मेज पर मजा दी गयी। टमाटर और बाकी सामान घर ही पर था। सबाल उठा कि आगिर गाजा की तयारी कौन करगा? सभी को चुप पाकर किगार न कहा—

—यार यह भी एक बला है। तुम सभी का प्रताय दता हूँ कि मैं इसमें भी पीछे नहा।—और वह चटनी तयार करने में जुट गया।

एक तरफ चटनी बनती रही दूसरी तरफ धनश्याम ने सभी गिलासा में पहने गीयर उतली और फिर उनमें गराव मिलाई। बालमन कबल बीयर लेना चाहता था उसकी एक न चली। उसके गिलास में भी शराब टाला गयी। पहली चुस्की के साथ ही बानें भी गुरु हो गयी। कई प्रिया से फिमलती हुई बात दश की दगा पर आ रकी। धनश्याम और गौनम स्थिति से सन्तुष्ट थे, बाकी नहीं। अपने हाथ के गिलास का मेज पर रखते हुए धनश्याम ने कहा—

—सभी दोष राजनताप्रा पर क्या थाप जात है?

—नाचने वाले के हैं तो फिर नाच अच्छा न हाने पर दगा का कापी क्या बनाया जाय?—घरमन ने बदले में प्रश्न किया।

—नतन की सफलता दगा के सहयोग पर भी ता आधारित हानी है। अगर ब नत्य के आरम्भ हान से पहने ही हल्ला गुल्ला गुरु कर देंगे तो फिर नतन अपना सबस्व द ही कैसे पायगा?

—दगा का मूय बताना ता उलटी बात हुई। जो पसा दगा का दसन पहुँचा हा वह उम सराज करना क्या चाहगा? य नेता भी जो कुछ हैं तथा जो कुछ करते हैं हमारी कीमत पर तो फिर हम यह क्या चाहने लगे कि वे हमारा जीवन को बन्तर बनायें?

—धनश्याम ने कहने का मनलव है कि हम उह मौका ही नहीं नतन कि वे हमारे जीवन का बेहतर बना सकें।—इस बार गौनम ने कहा।

—बपों से बपों तक के समय का तुम भी उही के गनों में यही गराव था कि उ न मौका नहीं दिया गया। प्रिया की मर और प्रिया की मर रहा का मोसा उ न मिन जाता है और तिनके कचे पर घड़ा गराव था।

बैठे हैं उनके लिए कुछ करने का उन्हें अब तक बोझ भी मौका नहीं मिला ! तुम भी मजारा कर रहे हो गौतम !—राणी के टुकड़ पर मालमान का टुकड़ा रखते हुए लालमन न बहा ।

एक ओर बोलें खानी हानी जा रही थी दूसरी ओर बहुम जोर पकड़ती गयी । गायद दिमाग म नट्यगड्डाहट के कारण तक और दलीलें भी लडखडाती सी प्रतीत हो रही थी । कोई घट बाद बहुम भन्ने क साथ राजनीति से धम पर पहुँच गयी । एक ओर स धम का नकारन का प्रयत्न किया गया, दूसरे ओर ने उसे प्राणों से भी अधिक महत्वपूर्ण बताया । एक ने उसे विभाजन का श्रीजार बताया दूसरे ने मानवता का संरक्षण । बहुम म सिधिलता सी छात लघघरमन न जेय से यसा निराला और शराय की दूसरी बानन ताने क लिए जिगोर की ओर इगारा किया । लालमन मना करके भी जिगोर का रोफ न सता । वह पसा धीर छोटी सी टाँसरी लिय नडखडात कन्मा स कमरे से बाहर चला गया । बहुम धमी हुई थी धीर लालमन क भावर एक जिनामा जागी ।

आखिर सरस की शराय पीने वात व्यक्तिगत से घणा क्यों है ? तही तो वह तो शराय पीने वाले पति से घणा करता है । वह घणा क्यों कर सकती है ? वह तो प्यार करने के लिए बनाइ गयी है ।

वह शराय शराय ही हा मफती थी जो लालमन के गपाना को इतना अधिक साहम प्रदान कर सकती थी । इसमें पहल सरस क बार म इग नय दृष्टिकोण स उसन कभी भी नहीं साचा था जिस दृष्टिकोण म लय बरक सोच रहा था । सरस को इस वक्त वह प्यार की मूर्ति क रूप म दग्न रहा था । मजबुब ही क प्यार करने की चोज थी—जो सरवर प्यार करने की । लय समय सावजन क गपाना म जा सरस मँडरा रनी थी वह बाँहा म कग उन वाती गरम थी । पहली बार उमरी साँगा और मन्विण म हावी गरम की तमसीर भासा की तमसार म बहुरीन थी । ज्ञानमन वशी ही म्वन बना धीरएक धम्मन गाहम क गाय धयन भेन म काम करने वाली गरम क जारे म साव जा रग था । गरम का शराय म नजरन थी और उमी शराय म ज्ञानमन का उमर लयकम करीय क रा किया था धीर जब दूसरी बानन गानी लो सावजन लयार न कर मना । य लो शराय की उगारना क प्रति वृत्तधनता हावी । धत्राय धत्राय म उमन गिनाम उर उठाया धीर वाभिन्न साँगा म धयन मिया का नेगत लय गर्वीन मर म कट उठा—

—प्यार क नाम पर !

—जब म हिम नाम पर था रहे ध ज्ञान ?—गौतम जा हि मयन कम नय म था लय बग ।

—कसा गानना भासा की दा लो घा गयी कसा ?

— भामा की याद को इतना ताजा बनाय रखना था ता फिर उसे जाने ही क्यों दिया ?

— अपने का ता लगता है कि तुम्हें भामा में सच्चा प्यार नहीं था ।

— प्यार ता प्यार होता है भाई उसमें सच्चा और भूटा का प्रश्न ही क्या ? — हम गम्भीर वाक्य को भी घनश्याम ने व्यंग्य के ढंग से कहा ।

— लालमन मुझे तुम पर तरस आता है यार । जीवन में एक ही बार तो प्यार किया तुमने और असफल रह । — घनश्याम अभी अपने वाक्य का पूरा भी न कर पाया था कि घरमें बीच ही में कह उठा —

— तुम्हारे बहने का मतलब है कि सभी व्यक्तियों को तुम्हारी तरह दस पाँच लड़कियों के चित्र जेब में लिय फिरत रचना चाहिए ?

— तुम्हारे सभी निगाने मेरे हाँ ऊपर क्या होते हैं ? किशोर को क्या छोड़े देते हो ? काइ दस से अधिक लड़कियों से इसका पत्र व्यवहार हाता है ।

अपना बचाव किशोर ने खुद किया —

— पत्र तो हजारों लड़कियों को लिखे जा सकते हैं इससे क्या ?

— कमाल है ! जिस बात में तुम्हें नाज था आज उसी से बतरा क्या रहे हो ? तुम तो छानी ठाकर बहन वाला मैं हाँ कि सीड्यूमर तुम जसा काजा नोवा भी नहीं था । तुम तो कहते थे किंगार कि टान जुमान भी तुम्हारे आगे पानी भरन लग जाता ।

— वह तो मैं भी हूँ ।

— तो फिर यह बीच-बचाव क्या ?

यह बहस पिछनी सभी बहसा से लम्बी रही । इसके बाद कुछ क्षण तक यूनिवर्स की बातें टुड पर गम्भीरता की कमा क कारण वह जाँच नहीं पकड़ सकी । घरमें के अभाव केवल लालमन हाँ था जिस यूनिवर्स से दिलचस्पी थी मगर इस समय ता उसका अपना दिमाग भी कहा गिरवी था । वह सरस के अतिरिक्त किसी और विषय पर सोच ही नहीं पा रहा था । गराब की खुमारी के साथ साथ सरस की याद भी उसकी धमनिषो में दौड़ने लगी थी । सरस की तुलना भामा से करके वह उम भामा से बहुत आगे पान लगा । भामा कुछ थी, सरस कुछ । भामा सुन्दर थी पर सरस सुन्दर भी थी और प्यारी भी ।

लालमन के मित्रों में कोई भी स्थिर नहीं था, गौतम भी नहीं । गौतम जो सबसे अच्छा पीनेवाला था और जिम नशा हमारा सबसे बाद में आता इस दूसरी बीतल के बाद वह भी बहकी बहकी सी बातें करने लगा था । लालमन बहकी-बहकी बातें नहीं कर रहा था मगर उमका खयाल बना बहका था । पिछनी गाम के कुछ दस्य अपनी सभी अस्पष्टता विषे लालमन के खुमार दिमाग में एक बार फिर कौन उठे ।

सिद्धरी गाम । हरा की गराही चान । उन नी अनुपस्थित और जगतीग
चट्टाना क उम पार । बल क नीच गानमठ और उतारी बगल म बठी सरम ।
बहुन सारी बानें और उन बन्त सारा बाता क बाण एग विगिष्ट बान ।

—सरस तुम समी स भिन हा । तुम आसाधारण हा ।

एक पल की गायानी फिर सरस की पलका का ऊपर उटना और

—भाप भी ता भि न हैं—आसाधारण हैं ।

—तुम्हारे पनि स ?

—समी स ।

—किस ढग स भिन हू मैं ?

—पहल मेरी भिनता तो बनाश्य ।

—तुम तो हर ढग स भिन हा ।

—यानी नि मैं आत्मी नसी नही हू ।

—हा तुम आत्मी जसी नही हो ।

—अगर बुडल जमी हू तब तो आपना मुभम डरना जरूरी है ।

—तुम भिन हा सरस । दुनिया की सभी स्त्रिया स भिन हो तुम । तुम
यथाय सी न लगकर कल्पना सी लगती हो ।

—तब तो मैं पुरानी चीज ठहरी ।

—क्या ?

—क्याकि कल्पना तो अज पुरानी हो चली है अज तो यथाय को महत्व
निया जाता है ।

—तुम यथाय की कल्पना मी लगती हो ।

—बस अज तो मुझ खु भी नही मालम कि मैं क्या हूँ ।

—तो फिर यह बता दो कि मैं क्या हूँ ।

—आप तो

—क्या बात है तुम एक क्यों गयी ?

दूसरी बार मैं अपनी जगह से खड़ी होती हुई सरस ने अपने वाक्य को पूरा तो किया था लेकिन हवा उस वाक्य के बाकी भाग को अपने साथ उड़ा ले गयी थी और लालमन यह नहीं जान सका कि सरस की नज़रों में वह क्या था ।

इस तरह के नशेपन में लालमन घर कभी नहीं पहुँचा था । प्रमा को पहली बार ऐसा एहसास हुआ कि अब उसका भाई शराबी बन चुका है । वह उसने बहुत कुछ कहना चाहती थी परन्तु एक शब्द भी नहीं कह सकी क्योंकि लालमन तो चारपाई पर गिरते ही तैमुथ था—घाथी रात का प्रमा ने उसे बड़बड़ाते सुना । उमकी उस बड़बड़ाहट में सबसे अधिक सरस गूँध था । उसी क्षण प्रमा ने अपने आप से पूछा था क्या यह सम्भव है ? सरस तो एक बच्ची की माँ है और उसका भाई अब भी कुबारा था ।

अपने आपकी समझाती हुई वह बोली—

—नहीं मैंने गलत समझने की कोशिश की है । बात कुछ और ही हो सकती है और फिर नशे में तो आत्मही न जाने क्या क्या बकता रहता है । अभी तो मामा की याद भी भया के मस्तिष्क में एकदम ताजा होगी । उसे एकाएक मुलाकर इस बार उससे भी असम्भव कदम वह कैसे उठा सकता है ?

प्रमा खुद से सवाल करके खुद को जवाब देती रही । दिन भर की थकान के बाद आज रात उसे जो गहरी नींद आन की उम्मीद थी वह एकाएक गायब थी । इन बातों को गलतफहमी मानकर भी वह सो न सकी । रात भारी थी और उसकी पतल एकदम हल्की जो झुक नहीं पा रही थी । बाहर से कई कुत्तों के एक साथ रोने की आवाज़ आ रही थी । रधिया महाराजीन इधर दो तीन दिनों से आविरी दम पर अटकी हुई थी । पिछली रात तो गाव मर में खबर फल गयी थी कि वह चैन वसी पर ज्यो हों उसके मुह में परीतालाब का पानी डाला गया था उसने फिर से आँखें खाल दी थी । आज प्रमा की माँ कह रही थी कि वह बुडिया आज की रात पूरा नहीं कर पायगी । कुत्ता की रनाई को बल्ले सुन प्रमा अपने भाई के खयाल से छुटकर रधिया महाराजीन के बारे में सोच उठी और उसी के बारे में सोचते हुए उसे नींद आ गयी ।

उसने श्रीरो की आवाजें सुनी थी और अपनी भी। श्रीरो की आवाजों में व्यग्य या ईर्ष्या का आभास था। उन आवाजों को सुनकर अनसुनी कर जाना भी उससे नहीं हुआ। उन तमाम आवाजों में जो आवाज सबसे अधिक चुमने वाली थी वह उसके अपने ही मित्र की आवाज थी। किंगोर और गौतम ने एक ही स्वर में कहा था कि अच्छी औरत को पति तलाक़ नहीं दिया करते। यह छोटा सा वाक्य उसके मस्तिष्क में भनभनता रह गया था। कहने का तात्पर्य बस इतना ही था कि सरस एक अच्छी औरत नहीं थी। अगर वह बदचलन और चरित्रहीन न होती तो उस परित्यक्ता का जीवन गुज़ारना नहीं पड़ता अपने विचार को अधिक् स्पष्ट करत हुए गौतम ने कहा था।

लालमन केवल इसलिए चुप रह गया था क्योंकि वह जानता था कि किशोर और गौतम की ओर से जो बातें हुई थी वे उसे ठेस पट्टचान के लिए नहीं कही गयी थी। गौतम और किंगोर तो इस बात से भी अनभिज्ञ थे कि सरस लालमन के खेत में काम कर रही है। उहान श्रीरो की बातें सुनी थी और अपनी जोड़ दी थी लेकिन लालमन को दोनों से एसी उम्मीद नहीं थी। वे गाव के उन लोगों से भिन्न थे जो खेता से लौटने के बाद एक समय को चीनी दुकान के बरामदे में बिताते हो। वे दोनों अध्यापक थे और अध्यापक इतनी जल्दी किसी के चरित्र के बारे में अपना विचार प्रकट कर दे यह घटकने वाली बात थी। पढ़ लिया तो गौतम से कुछ सुनकर तुरंत अपना मत नहीं सुना बैठत। वे सुनकर साचत हैं और सोचने के बाद अगर कुछ कहना जरूरी ही जाता है तब अपना विचार देते हैं। इन बातों को भी लालमन वाकी बाता की तरह महत्व नहीं देता पर चूकि बहुत समय उसके दोना मित्र जरा भी गप्प में नहीं थे इसलिए लालमन को उन्ही की बातें सबसे अधिक् चुम्बी थी।

सभी कुछ सुनी के वाज्रू भी वह यह मानने का तयार नहीं था कि सरस दापी थी। न जान दिन भावनाओं से वह उनकी निर्दोषता की भोग ध तक मानने का तयार था। वह तो यत्न मांगता था कि चरित्रहीनता आँवा म लिखी होती है। सरस की आँखा म बहुत कुछ था वेदक यही पर चीज नहीं थी। एका त म होत पर उसने अपने आप से प्रश्न किया। जानना चाहता कि आखिर उमन तनाक क्या लिया ? और दसक भी बड़ा सवान जो इमने बाद उसने मामने खडा हुआ वह यह था कि सचमुच ही तलान सरस ही न मागा था और वह मिला भी ता उसी के पाम। या बात कुछ और थी ?

और जब उसने सरस को अपने मामन पाया ता पहली बात उमन यही पूछी—

—सरस, क्या यह सच है कि तनाक की माग तुमने की थी ?

सरस चुप नालमन का दंखती रह गयी। सालमन का अपना प्रश्न दोहरान का माहम नहीं हुआ। उसे अजीब उभेडवा मे देग सरस अपनी गम्भीरता को तजकर मुसकरा उठी। उसकी मुसकान से तानमन को नया साहम मिला और उसने अपने प्रश्न को हमरे ढग से प्रस्तुत किया—

— तोग कहत हैं कि तुम्ह जदरन्स्ती घर से निगाला गया है। यह बात कहा तक सच है, सरस ?

— मैंने जा कुछ भी कहा था उस पर आपका तनिक भी विदनाम नहीं ?

— तुम्हारी दाता पर मुझे विदनाम है तकिन गाववाल

— गाववाला का कहने दीगिए।

— तुमन तार्ते नहीं मुनी इसलिए एमा कह रही हो।

सरस ने आग कुछ भा नहीं कहा। वह वहाँ से हट गयी। उमकी इस हरकत से लालमन की स्थिति और भी बिगड चनी। मामा सप्यार करके उसकी ऐसी हालत कभी नहीं हुई थी। वन उसके लिए तडपा अवश्य था मगर इस वन्तर नहीं। अपने को ममभाने की कागिध करत गुण उसने अपने आप से कहा कि सरस क अतीत से उम क्या लेना दना। अतीत म तो उसने उसने प्यार नहीं किया। वह ता उसे वस समय प्यार करता है। इम समय वह क्या है और क्या सोचती है क्या करती है—वन वानी से उस सरोकार होना चाहिए पिठली वाना से क्या ?

सरस अगर उसके प्रश्ना की अनहलना करके टन न जानी तो गायद अतीत का अतीत समभकर वह उन वाता का याही चल जाने देता। लालमन के भीतर नया प्रश्न पटा हुआ। आगिण वह दतनी बटा बात को बिना कोई महत्त्व दिय चल क्या पनी ? सफाई के लिए ता दो गन्त भी पमान थ। वह फिर से एक बार केवल इतना कह दती कि लोग की वार्ते भूट हैं तथा उसने गुन अपने पति

से तग आकर तलाक की माँग की थी तो बात कुछ से-कुछ हाती । अगर इतने पर भी कुछ लोग यह कहते फिरें कि अच्छी और हिन्दू औरतें अपन पति से तलाक नहीं मागती तो उन सभी को उत्तर देने का ठका लालमन खुद अपने ऊपर ले लेता । वह यह मानने को तयार नहीं था कि आज भी औरत को सभी जुल्म सहकर भी पति परमेश्वर का नारा बुलद करना जरूरी था । यह युग तो स्वतंत्रता और अधिकारप्राप्ति का है । जब सभी स्वतंत्रता और अधिकार माग सकते हैं तो फिर क्या कारण है कि नारी इनसे वंचित रहे । तलाक माँगकर पाना और तलाक जबरदस्ती मिलना औरों के लिए गायद एक ही बात हो पर लालमन के लिए ये दो अलग बातें थी । एक में अधिकार की सुरक्षा थी और दूसरी में अपनी बुराई की सजा । लालमन सरस को प्यार करना था वह यह कैसे मान सकता था कि सरस को उसकी बुराई की सजा मिली है । सरस को वह उन नजरो से देखना नहीं चाहता था जिनसे गाँव के सभी लोग उसे देखते थे ।

उसने अपने घर पर भी बातें सुनी थी । घर की बातें लोका की बातों से भिन्न होकर भी उसी तरह का मतलब रखती थी । घर पर केवल उसकी बहन थी जिस सरस के बारे में जानकारी प्राप्त थी । अपन भाई से उसने कहा था कि वह अपनी नागनी से बाज आ जाये । सरस शादी के बाद टुंगराई हुई एक बच्ची की मा है जबकि लालमन को अभी तक हल्दी नहीं लगी थी । तुम मोह लिय गय हो भया—उसकी बहन ने कहा था—क्या है उस औरत में जो तुम उसे अपने खयाला में इस तरह बाँध चुके हो ? लालमन ने अपनी बहन की बातों को कोई महत्व नहीं दिया था क्योंकि मामा के वार में भी उसने इसी तरह की बात कही थी । लालमन को यह भी विश्वास था कि उसकी औरत पसन्द की हुई हर लड़की के बारे में वह यह कहती ।

खेत छोड़ने से पहले लालमन ने एक बार फिर सरस के सामने पहुँचकर प्रश्न किया । वही प्रश्न और सरस की औरत से वही प्रश्नांगी । अपन भीतर के विद्रोह पर काबू पाते हुए लालमन ने कड़व स्वर में कहा—

—सरस मैं जा कुछ जानना चाहता हूँ उस जान जिना मुझमें रहा नहीं जाएगा ।

—कुछ कहना बाकी रहे गया हो तब तो !

—तुम पति के घर से जिस बात के लिए टुंगराई गयी हो ?

—जो मैं कहती आयी हूँ भाग उम सच्चाई मानने का तयार नहीं इमतिना सच्चाई अगर बाकी है तो तब उम पूरा कहेंगी ।—मुगलान के गाय सरस ने कहा और वहाँ से चले पड़ी ।

लालमन के हृदय का बाँध बाँध बना रहा । मानस का तूफान दमन नहीं

दब रहा था। घर पहुँचकर बिना हाथ पाँव धाये वह चारपाई पर जा पड़ा। दिन की उष्णता के बाद शाम का हेमन्त की पहली हवा अपनी सिहरन लिये वहने लगी थी। खिड़की खुली होने के कारण हवा पूरी स्वाधीनता के साथ भीतर पहुँच रही थी। लालमन को छोड़कर वह घर के सभी सामान को ठंड का पहला आभास पहुँचा सकती थी। लालमन घर के सामान से भी अधिक निर्जीव था। उन न गरमी थी न ठंड। सोचा वह सरस को बहुत अधिक प्यार करने लगा है। यह बहुत अधिक प्यार उसे नहीं करना चाहिए था पर हृदय को कौन समझाय। सिरदद का बहाना करके उसने भोजन नहीं किया। एक गिलाम दूध पीकर सोने चला गया। वह जल्द-से-जल्द सोकर रात बिताना चाह रहा था। पर यह इच्छा उसके भीतर जितनी ही प्रबल थी उसकी आत्मा के लिए निद्रा उतनी ही शिथिल थी। उसे अपने शरीर से अधिक थका माँदा अपना मस्तिष्क लगा। थकान के कारण वह खाली सा प्रतीत हो रहा था। खयाल उसमें चुभत से लग रहे थे। घर के सभी लोग लम्बी गरमी के बाद आज पहली बार हलकी ठंड महसूस कर रहे थे। लालमन इस नये अनुभव से अनभिज्ञ था। इस वक्त भी जबकि घर के लाग चादर और कम्बल की आवश्यकता महसूस कर रहे थे लालमन बिना कमीज अपनी चारपाई पर था। आँख मूढ़ वह अंधरे की आत्मा से अंधरे की गहराई का अंदाजा लगाता रहा। फिर से एक बार मामा और सरस की तुलना की उसने। मामा खुली हुई किताब थी और सरस रहस्यमय थी। शायद इस रहस्यमय स्वभाव के कारण ही लालमन के दृष्टिकोण में वह मामा से आगे थी। लालमन के जीवन में मामा पहले आयी थी पर वह सत्ता के लिए रह न सकी। उसके चले जाने का दुःख लालमन को तब भी हुआ था और अब भी है। फिर सरस उसके जीवन में आयी और लालमन न हर चीज को नये सिरे से शुरू होते महसूस किया। सरस में मामा से अधिक विशेषताएँ थी लेकिन

लालमन के भीतर यह की भावना जागी। अपने को सात्वना देने के लिए वह शरत बाबू के किमी वाक्य को अपन दिमाग में घुमाता रहा।

—नारी के कलक पर अविश्वास करके ठगा जाना उस पर विश्वास करके पाप का भागी बनने से बेहतर है।

यह पुराना वाक्य उसके दिलादिमाग में चक्कर काटता रहा। उससे थक जाने पर उसने उसे बहुत दूर की बात समझकर तज दिया। इतने पर भी वह यह जानने का प्रयास करता ही रहा कि आखिर सरस के बीत हुए दिनों से उस क्या लेना देना था। ईर्ष्या जसा न जाने वह कौन सा भाव था उसके भीतर जो उसे अपन ही तर्कों को खोखला मान लेना का विवश कर जाता। उसके अपने जीवन में इससे पहले भी कई लम्बी रातें आया थी पर यह रात कुछ अधिक

मुकीली थी। वह हर बरबट के साथ उस चुमती रही।

बाहर एकाएक तेज हवा गुरू हा चुकी थी जिसस रान सिसकियाँ लेती सी प्रतीत हो रही थी। लालमन को यह अपन प्रति योग्य सा लगा। वह हर कीमत पर सुबह को खरीदना चाहता था। उस हर कीमत और हर गत मजूर थी। आज की रात कटकर छोटी हो जाय और बदा म बल और परसा की रात चाहता दोगुनी भी हा जाय इसम उसे कोइ भी हज नही था। मित्रा से वह यह भी सुन चुका था कि आजकल नीट व लिए गालियाँ आती है। इस वक्त वह उन गालिया का घोटन की इच्छा का भी अपन भातर प्रबल पान लगा था पर इस वक्त व मिल भी तो कहां ? उसन मन की गार्ति की इच्छा की थी उसके लिए नीद की और नीद व लिए गालिया की। न गोलिया थी न नीद और न ही मन की गार्ति। वह बरबट लता रहा। बाहर व सभी जीव भी सो चुन व। निस्त-वता बन्ती ही गयी। बाहर निस्त धना जितनी गहरी थी उतना ही भारी था लालमन व मस्तिष्क का बोलावत। वह बोनाहल ही था जा उम सोने स राक रहा था।

लातमा का आविर म उस समय नीट आयी जब सभी लाग जागने लगे थे। उस दर तक सोय देख प्रभा उसे गगान भीतर पहुची फिर न जान क्या सोचकर लौट गयी। कोट आधा घटा बाद छाया गुनगुनाती हुई भीतर पहुची और अपन भार्क का अप तव साथ पाकर यह कहती हुई उस भरभोरन लगी—

—रात का मुर्गी चुरान गय व क्या ?

आनाजानी करक भी लातमन न बरबट उबर मामन की आर दया। हमरे म विटकी स आनी धूप का दखनर वह जल्दी स चारपाइ छात्रर उठ गया हुआ। दूसरे ही क्षण मुह हाय धाव व गार् वह रसाई म पहुना और प्रभा का सामन पाकर पूछ बठा—

—तुमन मुझ दर तक सान क्या किया ?

—साचा दर स नीट आयी हागा। —प्रभा ग सरन उत्तर दिया।

अपना बहन व हाय स चाय का गिनाम और पराई लत टूट वह काव व पाइ पर बठ गया। चाय की पहना चुम्का तनर उतन बना—

—आज मय म बन्त-सा वाम है। टन भर सचियाँ तातनी है और मैं अप तव धर पर हूँ।

सचिया न अधिन मरम का अपन गमान म बांध उगा जन्म जन्म पराई मजरा और चाय का आगिरी पूर पाकर गया हा गया। उमन उतावतवत का कारण धर म बरन प्रभा जान गया।

त्रिम ममद व म मय न पन्ना मय मय गूरज उतर आ चुका था। तब नी मरम और मय मय—नीना काम म तव मय मय। ताता अपन प्रयोग सचियाँ ता

रह थे । सत्र स पहन दबता के पास स गुजरते हुए उसने मुम्वरानर उसकी नमस्त का जवाब दिया । जगन्नीश ने दूर ही स चिरलाकर नमस्त की इसलिए उसकी आर न जाकर लालमन मिडी की कतार की ओर बढ गया जहाँ सरस थी । उसम कुछ सुनने से पहले ही लालमन कह उठा—

—सरम तुमने मरे मन की दाति चुरा ली है ।

—रोना तो इस बात का है कि औरत फरियाद करना नहीं जानती ।

—जो कुछ मैंने बल पूछा था अगर तू उसी वक्त प्रता देती तो मैं इतना बेचन नहीं रहता ।

—अपन का भी तो आपन चन नहीं दिया ।

—सरम वे प्रश्न रात भर मुझे कोचते रहें ।

सरस ने निगाहे उठाकर लानमा की ओर दग्वा और बिना कुछ कह अपने खाचं से कुछ कागज निकानर उसकी ओर बटा दिए ।

क्षण भर को लालमन उन कागजा को देखना रहा, फिर जब कुछ समझ म नहीं आया तो पूछ बटा—

—क्या हैं य ?

—आपके प्रश्न का उत्तर ।

—य कागज ?

—य वे पत्र हैं जिन्हें मर पति ने तनाव के दौरान मुझ लिखा था ।

—मं इनस क्या कहेंगा ?

—पत्रन स आपको पत चल जायगा कि आखिरी वक्त तक क्या गुजरा था । आप हिचकिचाइयगा नहीं गत क्षद पटकर देग लें ।

लालमन की समझ मे अब तक भी बात नहीं आयी थी । पास के एक बडे स पत्थर पर बठकर वह उन पत्रो को पत्रन लगा । सरम अपन काम म लगी रही । उन सभी पत्रा का पत्रने म लालमन का पत्रह मिनट स अधिक नहा लगा । सभी म लगभग एव ही बात थी—सरस स तलाक से मुकर जाने का अनुरोध । हर पत्र म गिडगिडाहट मरे वाक्यो मे क्षमा-याचना की गयी थी । सभी पत्रा को पत्र लन क बाद सरस की आर हैरत क साथ देखते हुए लालमन न प्रश्न किया—

—जब तुम्हारे पति न मान लिया था कि सभी दोष उसकं थे तो फिर तुमन उसके बार बार क्षमा मागने पर भी उसे क्षमा क्या नहीं किया ?—लालमन क स्वर मे राह्त थी ।

—इसलिए नहा कि मैं पत्थरदिन ठहरी ।

—सरस, सचमुच तुम्हें समझना बहुत ही बठिन है ।

—हर सरल चीज को समझना बठिन हाता ह ।

—तुमन यह नहीं बताया कि तुमने अपन पति पर दया क्या गहा की ?

—मैं ! उम उमक गाग गती गमभा ।

—उताव इतरार । घोर मागी मांगी क बाग मो ।

—हो ।

—तुम तो गती बरहम गहा दीगती ।

—आपका प्रेम तो क्या हुआ ही था ? कि मैं अपनी परित्रहीता के लिए ठुकराई गयी थी या मैं तुम्हें तमार की मांग की थी । सारा तो मैं नि धानकी सा धारा उमर भित गया हुआ ।

—मैं इग दार क मिला मासिमा हूँ । तायम बट्टन अधिर प्यार क कारण ही यह पत्र हुआ है ।—सालमा । पत्रम भिन स्वर म कहा ।

—जब प्यार ही तो फिर दार क त पत्र हुआ सता है । मैं अपना पति को इतना अधिर प्यार किया था कि कभी भी उस पर इग दान का पत्र नहा किया कि दाराय क बाग भा उतारी पार्स सगिती हो गवती है । मैं उम दाराय क लिए माग कर दिया था । दाराय जस कि मैं पत्र ही पत्र भाषी हू पत्नी की सबसे सनरनाय सौत हानी है । उसम भी सनरनाय थी यह धीरत जिमस बाज धाना मरे पति क लिए निनात धमम्भय था ।

—आह ! तो फिर सलाह पर अड रहन का यही तुम्हारा सबसे बड़ा कारण रहा होगा ।

—तायम ।

—सरस अभी अभी तुमने कहा था कि तुम अपना पति को बहुत प्यार करती थी ।

—करती थी ।

—बहुत ? अब भी करती हो ?

—यह बच्चा का सा प्रश्न क्या कर रहे हैं ?

—मुझे कभी उतना प्यार कर सोगी ?

—आप ही सोचकर देखें ।

—अगर सचमुच ही तुम मुझे बहुत प्यार करती हो तो इन पत्रों को फाड़ कर फेंक दो ।

—नहीं, इन पत्रों को मैं नहीं फाड़ सकूंगी ।

—इसलिए कि ये तुम्हारे पति की अमानत है ? प्यार की निगानी ?

—नहीं ! बवल इसलिए कि मेरी बच्ची बड़ी होकर सलाह लेने की मेरी विवशता को समझ सके ।

सालमा एबटक सरस को देखता रहा ।

—सच बात तो यह है कि मेरे पति को मरी आवश्यकता कभी नहीं महसूस हुई थी ।

—यह व स कह सकती हो जबकि अपने पत्नी म उसने यह लिखा है कि तुम्हारे बिना उसका जीवन श्मशान की तरह होगा ।

—यह बात किसी दूसरे उद्देश्य से कही गयी होगी ।

सरम की बात सालमन की समझ म नहीं आयी । वह उसे उसी तरह एक-टक देखता तो रहा पर उसकी बात का स्पष्टीकरण नहीं चाहा । उसके भीतर कोई दूसरा ही प्रश्न था । कुछ क्षण चुप रहने के बाद उसने पूछा—

—तुमने कभी कहा था कि अब तुम प्यार शब्द पर विश्वास नहीं करती । एक ही बार क थोख पर तुमन ऐसा कहा था या इससे पहले भी किसी को प्यार करके घोखा खा चुकी हा ?

—अपने पति को छाड़कर मैंने कभी किसी को नहीं जाना । उसके बाद तो मैंने यह निणय किया था कि फिर से कभी किसी को प्यार करन की कोशिश नहीं करूँगी लेकिन बात कुछ से कुछ हो गयी ।

—तब तो मुझसे प्यार करके तुम पछता रही हागी ?

—नहीं ।

—तुम्हारा उत्तर इतना रस्ता क्या है ?

—आपको प्यार करके दुनिया की कोई भी श्रौत कभी नहीं पछता पायगी ।

—ऊटपटाग बातें क्यों करन लगी !

—श्रौत जब भी मद के सामने हृदय की सच्चाई रखती है उग ऊपगी ही समझा जाता है । खर, अत्र ता प्रश्न यह है कि अगर सचमुच ही आप मुझे बहुत चाहत हो तो आपको अपना प्यार बाटना होगा ।

—मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ।

—क्या यह सम्भव है कि आप मर साथ साथ मरी बच्ची का भी उतना ही प्यार करें ?

—उतना ही का तो बचन मैं नहीं दे सकती पर उसे भी हृदय से प्यार करूँगा इसका विचार करता ।

—एक घात और । आपको शराब नहीं पीनी चाहिए ।

—तुम्हें किस मालूम कि मैं शराब पीता हूँ ?

—मैं नामी शराबी की पत्नी रह चुकी हूँ ।—मुग्धराती हुई वह बोली ।

—मैं शराबी नहीं = अक्सर न पी लिया करता हूँ ।

—गुरु म सभी अक्सर से पीकर फिर राज पीन लग जात है ।

—अगर तुम चाहती हो तो मैं शराब छुड़गा भी नहीं । और क्या चाहती हो ?

—और कुछ नहीं ।

सरस को बचन दे जाने के बाद तालमन ने अपना आप से प्रश्न किया कि वही शराब छोड़ना कठिन तो नहीं । उसी विश्वास था कि वह उस छोड़कर रहना क्या कि मुद्द वह उससे बचने का उपाय ढूँढ रहा था । अंत तो बहाना मिल गया था । वह ख्याल था ही था कि सरस ने नहीं—

—आपके घर और गाँवजाल भरलता से आपकी मुझे अपना नया देने ।

—तुम तो गाँवजाल से नहीं करती ।

—यहाँ डरने और न डरने की बातें हैं ।

—जहाँ तब मेरे घर का प्रश्न है उमर तब तुम क्या चिन्ता करती हो ?

जबकी वह आ जान पर जाना का बातें गयीं तब गयी । बगन भरने के लिए बारा की कमी हो उली थी तब तब वह पूछने आ गयी था कि बारा बगन कहीं रखा जाय । जातमान न उमर कहा कि पत्नी का छाया म छाया कुछ ही घन्टी में घुसा बगन के घान हा गार मित जायगे । जानमन सरस से हृदय चढ़ाना का और जा हा रहा था कि उमर का पण्डित से सिमा के आवाज भी । मुग्धरा दमा । रामजनन उमी की और भयना चला आ रहा था । पाग घान ही उमर कहा—

—घरमन नया का मन में बहाना का गया थी ।

—क्या ?

—एकान्त के आमार का हृदय ।

—कभी बच्चा का ?

—तब तब तब घर का और मैं आपका घर का गया ।

—दान का छा तब नमन ।

देव ती जो आवाज दत हुए लालमन न कहा—

—दबती, तुम सभी वाम सम्हाल ना, म धरमेन का लखन जा रहा हू ।
रामजतन के साथ वह गाव की आर दौड पडा ।

धरमेन के घर क मामने कोइ दस ५ द्रह मजदूर लडे थे । लालमन सीध घर के भीतर पहुँचा । भीतर भी छाटा मोटी भोड थी जिनम औरता की सरया अधिक् थी । किसी तरह रास्ता पात हुए वह धरमेन की चारपाइ के पास पहुँचा । उसकी भाभा और मा उदास चेहरा लिय उसके सिरहान खडी थी । दोना के चेहरा से साफ जाहिर था कि ब रा चुकी थी । लालमन परनजर पडत ही धरमेन की मा फिर स गे उठी । उसकी आर ध्यान दिये बिना लालमन धरमेन क चेहरे पर भङ गया । उसके माथे पर हाथ रखा । वह धक्क रहा था । गरदन के पाम की गिल्टिया फिर मे ऊपर आ चुकी थी । लालमन की उपस्थिति का पता धरमेन की भी चल गया । उसने धीरे धीरे पलकें ऊपर उठायी । अपन सूख चेहर पर एक नकली सी मुसकान लात हुए उमन कहा—

—ये लाग नाहक मुझे बहुत बीमार समझ बठे हैं ।

—तुम सचमुच बहुत बीमार हा ।

—बहुत बीमार आदमी बातें कम कर सक्ता है ?

बाहर स मोटर क रजन की आवाज आयी । दूसरे ही क्षण धरमेन का भाई डाक्टर क साथ भीतर आ गया । डाक्टर अभी अच्छी तरह उसकी नजर देख भी न पाया था कि धरमेन न मुह का दूसरे हाथ से दबाय इशारे संवताया कि उस ऊबकाई आ रही है । उसकी भाभी दौडकर वरतन ले आयी । उसक आते ही धरमेन ने वमन किया और डाक्टर न ज छोडकर उलटी के उस तरल पदार्थ को देखन लगा जिसका रंग हरा हरा सा था । अपन चेहरे के भाव का छिपात हुए डाक्टर ने कुछ मिनटा तक धरमेन के गरीर की जाँच की और तब जल्दी जल्दी इजेक्शन की तयारी म लग गया ।

कोइ ५ द्रह मिनट बाद डाक्टर न सबत से धरमेन क भाई को बाहर बलाया । लालमन भी साथ हा लिया । दूसरे कमर म पहुँचकर डाक्टर न निर हिलात हुए कहा—

—होपनेस बेस ।

—आप क्या कह रह है, डॉक्टर ?—धरमेन का भाई पूछ उठा ।

—मैं सही कह रहा हू । उसकी उलटी का हरा हरा रंग आपने देखा ? वही सभी कुछ कह गया । इस तरह के मरीज की उलटी जब हरे रंग की हो जाये तब समझ लेना चाहिए कि अब कुछ नहा किया जा सक्ता । मैं सूर्ई दे दी है, फिर भी दो-तीन दिन से अधिक उसका टिकना असम्भव है ।

लालमन चुपचाप सुन रहा था पर धरमेन क भाई की समझ म दान बिल

बुल नहीं आयी थी। विस्फारित नत्रो से उसने लालमन की ओर दृष्टा। लालमन कुछ न कह सका। उसने अपने हाथ को धरमन के माई व कंध पर रख दिया।

कुछ मिनट बाद डाक्टर के चले जाने पर धरमन ने माई की ओर देखते हुए धीरे से पूछा—

—डाक्टर ने क्या कहा ?

—वहाँ तुम बहुत जल्द आँछे हो जाओगे।

—तुमने कभी नहीं सुना ?—एक भ्रति कमजोर स्वर में धरमन ने पूछा।

—क्या ?

—यही कि मरनेवाले से भूठ नहीं बोलते।

बगल में खड़ी उसकी माँ चिल्ला पड़ी। उसे धीरज बँधात हुए लालमन ने कहा—

—इसे जोगे का बुखार है मीसी। एसी हासत में मुह से अनाप शनाप निपलना स्वामाविक है।

धरमन की माँ और उसकी मामी से डाक्टर की बात छिपाकर रखी गयी। लालमन को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि डाक्टर ने चार मिनट पहले उसके सामने जो बात कही थी वह सच हो सकती है। एक लडके से अपने घर उसने खबर मिजवा दी दिया कि धरमन की हासत खराब होने के कारण वह रान वही बितायगा।

कुछ घड़ी बाद जब धरमन का बुखार कुछ कम हुआ तो उसने पानी माँगा। उसकी मामी दूध ले आयी। धरमन सिर हिलाकर इनकार करते हुए बोला—

—पानी।

—पानी तुम्हारे लिए ठीक नहीं।

—पानी ही लेती आओ, मामी। हो सके तो जरा गरम कर देना।—

लालमन बोला।

पाँच मिनट बाद वह गुनगुने पानी में नारंगी का रस मिलाय लायी। अपने तकिये व सहान सम्मलकर बँठते हुए धरमन ने उसके हाथ से गिलास ले लिया और एक ही बार में उसे खाली कर दिया। उस तपति नहीं मिली थी फिर भी गिलास सौटाकर जीभ से अपने हाँठा को चाटता हुआ वह लट गया। लालमन को गौर से देखने के बाद उसने लडखड़ाई सी आवाज में कहना शुरू किया—

—पूनियन टूटने न पाये। मेरे बाद तुम्ही उसकी आत्मा हो। मुझे विश्वास है मेरे बाद तुम मजदूर व पयप्रदगक होगे। उनके इक की हिफाजत में तुम्हारे हाथ छाड़े जा रहा हूँ। पूनियन को मरी धरोहर समझना। मजदूर बँटने न पाए।

—डाक्टर ने तुम्हें अधिक बालने से मना किया है।

लालमन की इस बात पर वह हँस दिया ।

—और क्या कहा है डाक्टर न ?

—कहा है तुम जल्द अच्छे हो जाओगे ।

—बीमार होगा वह डॉक्टर जिसने ऐसा कहा होगा ।

—तुम्हें क्या हो गया है बेटा, तुम इस तरह की उलटी सीधी बात क्यों कर रहे हो ?

—मा ! विमला दीदी का खबर मिजवाकर बुलवा दो । मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ ।

—तुम्हारा भया उसे लन गया है —भराई आवाज में उसकी मा ने कहा । धरमेन ने आँखें बंद कर ली । उसके हृदय की धड़कनें तेज थी । पास में बड़े गीतम, किंगोर और घनश्याम उसे एकटक देख रहे थे । कुछ देर बाद उसने आँखें खोली । चारों ओर देखा, फिर आँखें घनश्याम पर रक गयी ।

—अब पाटिया में मैं भाग नहीं लूँगा, घनश्याम ।

—कौन कहता है नहीं लागे ?

—जो नहीं लेगा ।

—तुम्हें आराम की जरूरत है धरमेन ! अधिक बातें न करो ।

—तुम लोग इतनी जल्दी मुझे चुप करना क्यों चाहते हो ? अभी तो समय है ।

इसके बाद वह कुछ ऐसी बातें करता रहा जो किसी की समझ में नहीं आयी । कोई आधा घंटे बाद डॉक्टर की सूई ने अनाम असर किया और उसे नींद आ गयी । सभी लोगो के चले जाने के बाद लालमन और घनश्याम वही बड़े रहे । काफी देर बाद धरमेन की भाभी उमकी बहन और वहनोई के साथ भीतर आयी । उसकी बहन रोती चिल्लाती भीतर आयी । लालमन ने धीरे से कहा—

—सो रहा है जाग जायेगा ।

भाभी ने विमला को पकड़कर समझाया । चुप होकर वह धरमेन के सिरहाने पहुँची और पागल की तरह अपने भाई को अपलक देखती रही । उसकी आँखों के आसूँ अब भी बहे जा रहे थे । अपनी माँ से लिपटती हुई वह पूछ बठी—

—तुम लोगो ने हम पहले खबर क्या नहीं दी ?

—कुछ घंटे पहले तो अच्छा था । सभी कुछ एनाएक हो गया ।

—वह शुरू से अब तक अपनी बीमारी को तुम लोगो से छिपाता आया । भाभी, तुम भी कुछ न जान सकी ?

भाभी की आँखों में आँसू बहे चले ।

आम-नास के लाग बारी बारी में आने जान रहे । इस तरह की बीमारी अभी पहली बार देख रहे थे । डाक्टर ने बीमारी का नाम कारसीनोमाटोजिस

बताया था। जय श्याम श्याम म प्रणय किया गया कि यह वीर भी बीमारी है ता किसी को कहत गुना गया कि यह ब सर ही जगी वा, चाज ठहरी। तालमन न जय कुछ घनिष्ठा को बताया कि धरमन बहुत शिना स बीमार था ता कुछ ने तो इस बात का विस्वास नहीं किया क्याकि किसी ने ता उस कभी बीमार नहीं देता था।

धरमन और धनदशम १ रात वटा प्रितार् ।

सुबह घर के सभी लोग न दया कि धरमेन की हालत कुछ सुधरी हुई थी। उसकी माँ का साता म राहत थी। उसकी भामि और वहा १ मन ही मा दबी मया को धयवात् लिया। नूठे जलाय गय और घर धीरे धीरे अपनी पुरानी रोनर पान लगा। धरमन का ध्यान स दयत दृग् उमके भाई न स्वय का सात्वनन दो और टानटर का सवनी मानन म अपन का विवग पाया।

धरमन से विशाइ लत समय जानमन न उनके हाठा क बीच एक मुमकान दखी। वह गन कठिा और मि न मुमकान थी। तालमन अभी चौपट क पास पहुँचा ही था कि धरमेन न करवट वगत हुए पीछ स कहा —

—देखना तालमन पहुचन म नर न नर दना।

—तुम चिंता न करो।

तालमन के मुह से यह वाक्य अपने आप निकल गया था जयकि धरमेन ने क्या कहा था वह बात उसकी समझ म नहीं आयी थी। रास्त भर वह उस बात का मतलब निकालत हुए चलता रहा। उसक सामन दो तरह का बात श्रास मिचौनी सी खेल रही थी। वह दोनों सम्भावनाआ पर सोचता चल रहा था। न जाने वीर होकर रहगी।

वह चलता रहा सभी कुछ भूलकर और धरमेन क बारे म सोचना हुआ। बीच बीच म सरम की याद खुद व खुट आ जाती था।

गाँव मर म दो ही चर्चाए हो रही थी। घरमेन की अकस्मात बीमारी या गहर म दगा फसाद, य दो बात या जा सभी कर रहे थ। घरमेन की बीमारी पर सभी को हैरानी थी और गहर के हगाम म सभी की चिन्ता। अमृतपुष्ट युवा वण पथराव स अन्न की सतोप प्रणाल कर रहे थ। दिन ष्टाडे दुकान लूट ली जा रही थी। तो फाड़ और मार पीट। गाँव के लाग टर क भाग शहर नही जा पा रहे थ। बस उलट ली गयी थी। किसी मन्त्रा की माटर मे आग लगा दी गयी थी। पुलिस थान का चक्काचूर कर दिया गया था। गिरजाघर और मस्जिद पर भी पथर चलाय गय। किसी राजनता का घर जना दिया गया।

लालमन का दोना बाता की चिन्ता थी—घरमेन की बीमारी की भी और गहर की अगति की भी। उमक अपने खयाला म भी खलबली थी। गहर के नौजवाना को मडकने देख कही गाँव के नौजवान भी न मडक उठें। अगर घरमेन उह धीरन का पाठ न सिखाता तो व बहुत पहल ही मडक उठे हात। लालमन का मन सेन के कामो म नही राग रण था। इसन तीन कारण थे—घरमेन की बीमारी गहर की गडबडी और सरसकी गहराजिरी। बल रात सरस का धच्चा भी एवाणक बीमार पड गया था। दक्ती के कहेनुसार इस समय उम लिए सरस डाक्टर क पाम गयो हुई थी। लालमन क सभी खयाल इसी त्रिनाण क बीच ब द थ। इस दायर के भीतर यह अनुमाने लगा था। सरस अगर सामन होनी तो गायद वह बाकी दो खयाला स कुछ गण के लिए छुटकारा पा सक्ता था।

चन् मिनट पहन घड दक्ती स बातें कर रहा था। उसनी बात से तो यह आभास उमे हुआ था कि गायद कुछ दर स सरस स्वत पहुँच जायगी। घाठ बजन को था और यह घम मां आन नगाय रह रणार सामने की पगडडी की और देख कना था। मन नी मन वह भाव रहा था कि अगर दस बज

तब यह गरीब पुरुषों को उमरने था। की सम्मिलित गरीब रह जायगा। पर यह एक ब्रह्म तब जब्रर था जायगी गानना का एका विधान था। परमा का बीमारों की गवर गुणार बन यह मरम म जी भरहर बाँते गरी कर मता था। जी भरहर बाँते ता यह उमर कभी भी गरी कर पाया। हर बार यह घना मरिगत म बहूँ सारी बाँते गिर उमर काग फरिवा था पर न जानना उमर नामा हा। ही उा मरान् हर्द बाया म स बापी बाँते उमर र माग म कपूर की तरह उदजायी। यह मरग क इतिहास का धारणा था त्रिगत नामन परहर बाँते तो दूर यह गुण का भूत जायगा। मामा का मा उमा एगार रिपा था पर उमर नामा उमरा। एका स्थिति कमा गरी हर्द था। गरीब काग यी सयम बहा धतर था।

उमर गि यह मरग म इमा स्थान पर बाँते कर रहा था कि धरमन का गया था। सरग यही म टन गयी थी और धरमन। गुरी सम्मोरता क माय बहा था कि अत्राव धारणा था उमर धोरन म। धरमन की उमर बात म मानमा ग मा ही मा एव मय ता प्रभुभव रिपा था गोवा यह धप्रयथा प्रगसा उमरों अपनी थी। कुछ अपिर गुना क गिर उमा धरमा म गूछा था कि सरग उमर कती लगनी है और धरमन न हमत हुए बहा था कि साया म एन।

यह धरमन क बार म गोरो लगा। मातमा तुगिया क सत्रस बड अनय की तरह गुनन की सवार था पर धरमन को कुछ हो जान की बात को मुनने क लिए यह अपन कोतवार नही कर पा रहा था। सत्रमुच ही धरमन क सम्पक म धावर उमर अपने भीतर भी मजदूरा और बरारा क लिए कुछ करन की प्रमिलाया सी जागी थी। इपर कुछ त्रिना स बह भी यही चाहन लगा था कि मजदूरो के लिए वह कुछ करेगा। धागानन स पहन और प्रगनी के बाद वह इसी नतीजे पर पहुँचा था कि उसक इस छोटे स विगाल दग म हर क्षत्र म कुछ न कुछ हुआ था। समी के लिए समी कुछ हुआ था, कवल रोना क मजदूर थे के जिनक लिए बहुत कम कुछ हुआ था। पहल भी उरान इस तरह की बात सोची थी और यह सोचकर अपन को असमथ पाया था कि उसने अकने स क्या हो सनना था। यूनिधन की ताकत दखन क बाद उस अपनी हीता पर विजय प्राप्त हो गयी थी। वह प्रवेला नही था वह मजदूरा के साथ था और मजदूर उसके साथ थे। अब उसे पूरा विश्वास ही चला था कि यह नया साल मजदूरो का साल होगा। कोई भी मजदूर अब राजनेताया के बहवाव म आने को तयार नही था। बार बार के भूठे दिलासे से लग आ गये थे वे। उनके हर सवालो का हनेगा यही जवाब मिलता था कि बाद म देखा जायगा लेकिन अब यह बात पुरानी हो चली। उनका जो हक उ ह मिलना है वह इनी क्षण मिलनर रहेगा। अभी नही तो फिर कभी नही। य धरमन क गान थ जिसस सत्रमुच ही सरवार

तामुन ही रिमी मारग स हा रग था था वह माप उत्तरजा था ? दूसरा उत्तर उसन पाग गी था । यह ह्मण न तुस वग व पा म रग है तांरन उत्तर कनी यह तहा पाग रि भग्न अधिहार पाग न विग तांरन की भावपरता थी । तांरनी पयराय धीर दगा गगां रग्न भगनी गतिन का प्रगात करता उसर । तजरा भ तांरनी न तिवाय धीर कुछ भी नहीं था ।

पगटनी भव भी गृही पडी था । सरग का र्ग भी कार्द नामागिगान नहा था फिर भी वह भ्राम गग व ही रग । तांरन उमरकर फिर बिहार गव भ । भग्न उमा म हा मी तांरन रि पया त हा भयवा गरग व पट्टान की घांती बटून सम्भावना भी जाग र गी । मी का र्ग चारर पाटरर तांरन फिर ग उसी स्थान पर छा गया त ही स रग । अधिग दग ता रिगां पढ रनी थी । कार्द घट बांर यह हाग हांर चेतन की भ्रान बड़ तांरन वांरन था रि तभी पगटनी व दगर छार पर उमा रग भ्रान्ति दगी । धीरे धीरे भ्रांति स्पष्ट होी गयी और तालमन का पहातात दर गी लगी रि वह सरस थी । सरस जिस वं हुआ म पहान सकता था ।

कार्द दम मिनट बांर सरस उमके सामन था । तांरन का उसम ता पूछना था वह त पूछकर उसन गिग्याचार व तात पूछा—

—कना है तुम्हारा वच्चा ?

—कुछ भ्रच्छा है ।

—कया बहा टाटरर ने ?

—ठड लग गयी है ।

—दवाई के लिए तुम्हारे पास पसा था ?

—था तो नहा पर मित गया था ।

—दूसरो स मांगे गी हिम्मत तुम्हें हो गयी और मुग्ध नहा ।

यह चुप रही । लालमन ने पूछा—

—मितना खच माया ?

—बहुन अधिक नहीं ।

—फिर भी

—आपको विश्वास था कि मैं भ्रांकी ?

—मैं खच के बारे म पूछ रहा हूँ सरस ।

—वहा न बहुत अधिक खच तही हुआ ।

—फिर भी तो कुछ खच हुआ है उसके बारे मे मैं जानना चाहता हूँ ।

—यही कोइ बीस रुपय ।

—अगर तुम मुझे वास रुपय के नायक समझनी तो यह पगा किसी गर से न लकर मुझ से मागती ।—यह कहकर लालमन न जेब से पचीस रुपये

निनालकर सरस की घार बढ़ा लिए ।

—अपना क्या आयस्यता है ?

—तोता व लिए रहता हूँ तहाँ स तुम व उधार लिया है ।

—नहीं ।

—नहीं क्या ?

—आप उसकी चिन्ता व करें । मैं न महीना की मुहलत पर पता दिया है ।

—समय व पहल तोता नन व क्या त्रिगता है ?

—इस वार जब आयस्यता पलेगी ता व अन्वय आपस भागगी ।

—पगगी तो ले सकती हा ?

—मैं इसरी जकरत नही समझती ।

—मैं ता पराये से भी गया गुजरा हूँ ।

—आप गनन व समझें ।

लालमन व वार वार अनुगव पर भी सरस व पसा गही लिया । नाट अपनी जेब म रगत हुए लालमन न हार हुए गिलाठी की तरह सरस की ओर देगा । सरस अपने वामा म लीन थी । लालमन उस देखता रहा । सरस को समझना उसक लिए उतावा आता नहा था ।

वातावरण एक वार फिर धुंधला हुआ और वाता पहली वार की तरह फिर स खिलर गये । मूरज फिर स चमकन लगा था पर मौसम ठंडा हान व कारण उसम उष्णता की कमी थी । वाताम सज्जिषा की बीमन काफी अच्छी थी । यही कारण था कि सजी व मना व सभी काम करने वाता व गरीर म प्रजीव स्फूर्ति थी । एक एक पस अभिन व लिए एक एक वृद्ध का अधिक बताया जा रहा था । कुछ ही क्षण पहल ने तातमन व सुस्त गरीर म भी स्फूर्ति आ गयी थी ।

कार्दषण मर वाता सरस वा के नीचे बठी बनर सीधी कर रही थी । देवकी के पाम न हाना हुआ लालमन उसके पास पहुँचा । वह भी सामन के बन् म पत्थर पर बठ गया । वह दान शुरू करने की मोच ही रहा था कि सरस कह उठी—

—आपने बठ पूछना चाहती हूँ ।

—पूछा ।

—बुरा तो नहीं मानेंगे ?

—मुझे तो मालूम भी नहीं कि तुम क्या पूछागी ।

—एक एमा प्रदन जा कई दिन म मरे निमाण म है ।

—अब तक क्या नहीं पूछा ?

—दम डर से कि वहा आप बुरा न मान जायें ।

—मैं बुरा नहीं मानूंगा ।

—मैं मामा के बारे में पूछना चाहती हूँ ।

एक क्षण चुप रहकर लालमन ने कहा—

—मामा के बारे में क्या पूछोगी ?

—आप उस बहुत प्यार करते थे न ?

—हां ।

—बहुत अधिक ?

—उतना नहीं जितना तुमसे करता हूँ ।

—मुझे चुप करने के लिए वह रहे हैं ?

—सच्चाई रह रहा हूँ ।

—आप जब उस बहुत प्यार करते थे तो फिर आपने उसे अपना नतीजा की कानिशा क्यों नहीं की ?

लालमन के पास उत्तर नहीं था । सरस ने अपने प्रश्न को दोहराया और लालमन से चुप नहीं रहा गया । नीचे से एक कबड उठाने पर उससे खलते हुए उसने कहा—

—जो असम्भव हो उसके लिए निष्फल प्रयत्न से क्या लाभ ?

—मामा और आपका एक हीना असम्भव था ।

—हां ।

—तो फिर हमारे सम्बन्ध के बारे में आप क्या कहेंगे ?

लालमन को फिर से कोई उत्तर नहीं सूझा । सिर झुकाए वह अपने हाथ के कबड से खलता रहा । सरस ने देखा कि जब लालमन से कोई उत्तर नहीं बन पड़ रहा है तो उसने धीरे से कहा—

—मैं तो मामा से भी बठिन सचान हूँ ।

लालमन इस बात को नकार नहीं सकता था । पहली बार उसने महसूस किया कि वह दुनिया का सबसे कमजोर आदमी ठहरा ।

सरस के घर से निकलकर लालमन ने अपने घर का रास्ता लिया पर फिर न जान क्या सोचकर उसने रास्ता गलत लिया था। समुद्र की ओर जान जाने रास्त पर चलते हुए वह पहने की सभी बातों को अपने मस्तिष्क में किसी कान में हमेशा के लिए बन्द कर देने का उपाय दूर रहा था। उन क्षणों को वह मजबूर रचना चाह रहा था। सरस के यहाँ पहुँचने से पहले उस यह मालूम नहीं था कि गरम उस घर पर अकेली मिलनी। जब उस मालूम हुआ था कि सरस घर पर अकेली थी तो वह डर सा गया था लेकिन सरस के चेहरे की आभरणमय मुस्कान को देखकर उस माहम प्राप्त हो गया था और अपने भीतर के भय का हटाकर वह भी निर्भीकता से मुस्कुरा उठा था।

इस समय समुद्र की तरफ के आग्निचोटी खल का दखत हुए वह सपने से प्रतीत होने वाले उन क्षणों को फिर से साकार करने में प्रयत्न में लगा हुआ था। सचमुच ही जो कुछ था सपना था वह सपना सा प्रतीत हो रहा था। सरस अपनी सभी सरसता के साथ उसका करीब आयी थी और लालमन ने उसकी आँखों में जो आना दिया थी वह प्यार में लबालब थी। लालमन कुछ भी नहीं समझ पाया था और फिर अपने आप सभी कुछ समझ गया था। जिस समय सरस ने यह कहा था कि वह लालमन को अपने विश्वास और भाग्य के सहारे छोड़ रही थी उस समय वह लालमन की बाहों में थी। उसकी बाँहें आँखों के भीतर की मूक भावनाओं को ममभने की लालमन ने कोशिश की थी और उसके फर्कते हाथों पर अपने कपित हाथों को रख ही लिया था।

कोई घंटे बाद जब लालमन उसके घर से निकलने लगा था तो सरस ने सहमी हुई आवाज़ में कठिनाई से कहा था—

—मुझे डर लग रहा है।

—तुम बाव ?

—ता कुछ हुआ ।

—जा तुम्हें हा गया उमर तिर ?

—ममा तहा हाता पारिण था ।

—आगिर क्या ? पछता रहा हा ?

—जिग था म मी टगी हू धार वर मय हा गयी ता फिर

—ता फिर क्या हा तापना ?

—आथ हो जाणा । मी क्यामा हागी ।

—आथ स परत तुम मगी ब । तामागी ।

—यह आप गहा है ।

—और कीत क्या ?

—आपर घर बात ता म्या गी टप ।

—व ना गही बहम जा मी कृ ना ।

यह बात कह जान पर भी सासना का उसका सच हान का कम निरवास था पर अविश्वास भी नहीं था उस ।

यह इन बातों से पहले की बातों के बाद म अधिन ध्यात स सोना चाहता था । व वाने जा उन बातों से पल हूई थी मन्होपी भरी बातें थी । वह सुमारी अथ भी उसका भीतर थी । सामन की उपनती लहरा म भी वह उस सुमारी का पा रहा था । इसी तरह का उ माद उसका अपन भीतर भी पदा हा गया था । बिद्रोही लहरा की तरह उमगी धमनियों का खून मा मचल उठा था और उसका सरस को एर औरत के रूप म पाया था और अपने को एक सम्पूर्ण मद के रूप म । अपन म पीरुप की सम्पूर्णता पान का वह उसका पहला अवसर था ।

उसके दिमाग म उस दुःख की पुनरावृत्ति हुई और होती रही । सामने का सागर उपनता रहा । वह भी ऊपर से गात दिखाई पडत हुए भी भीतर ही भीतर उपनता रहा । एक खलवती के मिट जान पर भी वह गात नहीं हो पाया था । उष्णता के बाद की वह क्षणिक गीतलता न जाने फिर कहा नायब हो गयी थी और वही अकुलाहट पदा कर देन जाती गर्मी फिर से उसकी धमनियों में कौंधन लगी थी ।

उसका फिर से एक बार सावा । मामा और सरस दो अलग चीजें थी । सामा के रूप से दावा औरत थी और औरतें हात हुए भी दावा म भिन्नता था । जमीन आसमान का फक । सरस को जान जिना लालमन कभी भी मह नहीं जानता कि औरत औरत म इतना बडा अंतर हो सकता है । मामा म औरत की सासियत तो थी मगर वह सम्पूर्णता नहीं थी जो सरस म थी । सरस तुम साक्षात् प्यार हो—उसका लहरा स कहा और लहरें उसकी हसी उडाकर किनारे

विशुद्ध अपर्याप्त, अगस्त ।

वह उठा बागों चट्टानों का पागल पता चला । तीन माह के मध्य बगीचे लगाए चट्टानों पर बड़े टुकड़े । १० मीटर से ऊपर पर्याप्तिया के चारजू भा उतरी छाँटा में आया था । १० मीटर के मध्यों की छतर बाँट विनयता था ता वह वह विषय प्राम्य ता अद्वैत गाथा मानने का कथा तयार नहीं हुए । इन्होंने हमारा भाग्य का मन्त्रण तार जाया मन्त्रिया का गिद्धार किया है और वस्तु वस्तु अन्वय पर भाग्य का मन्त्रण ता जीया आयी । तरकारी भर मित जान पर १०० हगगा में भाग्य हा गया है । पर छापी सा मन्त्री के लिए हम तरह आस लाया वह मन्त्रण में भाग्य विनयता का मन्त्रण लालमन अन्वयता नहीं था ।

वह चट्टानों में भी भाग्य उठा गया । मन्त्रण छाँटकर वह लीना तरफ के भाग्य के पत्तों के बीचों बीच पर चढ़ता गया ता । गाव की औरत सिर पर घास का बाँध लिये मन्त्रणता जान में पर लौट रही थी । अर्ध उभर चक्कर काटने के बाद लालमन अन्वयता में पडुच गया । भाग्य घटते ही लालमन के पत्तों तक पहुँच रहे थे वह घर की आरंभ चल पडा ।

उसके घर पहुँचते ही प्रभा ने तपाक स पूछा—

—तुमने कुछ सुना ?

प्रश्न सुनकर तीनमा चौक सा उठा । पहला यात्रा उस घरमें की आयी ।

—क्या ?

—सचमुच तुमने नहीं सुना ?

—मे क्या जानू तुम किन वार में बान कर रही हा ?

—भामा लौट आयी है ।

—क्या कहा ?

—भामा लौट आयी है । उसके ससुरालवाले उस छाड गये ।

—हमारा क्या लिए ?—अस्वच्छ स्वर में लालमन ने पूछा ।

—हा ।

—पर ऐसा क्या ?

—कारण तो मातम नहीं ।

—कब आयी ?

—आज ही सुबह ।

प्रश्ना की मन्त्रण स लालमन का सिर चक्करा उठा । पहला तो उस प्रभा की बातों पर विश्वास नहीं हुआ पर फिर बान उस अस्वच्छ भी नहीं लगी । वह अपने विभाग के हर कान में भामा लौट आने का कारण ढूँढता रहा । कभी इनका कारण यही तो मन्त्रण पर नहीं इस बात का भय उस क्या

होने लगा। मामा को प्यार बरके भी उसने कभी बोझ एसी हरकत नहीं की जिससे वह ममुराल से ठुकराई जा सकती थी। जिस मामा के बार में कुछ दिना से सोचना उसने एतन्म बाद कर लिया था वही मामा उस समय उनमें दिमाग में चक्कर बाटने लगी थी। मामा के ससुरागण में निकाल जान का कारण जानने के लिए वह बेताब हो उठा। विवाह के तीन सप्ताह बाद किसी लटकी का घर से निकालने की बात उसकी समझ में नहीं आयी।

काफी देर तक के तक के बाद लाजमन घर में निकल पड़ा। रास्त में वह तय करता रहा कि एसी हागत में मामा के घर पहुँचना उसके लिए उचित था या नहीं। पर बात तो उसमें घर पहुँचने की नहीं थी। भगत के यहाँ भी वह उसमें मिल सकता था। क्या इस वक्त उसमें मिलना उसके लिए ठीक रहेगा? इसी उद्देश्य के लिए वह बतलाता वह धनुवा भगत के घर के सामने पहुँच ही गया। उसकी आँखें मामा के घर की ओर की पर जग उधर कोई दिगार्द नहीं पड़ता फिर धनुवा भगत के दरवाजे तक पहुँचकर उसने भगत को आवाज दी। भगत हाथ में चिलम लिये सामने आ गया।

—मता तुम्हारे आने की बात मैं नहीं जानता था और कौन जान सकता था?—मुह और नाक दोनों से धुमाँ छोड़ते हुए भगत ने कहा।

—तुम्हारी याद आ गयी अच्छा।

—भूठ क्या वातें हैं लत्तू! मरी बात किसी की क्या आने लगी? यह तो बताओ कि तुम्हें किस मालूम हुआ कि वह लौट आयी है?

—कौन लौट आयी है?—अनजान वातें हुए लाजमन ने पूछा—

—अरे मेरे सामने क्या अनजान प्रश्न लग? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मामा लौट आयी है?

—मुझे कैसे मालूम होगा?

—तुम गाँव में नहीं रहते हैं क्या? खर भीतर तो चला।

दोना घर के भीतर पहुँच। लालमन अभी छप्टी तरह बठ भी नहीं पाया था कि बीच कमर के बोरे के भिलमिल पुराने परदे का हटाती हुई मामा सामने आ गयी।

—अच्छा तो हो न।

लालमन से राई उत्तर रहा बत पड़ा। वह एकदक मामा की देखता रहा। तीन सप्ताह में मामा कुछ से धुँड में बतल गयी थी। उसका पहरे का रंग उट गया था। बीमार भी प्रतीत हो रहा थी उस। लाजमन अगर उग वही और देखता तो पहचानता नहीं।

—मैं बतल गयी हूँ न?—एक सूँधी मुगलान के साथ मामा ने पूछा।

—तुम बत आयी?—आधिर लाजमन पूछ सका।

—भाज ही सुबह आयी है ।

—कब तक रहागी यही ?

—जब तक मौन न धा जाय ।

—ऐसा क्या कह रही हो ?

—सच कह रही हू ।

—भगडवर आयी हा ?

इतने म धनुवा भगत न कहा—

—मई मुझम पूछो में बताता हू ।

—बात क्या हुई है ?

—बात यह हुई है कि इसक पति के किसी सम्बन्धी को यह बात मालूम थी कि तुम दोनों एक दूसरे को प्यार करते थे । गान्गी से पहले उस सम्बन्धी न तो यह बात नहीं कही पर पिछले दिना एक मुर्गी के वारण हुए भगड के दौरान उसने गाव के सभी लोगो को गुना दिया कि गान्गी से पहले मामा तुम्हारी कुछ लगती थी । वस इसे बरसा कहकर घर से निकाल दिया गया ।

—इतनी सी बात के लिए ?

—इतनी सी बात के लिए तो इससे भी बड़े काण्ड हुए हैं ।

—पर यह तो अयाय हुआ ।

—कौन पडता है याय और अयाय के चक्कर म ?

मामा की हालत को देखकर लालमन के मातर वीत हुए भाव फिरसे सजीव हो गये थे ।

सरम स मिना वृद्ध कन्ही लालमन उनर घर न पहुचकर प्रदानवारियो क साथ ना मिला था और सरम आखिरी धरन तक उसका इतजार करती रह गयी थी । राम की पिछरी बर से लौटत हुए लालमन न चहा था कि एकर प्रार सरम से मिल ल पर यह सोचकर कि इस वजन मिलने से क्या लाभ जत्र सभी लोग घर पर हाग । वह उससे बातें भी तो नही कर सकता था । सुबह खेत ही म मिलन की बात साचकर वह अपने घर की प्रार बट गया था कि तभी उसे वह खबर मिली जिसे सुनत ही यह धरमेन के घर दौन पडा था ।

धरमेन के घर राम पाम के बहुत से लोग जमा हो गये थे । धरमेन की चारपाई के पाम पहुचकर लालमन ठिठक गया । दम नार उसका विस्वाम जवाब दे चुका था । उस पर नजर पडत ही धरमेन की भाभी न भराद हुई आवाज म कहा—

—सामने आ जाओ लालमन । न जान बब स धरमेन लगातार तुम्हारे ही बारे मे पूछ रहा है ।

लालमन का नाम सुनकर धरमेन ने पलक ऊपर उठाई । उन बेजुबानआंखा ने लालमन को अपने पास बुनाया ।

धरमेन की एकाएक बिगडी हालत की देखते हुए लालमन न उसक भाई से पूछा—

—बब से इसकी यह हालत है ?

—बारह बने से ।

वह धरमेन के बिलकुल पाम पहुचकर चारपाई क एन हिस्स पर दठ गया ।

—क्या बात है धरमेन ? तुम मुझे न रहे थ ?

गिर हिनाकर धरमेन ने हांभी भरी ।

जो होना था वह होकर रहा ।

धरमेन का अस्पताल की चारपाई पर रखा गया । उसका पलकें खाली । अपने माँ का दबा, फिर लालमन का । कुंठ वालना चांग—हाउ विन पर आवाज बाहर नहीं आयी । उसने दोबारा प्रयत्न किया और दास पहुँचे कि परिवारिका उसके पास पहुँचनी उसने मुह में एक गान निकला ।

—मा ।

शोर उमन आगे मूँ थी । हमें गा क गिठ । उमका भाई उच्चा की तरह रो उठा । लालमन का गूँठ गवल्डू था । अपने निच । हाठ को गता स गवाय वह धरमेन की लाश पर भुग गया और उसकी आवा म आस की ग बूँ धरमेन के गाल पर टपक पडा व प्रथम आसू एक मित्र क थ । किशोर और धनश्याम केविन से बाहर ।

और लालमन यह मानने को विवश हो गया कि उसे मरने में बठारता का जा दावा था वह मिथ्या था । अगर सत्रमुच यह बठार टोता ता सभी के सामने वह बच्चा की तरह सिमझिया लीं लता रहता । अत्र तत्र अपने म जिस बठारता का दावा उमन किया था वह धरमेन का साग चल बसी । एक और धरमेन का अर गी को पकडे उमकी मा माभी और वहन तिला रही थी और दूसरी अर लालमन एक वान म अपने आसुगो का वहाय जा रहा था । उसकी सन्धिया पिघलकर बन्न गयी थी ।

धरमेन की राख क ठडी हा गाने पर भी लालमन से गायी नहीं गया । उम विलान की लाश कोशिन करके भी प्रभा ममफन रह गयी थी । लालमन के लिए धरमेन की मृत्यु उतनी आ चय की गान ता गहा थी तितनी की गाव वाला और मजदूरो के लिए थी कयानि पहन ही से उम पर विश्वास न करत हुए भी उस उमका थोडा उहुत आनाम मिल ही गया था । वह मृत्यु आश्चय न होकर भी लालमन क मा की गानि को मग कर गयी थी । धरमेन उम एक आनातन का अक्ता जिम्मणर छोडकर चला गया था । उम अपने ऊपर के विश्वास पर सन्ह होन लगा था । अगर वह अपने म कोइ रमजागी महसस करना ता वह थी अमेजी और फेंच से उमकी अमानता । इन गे भापाया की अगर उमे जानकारा हाती ता वर धरमेन द्वारा माये काम ता पूरे आनविश्वास और कुंगलता म निभा सकता था । इन पर भा वह निराग नही था कयानि उम उनदी ती । व्यक्तिया पर विश्वास जा जा अत्र तत्र सभी वामा ता मम्मालत आ रह थ । उस दिन उ । लागे ने तो उमसे बहा जा कि व मनी नामा का पहुँचे से अक्व गन क साथ करेंग अर सभी यही गान थ कि लालमन उनका मुणिया र । आगे गता लालमन का काम हागा और मगन म बूदना उन लोग का ।

माता का नाम था। गमना या तो घर धारणावनवान उम पर इतना विश्वास
 कर ५ तो ररर रग या तो गमा ५ रर रि वर विरवाम घरमन न उम
 पर निर्या ना । धरमा क या मुनियन उम घरमन का दुगरा रूप मानन लगी
 थी । धरमा की मृत्वा क तीगरे नि मुनियन की धार स तो गात्र सभा हुई थी
 उम मारी मारा न एक माय मातमन का प्रपना नता करार लिया था ।
 जोररर १ । तो धरमा माणा म मरी तद कट निर्या थी कि धरमन मरा नही ।
 मुनियन धीर मरदूर मांगीनन क रूप म रर हगगा सभा क बीचजीवितरहेगा
 धीर जय तद सावमा धारवन क साथ रहगा तव त तो यह कहना सूतता
 गयी कि धरमा मार बीच गी हे ।

इम यात का पना ता जानमा का वा म चना कि मृत्यु स पहल मुनियन
 की कापदागिनी मरिनि क कुछ प्रमुग मग्ग्या स धरमा न वचन ल लिया था
 रि य गात्रमा का धरना ता बना लें । त्रिग तरह भांग क य तसे लोग यह
 गात्र का तदार गी ५ कि धरमन धाज उनक बीच नही, टीव उसी तरह
 साममा की भी रर करर एग ही धारमास होत कि धरमन उसक वत क किसी
 धरमन धीर रर मग्ग्या का निरार कर रहा है । धरमेन की मृत्यु के वा
 धारण का जा यात रई यह ग्ट भी कि उसी नि से उसके कत को किसी न
 गी गत । साग गात्रन पर भी यह कृता कही नही मिला । धरमी के साथ
 धरमा नद गात्र उस सगी ५ दगा या पर लोत किसी ५ नही दखा ।

एम का सावमा गता स लीर रहा था कि रास्त म धनुवा मगत अपन
 माय ना व्यसिया का निव उसन सामन धा गडा हुआ । गुलमोहर क पैड क
 ती । तारा धरिनि ता राड हुए । पूरन पर मगत न वताया कि उसके साथ
 के दाना धारमिया का कोठीवाल न काम मे बाहर कर दिया है । धीर जब
 सावमा न कारण पूछा तो उन दोनो म मे एक न बताया कि वे लोग मुनियन
 म गरी हुए हैं इसलिये । सावमा न दमे वा कारण नही माना । उसने
 मोमारा पूछा धीर तत्र दूसर न बताया कि कोठीवाल भोरे न उ हे कहा था कि
 य हताता ५ भाग ५ लें पर चकि दानो ५ उसकी धमरियो की काई परवाह
 कि बिना हडताल म हिमा लिया था इसलिये तभी से वह उनके कामा म
 सुतागोनी करता धा रहा था । इधर पिछल निता सरदार से दोना की तबरार
 हो जरर क कारण उछे मोर मिल गया धीर उसन दातो को कह दिया कि वे
 वन स काम पर ५ धारें ।

मभी कुछ सुता के बाद सावमन न उन दोना म कुछ धीर प्रश्न यि
 धीर तत्र कहा रि इन वाता क लिए किसी भी हात म वह दोना को काम स
 गीे हुन सरता । उसन बात पर जोर दन हुए कहा कि यह अधिनार कानी
 वात्र का गी मितवा । उसन दोना स कहा कि व नल गाम मुनियन क मनी

से मिलकर अपनी गिरायत उनसे सामने रख । वह अपनी आर स एव बटव बुलायगा और जल्द ही इस वार में छारबीन करके वह मामन को मुलभाकर रहेगा । दोनों का आस्वासन दन हुए उसी कहां कि वे बिता न करें, उनके काम उन्हें मिलकर रहेंगे ।

लिलासा पाकर दानी वहाँ में चन गय और भगत लालमन क साप उसके घर की ओर चत पडा । रास्ते में कुछ श्घर उधर की वाता के वात् उसने कहा—

—मामा तुमसे मिलना चाहती है ।

कुछ दूर तक चुपचाप चलत रहने के वात् लालमन ने पूछा—

—क्या ?

—गायद तुमसे कोई जरूरी बातें करनी हा ।

—चाचा एक बात कहें ?

—मामा से मिलन का अब तुम्हारा जा नहीं करता ?

—नहां यह बात नहां ।

—तो फिर क्या बात है ?

—मुझे उसकी उस हालत पर दया आन लगी है ।

—दया तो उस पर मुझे भी आती है लालमन पर क्या करें ? उसका बाप के चलते उसकी जिन्गी तबाह हुई है । अब तो वह पैरा से रौट हुए फूट की तरह लगती है । इतने कम समय में इतना बडा परिवर्तन मैंने कही नहीं देखा ।

—क्या आत्मी हागा वह ?

—अब लालमन मुझे तुमसे एक बात पूठनी है ।

—पूठा ।—लालमन ने अनचाहे से कहा ।

—क्या नुम मामा को अब भी प्यार करत हो ?

लालमन चुप रहा । रास्ते क एक गुनमोहर के पड में दूसरे गुलमोहर तक पहुँचने क बाद लालमन ने भगत के प्रश्न का छोटा सा उत्तर दिया—

—हां चाचा ।

—उतना ही जितना पहले करते थे ?

—यह कहना शायद कुछ कठिन हो ।

—मामा तुम्हें आज भी उतना ही चाहती है ।

—वह कह क्या रही था ?

—उसके भीतर एक नयी आत्मा है लालमन ।

—किस बात की ?

—फिर स एव वार तुम्हारी बनन की ।

—तुम दण सम्भव समझत हो ? —लालमन ने भगत की ओर देखत हुए पूछा ।

—सम्भव और असम्भव की बात तो तुम्हारे बस की बात हुई ।

—मैं तो अब इसे असम्भव समझता हूँ ।

—इसलिए कि सरस का तुम गणित मन्व दने लगे थे ?

—श्रीर भी वारण हा मरना है ।

—मैं तुम्हारे और वारणा की सुनना तो नहीं चाहता पर इतना अवश्य कहूँगा कि अब जब तुम्हारी उदरत पहन स भी अधिष्ठ है ।

—आपको एक बात का जवाब देना चाहिए ।

—क्या है वह बात ?

—आमा का प्यार करके भी मैं कभी भी उस अपना बनाने का वचन नहीं लिया ।

—तो तुम्हारा मतलब है कि सरस को तुम ऐसा वचन दे चुके हो ?

लालमन चुप रहा और उनकी वह चुप्पी भगन के प्रश्न पर हामी मरनी भी प्रतीत हो रही थी । जानमा और कुछ न समझकर बसल जाता समझ रहा था कि आमा का उसकी आवश्यकता थी जब कि उस सरस की आवश्यकता था ।

अपने घर तक के बाकी रास्त का यथचित्त मानन की तरह चतुर उगन तय किया ।

लालमन को खोये खोये से देखकर सरस उसके पास आ गयी। अपने माथे के पसीने को बाह से पाछती हुई वह उस देखती रही। लालमन को इस बात का पता तक नहीं चला था कि सरस उसकी वगल में खड़ी थी। उसे मिनटों तक उसी तरह खोये देख सरस उसके आगे चली आयी। लालमन की तन्द्रा भंग हुई और उसने सरस की ओर दखा। इससे पहले कि सरस कुछ पूछती वही पूछ बठा—

—तुम मुझमें नाराज हो न ?

—नहीं तो।

—मुझमें दूर दूर क्यों रहती हो ?

—दूर मैं आपसे हूँ या आप मुझसे ?

—उस दिन का बदला लेती सी लग रही हा।

—किस दिन का ?

—जब तुम्हारे पास न पहुँचकर मैं मछुआ के साथ चला गया था।

—आपन तो जिस अधिक महत्वपूर्ण समझा उसे ही किया।

—प्रश्न महत्वपूर्ण का न होकर कुछ और ही था सरस।

—कुछ भी हो मुझे तो आपसे कोई गिकायत नहीं।

कुछ क्षण बाद सरस ने सामोरी तोड़ी।

—मैंने आज तक आपके सामने अपने भीतर की सभी सच्चाई को रख दिया है।

—मैं जानता हूँ पर यह क्या कह रही हो ?

—मैं नहीं चाहती कि आप मुझसे कुछ छिपायें।

—मैंने तो तुमसे कुछ भी नहीं छिपाया।

—छिपायगे तो नहीं ?

—क्यों छिपाऊंगा ?

—मामा के वापस आ जाने से आपका पुराना प्यार फिर से सजीव हो गया होगा न ?

—नहीं सरस, मैं जो प्यार तुम्हें करता हूँ वह किसी को नहीं कर सकूंगा ।

—पुरानी यादें !

—तुम्हारी पुरानी यादों की तरह धूमिल पड़ गयी है ।

—लेकिन एक बात है ।

—कौन सी बात ?

—कुछ भी हो मामा का स्थान मुझसे पहले है ।

—कभी था । पर यह क्या भूल रही हो कि शांती के बाद वह मेरे जीवन से निकल गयी थी और जब लौटो उस वक्त तुम उससे पहले मेरे जीवन में आ चुकी थी ।

बाफी देर तक दोनों के बीच बातें होती रहीं । फिर कुछ दूर बाद अपनी जगह से उठत हुए लालमन ने कहा कि उस यूनिवर्स की एक जरूरी बैठक में पहुंचना है और उसमें एक मुसकान के साथ सरस से बिनाई ली ।

वह सीधे बैठक में पहुंचा । वहां पहुंचकर देखा कि जिन लोगों का आना था वे सभी आ चुके थे । घंट भर की बैठक के बाद सभी ने यह तय किया कि बाकी वाले ने जिन पंचहत्तर मजदूरों को नौकरी से अलग किया है, उन सभी को अगले सात दिन के भीतर काम पर वापस नहीं लिया गया तो उत्तर प्रांत के सभी मजदूर हड़ताल कर देंगे । इस बात का सट्टमति के बाद भी एन एन सन्सिया ने सदह प्रवृत्त किया कि अगले दूसरे गाँवों के मजदूर धमकियाँ मचाकर सहम गये तो हड़ताल की सफलता अनिश्चित टट्टरी । इस पर लालमन ने कहा कि पिछली बार भी मजदूरों के संगठन पर गन किया गया था यह बात ठीक नहीं । यूनिवर्स के सन्सिया आमपास के सभी गाँवों में हैं और सभी कमठ हैं । उसमें बिनास तिलापि कि अगले हड़ताल को नौवत आय तो वह पिछला हड़ताल से भी अधिक सफल रहेगी । आशा में आकर उसने राजनीति का नपुंसकता का बयान करत हुए कहा था कि जहाँ राजननामा का गति समाप्त हो जाना है वहाँ यूनिवर्स की गति शुरू होता है । यह बात उसने व्यंग्य कहा था क्योंकि पंचहत्तर मजदूर जिन्हें दस-दस तात-तीन करके बाहर निकाला गया था उन्होंने सबसे पहले माँ प्रयाग के दरवाजे सम्मन्वय से छोड़ें उपर में निराशा हो जान पर अपनी परिस्थिति तय यूनिवर्स तक पहुँचे थे । यूनिवर्स ने वातावरण में मिश्रण प्रदान की गतिपूर्वक हल करना चाहिए पर बाताशान न जरा न जाना की बाद

गिनती नहीं ली तो यूनिफ़ॉर्म न बठक बुनार्दि और अपना को हडताल क लिए विवश पाया ।

घर वह काफी देर स लौटा । खान क वाद जब वह रमाई छोडकर घर को जाने लगा कि तभी प्रभा न पीछे से कहा—

—मामा आयी थी ।

लालमन ठिठक गया । उसन मुडकर अपनी बहन की आर देखा । प्रभा ने दीवारा कहा—

—मामा आयी थी । काफी देर तक तुम्हारी प्रतीणा करने के बाद चली गयी ।

—क्या कह रही थी ?

—सगुराल म जो कुछ गुजरा सुना रही थी । कह गयी ह कि बल वह तुमसे मिलने गेन पहुँचेगी ।

प्रभा के अतिम वाक्य न लालमन क समूच अस्तित्व का निलमिला दिया । वह खडा रहा । प्रभा न और कुछ बातें कही, पर वह सुन न सकी । किसी तरह घर के भीतर पहुँचा और चारपाइ पर बठकर सोचने लगा—कुछ ऐसी बातें जो पहले कभी नहीं सोची थी । सोच रहा था बल अगर किसी बहान बट खेत न पहुँचना तो अच्छा होता ।

रात ता बीननी थी इसलिए ठिठुरी सिक्कड़ी अलसाई चान से वह बीत कर रही और सुबह हाते ही लालमन को अपनी उधेडबुन के साथ खेत मी पहुँचना या इमलिए सभी बोझ क माथ वह भेत पहुँचा । खेत म उमसे पहले केवल जगनीग पहुँचा था । दबनी और सरस काई आघा घट जाद पहुँची । इसी जगह पर लालमन ने कभी सभी बसन्ती के माथ मामा की प्रतीणा की थी और आज वह यह चाह रहा था कि किसी भी हालत म वह यहा न पहुँच । सरस दूधपीठी लायी थी । एल्यूमीनियम के बटोरे को उसके हाथ स लेकर लालमन ने यह बहत्त हुए उस अपनी भात को टाकरी म रख लिया कि वाद म खायगा । उसके चेहरे की परेगानी स्पष्ट थी । सरम ने कहा—

—आप उदास दीख रहे हैं ।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया ।

कोई पन्द्रह मिनट बाद खाद की टोकरी निय लालमन के पास से गुजरत हुए सरम ने फिर स पूछा—

—आप परेगान दीख रहे हैं आगिर बात क्या है ?

—बगो मुताना हूँ ।

टोकरी का नीच रखकर सरस पास के पत्थर पर बठ गयी ।

—न जाने इम वान का तुम्हारे ऊपर कसा असर होगा पर म इस तुम्हारे

सामा रग देगा ही ठीक गमभंग है । मामा मुझग से म मिलन घा रही है ।

सरस चुा रही और तागमा । उसा स्वर म मामा क गवान और उदय की चर्गा की और तब अपनी बात कही । ममी दुए मुनरर भी जय मग्म चुणी साथे रही तब लालमन ने उसक रोना हाया का अपने हाया म उन हुए कहा—

—नही सरस चाहे कुछ भी हा जाय तुम्ह मूनना प्रगम्भ है ।

सरस क हाठ पन्ना पर यत कुछ बोना नहीं ।

—मामा मुझग दूर जा चुकी है । मरे पास घा क अपने प्रयास स वह और भी दूर जानी रहेगी ।

अवसर पाकर लालमन क हाया म अपने हाया को धीरे स निरालर सरस मिटटी से मेलन लगी । ताप लालमन चाटना था कि सरस कुछ बाव । वह उसे माचामरी दृष्टि से दनता रहा । और अत तक सरस म जय कुछ भी बोला नही गया तो लालमन न फिर म उमक हाया को अपने हाया म जकड लिया ।

तभी दूर पर दोना न एक साथ मामा को घात दया । दोतो पर एक जसी प्रतिप्रिया न होत हुए भी दोना क हृय की घडकन तज हो चली थी । कोई तीन चार मिनट म मामा दोना के इतने समीप घा जायगी कि उसकी साँसें दोना क चुमन लग जायेंगी ।

मामा जब तक खेत म रही अपने अमुमा को अपने ही म बांध रही । उसकी आँखो से आँसू की पहली बूद उस वक्त टपकी जब वह खेत को छोडकर पगडडी पर आ गयी थी । उसके चले जाने के बाद लालमन के वानो म उसकी उन सभी बाता की प्रतिध्वनियाँ होती रही । वह उसका अतिम वाक्य था जो लालमन के भेजे को भनभना रहा था । ऐसा प्रतीत हुआ था कि अपनी रलाई को दबोचते हुए होठो पर कृत्रिम मुसकान लाकर उसने कहा था—

—मैं यह नहीं जानती थी लालमन कि तुम सरस दीदी को प्यार करने लगे हो । जानती तो ऐसा नहीं करती । दीदी मुझे क्षमा कर देना ।

जो उसने नहीं कहा उसे सरस ने महसूस किया और जो सरस ने महसूस किया वह यह था—

—सरस दीदी मैं तुम्हारे रास्ते का रोडा नहीं

जो लालमन ने महसूस किया वह था—

—मैं तुम्हारे जीवन से निकल रही हू ।

उसका वह जाना सरस को लालमन से अधिक कठिन प्रतीत हुआ था । काठ की मूर्ति की तरह वह खड़ी की खड़ी रह गयी थी ।

लालमन के मग्निष्क के बवण्डर के कारण खेत की बोझाई शिथिल पड़ गयी थी। गाम का जब लिन भर का थका मादा सूरज समुद्र में नहान के लिए डुबकी लेन जा रहा था उस समय वह सरस के पास पहुँचकर एक गुनाहगार की तरह खड़ा हो जाता है। वह सरस को देखता है और जब सरस उसकी ओर दखती है उस समय उसकी अपनी आँखें अपने आप भुक जानी हैं। साहस करने वह दोबारा उसकी आँखा के भाव को परखने के लिए नजरें उठाता है और उस रहस्यमय भाव को न समझकर वह पूछ उठता है—

—सरस, तुम्हें मुझसे शिकायत है न ?

सरस ने कोई उत्तर नहीं दिया।

—मैंने कभी मामा का प्यार दिया था। पर वह ममय कभी का बीत गया। अब मेरे जीवन में केवल तुम हो। मुझे तुम्हारी सग्न जरूरत है सरस !

सरस फिर भी चुप रही और लालमन उसी धुन में कहता ही गया।

हडताल की सफलता के बाद लालमन खुशी खुशी खेत पहुँचा। यह हडताल पिछली हडताल से भी अधिक सफल रही। अगाध खुशी के साथ हडताल की कविता की गुनगुनाना और खेत के पौधों को सहलाता हुआ वह चट्टान पर जा खड़ा हुआ जहाँ से दूर तक की हरियाली भी उमग में दिखाई पड़ रही थी। उसे विश्वास हो गया था कि धरमेन मरा नहीं था, वह अब भी मजदूरों की धमनिया में दौड़ रहा था। लालमन में जो सशक्तता आ गयी थी वह उसकी अपनी विशेषता से अधिक धरमेन की विशेषता थी। वह अपने एक शरीर में दो व्यक्तियों की शक्ति का आभास पा रहा था। उसके भीतर के सकल्प और निमयता में धरमेन की साँसें थी। धरमेन जीवित था उसके भीतर। मजदूरों ने एक बार फिर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। एक बार फिर सरकार और जमींदार काप उठे। सप्ताह भर की हडताल की जो चेतावनी दी गयी थी उसकी जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि पहले दिन सरकार को बीच में बूढ़ना ही पड़ा। कौनीवाले को इरादा बदलना पड़ा। सभी कुछ सम्भावना से पहले ही हो गया।

खुशी की मस्ती में भ्रमते हाथों की तरह लालमन खेत में घूमता हुआ सरस के पास पहुँचा। दौटकर उभरे अपनी बाँहों में बसत हुए वह आत्मविभोर हो कह उठा—

—सरस हडताल सफल रही। अब मजदूर अपने को पहचान चुका है, सरस।

उसके बंधन से छूटकर सरस कुछ दूर जा खड़ी है। लालमन आगे बढ़ा। उसने फिर से उसे अपनी बाँह में बाँध लिया और चाहा कि उसके बतान कर देने वाले होटा पर अपने प्यास हाँठा को रग दे कि तभी सरस ने अपनी सभी शक्ति लगाकर अपने भावका छुड़ा लिया। हैरत से उमकी आँखें देखत हुए लालमन

पूछ बठा—

—क्या बात है, सरस ?

—मैं इरादा बदल चुकी हूँ ।

—कसा इरादा ? मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ।

—आपको भी अपना इरादा बतलना होगा ।

—पर कसा इरादा ?

—मुझमें अधिक आपकी आवश्यकता मामा की है ।

—पागल तो नहीं हो गयी ।

—नहीं ।

—मरस ।

—आप मामा को अपना लें ।

—क्या कह रही हा ?

—वह जा आपका कतय है ।

—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, सरस । मामा से अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं ।

—मामा आज जिस परिस्थिति में फसी है वह आपके कारण । उस ठुकरा कर आप पाप करेंगे ।

सातामा एकटक सरस को देखता रहा । सरस की आँखों में जो चमक रहा था वह सकल्प था । सालमन को यह समझत देर न लगी कि सरस उससे दूर जा चुकी है ।

वह सरस को देखता रहा । दूर से उल्लाम भरी जो आवाजें सुनाई पड़ रही थी व गीत स आती मजदूरों की जीत की उमाङ्गित आवाजें थी ।

